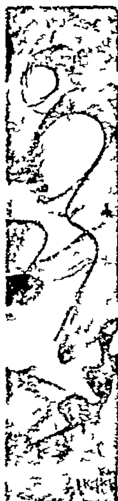
विश्व काव्य की रूपरेखा

विश्वकाव्य की रूपरेखा

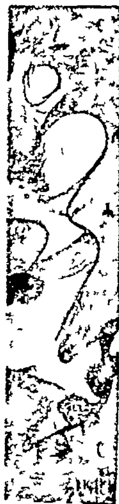
भूमिका
डॉ० विजयेन्द्र स्नातक एम ए, पी-एच डी



अपोलो पब्लिकेशन
जयपुर

विश्वकाव्य की रूपरेखा

भूमिका
डॉ० विजयेन्द्र स्नातक एम ए, पी-एच डी





अपोलो पब्लिकेशन
जयपुर

प्रकाशक
अपोलो पब्लिकेशन
जयपुर

प्रकाश जैन
मनोहर वर्मा
द्वारा
सम्पादित

●

प्रथम संस्करण १९६५

●

मूल्य
१२.५० मात्र

●

मुद्रक
जाब सहकारी प्रेस लि०, अजमेर
चन्द्र आर्ट प्रिंटर्स अजमेर

भूमिका

प्रथम महायुद्ध के विश्व के रंगमंच पर अनेकानेक अप्रत्याशित परिवर्तन हुए। विज्ञान के आविष्कारों ने नयी यांत्रिक सभ्यता को स्थापित किया जिसकी छाया संसार में धीरे धीरे व्याप्त होती गई। यह अममूल तथ्य भी उसी समय प्रचारित हुआ कि मशीन मानव से बढ़कर है—मशीन में नई सभ्यता का जन्म देने की शक्ति है। लेकिन मशीन कभी मनुष्य से बड़ी नहीं हो सकती। शायद इसीलिए मशीनी तड़क भड़क के साथ बौद्धिकता का प्रभाव साहित्य और दर्शन पर भिन्न रूप में पड़ा। बुद्धि ने मनुष्य मनुष्य को दूर तक देखने के लिए विवश किया और दार्शनिक या कल्पनातीत से मुक्त करने में योग दिया। फलत साहित्य के क्षेत्र में कुछ ऐसे परिवर्तन पहले योरोप में और बाद में विश्व के सभी देशों में हुए जिन्हें साधारण भावुक कोटि का परम्परावादी भलीभांति समझ नहीं सका। काव्य के क्षेत्र में नयी कविता का जन्म इन्हीं परिस्थितियों में हुआ समझना चाहिए। नयी कविता के जन्म की कहानी दुहराने का क्रम मैं शुरू नहीं करना चाहता। अब वह कहानी पुरानी हो गई है। लेकिन मैं नयी कविता के युगबोध नूतन आस्थाबोध तथा मानववाद की ओर इस संग्रह की भूमिका के सन्दर्भ में पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं।

नयी कविता के प्रथम उन्मेष में प्रयोग स्तर पर जो सृष्टि हुई उसमें बुद्धिमान की प्रधानता के साथ सामान्य या अकिंचन के प्रति जिस रागात्मक तत्व को प्रश्रय दिया गया वह चौंकाने वाला था। नयी कविता के कवि ने किसी रहस्य वाद को अपनी रचना में स्थान न देकर उस प्रक्रिया को चित्रित किया जो उसके जीवन में व्याप्त है। मानव होने के नाते उसने मानव की यथार्थ एवं स्थूल समस्याओं को स्वीकार करने में संकोच नहीं किया। उसने यह अनुभव किया कि वह जो कुछ कविता के माध्यम से कहे वह पाठक की चेतना में समाया रहे। जिस प्रकार कभी जैन दर्शन में स्याद्वाद को स्थान देकर जैनाचार्यों ने समस्याओं को बहुमुखी बनाया था वैसे ही नये कवि ने अपने विचार को अन्तिम न मानकर विचार वैविध्य को अपनाने में तत्परता दिखाई। स्याद्वाद की स्थापना का आदर्श इससे भिन्न रहा होगा किन्तु समन्वय की एक नयी प्रणाली उसमें सबसे पहले लक्षित हुई। नयी कविता की आस्था किसी सिद्धान्तहीन समन्वय में नहीं है यही उसकी दृढ़ता का सूचक है किन्तु इन तत्वों को सामान्य भावुक पाठक ने ग्रहण नहीं किया जिस रूप में ये नयी कविता में उभरे थे। महाकाव्य खंडकाव्य या गीत काव्य के प्रेमी पाठक के लिए स्फुट भावचित्रों या क्षणानुभूतियों के चित्रण का उतना महत्व नहीं हो सका जितना रूढ़ काव्य शैली की रचनाओं

का था। मनुष्य की भी गुलामी होती है—वैसी ही जैसी सोने की जंजीर। बंधन की दृष्टि से सोने और लोहे में धातु भेद मात्र है क्रिया भेद नहीं। सर्वांग में विश्वास रखने वाले को नयी कविता के मुक्त साहचर्य के संकोच शून्य प्रयोग में रसास्वादन का दृष्टिगोचर होना स्वाभाविक ही है।

नयी कविता ने अपने विकास में जिस स्वस्थ भावना का उत्तरोत्तर ग्रहण किया वह है मानवतावादी भावना। अब तक विशिष्ट को काव्य में प्रस्तुत किया जाता था—नये कवि ने साधारण को सहयोग पूर्वक ग्रहण किया और सामान्य जन जीवन को काव्य का विषय बनाया। जिस आस्था का विघटन कहकर निरूपित किया गया है उसमें कृत्रिम और आरोपित मिथ्या का त्याग ही सर्वप्रथम है। सामन्तवादी संस्कृति या व्यक्ति विशेष के पीछे अनुगामी बनी चली आ रही थी पूरी चुनौती के साथ छोड़ दी गई। दूसरे शब्दों में नयी कविता में जनजीवन को नहीं वरन् व्यापक तथा उदार मानवतावादी दृष्टिकोण को पूरी सामर्थ्य से चित्रित करने का प्रयास किया गया। नयी कविता ने अपने काव्य शरीर से अपना अस्तित्व ही घोषित नहीं किया साथ ही साथ विज्ञान और काव्य का गठबंधन भी कर दिखाया। इस सामञ्जस्य को अणुयुग की एक साहित्यिक सफलता समझना चाहिए।

यह कहना [illegible] दृष्टि से नयी कविता के साथ अन्याय करना है कि वह परम्परागत मूल्यों के खंडन, आस्था के विघटन तथा परम्परा के विसर्जन पर ही [illegible] और पनपती है। काव्य का तो यहाँ अपितु प्रत्येक कलात्मक सृष्टि का मूल उद्देश्य जीवन के प्रति स्वस्थ और रागात्मक संबंध उत्पन्न करना है। आस्था के विघटन से [illegible] यदि कविता का जन्म होता है तो निर्माण और किसी क्रिया के लिए किस [illegible] से मनुष्य को आस्था होगी। यदि जीवन में ही विश्वास एवं आस्था, राग और लगाव नहीं है तो कला और कलात्मक [illegible] में रुचि कैसे होगी? अतः आस्था के विघटन को काव्य का मूल प्रेरक [illegible] मानना एक भी और अधूरी [illegible] करना है। समसामयिक काव्य [illegible] का काव्य है। इस काव्य में परिवर्तित [illegible] आरोपित [illegible] तथा [illegible] को तोड़ने का [illegible] है। [illegible] होकर [illegible] ही [illegible] है। इस [illegible] के पीछे [illegible] के यथार्थ को चित्रित करने की [illegible] है। परिवर्तित [illegible] तथा [illegible] है कि नयी कविता ने [illegible] का [illegible] भी [illegible] है। [illegible] इस कविता [illegible] है [illegible] और पुराने

की तरह बोझिल होता जा रहा है। केवल लीक पीटने वाले नये कवि ना इसे स्वीकार कर रहे हैं किन्तु प्रबुद्ध कवियों को इसकी पीड़ा सलने लगी है।

नयी कविता का शिल्प अब व्याख्येय नहीं रह गया है। पिछले दो दशक में हिन्दी की नयी कविता में इस शिल्प को जिस रूप में ग्रहण किया गया है वह सुपरिचित सा प्रतीत होने लगा है। शिल्प के खोल में कुछ अकवि भी नयी कविता के क्षेत्र में उतर आये हैं। उनके पास न तो काव्य का कथ्य है और न भाव का वैभव। किन्तु शिल्प की नकल वे उसी तरह कर रहे हैं जैसे सोने का पानी फेर कर नकली आभूषण बनाये जाते हैं। मुझे लगता है प्रत्येक युग में ऐसे अकवियों का प्रारम्भ में जमघट रहता है। ज्यों ज्यों पाठक का काव्य बोध गंभीर होता जाता है ऐसे कवि छँटते जाते हैं और काल कवलित होकर समाप्त हो जाते हैं। हिन्दी की नयी कविता के क्षेत्र में भीड़ करने वालों में से बहुतों की यही गति होनी है। अंग्रेजी में इलियट की कृतियों की नकल करने वाले प्रारम्भ में स्वतः पैदा हो गये थे किन्तु धीरे धीरे कविता के पुष्ट होते ही उनका अवसान हो गया।

प्रस्तुत संकलन नये काव्य के नमूनों का संग्रह है। मैं इसे आदर्श काव्य का संग्रह जानबूझ कर नहीं कहता किन्तु नमूने के बोध से सम्पूर्ण के बोध की इच्छा जागृत होती है। मैं अंग्रेजी को छोड़ कर किसी विदेशी भाषा से परिचित नहीं हूं किन्तु इस संकलन के माध्यम से योरोप अमरिका कनाडा, न्यूजीलैंड आस्ट्रेलिया अफ्रीका ईजिप्ट, टर्की जापान लंका इंडोनेशिया वियतनाम आदि चार दर्जन देशों की नई कविता के नमूने देखने का सुयोग मिला। मैंने अनुभव किया कि भाषा का वाहन तो पृथक्-पृथक् है किन्तु मानवात्मा के स्पन्दन में सर्वत्र समता है। शब्द का स्फोट भाव की एकता को छिन्न भिन्न नहीं करता। सुदूर देशों में फैले हुए मानव की चेतना सुख-दुख हर्ष विषाद राग-द्वेष की अनुभूति में एकसी है। ज्यों-ज्यों आप इन कविताओं के मर्म में बढ़ेंगे त्यों-त्यों मेरे इस कथन की प्रमाणिकता पुष्ट होकर आपके सामने प्रत्यक्ष होती जायेगी। आज की नयी कविता में युगबोध का स्वर सर्वत्र सबसे ऊँचा है। सामयिक जीवन चेतना सभी देशों के कवि समान रूप से व्यंजित करते हैं बौद्धिकता का परिवेश फैल रहा है थोथी कल्पना और कृत्रिम भावुकता मर रही है। जन जीवन में से कविता उसी प्रकार फूट रही है जैसे सद्य जोती हुई उर्वर भूमि में से अंकुर।

इस संकलन के अनुवादों के विषय में कुछ भी कहने का मैं अधिकारी नहीं हूँ। अनुवाद का माध्यम काव्यानन्द के लिए तृतीय श्रेणी का माध्यम माना जाता है। अनुवाद कितना भी फेथफुल क्यों न हो-मूल का समग्र नहीं हो सकता। किन्तु चार दर्जन विदेशी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना भी संभव नहीं है अतः अनुवाद ही माध्यम है। सत्प्रयास का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं और उन नवयुवकों को बधाई देता हूं जिन्होंने पहली बार विश्वकविता को हमारे लिए सुलभ बनाया है।

—विजेन्द्र स्नातक

विश्व कविता

बनाम

विश्व की नयी कविता

विश्व-साहित्य का प्रारम्भ कवितामय होकर हुआ है अंत भी कवितामयित होगा? सम्प्रति युग की विश्व कविता ने स्वयं को यथास्थिति-विश्लेषण और नए कोणों के समीप प्रतिष्ठित कर लिया है इससे यन्त्र युग की एकांगी सभ्यता कविता को भविष्य सम्भावनाओं से स्वयं को पूर्ण रूप से काट नहीं पा रही है और यह मानव हित में अच्छा है। बौद्धिक दृष्टि से बीता आदि मानव भाव सम्पदा का धनी था सम्प्रति युग का मानव कमाऊ इसका विपर्यय है। कविता सदैव से युग सापेक्ष रही है आगत युग की सम्भावनाओं के साथ। आज की कविता पर भी यह सिद्धान्त लागू होता है जहाँ वह बदलते हुए युग सन्दर्भों के कारण विघटित जीवन मूल्यों आक्रोश भय अन्तर्व्यस्तता अमूर्तता तथा अन्तर्विरोधों एवं मानव की उखड़ी हुई मनःस्थितियाँ (जिनमें कुंठा यौनवर्जना खण्डित संवेग आदि भी सम्मिलित हैं) को सम्पूर्ण ईमानदारी के साथ अभिव्यक्ति दे रही है वहीं भविष्यगत साहित्यिक शिल्पकथ्य एवं जीवन-आयामों के अनेक धुँधले और स्पष्ट संकेत भी दे रही है। यद्यपि नयी कविता द्वारा इस स्वभाव के कार्य सम्पादन से कुछ बुजुर्ग साहित्यकारों को—जो विधर्मित होते हुए सांस्कृतिक और जीवनगत मूल्यों के प्रति सचेत नहीं हैं जिन्हें युगबोध की पीड़ा नहीं सालती, जो व्यतीत युग के सुख-स्वप्नों के धनी हैं—एतराज हुआ है।

आज की कविता जिस बिन्दु पर है वहाँ तक इसे पहुँचने में अनेक युग धाराओं को लाँघना पड़ा है। काव्य इतिहास ने काल प्रसार में प्रस्तुत युग से लेकर वर्तमान युग की धर्म सभ्यता संस्कृति तक की ऐतिहासिकता का पूर्णतः मर्म से अनुभव किया है। फिर भी यह कहने में कोई संकोच नहीं कि आज की कविता ने युग-बोध वहन में व्यतीत युगीन कविता से कहीं अधिक ईमानदारी बरती है।

विश्व-कविता के क्षेत्र में रचनाकारों की बढ़ोतरी देखकर स्वतन्त्रोत्तर युगीन समालोचकों की रातों की नींद हराम हो गयी है। वे राजनीतिज्ञों की तरह कदाचित् साहित्य क्षेत्र में भी योजनाबद्ध कार्य करना चाहते हैं परन्तु एक दो से अधिक निराला प्रसाद पन्त शैली कीट्स आदि नहीं होने चाहिए।

इस बात को भूल जाते हैं कि छायावादी युग में कॉलेज भर भर कर लड़के गीत लिखते थे। जिस प्रकार उस युग में उँगलियों पे गिनने पर गिनने योग्य रचनाकार ही स्वयं को काव्य क्षेत्र में उजागर कर पाये थे उसी प्रकार नयी कविता के सशक्त और अपरिपक्व रचनाकार स्वयं ही समय की धार द्वारा फेंक दिए जायेंगे। (यदि संख्या में दो चार सौ बढ़ जायें तो क्या बड़ी बात है ?) हाँ ! कुछ समय अवश्य लगेगा। किन्तु बुजुर्ग समीक्षकों में यह विचार करने के लिए न तो धैर्य है और पाठ्य पुस्तकों के सृजन में अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण न ही समय। राजनीतिक क्षेत्र में प्रबुद्ध कुछ बुजुर्गों ने—जो राजनीतिक नेता होने के साथ साथ साहित्यिक नेता भी हैं या जिन्होंने साहित्य में राजनीति फैलाकर नेतागिरी प्रारम्भ कर दी है और इसी के बल पर प्रतिष्ठित भी हो गए हैं—*यह नारा सब लगाना प्रारम्भ कर दिया है कि यह कविता का युग नहीं है* कम से कम आज जो कविता लिखी जा रही है वह इस युग के उपयुक्त नहीं है। इन लोगों से कविता समझने की उम्मीद की जाय ?

दो विश्व युद्ध, मशीन और प्रायः अस्तित्ववादी चिन्तन, जीवन का बढ़ता (किन्तु मूल्यों में गिरता हुआ) स्तर, वैज्ञानिक प्रगति, अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक साहित्यिक लहरें आधुनिक युग की प्रभावशाली देन हैं। इन सभी ने आज के विश्व मानव को अनेक स्तरों पर प्रभावित किया है। कविता चूँकि विशुद्ध मानवीय अनुभूति है अतः इस सब से अपनी भाषा में अत्यधिक प्रभावित हुई है। आज की मानव समस्याएँ मूल रूप में प्रबुद्ध राष्ट्रों की लगभग एक जैसी ही हैं। अन्त में युग की यांत्रिकता ने मानव को पशु बना दिया है जीवन की यांत्रिकता ने उसमें ऊब और घुटन भर दी है इसके बाद इसमें कुण्ठाएँ जन्म ले चुकी हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि आज वैज्ञानिक बौद्धिक और औद्योगिक क्रांति होने पर भी मनुष्य अपने आन्तरिक व्यक्तित्व गठन में असहाय है। परिस्थितियों के दबाव और दैनिक समस्याओं ने आज के मानव को इतना तोड़ दिया है कि वह प्राचीन मान्यताओं के पालन में असमर्थ हो गया है। कहना चाहिए कि जीवन मूल्यों की समस्याओं ने आस्थाओं के प्रति उसमें दोनों प्रवृत्ति जागृत कर दी है।

आज की कविता के रूप में विश्व-साहित्य में कदाचित यह प्रथम अवसर है जबकि हर कवि एक ही अनुभूति स्तर को एक ही शैली और शिल्प के माध्यम से अभिव्यक्ति दे रहा है। विश्व-साहित्य में इससे पूर्व कभी भी ऐसा अवसर नहीं आया था जबकि विभिन्न राष्ट्र देशों की कविता का रूप और शिल्प एक ही समय में एक सा रहा हो। भारत में [illegible] सम्भवतः [illegible] के [illegible] हुआ था जबकि [illegible] समाप्ति की

अन्तिम स्थिति में था। आज की कविता ने विश्व-साहित्य के इतिहास की इस खाई को पाटा है।

आज की विश्व कविता का मूल कथ्य मानव का आन्तरिक द्वन्द्व चित्रण आस्था अनास्था का द्वन्द्व और फिर आस्था अथवा अनास्था का गहराबोध—है।

निरन्तर जटिल होता हुआ विश्व और युग बोध न आज की कविता के कथ्य और शिल्प को जटिल बना दिया है किन्तु इसका यह अर्थ नहीं लिया जाना चाहिए कि टूटा और खण्डित जीवन बोध की कविता भी खण्डित होगी यदि ऐसा होगा तो वह रचनाकार की काव्यक्षमता की अपरिपक्वता का ही बोध करायगी। मिसिस के सावित न 'पोन्टिक इमज' के पृष्ठ ११७ पर यह कथन उद्धृत किया है जो हमारी उपयुक्त मान्यता का समथन करता है—निरन्तर पचीदा होती हुई सभ्यताएँ मनुष्य कविता म पचीदा मूर्तिविधान का होना आवश्यक होगा जो युग हम नए विचार समूह इन्द्रिय बोध देगा उसके अनुरूप साहस के साथ नया मूर्तिविधान प्रस्तुत करना होगा लेकिन इस तर्क से यह परिणाम हर्गिज नहीं निकलता कि भग्न सभ्यता का सही उत्तर भग्न कविता है। कविता के विषयों की भग्नता तो समझने की बात हो सकती है किन्तु जब वह कविता के रूप म अभिव्यक्ति पाए तब उसे सम्पूर्ण काव्य उपलब्धि' होना चाहिए। आज की विश्व कविता म खण्डित उपलब्धि भी पर्याप्त है। इस खण्डित उपलब्धि का समग्र काव्य में अनधिकारी तत्वों का बनावा दना। हिन्दी प्रयोगवाद की पर्याप्त कविता 'भग्न' थी इस लिए भी उसे शीघ्र चुकना पड़ा।

विश्व-साहित्य का सम्प्रति युग में लिखी जाने वाली कविता रूढ़ियों की विरोधिनी है। वह कृतिकारों के वैयक्तिक अनुभूतियों के माध्यम में अभिनव उपमान प्रतीकों जीवित बिम्बों से विश्व साहित्य को समृद्ध बना रही है। इस कविता ने किसी वाद विचार को उसके वाद रूप में स्वीकार न करके महत्व सत्य के रूप में स्वीकार किया है इसलिए निश्चय ही विश्व की इस जागरूक कविता की तस्वीर को किसी 'वाद' 'विशेष' के चौखट में नहीं बाँधा जा सकता। इस म उन मानगी पसन्द साहित्यिक मित्रों की आशाएं और निराशा दोनों ही टूट हैं जो कविता का किसी वाद विशेष का चश्मा लगाकर देखने के आदी हैं या जो कविता का 'देखना' ही तब पसन्द करते हैं जब कि उस पर उनके 'वाद' की छाप लगी हो। बहरहाल।

प्रयोगवादी कविता ध्येय रहित या ध्येयच्युत कविता थी। प्रयोगवादी मित्रों ने नयी को ही ध्येय मान लिया था, सच तो यह है कि इन दिग्भ्रमित मित्रों का 'ध्येय' स्पष्ट हो नहीं था। 'प्रयोग' किसी या किन्हीं महती सम्भावनाओं

के लिए लिया जाता है। ध्येय-सम्भावना से बढ़कर 'प्रयोग' का कोई महत्व ही नहीं है जैसे हल का उस बिना मिट्टी के बीज का। ध्येयच्युत होने के कारण ही 'प्रयोगवादी' कविता कुकुरमुत्ते के समान 'कुछ' समय के लिए ही अपनी धाक जमाकर समाप्त हो गई या उसने अपनी सम्भावनाओं से युक्त नयी कविता के लिए स्वयं को एक नगण्य अंश के रूप में समर्पित कर दिया। हिन्दी में आज भी कुछ बुजुर्ग अपने गहन अध्ययन के बल पर नयी कविता और प्रयोगवाद को एक समझने का भ्रम पाले हुए हैं।

आज की विश्व कविता में बुद्धिमत्ता का प्रभाव है इसका कारण आज का रचनाकार कविता को मनोरंजन की 'वस्तु' न मानकर जीवन की गम्भीर उपलब्धि मानता है। इस कविता पर बिम्बवाद प्रभाववाद आदि का भी प्रभाव पड़ा है किन्तु यह प्रभाव उसका मित्र भर है स्वामी नहीं।

नयी कविता का रस मानदण्डों से नाप लेना नई कविता की परिकल्पना तक से अनभिज्ञता प्रकट करना है। परिवर्तित युग-बोध के कारण रस सृजन कविता का ध्येय नहीं रह गया है। आज के अधुनातन मनोविज्ञान से युक्त और नीरस जीवन में रस की बात सन्दर्भों से कटी हुई लगती है। फिर भी यदि रस को मानवीय अनुभूति या विशुद्ध मानवीय अनुभूति तक फैला लिया जाय जैसा कि हिन्दी के सुप्रसिद्ध समीक्षक डा० नगेन्द्र स्वीकार भी करते हैं तब कोई भी कविता—शर्त यह है कि वह कविता हो अकविता नहीं—रस की कोटि में स्वतः ही आ जायगी (क्योंकि कविता मूलतः शुद्ध मानवीय अनुभूति ही है) तब कवि को तब रसविरोध के लिए अवकाश नहीं उसके चाहने न चाहने पर भी उसकी कविता रसात्मक कविता होगी। तब रस की अनिवार्यता या अनिवार्यहीनता का प्रश्न ही समाप्त हो जायगा। इसकी आवश्यकता मात्र अकविता को प्रमाणित करने के लिए रहेगी। यह सही है कि रस का दम्भ स्वीकार मन और मुक्त भाव से सम्भव नहीं है। [illegible] 'नित्य प्रयोग' भर है जिसे कोई भी कवि नये नित्य प्रयोग में ? चुन कर स्वीकार भी सकता है। [illegible] यह कहना ठीक नहीं है कि इस [illegible] हो सकता है काव्य की [illegible] उपलब्धि में नहीं क्यों कि उपलब्धि एक निश्चित परिणाम है [illegible] नहीं।

फिर क्या नयी कविता चित्रकला के कितना समीप है या कि उसे चित्रकला के कितना समीप होना चाहिए? यह कुछ गूढ़ प्रश्न है जिस पर विचार के लिए पर्याप्त अवकाश हो सकता है। लेकिन एक बात स्वीकार करनी पड़ती कि चित्रकला और नयी कविता और उसका युग प्रयोग कविता और उसके [illegible] निकट ही नहीं अधिक [illegible] आता है। यह [illegible]

स्तरों पर चित्रकला की 'आत्मकथारिणी' जैसी हो है। कहीं-कहीं नयी कविता ने चित्रकला का स्पर्श में इतना समाहार किया है कि उसकी अमूर्त भावनिकता विश्लेषण परक स्थितियों से उठकर अनुभूति परक हो गई है। विश्व-कविता के मूर्त विधान की अमूर्तता ने विश्व-साहित्य-मन्च में एक पृष्ठ-प्रयास को जोड़ा है जिसे अतीत युगीन कविताएँ आदेश में असमर्थ रहीं और अब तक जिसके सृजन की निरन्तर प्रतीक्षा थी। अमूर्त कविता में टी० एस० इलियट का नाम लिया जाता रहा है। इस संदर्भ में अधिक सही नाम डिलन टामस तथा गजानन माधव मुक्तिबोध के हैं।

हिन्दी में नयी कविता की जड़ें निराला में थीं। निराला की अनेक कविताओं की ताजगी कुकुरमुत्ता में व्यंग्य की कड़वाहट तथा अनेक कविताओं में सच्चे यथार्थ का चित्रण नयी कविता की पृष्ठ भूमि के रूप में निराला में विद्यमान थी। नयी-कविता की ताजगी यथार्थ का वाद मुक्त सच्चा चित्रण सहजता आदि कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं (दूसरी विशेषताओं के साथ) जो नयी कविता को अतीत युगीन कविता से पृथक कर उसका स्वतन्त्र अस्तित्व घोषित करती हैं जीवन की कटुता और अन्तर्राष्ट्रीय खोखलेपन ने नये कवि को व्यंग्य करने के लिए बाध्य कर दिया है। आज की कविता में वर्णित व्यंग्यात्मकता गुणात्मक और मात्रात्मक रूप में अब तक के साहित्य में सर्वाधिक है। विदेशों में नयी कविता के अंकुर (मात्र अंकुर) लाफार्ग और त्रिस्तां कारबियर में मिलते हैं। टी० एस० इलियट ने अपने एक निबन्ध में इन दोनों कवियों की चर्चा की है। उन्हें अपने समय के किसी भी अंग्रेजी कवि की अपेक्षा 'मेटाफिजिकल' कवियों के समीप माना है। रम्बो और मालार्मे भी इस शृंखला के कवि हैं। एडमंड विल्सन ने फ्रान्सीसी आलोचक रजहाप का उल्लेख किया है। इस आलोचक ने इलियट पर लाफार्ग के प्रभाव का विवेचन किया है। नयी कविता का स्वरूप आज जिन अर्थों और सन्दर्भों को लेकर प्रकट हो रहा है उसे देखते हुए निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि टी० एस० इलियट भी अब पीछे छूटते जा रहे हैं (छूट गए हैं।)

आज की विश्व कविता में धर्मशास्त्र परक नैतिकता को निष्कासित कर दिया गया है। आज वह मानव की घुटन, कुंठा और यौनवर्जनाओं को उदात्त रूप में चित्रित करने में संलग्न हो रही है। टूटन, मृत्युबोध, अन्तरंग क्षणों में भी हृदय बना रहना, जीने के लिए जीते जाने वाले जीवन की विवशता, यान्त्रिक जीवन से ऊब, रूढ़ियों के प्रति विद्रोह, आस्था अनास्थामयी दृष्टि, व्यक्ति के अन्तर जगत के प्रति ईश्वरहीन आदरमयी दृष्टि, अनुभूति को अभिव्यक्ति देने की ईमानदारी, नयी चेतना के प्रति अटूट आस्था, यम सभ्यता से भय, नये

सम्भार बौद्धिक कोणों से स्थिति चित्रण, कटुता और तीखा व्यंग्य, नये प्रतीक, नये बिम्ब, आस्था का सर्वमान्य प्रतीक सूर्य, सौन्दर्य बोध के बदले हुए आयाम, सृजन प्रक्रिया की तटस्थता आदि ऐसी शिल्प और विषयगत उपलब्धियाँ हैं जो आज की हिन्दी-कविता में उपलब्ध हैं। कटुता और अस्तित्वहीनता से भयभीत आज के मानव के लिए प्रत्येक क्षण का महत्व है। क्षण को उसके सम्पूर्णत्व में जीने की ललक प्रत्येक मन में है। इस मन स्थिति का वहन करने वाली नयी कविता में क्षण सत्य को गहना नये कवि की ईमानदारी का सबूत है।

आग्रह के छूटते दशा में नयी कविता के पक्षधर कुछ रचनाकारों ने रूढ़ियों के प्रति विद्रोह की छूट इतनी मान ली कि मानव अनुभूतियों को मानव स्तर पर अनुभव न कर पशु स्तर पर अनुभव करना प्रारम्भ कर लिया। गत वर्षों में एनकाउन्टर में इस प्रकार की कुछ कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी में प्रमाणवादी कविता के जनक (अब नयी कविता के भी जनक) ने इस सन्दर्भ में कुछ नया अनुभव किया— मैं ही हूँ वह पराक्रान्त गिरियाता कुत्ता।'

इसी तर्ज पर कुछ दूसरे छुटभैया ने कुछ कंठ में स्वर मिलाया—

धरती आवर्तित करती
अपनी परिक्रमा को
इस आकाश प्रवाह में मुझको मरने दो
मरस मौत कुत्ते की।

मृत्युबोध को आज की बम संस्कृति ने अधिक गहरा लिया है या मैं दाम निवेदन कर चुका है। अति एक स्वार्थों की अनिश्चितता ने मृत्यु पर साधन के लिए बाध्य कर दिया है। किन्तु कुछ की तो मृत्यु कामना करने काम कविता का सच्चा अधिप बना है। अमर कवि रिल्के की कविताओं में मृत्युबोध पर्याप्त गहरा है किन्तु उनमें मृत्यु स्वीकृति का स्पष्ट पता है। रिल्के यह स्वीकार करता था कि प्रत्येक मनुष्य स्वयं में मृत्यु को पाले हुए है। मृत्यु ही जीवन का उद्गम रहा है। रिल्के ने आयु भर मृत्यु की आराधना की। उनके जीवन का प्रधान उद्देश्य यह था कि स्वयं में इस बीज का पालन करे जो मृत्यु आगमन पर पल्लवित होगा। रिल्के ने सभी वस्तुओं या मृत्यु को ही प्रधानता दी किन्तु उसने ईसाई रहस्यवादियों की भाँति इस बात पर भी बल दिया कि जीवन के अनुभवों में जिसका साथ उठना जागना उठना चाहिए। जीवात्मा परमात्मा के मिलन-स्वर ही आवश्यक है जिसका जीवात्मा

के लिए परमात्मा। जीवन का भागन हुए हम यह स्मरण रखना चाहिए कि हम परमात्मा की इंद्रिया के रूप में काम कर रहे हैं।—

परमात्मा यदि मैं मर जाऊँ तो तुम क्या करोगे
मैं तुम्हारा पीने का पात्र हूँ
यदि वह टूट गया तो क्या होगा।"

जीवन की कटुतामो और परिवश स्वाव एवं यथार्थ कठिनाइयां के (आर्थिक वितरण का असमानता आदि) ने बीट कवियों में जहाँ एक ओर समाज में उत्पन्न विडम्बनाओं के प्रति तीखा व्यंग्य है वहीं बम सभ्यता से उत्पन्न जीवन की अनिश्चितता के कारण मृत्यु बोध भी उभरा है। बीट कवि आज की संघर्षशील पीढ़ी के प्रतिनिधि कवियों में से हैं। अमरीका में इन बीट कवियों की नाम पट्टिका पर्याप्त लम्बी है इनमें जिंसबर्ग कार्सो गावर, ईवन, डनजी लिवर्टोव एवर्ड डान फिलिप लैम मिग्रिया पोर्टर प्रारलातारिको कनय वाच फिलिप ह्वालन गिलबर्ट मार्टिना गैरी स्नाइडर माइकल मैंक्लार रा लॉय जोन्स डविड मेट जरल ग्रान्सन फील जैक करुएक मिकाइल होरोविज एड्रियन मिचेल मार्टिन सेमूर स्मिथ सी० एच० सिमन आदि प्रमुख कवि हैं। समकालीन अमरीकी काव्य के प्रतिष्ठित कवि तथा आलोचक पाल करोल ने एवरग्रीन रिव्यू (अंक १६ जुलाई अगस्त ६१ ६२) में जिंसबर्ग के विषय में लिखा है सम सामयिक अमरीकी काव्य साहित्य में जिंसबर्ग एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने तीस वर्ष की आयु में वह अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त की जो अपने जीवन काल में रावर्ट फ्रास्ट को मिली थी। यह अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा केवल उनकी पुस्तकों के सुपठित पाठक समुदाय तथा जन-साधारण द्वारा नियमित क्रम तक ही सीमित नहीं है बल्कि फ्रास्ट की ही भाँति उन्होंने अपने समय के उन सभी 'एकेडेमिक' आलोचकों तक का अपना ध्यान आकृष्ट किया है जो हाउल को पढ़कर कभी विक्षुब्ध हो उठे थे। "फ्रास्ट के बाद वे दूसरे अमरीकी कवि हैं जिनकी हाउल' जैसी ओजस्वी तथा प्रखर काव्य पुस्तक की ८० ००० प्रतियाँ एक साथ हाथो-हाथ बिक जाती हैं वे पहले अमरीकी कवि हैं जो ब्लैक माउण्टेन कॉलिज आइ ओवा तथा हारवर्ड विश्वविद्यालय की विशाल गैलरिया में शान्त भाव से बैठे हुए दो-दो हजार काव्य प्रेमियों को अपने 'ओजस्वी वक्तृत्व दुखान्त और प्रभविष्णु काव्य पाठ से क्षण भर में मन्त्र मुग्ध कर देते हैं बत्तीस वर्ष की आयु में ही वे यश के उस चरम शिखर पर पहुँच गए हैं जब हर योरूपीय बौद्धिक अमरीका में आकर सबसे पहले जिंसबर्ग से भेंट करने की इच्छा व्यक्त करता है।"

फलस्वरूप बौद्धिक कोणों से स्थिति चिन्तन करता और भोला स्वप्न, नये प्रतीक नये बिम्ब भाषा का सर्वमान्य प्रतीक सूर्य सौन्दर्य बोध के बदल हुए आयाम सृजन प्रक्रिया की तटस्थता आदि ऐसी शिल्प और विषयगत उपलब्धियाँ हैं जो आज की हिन्दी-कविता में उपलब्ध हैं। भय और अस्तित्व हीनता से भयभीत आज के मानव के लिए क्षण क्षण का महत्व है। क्षण को उसके सम्पूर्णत्व में जीने की ललक उसके मन में है। इस मन स्थिति को वहन करने वाली नयी कविता में क्षण सत्य को गहना नये कवि की ईमानदारी का सबूत है।

भारत के कुछ देशों में नयी कविता के धरातल कुछ रचनाकारों ने कविता के प्रति विद्रोह की कुछ ऐसी भावना की कि मानव अनुभूतियों को मानव स्तर पर अनुभव न कर पशु स्तर पर अनुभव करना प्रारम्भ कर दिया। गत वर्षों में 'एनकाउन्टर' में इस प्रकार की कुछ कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी में प्रयोगवादी कविता के जनक (अब नयी कविता के भी जनक) ने इस सन्दर्भ में कुछ ऐसा अनुभव किया— मैं ही हूँ वह पदाक्रान्त रिरियाता कुत्ता।'

इसी तर्ज पर कुछ दूसरे छुट भैया ने गुर कंठ में स्वर मिलाया—

करती आवधिक करती
अपनी अहन्ता का
ये आकाश प्रकाश न मुझको मरने देंगे
गरम मौत कुत्ते की।

मृत्युबोध का आज की अनास्था ने अधिक गहरा दिया है यह मैं पहले निवेदन कर चुका हूँ। अनिश्चित स्थितियों की अनिश्चितता ने मृत्यु पर सोचने के लिए बाध्य कर दिया है। किन्तु कुछ की तो मृत्यु कामना करने वाली कविताएँ भी अच्छी अधिक मिली हैं। जर्मन कवि रिल्के की कविताओं में मृत्युबोध वर्णित रहता है किन्तु उसमें मृत्यु स्वीकृति का स्वरूप यह है। रिल्के यह स्वीकार करता था कि प्रत्येक मनुष्य स्वयं में मृत्यु को पाले हुए है। मृत्यु ही जीवन का चरम सत्य है। रिल्के ने मृत्यु और मृत्यु की आराधना की। उसके जीवन का सबसे उद्देश्य यह था कि स्वयं में उस बीज को पालन करना जो मृत्यु आगमन पर अंकुरित होगा। रिल्के ने सभी मनुष्यों पर मृत्यु की ही उपासना दी किन्तु उसने ईसाई रहस्यवादियों की भाँति इस बात पर भी बल दिया कि जीवन के अनुभवों से जितना लाभ उठाया जा सके उठाना चाहिए। ये बातें परमात्मा के लिए उतनी ही आवश्यक हैं जितना जीवात्मा

के लिए परमात्मा। जीवन को मांगते हुए हम यह स्मरण रखना चाहिए कि हम परमात्मा की इंद्रियों के रूप में काम कर रहे हैं।—

'परमात्मा यदि मैं मर जाऊँ तो तुम क्या करोगे
मैं तुम्हारा पीने का पात्र हूँ
यदि वह टूट गया तो क्या होगा।"

जीवन की कटुताओं और पारिवारिक दबाव एवं यथार्थ कठिनाइयों के (आर्थिक वितरण की असमानता आदि) ने बीट कवियों में जहाँ एक ओर समाज में उत्पन्न विडम्बनाओं के प्रति तीखा व्यंग्य है वहीं बम सभ्यता से उत्पन्न जीवन की अनिश्चितता के कारण मृत्यु बोध भी उभरा है। बीट कवि आज की अवचेतन पीढ़ी के प्रतिनिधि कवियों में से हैं। अमरीका में इन बीट कवियों की नाम पट्टिका पर्याप्त लम्बी है इनमें जिंसबर्ग कार्सो, गार्बट, हंटन, डनजी लिवर्गोव एडवर्ड डार्न फिलिप लैम मिथ्यिया पीटर ओरलोवास्की कनय बाच फिलिप व्हालन गिलबर्ट सारेन्तिनो गैरी स्नाइडर माइकल मक क्लार रा लॉय जोन्स डविड मैल्टजर जरल मान्सन क्रील जैक करूएक मिकाल्ल होरोविज एड्रियन मिचल मार्टिन समूर स्मिथ सी० एच० सिमन आदि प्रमुख कवि हैं। समकालीन अमरीकी काव्य के प्रतिष्ठित कवि तथा आलोचक पाल कैरोल न एवरग्रीन रिव्यू (अंक १६ जुलाई अगस्त ६१ ६२) में जिंसबर्ग के विषय में लिखा है कि सम सामयिक अमरीकी काव्य साहित्य में जिन्सबर्ग एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने तीस वर्ष की आयु में वह अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त की जो अपने जीवन काल में राबर्ट फ्रास्ट को मिली थी। यह अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा केवल उनकी पुस्तकों के सुपठित पाठक समुदाय तथा जन-साधारण द्वारा नियमित क्रम तक ही सीमित नहीं है बल्कि फ्रास्ट की ही भाँति उन्होंने अपने समय के उन सभी एकडेमिक' आलोचकों तक का अपना ओर आकृष्ट किया है जो हाउल को पढ़कर कभी विक्षुब्ध हो उठे थे। फ्रास्ट के बाद वे दूसरे अमरीकी कवि हैं जिनकी हाउल' जैसी ओजस्वी तथा प्रखर काव्य पुस्तक की ८० ००० प्रतियाँ एक साथ हाथों-हाथ बिक जाती हैं वे पहले अमरीकी कवि हैं जो ब्लैक माउण्टेन कॉलेज आइ ओवा सय हारवर्ड विश्वविद्यालय की विशाल गैलरियों में शान्त भाव से बैठे हुए दो-दो हजार काव्य प्रेमियों को अपने ओजस्वी वक्तृत्व दुर्दान्त और प्रभविष्णु' काव्य पाठ से क्षण भर में मन्त्र मुग्ध कर देते हैं चौंतीस वर्ष की आयु में ही वे यश के उस चरम शिखर पर पहुँच गए है जब हर योग्नीय बौद्धिक अमरीका में आकर सबसे पहले जिंसबर्ग से भेंट करने की इच्छा व्यक्त करता है।"

यम र स्पना और यान्त्रिक जगत के विद्रूप के प्रति ऐलिन जिन्सबर्ग की कविता में तीखा व्यंग बौद्धिकता मानव के प्रति आदर और मानवीय दुःख के प्रति सहज सहानुभूति है। सामयिक यथार्थ की विद्रूपता का गहरा बदुबोध एवं मानव जीवन एक गोली का मूल्य भर है का सवन्न जिन्सबर्ग की कविता में अभिव्यक्त हुआ है—

मर्यकर आत्मविनता के अनन्त समकालिक
व्यापारा के आभास जो गलती से प्रकट होकर
कुछ मही के मूर्खतापूर्ण घतना प्रेन्ग में
टूट गए है
शून्य में दाग होते सत्म दिन में गुम
हात हुए— दर्द का चिह्न जो बाहर आकर
आग के आकार में सामने ठहर जाता है—
मुझे आग मारता है और हम गुम हो जाते है।'

मृत्यु मानव चेतना की अनिवार्य नियति है जिन्सबर्ग हिन बदु यथार्थ में युग्ते हुए सभी बीट कवियों ने इस बाध का जोया है। जैक केरुएक ने सारे व्यक्तित्व अन्तर्गत के नाप दिया करता गया है जो बच में सड़ता है और कीड़ उसे खाते है

अमन कवि करसोग्न क ग्न भी मृत्युबोध का स्वीकारता है दुःख म ही मैं मौत क स्व प्रतीक्षा म गुम हूँ।'

ग्रेगरि कारटर्सो इमामाट्न्गिन मारिस तिलियाम काग्नि इस कवियों में भी मृत्युबोध की यही तीव्रता है प्रमत उनकी काव्यपंक्तियों इस बात का प्रमाण है—

सूर्य म आरम्भ होता है मौत'
अब एक दिन मरा गए हम धूप म'
एक म मा ह्रिया
कि—सूर्य म मिटा है गया है।'

अमरिका का समकालिक कविता म भी मृत्युबोध अभिव्यक्ति पा रहा है जीवन का क्ष क्षणों का सुनाए द रहा है। कवि मृत्युबोध की इस ममान्तक पीड़ा से विदित ग्रस्त है। लिव क माध्यम से कवि जी॰ कावालियर की काव्य पंक्ति में दर्द बाद और अधिक प्रगट बन गया है—

"जिन्दगी का गहरा पर विश्वास और मौत का
न जियो पर भरने दो।'

आधा दुःख न ग्रस्त करता है कि मैं कि क के सम्पूर्ण दुःख एक हो

वग क लिए म होना तो वह इस जवानी म न मरता।' स्पेनिश कविता में भी मत्युबोध को विश्व की समकालीन कविता की भांति ही अभिव्यक्ति मिल रही है। रफाएल आलबर्ती का कुछ काव्य पंक्तियां इस सन्दर्भ में पर्याप्त होंगी।

अभि बन कर मत्यु क साथ चलन

.. ..

अपनी मौत स मिलते हो।'

मेक्सिकन कवि आक्टावियो पॉज मत्यु प्रक्रिया की ओर संकेत करते हैं—

"और दिल की धड़कना क पुल पर हम मौत

और शून्यता को पहुँचन तक दौड़ते रहते हैं।'

सामयिक यथार्थ की धुन्ध को—जो मूल रूप स अद्ययुगीन मानव को निरन्तर मृत्यु की ओर धकेल रही है—क्यूबियन कवि इसल रिवयरो ने अनुभव किया है वह युग क विनाशक चहर स भला भांति परिचित है—

'मर ओठ इस युग की प्रशंसा करने को अभिशप्त हैं

धीमा ध्वनियां और सहारों का यह युग

....

कितनी धीमी है बोध की यह प्रतिक्रिया।'

जीवन की अनेक विडम्बनाओं को आत्मसात करते हुए अन्ततोगत्वा रचनाकार का ध्यान 'मृत्युबोध' पर केन्द्रित हो जाता है और असमय एव अप्रत्याशित रूप स आनेवाले मृत्यु क किसी भी क्षण की कल्पना कर सहम उठता है। पेरू का कवि सेजार वलजो विश्व जीवन को मत्यु के जबड़े म फसा अनुभव करता है—

'जब सारी दुनियां तुम्हार सामन आ गिरगी

तब मौत की खाली आखें मिट्टी के दो पास बन

उस आखिरी तौर पर जोत लेंगी।'

मृत्युबोध अनस्तित्व होत और प्रतिक्षण जिजीविषा चुकते मानव को ह्रास प्रक्रिया का अनुभव करन से उपजता है। सम्प्रति युग का मानव प्रतिक्षण समाप्त होने की आशंका स सिहरता रहता है। इक्वेडोर क कवि जार्ज करराअन्द्राडे ने इस अनुभूति को सम्पूर्ण प्रक्रिया में गहा है—

"और हर मिनट दीवारें ढहन क

बिजली गिरने क

इन्तजार में बिताता हूँ

स्वर्ग स न जान कब नोटिस आ जाय

सर्चम की उड़ान में मौत आ धमक।

प्रवियों से पूर्ण युद्धोन्मुख संसार (मृत्यु की भांति हो प्रतिक्षण के युद्धभाव) ने कवि के जीवन दर्शन-गत बोध को ऐसा आघात पहुँचाया है कि उसे प्राणी मात्र में ही नहीं प्रकृति तक में मृत्योन्मुखता के दर्शन होते हैं। युगोस्लाव के एक कवि जूलियो हरराय रीमिंग की सशक्त कविता में यह बोध अभिव्यक्ति पा सका है। बिम्ब विधान के कारण उसकी प्रपणीयता और अधिक बढ़ गई है। कवि की मृत्यु जीवन की चरम परिणति होने के कारण खुशनुमा भी लगती है। यथार्थ की कटुता की अपेक्षा यदि मृत्यु उसे अभिराम लगे तो आश्चर्य क्या—

'मृत्योन्मुख सन्ध्या एक पर्वत पर झुकती है

...

गाँव के सामने रात धीमे से मुस्कराती है

श्वेत चेतना लिए खुशनुमा मौत सी।"

अर्जेंटाइना के कवि मोलीनारी को 'मृत्यु कितनी भयंकर है' का बोध होता है। ब्राज़ील के कवि मानुएल बान्देरा पूर्ण मृत्यु की आकांक्षा करते हैं। चिली के कवि चिरेते हुई दोखो नारी के ओठों तक में मृत्यु दर्शन करते हैं—

मौत का झण्डा उसके ओठों पर लहरा रहा था।'

कनाडियन कवि फिलिस वेब 'टूटे हुए' शीर्षक कविता में मृत्युबोध को अभिव्यक्ति देता है—

अपने आक्रमण के प्रति खुद जिम्मेदार

हम उनकी परम्परा और अपनी मृत्यु मिली है।

मृत्युबोध विदेशकवि का परम्पराओं के विघटन में जीवन मूल्यों के स्खलन में, आस्थाओं के टूटने तथा जीवन के उलझाव में अनुभव होता है। स्लोवाक के कवि पीटरक्लेव भी मृत्युबोध से आन्दोलित हुए हैं—

"अभी-अभी यहाँ जिन्दगी बह रही थी

यहाँ अब मात्र फटे चिथड़ों जैसा बर्फ का ढेर है।"

आस्ट्रेलियन कवि जूडिथ राइट भी मृत्युबोध की तीव्रता को आत्मसात किए हुए है। ये कवि हम सबको मृत्यु की सेनाओं से घिरा हुआ अनुभव करता है सम्पूर्ण परिवेश मृत्युबोध का संदेश वाहक है अतः कवि द्वारा सत्य को भोगने की बात करता है उसने मृत्यु के चरणों की आहट सुनली है—

हमारे चारों ओर अब मृत्यु की सेनाएँ खड़ी हैं

उसके कदम पास आते आ रहे हैं

धड़कते हृदय पर अपने गर्म हाथों का दिलासा डाल दो

और मुझे कुछ देर और निर्भर रह लेने दो

अंधेरे मे कूद कर मुझे अपने से बाँध लो
क्योंकि मगरों की काली भूमिकाएँ बनने लगी हैं
और हमारे चारों ओर सब प्रेमियों के चारों ओर
मौत का घेरा जकड़ता आ रहा है।'

आस्ट्रेलियन कवि जेम्स कर्मेट अपनी प्रसिद्ध कविता 'मत्यु लेख' में इसी बोध को जीता है—

"मैंने हवा के लिफाफे को भर दिया
भयकर संकेतों से तटस्थ आकाश को
मैंने छुरा भोंक दिया जिसम से तुम्हारे मार्ग दर्शक
जीवन को ले जाते हैं अनिग्रह तक।'

इंडोनेशिया के कवि डब्ल्यू० एस० रेन्द्रा की कविता मे भी 'मृत्युबोध' को स्पष्टि मिली है। टर्की के कवि सी० टरासी ने 'मत्योपरान्त' शीर्षक से एक कविता लिखी है। गुजराती कवि अब्दुल करीम शेख खण्ड खण्ड हुई जिन्दगी से आजिज आकर मृत्यु की कामना करता है—

मृत्यु-मुझे उसकी अत्यधिक आवश्यकता है
लाओ
मैं रात दिन नकाब ओढ़ भटकता हूँ
फिर भी वह कहीं मिलती नहीं।'

पंजाबी कवि कृष्ण अशान्त मत्यु सम्भावना से अशान्त हैं—

"ये पतिव्रत की प्रतीक मेरी पत्नी
चाँद जसे बच्चा सहित
यदि किसी दिन अनायास मृत्यु की गोद में सो जाय।'

आज की कविता में विश्व का प्रत्येक कवि किसी न किसी रूप में 'मृत्यु दंश' का अनुभव करता ही है। हिन्दी के नये कवि में भी मत्युबोध काफी गहरा है। सुरेन्द्र कवि के 'कौन से सदभ दे दूँ' कविता संग्रह में 'मृत्यु दंश' कविता इसी परिप्रेक्ष्य की ही उपलब्धि है—

जैसा कि मैं निवेदन कर चुका हूँ कि मृत्यु बोध से आक्रान्त होना भी क्षण महत्व को स्वीकार करने के अनेक कारणों में से एक है। जीवन की अनिश्चितता ने उनके पैर उखाड़ दिए हैं वे क्षण के सारे सुख को एक बारगी निचोड़ लेना चाहते हैं। अव्यवस्थित जीवन और विश्व में नित्यप्रति होने वाले परिवर्तनों ने मानव अस्तित्व में एक प्रकार की अस्थिरता ला दी है। आज की कविता से पूर्व छायावादियों ने क्षण सत्य की महत्ता को नहीं पहचाना था वे व्यवस्थित जीवन और तरल भावबोध के हामी थे। उनमें या तो प्रेम में पीड़ा थी या दुलते

दौंस का धीरे धीरे दुलाकर आनन्द लेने की प्रवृत्ति थी। परिवेश गत यथार्थ कटुता से उनका साबका नहीं पड़ा था दूसरे शब्दों में वे कोमल भावनाओं के धनी थे। आज के युग ने मनुष्य को ठीक इसके विपरीत जीने को बाध्य कर दिया है उसे घुटन ऊब और विवशताओं एवं उलझे हुए जीवन म एक भी सुखद क्षण प्राप्त होता है तो वह उस क्षण का पूर्णता मे जीने को लालायित हो जाता है। स्वतन्त्रता के लिए निरन्तर संघर्ष करती हुई अफ्रीकी सामयिक कविता चेतना-कोण से विश्व की प्रबुद्ध कविता म समानान्तर न होने पर भी क्षण-सत्य और उसके महत्व को सच्ची पकड से युक्त है। कवि जैक कोप की काव्य पंक्तियाँ क्षण-सत्य-ग्रहण की स्थिति को उजागर करती हैं—

शारदीय सरिता पर जमी बर्फ से टकराते क्षणों को
पहचानो और तुम वायु कुसुम—जडहीन पुष्पों को
गंध सिंच घास पौधों में खोजते आशा।'

पजाबी नयी कविता म भी क्षणानत्य-सौन्दर्य अभिव्यक्ति पा रहा है।
कवि स्वर्णों की युग्म कविता से कुछ पंक्तियाँ इस सन्दर्भ म उद्धृत हैं—

आह
ये क्षण—
समय के कोमल परों से उतार कर बाँध लूँ।

विश्व कविता में एकाकीपन की पीड़ा का बोध मृत्युबोध के चलते ही उभरा है। असहाय जीवन का भार वाहक मानव भीड़ में भी स्वयं को नितान्त अकेला अनुभव करता है। बदलते हुए मानदण्डो ने उसे समस्त समास्याओं से जूझने क लिए अकेला छोड़ दिया है। एकाकीपन मानवीय कुण्ठाओं के अनेक कारणों म से एक है। यान्त्रिक युग की इस देन से मनुष्य भीतर ही भीतर टूट गया है वह युग की यान्त्रिकता और जीवन की यान्त्रिकता—एक रसता—को जिसवर्ग की कविता म अनुभवता है—

मैं फिर यहाँ वापस आ गया हूँ'—यान्त्रिक
भ्रम की अनुभूति अपने मूढ भाग्य पर लौट
आई है—दुःख विषय संगीत के साथ—
मैं छोड़ देता हूँ।

प्रसिद्ध रूसी कवि पास्तरनक की कविता में एकाकीपन का तीखा बोध एवं जीवन की भार विषदता की प्रभावशाली अभिव्यक्ति हुई है। कुछ पंक्तियाँ समुद्धृत हैं—

मैं अकेला हूँ

सब डूबा जा रहा है

ज़िन्दगी में चलना मैंशन में चलना नहीं है।'

एकाकीपन की सर्वव्यापी अनुभूति हिन्दी-कविता में इस छोर से लेकर उस छोर तक समाहित है। एकाकीपन का बोध मसिहको के कवि सुई करनूदा की कविता बहुत पहले का बसन्त में जीवन के भावपक असह्य भार के साथ स्पष्ट हुआ है।—

निर्जन के किसी कोने में

अकेले अपना सिर अपने हाथों में लिए

प्रतिहिंसक प्रेत की तरह

तुम यह सोच-सोच कर रात रहोगे कि

ज़िन्दगी कितनी खूबसूरत थी और कितना व्यय।'

अमरीकी कवि इन्द्रिड जोन्सर की कविता 'मैं नहीं चाहता' इसी सन्दर्भ की उपलब्धि है।

उपर्युक्त एकाकीपन का बोध मृत्युबोध यांत्रिकता, परिवेश गत जीवन पीड़ा तथा अन्तर्विरोधों के इस युग में कवि व्यंग्य-सृष्टि करने के लिए बाध्य है। प्रत्येक कवि जीवन की कड़वाहट को व्यंग्य की तल्खी में भूल जाना चाहता है। वह समाज पर व्यंग्य करता है रूढ़ियों और परम्पराओं पर व्यंग्य करता है कभी-कभी स्वयं पर भी व्यंग्य करने लगता है। गत युगीन मान्यताओं के प्रति उसके अन्तःकरण में विद्रोह है इन मान्यताओं की रक्षक और आज के कवियों की उपलब्धि को नकारने वाली युग बोध से पिछड़ी पीढ़ी नए कवि के मार्ग में बाधक बनती है। ऐसी स्थिति में वह यदि इन परम्परावादियों और नए आयामों को मुंह बनाकर देखने वालों के प्रति व्यंग्य निवेदन' न कर तो उसकी स्वयं की स्थिति व्यंग्य का विद्रूप बनकर रह जाय। समाज में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार आर्थिक विषमता और उसके कष्टों का अनुभव करता हुआ मलाया का कवि ईसियांग हाग एक व्यंग्य सृष्टि करता है—

इसलिए मैं सोचता हूं कि रिटायर होने पर

मैं राजनीति में हिस्सा लूंगा

या कोई व्यापार कर लूंगा, क्योंकि सरकारी नौकर

कभी जल्दी अमीर नहीं हो सकता।'

सम्प्रति युग का रचनाकार विषमताओं के कारण असतोष का अनुभव कर रहा है इस युग को यदि भय और असंतोष का युग कहा जाय तो एक बड़ी सीमा तक सही होगा। बीट कवि पाल ब्लेकबर्न ने असतोष की अभिव्यक्ति दी है।

दाँत का धीरे धीरे दुखाकर आनन्द लेने की प्रवृति थी। परिवेश गत यथार्थ कटुता से उनका सावका नहीं पड़ा था दूसरे शब्दों में वे कोमल भावनाओं के धनी थे। आज के युग ने मनुष्य को ठीक इसके विपरीत जीने को बाध्य कर दिया है उसे घुटन ऊब और विवशताओं एवं उलझे हुए जीवन में एक भी सुखद क्षण प्राप्त होता है तो वह उस क्षण को पूर्णता में जीने को लालायित हो जाता है। स्वतन्त्रता के लिए निरन्तर संघर्ष करती हुई अफ्रीकी सामयिक कविता चेतना-कोणों से विश्व की प्रबुद्ध कविता के समानान्तर न होने पर भी क्षण-सत्य और उसके महत्व की सच्ची पकड़ से युक्त है। कवि जैक कोप की काव्य पंक्तियाँ क्षण-सत्य-ग्रहण की स्थिति को उजागर करती हैं—

शारदीय सरिता पर अभी बर्फ से टकराते क्षणों को
पहचानो और तुम वायु कुसुम—अहहीन पुष्पों को
गंध सिंच घास पौधा में खोजते आओ।'

पंजाबी नयी कविता में भी क्षणसत्य-सौन्दर्य अभिव्यक्ति पा रहा है। कवि स्वर्ण की युग्म कविता से कुछ पंक्तियाँ इस संदर्भ में उद्धृत हैं—

आह
ये क्षण—
समय के कोमल परों से उतार कर बाँध लूं।

विश्व कविता में एकाकीपन की पीड़ा का बोध मृत्युबोध के चलते ही उभरा है। असहाय जीवन का भार वाहक मानव भीड़ में भी स्वयं को नितान्त अकेला अनुभव करता है। बदलते हुए मानदण्डों ने उसे समस्त समास्याओं से जूझने के लिए अकेला छोड़ दिया है। एकाकीपन मानवीय कुण्ठाओं के अनेक कारणों में से एक है। यान्त्रिक युग की इस देन से मनुष्य भीतर ही भीतर टूट गया है वह युग की यान्त्रिकता और जीवन की यान्त्रिकता—एक रसता—को जिसवर्ग की कविता में अनुभवता है—

मैं फिर यहीं वापस आ गया हूं—यान्त्रिक
श्रम की अनुभूति अपने मूढ़ भाग्य पर लौट
आई है—दृढ़ विषय संगीत के साथ—
मैं छोड़ देता हूँ।

प्रसिद्ध रूसी कवि पास्तरनक की कविता में एकाकीपन का तीखा बोध एवं जीवन की भार विवशता की प्रभावशाली अभिव्यक्ति हुई है। कुछ पंक्तियाँ समुद्धृत हैं—

मैं अकेला हूँ

सब डूबा जा रहा है

ज़िन्दगी में चलना मैदान में चलना नहीं है।'

एकाकीपन की सर्वव्यापी अनुभूति विश्व-कविता में इस छोर से सबर उस छोर तक समाहित है। एकाकीपन का बोध मसिदकी के कवि सुई करनून की कविता बहुत पहल का वक्त में जीवन के प्रति एक असह्य भार के साथ स्पष्ट हुआ है।—

निर्जन के किसी कोने में

अकेले अपना सिर अपने हाथों में लिए

प्रतिहिंसक प्रश्न की तरह

तुम यह सोच-सोच कर रोते रहोगे कि

ज़िन्दगी कितनी खूबसूरत थी और कितनी व्यर्थ।'

अमेरिकी कवि इन्ग्रिड जोकर की कविता 'मैं नहीं चाहता' इसी संदर्भ की उपलब्धि है।

उपर्युक्त एकाकीपन का बोध मृत्युबोध, यान्त्रिकता, परिवेश गत जीवन पीड़ा तथा अन्तर्विरोधों के इस युग में कवि व्यंग्य-सृष्टि करने के लिए बाध्य है। प्रत्येक कवि जीवन की कड़वाहट को व्यंग्य की तल्खी में मूर्त करना चाहता है। वह समाज पर व्यंग्य करता है रूढ़ियों और परम्पराओं पर व्यंग्य करता है कभी-कभी स्वयं पर भी व्यंग्य करने लगता है। गत युगीन मान्यताओं के प्रति उसके अन्त करण में विद्रोह है इन मान्यताओं की रक्षक और आज के कवियों की उपलब्धि को नकारने वाली युग बोध से पिछड़ी पीढ़ी नये कवि के मार्ग में बाधक बनती है। ऐसी स्थिति में वह यदि इन परम्परावादियों और नए आयामों का मुंह बनाकर देखने वालों के प्रति व्यंग्य निवेदन न करे तो उसकी स्वयं की स्थिति व्यंग्य का विद्रूप बनकर रह जाय। समाज में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार आर्थिक विषमता और उससे कष्टों का अनुभव करता हुआ अलायों का कवि ईलियांग हाग एक व्यंग्य सृष्टि करता है—

इसलिए मैं सोचता हूं कि रिटायर होने पर

मैं राजनीति में हिस्सा लूंगा

या कोई व्यापार कर लूंगा, क्योंकि सरकारी नौकर

कभी जल्दी अमीर नहीं हो सकता।"

सम्प्रति युग का रचनाकार विसंगतियों के कारण असन्तोष का अनुभव कर रहा है इस युग को यदि भय और असंतोष का युग कहा जायगा एक बड़ी सीमा तक सही होगा। बीट कवि पाल ब्लैकबर्न ने असंतोष को अभिव्यक्ति दी है।

'मेरे असंतोष की आड़ी वक्र रेखाएं
मेज के इधर उधर मँडरा रही हैं
सुस्त मन्द चेतन मद मस्त
मन को मित्रा से भर रहा हूं।'

ऐड्रियन मिचेल की कविता में व्यंग्य उपलब्धि देखी जा सकती है।

विश्व-कविता में नयी चेतना के प्रति अटूट आस्था नये कवियों के (टूटे हुए होने पर भी) विश्वास की प्रतीक है। नयी कविता की नयी चेतना के प्रतीक रूप सूर्य का प्रयोग लगभग विश्व के समस्त कवियों में मिलता है। किसी किसी कवि ने सूर्य को (अस्त होते हुए सूर्य को) पुरानी परम्परा और आस्था का प्रतीक भी माना है। आज की सार्वभौमिक काव्य चेतना का प्रतीक सूर्य विभिन्न राष्ट्र विभक्त भूखण्ड को चेतना कोणों से परस्पर जोड़ता है। कविता के माध्यम से विश्व-मानव की यह एकता राजनैतिक दलबन्दियों का पर्याप्त जोर होने पर भी विश्व-मानव की एकता की सूचक है साथ ही विश्व-हृदय के एकतान और समान बोध का प्रमाण है। उपमान रूप में भी इस युग की कविता में सूर्य का प्रयोग बहुत अधिक हुआ है। यह सूर्य-प्रयोग बहुत अंशों में बहुप्रयुक्त चाँद की प्रतिक्रिया स्वरूप भी हुआ है। विश्व-कविता में स्थान-स्थान पर निराशा परक कोणों से भी युग समस्याओं पर चिन्तन हुआ है। सूर्य का चेतना के प्रतीक रूप में तथा उपमान के रूप में अत्यधिक प्रयोग की एकरूपता अब से पहले विश्व-काव्य में नहीं देखी जा सकती। सामान्य रूप में सूर्य नयी चेतना को दहकती बिम्ब प्रतीकगत अभिव्यक्ति है।सूर्य-धूप भी चेतना की बिम्बमयी तरल उपलब्धि है साथ ही वह काव्य प्रक्रिया के अनेक पक्षों का उद्घाटन करती है।

डच कवि गैरिट आख्टेरबर्ग अपनी 'सूर्य' कविता में बन्धनहीन नयी कविता के संकेत देता है—

हमारे रक्त कोणों से उठकर "ओ वसन्त सूर्य
नदी में चूर दौड़ना है बन्धन मुक्त।'

कनाडा का कवि क० वी हूर्ज नयी चेतना के प्रति 'एलर्जिक' पुरानी पीढ़ी—जो स्वयं को मन्त्रकार मानती रही है—के प्रति पैगम्बर नहीं हो कविता में उनकी चमना को मृत होता हुआ सूर्य बताता है। नयी चेतना सूर्य को मन्त्रकारों ने झुठलाया किन्तु युग-बोध से कटे हुए ये मन्त्रकार अपने अस्त होते सूर्य के सहगामी होंगे इन्हें हथियार डालने पड़ेंगे। कुछ मन्त्रकारों ने यह

कार्य प्रारम्भ भी कर दिया है। नयी पीढ़ी का रचनात्मक आक्रोश इस कविता में सफल अभिव्यक्ति पा सका है नये प्रतीकों और बिम्बों के माध्यम से—

"व मगन
जिनकी सांसें उत्तर चुकी हैं
चुपचाप अपने जलाए जाने का इन्तजार कर रहे हैं
उनके पात्र भक्ति के उपहास व गा त से भरपूर हैं
जो मृत्यु के वसन्त की हरारत म और तेजी स नाचने लगती हैं
लाल रंग क उस गलीच पर
जो मन्दिर के भग्न तोरण से
उजलते सूरज तक बिछता है
पर द्रष्टा न वन प्रान्त मे वैठ
सूरज को देखा
धधकती हुई कालिमा जैसा
घूमते आसमान म
यह तुम्हारे नर्तन पर
स्तुतियाँ नहीं गा सका
भेड़ लोलुप तुम
सांड स हिंसा प्रिय
सूर्य पर गुर्राते
और ज्यादा कब्रें खोदने से थक कर
जब वह सांस लेने को रुका
तब चिता की आग में से जिन्दगी की कामना प्रकट
करती भेड़ को
पैगम्बर ने उत्तर देना भी उचित नहीं समझा
तुम पैगम्बर नहीं
एक आदमी ही हो उस देश क
जहाँ के लोग भेड़ें हैं। इसका संत
तुम्हारी तरह जवान
नहीं चला सकता। वह
अंधेरे आसमान में धुएँ की एक लहर
देखकर ही
अपने हथियार रख देगा
और मृत सूर्य क शव के समान छुप जा लेट जाएगा

अल्जीरिया का कवि अब्दुल महाब अलबयाती 'जगमगाओ ओ सूर्य' कह कर नये भाग का आह्वान करता है। मन्त्रकारा द्वारा विद्ध घायल सूर्य जीवन को अग्निकुण्ड सा जलाता है।"

श्री सुरेन्द्र के "कौन से सदर्भ दे दूँ" कविता सग्रह की 'सूर्यास्त्रिया कविता में मन्त्रकारा के 'चलता सूर्य' विषयक नकार' को व्यक्त किया है

पख सटके बकों ने
ठूँठ दखा पर बठे
मुँह बाए
भौचक सूर्य दखा
गर्दनें झुकालीं
सूरज को नकारा।'

दक्षिण अफ्रीका के कवि गाईवटलर के सृजन के लिए खुले हाथों पर सृजन स्वीकृति स्वरूप सूर्य चुम्बन अंकित करता है—

'यहाँ सूर्य का समतल आलोक पहले बिखरता है
निष्कपट धुली हुई किरणें
आँखों और चेहरे पर झुक जाती हैं
मरे शीतल खुले हाथों को चूमती हैं।'

ये कवि अपने जीवन के प्रत्येक क्रिया दाण को नये बोध से आलोकित करने के लिए विह्वल हैं— मेरे उन्मुक्त प्रवाहों पर सूरज सुख में या दुख म
आश्चर्य क्रोध या चुम्बना म ज्योति दे।'

कैरेबियन कवि ए० जे० सिमर अपने रक्त को प्रत्येक बूद

को, त्वचा के प्रत्येक रोम को चेतना सूर्य से प्रकाशित अनुभव करता है—

धूप आज मेरी हड्डियों म गहरा जा घुसा है
सूर्य मरे रक्त म मेरी त्वचा के नीचे रोशनी बह रही है
सूर्य शक्ति का ध्वज है जो धु धलाते सितारे पर
बरस रहा है।

यथार्थ जमी कविता का सकेत यही कवि सूर्य प्रतीक क माध्यम से देता है—

यह कल्पना सूर्य न अपनी लौह किरणों के बल
मदा की कीचड़ से उत्पन्न की है।'

एक दूसरा कैरेबियन कवि सैमुएल सेलवा मन्त्रकारों के सूर्य को पराजित करने की बात कहता है—

सूर्य।

मेरी पीठ पीछे सीमे निपोरत मैंने तुम्हें क्यों से
कून म मुंका दिया घन जंगलों की झाड़ियां बीच'

न्यूजीलण्ड की कविता में भी सूर्य का उपयुक्त सन्दर्भ म ही स्वीकारा गया है। नयी चेतना के सम्मुख खण्डित मतकार पार्टी का आत्मकथन कवि गोडन वैलिस की इन काव्य पंक्तियों म प्रकट हुआ है—

'मैं जो अब तक एक दम सीधा तना हुआ चलता था
गेहूँ की बाल की तरह झुक गया हूं
कमे विश्वाम करू कि मैं सह लूंगा प्रचण्ड आतप
सूर्य का साक्षात्कार कर सूंगा
अपनी रेंगती हुई परछाइयाँ नहीं देखूंगा।
अनुभव करूंगा कि अखण्डित हू।'

केरेबिया का कवि मार्टिन कार्टर पुरानी पीढ़ी के सूर्य का हार का देख पा रहा है—

सूर्य ने बड़ी जल्दी हार मान ली है उस सघर्ष में
जहाँ जय होती है वर्षा।

कोरिया का कवि को-वॉन रचनाकारों की नयी पीढ़ी को सूर्य चेतना प्राप्त कर नय बोध की प्राप्ति क लिए संदेश देता है—

आज रात समुद्र के गर्भ में सूर्य टकराता फिरेगा
कपाल का हाथ में उठाए
उसकी रोशनी में बटोरे मोतियों की तरह
... .
और तुम समुद्र! पूरे यौवन में होगे तब एक और
ज्वार उत्पन्न करना

इस सघर्षशील युग में जहाँ एक ओर मानव परिस्थितियों के दबाव से—विवश होकर आस्थाहीन हो रहा है वहाँ दूसरी ओर इस दबाव से अस्तित्व बनाए रखने क लिए प्रेरणा ग्रहण कर नयी आस्था के अकुर स्वर्ग में सजो रहा है। रूस क प्रसिद्ध कवि ब्लादीमीर मायकोव्स्की ने इस नयी अकुरित होती हुई जिजीविषा शक्ति को नए आठों म पढ़ा है—

'नन्ही एक मछली के पत्तों म मैंने
नए आठो की आत्माएँ पढ़ी।

रचनाकारों का एक वर्ग ऐसा भी है जो सम्प्रति युग का—परिवर्तित संवेदना को कह नहीं पा रहा है वहीं शुतुर्मुर्ग की तरह गत-बोध क रेत में मुंह गड़ाकर

नयी आवाजों' के प्रति बधिर बना हुआ है। यूगोस्लाविया के रचनाकार वैस्नापन्न इस स्थिति की ओर संकेत करते हैं—

> चारों ओर आग चल फिर रहे हैं
> पर मैं अपना मुंह नहीं मोड़ती
> क्योंकि मैं पुराने तूफानों की आवाजों में
> डूबी हुई हूं।'

यदि विघटित होते हुए जीवन मूल्यों और यथार्थ की विडम्बना को सहन करता हुआ मानव भीतर से आस्थावान और भविष्य के प्रति विश्वास से पूर्ण रहे तो अन्ततोगत्वा वह सफल होगा। अफ्रीकी कवि जैक्कोप का इस पर विश्वास पूर्ण है—

> 'रेत के सहरीले टीले
> धावाकुल हो चीखते हैं मेरे पद चिह्नों पर
> यदि मैं उन्नत सजा दूं बरखा मेघों की तरह मूल्य कक्ष
> तो क्या मैं स्वयं में जलद पुंजों का नहीं बोध दूंगा।

'यूगोस्लैण्डी कवि चार्ल्स वश मानता है कि विघटित होते हुए जीवन मूल्यों युग विघटन एवं मानव की कटु अराजक मन स्थितियां ही 'नए गीत को जन्म देंगी' अवगति से ही रूपाकृति जन्म लेगा।

> मन्तव्यकार पीढ़ी का संवेदन भोथरा हो गया है

वह नए युग के अन्तर्विरोधों की सही प्रतिक्रिया कह पाने में प्राय असफल हो रहा है। पर्मुवा का कवि इवान रिवेमरी 'कितनी धीमी है यह बोध की प्रति—क्रिया' कह कर इसी परिस्थिति से अवगत कराना चाहता है। कनाडा का कवि फ्रैंक डिवी पुरानी कविताओं को नष्ट करने का आह्वान करने के रूप में पुराने धारहीन बोध से पुरानी रूढ़ियों से मुक्त होना चाहता है—

> आज
> पुरानी कविताएं नष्ट करने का दिन है
> भारत से पहले ही उन्हें नष्ट कर दें।'

करबिया का कवि यह स्वीकार करता है कि हर युग में मठाधीशों द्वारा कुछ सीमाएं निर्धारित की जाती रही हैं किन्तु नयी पीढ़ी ने उन्हें हमेशा ही तोड़ा है यह ऐतिहासिक क्रम सत्य रहा है इसलिए यदि आज 'पुराना बोध और उसके सरसव्य औंधे पड़ रहे हैं टूट रहे हैं तो इसमें खोजने और विलाप करने की आवश्यकता नहीं उन्हें अपनी स्थिति पर संतोष करना चाहिए।' ह० ए० कौसीमार की कविता में इस सत्य को वाणी मिली है—

> विनाशी उग्र हो रहे हैं परम्परा के विरोधी

"— — —पैगम्बर पादरी और राजा सभी—
सीमाएँ साधते रहें और न टूटता रहीं।"

एक सीमित परिधि में रहने वाली उर्दू कविता में भी नया बोध और नयी मान्यता जन्म ले रही है। उर्दू का कवि 'मेरे घर' 'यार के कूचे' से जाते हुए अपने अनाज की कल्पना से हटता जा रहा है।

नया परिवेश के साथ नयी कविता में नया भाव और विषयों के प्रति नया दृष्टिकोण भी स्पष्ट हुआ है। ताजगी, सहजता और बौद्धिक झुकाव यही नाम है। इसी कवि ज्यार्जी दुवानोव उपयोग कविता में नए भाव की ओर इंगित करता है—

'शायद इसी सदी का शुद्ध उपयोग हो,
कि मैं हवा में साँस ले रहा हूँ
कि मेरा ओवर कोट बायीं तरफ
सूर्यास्त की रोशनी में नहा रहा है
और दायीं तरफ सितारों में डूबा जा रहा है।"

चेकोस्लोवाकिया का कवि जार्ज सुई बारेजोज कुत्ता, दरवाजा और पेड़ पत्तियों की दोस्ती में जीवन बिताना खूबसूरत समझता है।'

प्रेम विषयक दृष्टिकोण भी नयी कविता में बदले हुए कोणों से देखा जा रहा है। उसके प्रेम स्वीकरण में बौद्धिक झुकाव और एक बँधी-बँधी सी तटस्थता है इस निस्संगता के कारण प्रेमानुभूति अधिक यथार्थ स्थिति पर आ गई है अति भावुकता और गीलापन से उसे निजात मिल रही रही है। स्वच्छन्दतावादी प्रेमदृष्टि नयी कविता से प्राय: हट चुकी है। नयी कविता के कवियों का एक वर्ग वासनाहीन प्रेम को मान्यता नहीं देता, कहीं-कहीं वासनात्मकता नयी कविता में अति तक पहुँच गई है यह उसका स्वस्थ पक्ष नहीं है। किन्तु वासना-हीन प्रेम की स्थिति यथार्थ के विरुद्ध है और नया यथार्थ की भूमि से दूर नहीं रहना चाहता। प्रेम को स्वच्छन्दतावादी कल्पना की परिधि से निकाल कर उस नैसर्गिक रूप में अनुभव करने का श्रेय आज की विश्वकविता को है। प्रेम का अशरीरी रूप वासना के मार्ग से ही आता है अत: वासनाहीन होकर प्रेम की अन्तिम पवित्रता को प्राप्त नहीं किया जा सकता। न्यूजीलैण्ड का कवि मौरिस डुग्गन अपनी कविता में बदले हुए कोण से प्रेम पर विचार करता है—

'जहाँ मेरी वासना है
निश्चय ही वहाँ मेरा प्रेम भी है
जहाँ अत्यधिक प्रेम है वहाँ वासना भी है।"

प्रेम का एक स्वरूप यह भी है जहाँ कवि सम्पूर्णतः वासनात्मक साये में होने पर भी जीवन संघर्ष को न भूलने के कारण वासना को सम्पूर्णतः जी नहीं पाता। युग-दबाव ने मानव को यहाँ तक नपुंसक बना दिया है। बंगला के कवि विनय मजुमदार की कविता में इस बोध की स्पष्टता मिली है—

जागृत वासना की स्थिति में भी
नहीं देख पाता हूँ विकसे हुए कसे हुए फूल।'

निसिम इजिकिएल आज की ईमानदार और यथार्थ परक प्रेम अनुभूतिक वासना से परे नहीं मानता—

'प्यार करने वालों में बीच ज्ञान का आदान प्रदान होता है
होगा यह बात समयानुकूल नहीं है।"

मन्त्रकार समीक्षकों ने नयी कविता में अभिव्यक्ति पाई जाने वाली वासना और कुंठा की जितनी निंदा की जा सकती थी की है और इसी आधार पर उन्होंने नयी कविता की उपलब्धियों को सम्पूर्णतः नकारा भी है। वासना का परिणाम मानव है यदि वासना निंद्य है तब मानव भी निंद्य होगा। कदाचित इस प्रश्न का उत्तर मन्त्रकार पीढ़ी के पास नहीं है। काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त वासना की आलोचना कराने वाले मन्त्रकार समीक्षक वासना प्रसूत मानव को परम पवित्र मानते हैं यह अन्तर्विरोध है यह उनकी समीक्षा का ढोंग है इसी द्वंद्व बुद्धि से क्या वे कविता का सही मूल्यांकन कर सकते हैं? आज की विश्व-कविता दो विरोधी कोणों पर सृजित हो रही है। बीट कवि पाल ब्लैक बन—

शीतल शारदीय प्रकाश
(पृथ्वी घूमती रहती है)
सांयकाल के झरोखे को
भर रहा है ″ मैं अकेला
बिस्तर पर बैठा हूँ।

जैसे संत्रस्त व्यक्ति वादी पीड़ाकारक बोध को जीता है तो इजराइल का कवि बर्नार्ड काप्स युद्ध विभीषिका की सम्भावना से समाप्त हो जाने वाले विश्व के लिए शान्ति बम चाहता है जिससे दुनियाँ गुलाबों से ढक जाए। यह समष्टिवादी चिन्तन नयी कविता का दूसरा छोर है।

—सुरेन्द्र उपाध्याय

●●●

आलोचनात्मक विवेचन

सकेतिका

सामयिक वगला कविता	सुरेन्द्र उपाध्याय	१
हिन्दी की नयी कविता उपलब्धि यपना	,	१३
उदू का नयी कविता	.. राही मासूम रजा	२५
आधुनिक मराठा कविता एक विहगावलोकन	चन्द्रकान्त देवताले	३५
वतमान गुजराता कविता	रघुवीर चौधरी	४१
आधुनिक पजाबी कविता की प्रवृत्तियाँ	.. शाति देव	४६
भारतीय अग्रेजी कविता एक अनुलेख	पी० लाल	५६
आधुनिक मलयालम कविता	एन० चन्द्रशेखरन नायर	५८
आधुनिक तमिल कविता	मलिक मोहम्मद	६०
कन्नड म नयी कविता	गुरुनाथ जोशी	६६
समसामयिक उडिया कविता	विनोद चन्द्र नायक	७२
आधुनिक तेलुगु कविता	अमरेन्द्र चतुर्वेदी	७५

सामयिक बंगला कविता

नयी पुरानी पीढ़ी और नये पुराने युग बोध का संघर्ष विश्व की अनेक भाषाओं की तरह बंगला भाषा में भी चला है।

रवीन्द्र ने साहित्य की अनेक विधाओं में लिखा। कुल मिलाकर रवीन्द्रनाथ के व्यक्तित्व ने युगीन कृतिकारों को आकर्षित तथा आक्रान्त किया। आक्रान्त इस अर्थ में कि युगीन कृतिकारों का रवीन्द्र के जीवित रहने तक (आज तक भी) उचित मूल्यांकन नहीं किया जा सका है। यह तथ्य व्याख्या की अपेक्षा नहीं रखता कि रवीन्द्र का किसी भी कृतिकार ने पूर्ण अनुसरण नहीं किया यदि किया भी तो वह पूर्ण सफल नहीं हो सका। यही कारण है कि रवीन्द्र का 'रवीन्द्रियन' रूप में परवर्ती कृतिकारों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

रवीन्द्र के समय में ही रवीन्द्र की रचनादिशाओं से सर्वथा मुक्त विविध दिशाओं में कतिपय रचनाकार प्रतिभा के साथ स्वतन्त्र और सशक्त सृजन कर रहे थे। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिल जाने के कारण रवीन्द्रनाथ के समकालीनों का सम्यक् मूल्यांकन नहीं हो सका।

काजी नजरुल इस्लाम के काव्य में जाने-अनजाने में ही सही, रवीन्द्र प्रभाव (चाहे जिस रूप में हो) से मुक्ति प्राप्ति अभियान का प्रारम्भ हो जाता है। नजरुल विद्रोह के कवि हैं कुछ-कुछ वैसे ही जैसे कि हिन्दी के निराला किन्तु इस अन्तर के साथ कि निराला का अपना एक जीवन दर्शन था नजरुल का सुनिश्चित जीवन दर्शन नहीं है। उनके विद्रोह की क्या परिणति है कदाचित इससे वे पूर्णत भिज्ञ नहीं हैं।

बंगला का आधुनिकतम काव्य बुद्धदेव वसु से उसी तरह प्रारम्भ होता है जैसे हिन्दी में अज्ञेय से। और बुद्धदेव से लेकर शक्ति चट्टोपाध्याय तथा सुनील तक नये बोध और नये शिल्प के अनेक रूप तथा सम्प्रयोग हैं। बुद्धदेव वसु में यथार्थ की गम्भीर पकड़ और बौद्धिकता तो प्रेमेन्द्र मित्र में प्रतिक्रिया रूप में सामाजिक यथार्थ के साथ रोमांटिसिज्म जीवनानन्द दास में प्रकृति और जीवन के सम्यक् ऐन्द्रियिक बोध और फिर बाद के नये कवियों में कुण्ठा, कुत्सा, घृणा, पलायन, निस्सहायता की पराकाष्ठा (खासतौर से नये बीट कवियों-शक्ति चट्टोपाध्याय और सुनील में) बंगला कविता की यह पूरी यात्रा यथार्थ की जमीन पर हुई है, कहीं दृष्टि कामरेडियन है तो कहीं अमरिकन सभ्यता का प्रभाव।

सामयिक बंगला कविता में यथार्थ की सच्ची पकड़ है। 'रवीन्द्रियन' वायवीय और गीलापन नहीं है। इसमें सर्वत्र एक ताजी बौद्धिकता है जो भावनात्मकता

को यहां तक स्वीकार करती है जितनी की अपेक्षा है। रचनाकार यथार्थ भूमि का पकड़ कर ही कल्पना का सहयोग स्वीकार करता है। उसकी कल्पना निर्बाध और जीवन मुक्त नहीं है। मोहितलाल इस तथ्य को समझ पाये हैं—"बँगला साहित्य म अब तक मुख्यत भाववाद का ही बोलबाला रहा, बंकिम की कल्पना में एक बड़े आदर्श का भाव है। रवीन्द्रनाथ की कल्पना में वस्तु तथा भाव की एक समन्वय चेष्टा है और जिनका हम भारतीय उपन्यासकारों म सर्वाधिक प्रगतिशील तथा क्रान्तिकारी समझते हैं वे भी विश्लेषण करने पर वस्तुवादी नहीं पाय जात बंकिम चन्द्र की कल्पना मे वास्तविकता एक बाधा के रूप म नहीं थी, उनकी कल्पना थी सम्पूर्ण निरंकुश और बेरोमैंटीक। रवीन्द्रनाथ की कल्पना म वास्तविकता और रूपान्तरित होगई है मानो वास्तविकता की वास्त विकता ही लुप्त होगई है। शरतचन्द्र की कल्पना में वास्तविकता का समस्या जटिल हो चुका है वास्तविकता क लिए एक प्रबल आवग की सृष्टि हुई है। इस विचारा से शायद बँगला साहित्य का वस्तुवाद आरम हो गया है। इसक आगे जो साहित्य होगा उसमें वास्तविकता के साथ वास्तविक रूप से निबटना पड़ गा।' मोहित लाल ने यद्यपि यह बात उपन्यासों के यथार्थ के लिए कही है तथापि यह अपनी सम्पूर्ण अभिव्यजना के साथ नयी चेतना स पहल की कविता पर सपूर्णत लागू होती है।

सम्प्रति युग के नये स्वीकार की कविता में यथार्थ की सही स्थिति होने के कारण मानव को (बाह्य और आन्तरिक दोनो रूपा मे) समुचित आदर मिला है और उसके परिवेश के लिए उज्ज्वल भाव भी। इस कविता में आधारहीन आदर्शों को नहीं पाला जारहा है। य आदर्श रचनाकार क दायित्वबोध का उस सीमा तक नहीं समर्थन पाते हैं जिस सीमा तक जाकर आपदीय नहीं होजाते। बँगला कविता का यथार्थ किसी विचार के लिए न होकर वादमुक्त यथार्थ है। यथार्थ चित्रण के कारण हिन्दी की नयी कविता की तरह बगला सामयिक कविता पर भी गत युगबोध के प्रहरी आलोचका न अनेक तरह स आक्षेप किए हैं। "कहा जाता है कि अति आधुनिक साहित्य दाग साहित्य है प्राचीन साहित्य रामायण है तो यह कामायण है। अति आधुनिक कविता का कामो-द्दीपक तथा शरीर की पूजा करन वाली कलुषित वासना भी कहा गया है। मैं समझता हूँ यह बिल्कुल झूठा और बेबुनियाद लांछन है। हाँ जिन बातों को अब तक हमार समाज के नीतिवाद साहित्यका ने केवल अस्वीकार करके ही उड़ा देना चाहा था और जिसका नतीजा हमारे सामने बराबर आता रहता था उनको अति आधुनिक साहित्य ने सबके सामन लाकर रख दिया है। यही हमारे बुजुर्गों के निकट दुर्नीति है। अति आधुनिक साहित्य का कुछ नतासी समालोचका ने 'जघन्य साहित्य गुसलखाना साहित्य

कहा है इस आक्षेप का उत्तर यह है कि अति आधुनिक अपने गुसलखाने को हमारे पाखानों के रसोईखाने से अधिक साफ सुथरा रखते हैं।

विश्व का कोई भी विषय अश्लील नहीं है—न हो ही सकता है। कृतिकार की प्रयोजनीयता को लेकर यह प्रश्न उठाया जा सकता है। किन्तु प्रयोजनीयता अश्लील नहीं हो सकती वह या तो परिष्कृत हो सकती है या फिर भोंडी। अक्सर वानप्रस्थ और सन्यास अवस्था को पहुँचे हुए कृति समीक्षक काम वासना 'रति' अथवा इन जैसे ही दूसरे शब्दों को देख-सुन कर ही भड़क उठते हैं। शब्द के स्थूलत्व को ही पकड़ कर उछालना कहाँ तक बुद्धि संगत है? शब्द की अभिधाशक्ति नये बोधप्रयोग में कितनी अक्षम है—इसी कारण नये रचनाकारों का यह इष्ट नहीं है—यह स्पष्ट हो चुका है। यदि रचनाकार सम्भोग रूपक काम परक प्रतीक से अभिनव भावामृत संकेत देता है स्थूलत्व और मांसलता भी हम अरूप शब्दों को महामही भूमि पर उतार सकते हैं यह कवि के प्रयोग कौशल और उस आशय पर निर्भर करता है।

बंगला की सामयिक कविता पर बल्कि हिन्दी नयी कविता पर भी यह आरोप लगाया जाता है कि वह अस्पष्ट है। कविता को एक स्तर तक स्पष्ट होना ही चाहिए। प्रश्न उठ सकता है कि क्या यह अस्पष्टता छायावादी कविता की वह अस्पष्टता तो नहीं है (छायावादी कविता अब अस्पष्ट नहीं रह गई है।) जिसे कभी मध्यकालीन और द्विवेदी युगीन आलोचक पीढ़ी ने देखा था। हिन्दी के इतिहास में 'पूछिए केशव की कविताई' कहकर केशव की कविता को भी अस्पष्ट माना गया था कम से कम वैसा संकेत तो किया गया था किन्तु अब केशव की कविता भी अस्पष्ट नहीं रह गई है। बतौर नमूने के सन् १६२६ के आसपास के विशालभारत के किसी अंक में श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने प्रसाद की 'आकाश द्वीप' कहानी को निरुद्देश्य और सर्वथा अस्पष्ट बताया था। आज पाठकों के लिए उक्त कहानी कितनी अस्पष्ट है?

सामयिक बंगला कविता ने प्राचीन रूढ़ियों और अनात युगों के संस्कार को छिन्न भिन्न कर दिया है। वह उन भूमियों तक बढ़ आई है जहाँ प्राचीन संस्कारों को न केवल टस लगी है बल्कि उन्हें टूट जाना पड़ा है। अनेक स्थलों पर ऐसा भी हुआ है कि कविता काव्य की पटरी से नीचे भी उतर गई है किन्तु यह सम्भव भी है और स्वाभाविक भी। स्वप्न विश्वास ने इस तथ्य को हृदयंगम किया है यह जो साहित्य है उसमें सम्भव है त्रुटियाँ हों रहें। युग युगान्तर के बंधन को एक दिन में तोड़ना चाहते हैं। टूटा तो टूटेगा। सीमित संस्कारों

के संकीर्ण दायरे में शान्ति भी है शृंखला भी, किन्तु वहाँ जीवन की वह चंचलता कहाँ और मुक्ति का आनंद कहाँ?'

बुद्धदेव वसु प्रेमेन्द्र मित्र अचिन्त्यकुमारसेन गुप्त आदि आधुनिक कविता के नयी माने जाते रहे हैं। जीवनानन्ददास एक अति महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं बंगला की सामयिक कविता में। इस शृंखला में और भी अनेक नाम हैं—बहुत नहीं लेकिन कम भी नहीं। बंगला की सामयिक कविता नाम विशेषों में जीवन्त है समूह रूप में भी और बल्कि धारा रूप में भी। धारा प्रमुख है किन्तु बूंद भी।

नये युगबोध का प्रहरी बंगला कवि मृत्यु जीवन की अन्तिम नियति है इस जानता है अपने नगण्य व्यक्तित्व को भी जानता है, किन्तु फिर भी उसमें एक पूर्णता का भाव है एकाकीपन का ऐसा बोझ है जिसे वह कविता में स्पष्ट कर देना चाहता है

बुद्धदेव वसु की 'आर किछु नाही साधा" कविता में उपर्युक्त युग अन्तर्द्वन्द्व और दुविधा व्यक्त हुई है—

> "नील आकाश के नीचे मेरी स्तुति का गान मुखरित नहीं होगा
> मृत्यु का कड़वा कास घूंट मेरा चरम भाग्य है
> मैं जानता हूँ इक्कीसवीं सदी की कोई सप्तदशी मेरी कविता को
> *धकिनी स्नात अगले के नीचे नहीं पढ़ेगी*
> तुमको जो मैंने सब म धा मे—मर्म म प्राणों मे मन मे पाया था
> "यहा बात मैं आकाश धरणी घास को तथा समुद्र व काल म
> कहना चाहता हूँ।
> इस परिपूर्णता का बोझ मुझसे अकेले अकेले नहीं ढोया जाता
> इसलिए हजारों म अपने को लाखो गानो में बाँटना चाहता हूँ।'

अचिन्त्यकुमारसेन गुप्त के प्राणों म युगान्तर की मृत्यु की निशा मूर्छित है।' लेकिन फिर भी उनके बोध म आस्था और समष्टिपीड़ा को व्यक्ति रूप म अनुभवने की मैत्रीयुक्त चेतना भी है—

> अपनी आत्मा म करोड़ों मनुष्यों के अश्रु की बाढ़ सुन पाता हूँ
> मूर्य के हृदय म कौनसी भूख है
> मेरी आत्मा जानती है
> एक कीड़े के डँसे का अस्पष्टतम वेदना
> मुझे दुखी करती है
> घास की सभा मे मेरा प्राण हरा हो जाता है

मर प्राण में विन्व वेदना का घसा है।"

क्षय होत हुए जीवन और टूटती हुई परिवेशगत क्षमताको सामयिक
बँगला कविता म स्थान मिल रहा है। सघष टूटना और मिटना म मन्द्र मिश्र की
कविता 'महासागर रे नामहीन कूल' म स्पष्ट हुआ है—

'महासागर क नामहीन कूल पर अभागों क बन्दर म
दुनियाँ क कितन ही टूट जहाजों की भीड है
जो माल ढोत-ढोते टूट गए हैं
जिनक मस्तूलों क धुर्रे उड गए हैं
जिनक पास सीन की भाप स जल गए हैं
उन सब जहाजों का यह आश्रय नीड है।"

सामयिक बंगला कविता में जीवन क विविध पक्षों का उद्घाटन हो
रहा है। व्यतीत युग-विषय चिन्तन से यह कविता बहुत आग बढ़ी है। जहाँ इस
कविता न सामन्ती विषयों और सीमित चिन्तन-शैलियों को पीछ छोडा है वहीं
नगण्य उपकरण स लकर महान शिल्पों तक क प्रति सच्च और सवथा
मौलिक एव नवीन दृष्टि साथ ही युद्ध सन्तृष्णा-मायामा का सहार एव
अधिकाधिक आग्रह युक्त जिज्ञासा का स्वीकारा है। कल्पना का उपयोग जीवन
स्थितियों से कटकर यथार्थ स परे स्वीकार करना नए बगला कृतिकारों को
अभीष्ट नहीं है। इसलिए सर्वत्र अभिव्यक्ति में जीवन्तता बनी हुई है। विषय
विस्तार कोण स बुद्धदेव बसु ने प्रेमेन्द्र मित्र की कविता क विषय में लिखा है,
किन्तु यह वक्तव्य इसी आस्था क साथ सम्पूर्ण बंगला कविता पर लागू होता
है। उनकी कविता दुनियाँ की छोटी स छोटी चीज स लकर मनुष्य क भाग्य
विधाता क चरणप्रान्त तक विस्तृत है। पुरान अखबार आदि क मकान से
लकर सीमाहीन आकाश में घूमत हुए ग्रह उपग्रहों तक उनकी गतिविधि है
मनुष्य की व्यर्थताहीनता तथा दुबलता क सम्बन्ध में गहरी चतना ही उनके
काव्य का मूलमन्त्र है। मनुष्य क घर में उसका देवता होता है किन्तु कल्पनाओं क
अभाव से ज्ञात होता है कि देवता कहीं नहीं है।

इन तीन कविया में आक्रोश छटपटाहट, घुटन वर्जनाएँ कुठाएँ त्रुटिपूर्ण
सन्दर्भों में गलत शिल्प क माध्यम स अभिव्यक्ति पा रही हैं। त्रुटिपूर्ण सन्दर्भों
म इसलिए कहना पड रहा है कि उनकी अभिव्यक्ति वहाँ मजी हुई नहीं है।
विषय की स्थूलता तो समझी जा सकती है किन्तु प्रेषण की स्थूलता अथवा
भौंडापन अहमियत देन की बातें हैं? कविता साधा अभियान नहीं उसमे
ध्वन्यात्मकता अथवा सारतिकता ही विशेष होनी चाहिए।

सुनील गंगोपाध्याय की कविता में अनेक स्थलों पर इस उपलब्धि का अभाव है कथ्य के अस्छे-बुरे होने से सरोकार न होकर अभिव्यंजना से सरोकार होना चाहिये। सुनील की कविता अनेक स्थलों पर अखबार की खबर जैसी हो जाती है—

मर्द के साथ सोने और खाना पकाने के सिवा
सारे काम औरतें जानती हैं
मगर सारे काम गलत जानती हैं।"

कविता तर्क नहीं है कहीं छूटते हुए तर्कों को गहमान की सान्तिवता है। कविता में सहजता अपेक्षित किन्तु सहज है इसीलिए उसे असाधारण भी होना चाहिए और असाधारण होते हुए भी सहज। बंगला की अधिकांश सामयिक कविता ऐसी ही है किन्तु फिर भी सुनील मुखोपाध्याय स्वयं की कविता में तीखा व्यंग्य समाज की कुरूपता को खण्ड-खण्ड कर देने वाली सबल आवाज जर्जर अवस्था के प्रति प्ररणास्पद क्रोध लिए हुए हैं जो यथार्थ चित्रण के साथ साथ प्रतीकात्मकता एवं बिम्बात्मकता के सहयोग से प्रभविष्णु बन सका है फिर भी उसमें एक सहजता और सीधापन है।

वर्तमान युग की कटुता और अस्थिरता ने अस्तित्व के नकारात्मक भाव को ही अधिक पुष्ट किया है। व्यक्ति की प्रतिक्षण की स्थितियों में द्वंद्व बना हुआ है। इस द्वंद्व अथवा शहरी जिन्दगी का जीवन की विवशता उसे अन्तरतम क्षणों में भी एकतान नहीं होने देती। परिपक्व वासना क्षणों में भी वह संशय असुरक्षा और जीवन की पेचीदगी के कारण पूर्ण सम्पृक्त नहीं हो पाता। विनय मजूमदार की पहली कविता में यह मन स्थिति मुखर हो सकी है—

जागृत वासना की स्थिति में भी नहीं देख पाता हूँ
विकस हुए कसे हुए फूल
क्या देखूं मानसी ?"

समय और क्षण का पानी की पर्त की तरह मुट्ठियों से सरक जाना स्खलित होता हुआ जीवन और उस पर समय की चोट और रुग्ण मन स्थितियां इन सब तक पहुँचने के लिए युग ने मनुष्य को विवश किया है। शक्ति चट्टोपाध्याय की 'गुलचर' कविता में उस बोध का प्रकट होना पड़ा है—

जैसे सिड़कियां टूट जायगी इतनी तेजी से मुझे आलिंगन में भरकर
गर्म सलाखा से दाग कर मेरी छाती बार-बार
चला गया समय और अब प्रतिक्षण
बंधे हुए पागल घोड़े की तरह पश्चात
हर सिड़की के नीचे पत्थर पर बजती रहती है"

और यको मुई उन्मास वेश्याम्रा के प्रति एकान्तमोह मुझ में।
सोचता या बीमार सिर्फ देह है मन नहीं और जगत नहीं है मन
नहीं। या भी हो।"

प्रेम जैसे कोमल व्यापार में भी बंगला कवि बौद्धिक हो उठा है। प्रेम के चरम क्षण में भी वह सामाजिक बंधनों को न तोड़ पाने वाली अपनी विवशता भोगता है। भोगता इसलिए भी है कि उसमें उसे समाजगत एक स्वस्थ पक्ष दिखाई देता है। मानस राम चौधरी ने इस कविता में अभिव्यक्त किया है—

"तुम्हारा शरीर अकलुष ही रह गया।
सिर्फ मेरी ये उंगलियां झरे पत्तों सी सूख गईं
और कुछ नहीं हो सका गम अंधेरे में और कुछ
नहीं हो सका। बुरा नहीं हुआ ""क्या तुम्हारी बाँहें सवाल बन
गई थीं ? क्या ?
दूसरों की जीभ का स्वाद हम नहीं बनें
नहीं बनें दूसरों की बात चीत।'

अजित दत्त की कविताओं में एक विशेष प्रकार की दार्शनिकता (सर्वत्र नहीं) का पुट है। वे प्रेम को यथार्थ के धरातल पर स्वीकार न करके जन्म मरण के परे की वस्तु मानते हैं अथवा कहा जाय कि जीवन और मृत्यु की संधिवेला में प्रेम प्राप्ति की वांछा करते हैं। यदि प्रेम प्राप्त करना है तो जन्म-मरण से ऊपर उठना होगा। फिर भी सम्भव है कि प्रेम तत्त्व न भी प्राप्त हो और उसके लिए निरन्तर भटकना पड़े।

सुभाष मुखोपाध्याय की कविता में भी प्रेमगत उपलब्धियां हैं किन्तु उनका प्रेम सामान्य रति और सामान्य स्थिति का प्रेम है। (अजितदत्त जैसी किंचित रवीन्द्रियन दार्शनिकता नहीं है) किन्तु फिर भी विशिष्ट या सामान्य में भी अलग तरह से सामान्य और गौरवमय। कुछ सविशेष संदर्भों में ही सुभाष की सौन्दर्य और प्रेमगत उपलब्धियाँ होती हैं जिनमें कहीं निस्सन्देह वासना स्तर भी बने ही रहते हैं चाहे जितने झीने और चाहे जितने सूक्ष्म। किन्तु यह वासनागत अभिव्यक्ति सविशेष है किंचित बौद्धिक किंचित तटस्थ, सर्वथा काव्योचित।

जीवनानन्ददास में बंगला की सामयिक कविता अपने सम्पूर्ण गौरव के साथ जाग्रत हो उठी है। वे परम्पराओं से हटकर लिखने में अत्यन्त सफल रहे हैं। बुद्धदेव बसु का कथन है कि जीवनानन्द जिद्दी तरीके से अपने आप में समाए हुए हैं। वे परम्परा के स्वदेश को त्यागकर एक ऐसे विस्तरी के देश को

अपनाते हैं जिसम वे ही वे हैं। उनकी दुनियाँ उलझी हुई छायाओं तथा टेढे मेढे जलाशयों चूहा उल्लू चमकादड़ चाँदनी छिटके हुए जगलो म फुदकते हुए हिरणों प्रभात तथा अन्धकार बफ की तरह ठंडी म त्य कन्याओं और महान मीठे समुद्र की दुनिया है। ऐसे नयी चेतना क वाहक जीवनानन्द न पर्याप्त प्र म कविताएं लिखी हैं। 'वनलता सेन उनकी अत्यन्त प्रसिद्ध प्र म कविता है जिसने रुचि सम्पन्न लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। आकाशलीना' कविता म उनका प्र मविषयक दृष्टिकोण समझा जा सकता है—

सुरजना वहाँ पर तुम मत जाओ
उस युवक के साथ बातचीत न करो
लौट आओ हे सुरजना
नक्षत्र की रुपहली भरी रात में
लौट आओ इस मदान में तरंगों में
लौट आओ मेरे हृदय म।
दूर से दूर—और दूर
युवक के साथ तुम और न जाओ
उसके साथ कैसी बातें ? उसके साथ ?
आकाश की आड में, आकाश म
मिट्टी की तरह हो तुम आज
उसका प्र म घास होकर उगता है।
सुरजना।
तुम्हारा हृदय आज घास है
वातास के ऊपर वातास
औ आकाश के ऊपर आकाश है।

विमलचन्द्र घोष का 'सावित्री' नाम स एक काव्य ग्रन्थ प्रकाशित हुआ उसके तिलोत्तमा नामक सग मे प्र मविषयक दृष्टि का परिचय मिलता है। यद्यपि यह कविता रवनसौम्य और प्रेमबोध से पर्याप्त हटकर नही लिखी गई है किन्तु फिर भी उसमें यहाँ वहाँ नवीनता है और यथार्थभूमि का भी कवि जहाँ-तहाँ छूता चलता है।

अरुण कुमार सरकार म भी प्रेमकाव्य बच्चा है। टूटते हुए वर्तमान जीवन म अभाव ही अभाव है यदि कही कुछ एसा है जिस संचय क परे माना जा सकता है तो यह है प्रेम और मृत्यु—

इस अगहन में नहीं कोई आनन्द है

कलकत्ते की संध्या धुएं से धूसर मन में
जो सान्त्वना है तो इतनी कि तुम हो और मृत्यु है।'

जीवन की विडम्बनाओं से चोट खाया हुआ मनुष्य वर्तमान युग की सभ्यता और उसकी औपचारिकता से किसी स्तर पर ऊब चुका है। परिणामस्वरूप वह जीवन क्षेत्र में कुछ नया चाहता है कुछ परिवर्तित। सौंदर्य के शहरी मुखौटे उसे अब आकर्षित नहीं करते। वह कुछ ऐसा चाहता है जो इसी देश की उपज है। जिसमें एक अनगढ़पन है जो सहज है स्वाभाविक है साथ ही एक खुलेपन का बोध। मंगलाचरण चट्टोपाध्याय की यह दृष्टि है किन्तु सम्पूर्ण नवीनता के साथ साथ नहीं।

बँगला की सामयिक कविता में यद्यपि प्रेम विषयक दृष्टिकोण व्यतीत प्रेम स्वीकार से पर्याप्त स्वरों पर भिन्न है फिर भी यह कहने और स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि यह स्वयं का प्रेम और सौंदर्य कोणों की दृष्टि से व्यतीत बोध से पूर्णतः मुक्त नहीं कर पाई है। उसमें कहीं गीलापन और एक स्वरगत बीमार सा सम्पृक्ति है।

इस कविता में प्रकृति चित्रण कोणों में भी परिवर्तन हुआ है यह स्वाभाविक भी है। बुद्धदेव बसु ने जीवनानन्द के माध्यम से यह बात किंचित स्पष्ट की है एक अर्थ में सभी कवि प्रकृति के कवि होते हैं, पर जीवानानन्द एक विशेष अर्थ में ही ऐसे हैं। वह प्रकृति में—भौतिक प्रकृति में—और उसके कुछ विशेष पहलुओं में डूबे हुए हैं। वे प्रकृति पूजक हैं पर किसी भी अर्थ में अफलातूनवादी या वेदान्ती नहीं हैं बल्कि वे प्राक् सभ्यता के युग के एक ऐसे व्यक्ति हैं जो प्रकृति को वस्तुओं से इन्द्रियों की सतह पर प्रेम रखते हैं और ऐसा वह पूर्णता के चिन्ह प्रतीक या नमूने के रूप में नहीं करते बल्कि वह उनसे जो वह हैं उसी होने के लिए प्रेम करते हैं। वे केवल देखने से संतुष्ट न रहकर प्रकृति को स्पर्श और गन्ध की उलझी हुई जंगली वृत्तियों के माध्यम से प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं। उन्हें चिड़िया के परों की गन्ध से तथा जिस पानी में चावल अभी धोया गया है उससे प्रेम है और वे चाहते हैं कि वे किसी महान श्यामल तृण माता के गहरे मीठे गर्भ से घास के रूप में उत्पन्न होते। उन्हें अब यहां तक कि विस्मृतविस्माकार वस्तु से प्रेम है। पर वे जिस वातावरण को उत्पन्न करते हैं वह किसी प्रकार अपार्थिव नहीं है और न उससे किसी प्रकार भय उत्पन्न होता है।'

सृजन में निश्चय ही वर्तमान युग की कटुता और संघर्ष खण्डित व्यक्तित्व एवं समयगत आस्था ने भी सहयोग किया है। व्यंग्य सृजन एक प्रकार से तल्खी और कटुता को सही दिशा में अभिव्यक्ति देता है। जीवनानन्ददास में भी व्यंग्य

पर्याप्त प्रबल शिल्प और सहजता के साथ प्रकट हुआ है। पुरानी पीढ़ी को उनका हस-हस कर उत्तर देना 'मारूढ़ मणिता' कविता में अभिव्यक्ति पाता है।
कविता में व्यंग्यगत उपलब्धि केवल हिन्दी या बंगला की नयी कविता में ही नहीं है बल्कि विश्व कविता में इस प्रकार की उपलब्धि है और बहुत है।
बंगला के सभी नये कवियों में व्यंग्य-सृजनगत उपलब्धि प्राप्त है। विमल चन्द घोष सुकान्त भट्टाचार्य सुनील दत्त सुभाष मुखोपाध्याय विनयमजुमदार अरुणकुमार सरकार जगन्नाथ चक्रवर्ती तथा इन जसे ही दूसरे कवियों ने व्यंग्य सृजन किया है बल्कि कहना चाहिए कि ऐसा करना पड़ा है।
सम्प्रति युग असंतोष अनिश्चय अथवा उलझन का युग है। आक्रोशमय पागलपन इस युग की देन है। हम पहुँचना चाहते हैं पहुँच गये हैं किन्तु फिर भी नहीं पहुँच पाये हैं यह पहुँच कर न पहुँचने की स्थिति युग का भटकाव है निरुद्देश्य भटकना गन्तव्य की अनिश्चितता एवं अस्पष्टता है। व्यक्ति उलझनों से सुलझना चाहता है और सुलझने में और अधिक उलझता चला जाता है।
बंगला कविता के अत्यन्त सजग और युग बोध की सही तस्वीरों को (चाहे वह किसी दिशा विषय में ही क्यों न हो) पकड़ने वाले कवि जीवनानन्ददास अकेले तो नहीं किन्तु अकेले में प्रमुखतम कवि हैं। उनकी कविताएँ रचना प्रक्रिया बिम्ब प्रतीक और शिल्प के कारण सामयिक बंगला कविता में विशिष्ट स्थान रखती हैं। जीवनानन्ददास की सम्पूर्ण कविता का एक सामूहिक प्रभाव होता है एक प्रमुख सन्दर्भ होता है जो स्वयं में अनेक संकेत लिए रहता है साथ ही पृथक पृथक पंक्तियाँ भी अनेक अलग सदर्भ संकेत देती हैं। कविता में सम्पूर्ण कविता और उसकी पृथक-पृथक पंक्तियों के माध्यम से दुहरी अर्थगत उपलब्धियाँ काव्य पद्धति के स्तर पर दे पाना बड़ा टेढ़ा काम है और इस टेढ़े काम में बंगला सामयिक कविता में अकेले सफल कवि जीवनानन्ददास हैं। सर्वथा मौलिक वैज्ञानिक युग बोध सम्प्रेषण में समर्थ प्रतीक बिम्ब उपमान और उनमें सर्वत्र एक खरी बौद्धिकता युग की मन स्थिति तीखी किन्तु स्पृहणीय इंटपटान्ट उलझनों के अनेक उलझे हुए स्तर और उन सबमें अनेक उलझे हुए अत्यन्त मैले मैलापे ढंग से जीवनानन्द दास की कविता में उभरते हैं। यथार्थ बल्कि अति यथार्थ की कटुता ने व्यक्ति में तल्खी उत्पन्न करदी है। यह तल्खी व्यक्ति को जिन्हीं स्तरों पर पलायन करने के लिए विवश करती है तो वहीं स्वस्थ सुरम्य और अभिराम उपकरणों के प्रति एक अवज्ञा भाव भी जागृत करती है। क्योंकि ये उपकरण जीवन के कटु यथार्थ से कहीं भी मेल नहीं खाते बल्कि एक विरोध खड़ाकर यथार्थ की विडम्बना को और अधिक विम्बित कर जाते हैं। जीवनानन्द दास की कविता ए युग की इस मन स्थिति को साकार करते हैं।

हे समय ग्रंथि हे मूय, हे माघ निशोष की कोयल
हे स्मृति हे हिम वायु मुझे भला क्या जगाना चाहती हो ?"

जीवनानन्द की कविता में पाई जाने वाली अनास्था युग अनास्था है किन्तु जीवना नन्द की अनास्था' का एक पक्ष पक्ष यह भी है कि यह अनास्था आस्थागत प्रेरणाएँ भी देती है। अनास्थाबोध विवशता असफलता ग्लानि से ही जन्म पाता है। सम्प्रतियुग में इन उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष की आवश्यकता नहीं पड़ती बल्कि इन्हें न पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इस अनास्था गत बोध ने कुछ सामयिक बांग्ला कविता में पलायन वृत्ति को भी उकसाया है। वे समस्याओं का सामना न करके समस्याओं को भुला देना चाहते हैं कहना चाहिए कि समस्याओं के न होने का धोखा स्वयं को देना चाहते हैं। यह अनास्थागत बोध निश्चय ही प्रशंसनीय नहीं है किन्तु जीवन में है इसलिए काव्य में उसका प्रकाशन सर्वथा अप्रीतिकर भी नहीं कहा जा सकता। असरण कुमार सरकार 'नींद' नामक कविता में इस बोध से आक्रान्त है।

नित्य की घटनाओं से टूटते हुए और अनस्तित्व होते हुए जीवन ने व्यक्ति मन में आक्रोश भर दिया है। जब प्रतीक्षारत व्यक्ति को सम्भावित अनागत से साक्षात्कार नहीं हो पाता तब उसके मन में अनस्तित्व की गाँठ और अधिक कस जाती है और यह भ्रम निरन्तर बने रहने के कारण वह पूर्णतः जीवन विमुख हो उठता है। नरेन्द्र गुह की कविताओं में अनेक स्थलों पर जीवन असफलताओं और अनस्तित्व होती हुई (बिना किसी उपलब्धि के) व्यथाओं का लेखा जोखा है—

ता क्या अबकी बार थाना ही में नाम लिखकर
चल देना होगा ? तो मैंने फिर क्या पाया ? तो मैं क्या हुआ ?

विश्व-युद्धों के पश्चात क्षत विक्षत मानव और उसका मन स्थितियाँ एवं बाह्य जीवन में चला आता हुआ क्रम। व्यक्ति का बाह्य और आभ्यान्तर दयनीय होता जा रहा है। नगर जीवन से होकर गाँव परिवेश तक सर्वत्र निधनता मृत्यु अभाव और रोगों ने चेहरों में युद्धमुख सहज ही देखा जा सकता है। सामयिक बँगला कवि इस व्यथा से टूट रहा है। जगन्नाथ चक्रवर्ती की कविता इस तथ्य की गवाह है—

आज भी वही टूटा हुआ बाड़ा खाली खेत मिट्टी खिसका हुआ छप्पर और कितने दिन ?

ऐसा मालूम होता है जैसे इस सारे संसार के सारे आँगन में एक निर्दय कब्रिस्तान बिछा हुआ है।'

पर्याप्त सबल शिल्प और सहजता के साथ प्रकट हुआ है। पुरानी पीढ़ी को उनका हँस-हँस कर उत्तर देना 'मारूढ़ मणिता' कविता म ग्रभिव्यक्ति पाता है।

कविता म व्यंग्यगत उपलब्धि केवल हिन्दी या बंगला की नयी कविता म ही नहीं है बल्कि विश्व कविता म इस प्रकार की उपलब्धि है और बहुत है। बँगला के सभी नये कवियों म व्यंग्य सृजनगत उपलब्धि प्राप्त है। विमल चन्द घोष सुकान्त भट्टाचार्य सुनील दत्त सुभाष मुखोपाध्याय विनयमजुमदार ग्ररुणकुमार सरकार जगन्नाथ चक्रवर्ती तथा इन जैसे ही दूसरे कवियों न व्यंग्य सृजन किया है बल्कि कहना चाहिए कि ऐसा करना पड़ा है।

सम्प्रति युग ग्रसंतोष ग्रनिश्चय ग्रथवा उलझन का युग है। ग्रासोन्मय पागलपन इस युग की देन है। हम पहुँचना चाहते हैं पहुँच गये हैं किन्तु फिर भी नहीं पहुँच पाये हैं यह पहुँच कर न पहुँचने की स्थिति युग का भटकाव है निरुद्देश्य भटकना गन्तव्य की ग्रनिश्चितता एवं ग्रस्पष्टता है। व्यक्ति उलझनों से सुलझना चाहता है और सुलझने म और ग्रधिक उलझता चला जाता है।

बँगला कविता के ग्रत्यन्त सजग और युग बोध की सही नब्ज को (चाहे वह किसी दिशा विशेष में ही क्यों न हो) पकड़ने वाले कवि जीवनानन्ददास अकेले तो नहीं किन्तु ग्रकेला मे प्रमुखतम कवि हैं। उनकी कविताएँ रचना प्रक्रिया बिम्ब प्रतीक और शिल्प के कारण सामयिक बंगला कविता म विशिष्ट स्थान रखती हैं। जीवनानन्ददास की सम्पूर्ण कविता का एक सामूहिक प्रभाव होता है एक प्रमुख सदर्भ होता है जो स्वय मे ग्रनेक संकेत लिए रहता है साथ ही पृथक पृथक पंक्तियाँ भी ग्रनेक ग्रलग सन्दर्भ संकेत देती हैं। कविता में सम्पूर्ण कविता और उसकी पृथक-पृथक पंक्तियों के माध्यम स दुहरी ग्रर्थगत उपलब्धियाँ काव्य पद्धति के स्तर पर दे पाना बड़ा टेढ़ा काम है और इस टेढ़े काम म बंगला सामयिक कविता मे ग्रवल सफल कवि जीवनानन्ददास हैं। सर्वथा मौलिक वर्णनिक युग बोध सम्प्रेषण म समर्थ प्रतीक बिम्ब उपमान और उनम सर्वत्र एक खरी बौद्धिकता युग की मन स्थिति तीखी किन्तु स्पृहणीय छटपटाहट उलझनों के ग्रनेक उलझते हुए स्तर और उन सबम ग्रनेक उलझे हुए ग्रत्यन्त मँजे मँजाये ढंग से जीवनानन्ददास की कविता म उभरते हैं। यथार्थ बल्कि प्रति यथार्थ की कटुता न व्यक्ति म तल्खी उत्पन्न करदी है। यह तल्खी व्यक्ति को किन्हीं स्तरों पर पलायन करन के लिए विवश करती है तो वही स्वस्थ सुरुचि और ग्रभिराम उपकरणों के प्रति एक ग्रवज्ञा भाव भी जागत करती है। क्योंकि य उपकरण जीवन के कटु यथार्थ से कहीं भी मेल नहीं खाते बल्कि एक 'विरोध' खड़ाकर यथार्थ की विडम्बना को और ग्रधिक विच्छुरित कर जाते हैं। जीवनानन्द दास केन्द्रित कविता ए युग की इस मन स्थिति को साकार करते हैं।

हे समय ग्रंथि हे मृत्यु, हे माघ निशीथ की कामना
हे स्मृति हे हिम वायु मुझे भला क्यों जगाना चाहती हो ?"

जीवनानन्द की कविता में पाई जाने वाली अनास्था युग-अनास्था है किन्तु जीवनानन्द की 'अनास्था' का एक अन्य पक्ष यह भी है कि यह अनास्था आस्थागत प्रेरणाएँ भी देती है। अनास्थावोध विवशता असफलता भ्रान्ति से ही जन्म पाता है। समकालीन युग में इन उपलब्धियों का ध्यान करने के लिए संघर्ष की आवश्यकता नहीं पड़ती बल्कि इन्हें न पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इस अनास्थागत बोध ने कुछ आधुनिक बंगला कवियों में पलायन वृत्ति को भी उकसाया है। वे समस्याओं का सामना न करके समस्याओं को भुला देना चाहते हैं कहना चाहिए कि समस्याओं के न होने का धोखा स्वयं को देना चाहते हैं। यह अनास्थागत बोध निश्चय ही प्रशंसनीय नहीं है, किन्तु जीवन में है इसलिए काव्य में उसका प्रकाशन सर्वथा अप्रीतिकर भी नहीं कहा जा सकता। अरुण कुमार सरकार 'नींद' नामक कविता में इस बोध से आक्रान्त है।

नित्य की घटनाओं से टूटते हुए और अनस्तित्व होते हुए जीवन ने व्यक्ति मन में आक्रोश भर दिया है। जब प्रतीक्षारत व्यक्ति का सम्भावित अनागत से साक्षात्कार नहीं हो पाता तब उसके मन में अनस्तित्व की गाँठ और अधिक कस जाती है और यह क्रम निरन्तर चलते रहने के कारण वह पूर्णतः जीवन विमुख हो उठता है। नरेश गुह की कविताओं में अनेक स्थलों पर जीवन असफलताओं और अनस्तित्व होता हुआ (बिना किसी उपलब्धि के) स्वाना का लक्ष्य जीता है—

तो क्या अबकी बार पानी हो में नाम लिखकर
चल देना होगा ? तो मैंने फिर क्या पाया ? तो मैं क्या हुआ ?

विश्व-युद्धों के पश्चात् क्षत विक्षत मानव और उसका मन स्थितियों एवं बाह्य जीवन में चलता आता हुआ क्रम। व्यक्ति का बाह्य और आभ्यान्तर दयनीय होता जा रहा है। नगर जीवन से होकर गाँव परिवेश तक सर्वत्र निर्धनता मृत्यु अभाव और रोगों के चंगुल में कुलमुल सहज ही देखा जा सकता है। आधुनिक बंगला कवि इस व्यथा से टूट रहा है। जगन्नाथ चक्रवर्ती की कविता इस तथ्य की गवाह है—

'आज भी वही टूटा हुआ दाढ़ा खाली खेत मिट्टी छिटका हुआ छप्पर और कितने दिन ?

ऐसा मालूम होता है जैसे इस सारे संसार के सारे क्रन्दन के ऊपर बिछा कब्रिस्तान बिछा हुआ है।'

बँगला सामयिक कविता में कुछ कविताएँ जो 'कामरहियन' कविताएँ कही गई हैं अत्यन्त कलात्मक ढंग की सफल कविताएँ हैं। सुकान्त भट्टाचार्य की छाड़पत्र तथा इस जैसी ऐसी ही सफल कविताएँ हैं। छाड़पत्र कविता एक ओर प्रतीकात्मक और रूपक के सहारे रूसी क्रान्ति का सौन्दर्य दरसाती है तो दूसरी ओर इसी प्रतीक से वह नयी चेतना और उसके लिए मर मिटने के कृतिकारों के संकल्प सौन्दर्य का भी उद्घाटन करता है।

सामयिक बँगला कविता पर हिन्दी की अपेक्षा पश्चिमी प्रभाव कहीं अधिक है। विष्णु दे की कविता पर टी० एस० इलियट तथा एजरा पाउण्ड का प्रभाव स्पष्ट ही देखा जा सकता है। विष्णु दे की कविताएँ शिल्प का नमूना माना जा सकती हैं। अमलेन्दु दास गुप्त दीलिप कोण से विष्णु दे की कविता की श्रेष्ठता स्वीकारते हैं किन्तु उसमें हृदय को आन्दोलित कर सकने की क्षमता का न होना मानते हैं। विष्णु दे की कविता पर लगाया हुआ यह आरोप एक प्रकार से विष्णु दे की कविता की विशेषता ही है क्योंकि हृदय को द्रवीभूत करना अथवा हृदय का पिघला देने वाला प्रतिमान व्यतीत युग-बोध की कविता के लिए ही उपयुक्त है।

वैज्ञानिक युग का मानव जब बड़े बड़े यान्त्रिक सृजन अथवा विशालकाय निर्माण के सम्मुख खड़ा होता है। (वे यद्यपि मनुष्य द्वारा ही निर्मित हैं) तो उसमें अनजाने ही हीनता का बोध आने लगता है। यदि रचनाकार इस बोध को प्रकाशन देता है तो इस पर 'भृकुटि वक्र मुद्रित' होने की आवश्यकता नहीं। इससे तो सामूहिक स्वास्थ्य ही सुधरता है वरन् हीनबोध' को वाणी देकर यह व्यक्ति को सामान्य (नार्मल) बनाने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित कर रहा है।

वर्जित दृष्ट बोध के अतिरिक्त बँगला सामयिक कविता में ग्राम्यागत चेतना भी नैवर रही है-पूरी शक्ति के साथ सम्पूर्ण नया सृजन पेचीदा घुटन ऊब मृत्यु विवशता और अभावों को जीता हुआ उपयुक्त आस्थागत बोध तक पहुँचने में यात्रित है यह यात्रा कितनी अलघ्य और पेचीदा है। इस व्यतीत बोध सम्पादक समालोचक सम्प्रति युग बोध को न जीने के कारण नहीं समझ पा रहे हैं

नये बंगला रचनाकार वैज्ञानिकता और तटस्थ रचना प्रक्रिया की ओर बढ़ रहे हैं अपने सम्पूर्ण दायित्व के साथ। वास्यापवरण व प्रत्यक्ष कोण से बंगला सामयिक कविता बंगला साहित्य को धरऊ उपलब्धियाँ सौंप रही है।

—सुरेन्द्र उपाध्याय



हिन्दी की नई कविता ·
उपलब्धि अपेक्षा



जीवन माना के साथ साहित्यिक प्रतिमान भी परिवर्तित होते रहे हैं, नए प्रश्न उठाए गए हैं उनके उत्तरों की पीठ पर पुन नए प्रश्न उठ खड़े हुए हैं अपने आप प्रश्न कर्ता सो निमित्त मात्र रहा है—युगबोध का अस्त्र मात्र। प्रश्न उत्तर प्रश्न-क्रम में कितनी ही धुरीहीनता की हीन' धुरिया घिस चुकी हैं। साहित्यकार हाशिए पर' न लिख कर हाशिया छोड़ कर लिखने लगे हैं। किसी समय के 'उगत अकुर' वृक्ष ही नहीं डाल-डाल तथा पत्र भाड़कर ठूठ रह गए हैं। 'रोगन हाथा की दस्तक' स्याह होने लगी हैं। नयी कविता को जिन गज फुट इचों से नापा गया है या नापा जा रहा है उन्हीं गज फुट, इचा स नई कहानी' को भी नापने का आयास किया गया है। सम्पूर्ण जल प्रवाह को एक ही कुलावे स निकालने की दृष्टि अनेकत्व म एकत्व वाली भार तीय विचारधारा स सहज ही एतिहासिक समथन पा जाती है ऋषि आचार्यों को यह सुविधा प्राप्त है।

हर नय आन्दोलन की तरह नयी कविता को भी उतार-चढ़ावा स मार्ग पूरा करना पड़ा है—अच्छे बुरे दिन देखने पड़े हैं पहाड़ा की ऐचक-बेंची पगडडिया म निकल कर यह समतल भूमि पर आ गई है जहा उसका वेग उसका गहराई उथलापन विस्तार और संकुचन बिना अटकलपच्चिया क मूल्याकित किया जा सकता है। कतिपय समीक्षक प्रवर अपनी भौंह-गाठों का संकुचन पूरणत नयी कविता के पक्ष में अभी तक नहीं खोल पाए हैं किन्तु धीरे-धीरे उनकी जमात म दरार पड़ने लगी है यह नई कविता के लिए शुभ लक्षण है साथ ही समी क्षक प्रवर सम्प्रदाय क लिए भी। कारण इस कोण से वे युग बोध के समा नान्तर बने रहेंगे पिछड़ेंगे नहीं। यह सब नई कविता की अपनी उपलब्धिया का परिणाम है। अत नयी कविता ने अपना पृथक् और अलग व्यक्तित्व खड़ा कर लिया है यह तथ्य स्पष्टि की अपेक्षा नहीं रखता।

नयी कविता के साहित्य में आविर्भाव से पूर्व दो-दो विश्व-युद्ध हो चुके हैं विज्ञान की उन्नति बढ़ता हुआ जीवन स्तर, मध्य वर्ग की जटिल समस्याएँ नैतिक मानों का ह्रास आर्थिक विषमता यातायात के साधनों एव व्यापारिक समझौतों द्वारा विश्वराष्ट्रा का परस्पर सम्बन्ध तथा सास्कृतिक एव साहित्यिक मान्यताओं

से परिचय एवं प्रभाव इन समस्त उपलब्धियों ने जाने अनजाने विश्व-मानव-मानस को प्रभावित किया है अतएव उसका युगबोध अपने पूर्ववर्ती सहयात्रियों से जटिल (नितान्त भिन्न प्रकार का) हो गया है। विश्व-साहित्य के इतिहास में कदाचित् यह प्रथम अवसर है जब जागरूक विश्व मानव युगबोध की वैयक्तिकता के माध्यम से एक ही काव्य पद्धति से सम्प्रेषण दे रहा है। नई कविता छायावादी कविता की तरह विदेशों में सौ वर्ष पहले विकसित होकर भारतवर्ष में नहीं उपजी है।

भगवती बाबू ने अपने सद्यः प्रकाशित कविता संग्रह (सद्यता मात्र प्रकाशन में कविताओं में नहीं) की भूमिका में गर्वोक्ति की है कि नई कविता लिखना नितान्त आसान है मैं एक साथ पच्चीस-तीस नई कविताएँ लिख सकते हैं। पहाड़ के नीचे आने से पूर्व ऊँट को अपनी ऊँचाई का भ्रम बना ही रहता है यह उसके हक में अच्छा ही है अन्यथा हीन ग्रंथि से ग्रसित हो कर न जाने क्या कर बैठे। बच्चन आदि पिछले खेमे के कवियों ने 'त्रिभंगिमा' तथा चार खेमे चौंसठ खूँटे आदि कविता संग्रहों में नयी कविता की तर्ज पर लिखने का अपनी ओर से भरसक प्रयत्न किया है किन्तु वे कितनी नई कविता हैं, इनमें कितना नया युगबोध एवं सम्प्रेषण की सद्यता है ?

यह सच है कि नयी कविता के क्षेत्र में कुछ कृतिकार (सम्बोधन की कैसी विडम्बना है) मात्र 'फैशन' में पड़ कर कविता (अकविता) लिख रहे हैं। वे अच्छा खाना खाने की तरह अच्छा कपड़ा पहनने की तरह ही कविता लिखना समझते हैं दायित्व और प्रतिभा दोनों का ही उनमें अभाव है फैशनेबुल आलोचक (या फैशन ने ही जिनको आलोचक बना दिया है) उनके कृतित्व को नयी कविता के कथ्य सम्प्रेषण बोध से अनुशासित करते हैं जिसका परिणाम सामान्य पाठक के मन में नयी कविता के प्रति विरोधी धारणा का सृजन है। पाठक नयी कविता पढ़ते समय पूर्वाग्रह परिणामगत पूर्वाग्रह से ग्रसित हो कर नई कविता का उचित मूल्यांकन नहीं कर पाता, इस कार्य में ऋषि आचार्यों की समीक्षा दृष्टि उसे निरन्तर मार्गदर्शन करती रहती है। कुछ जागरूक कृतिकारों ने भी कविता-सृजन के दीर्घ काम में पर्याप्त कूड़ा लिखा है इस बात को भी हम स्वीकार कर लेना चाहिए, किन्तु यह उनकी अपरिपक्व एवं उथली उपलब्धियाँ हैं जो उन्हीं के व्यक्तित्व पर कालिख अधिक पोतती हैं साथ ही उनका यह कृतित्व नयी कविता का शुभ और स्वस्थ पथ नहीं है इसमें ह्रासोन्मुख जीवन दर्शन को पशु शिल्प में ढालकर अहंवादी उपलब्धि प्रस्तुत करना ही उनका ध्येय रहा है जो सच्चे यथार्थ का प्रतिनिधित्व नहीं करता। कतिपय समीक्षक प्रवर एक दो अथवा इस जैसे ही कृतित्व की जाँच-पड़ताल करके नई

कविता को खण्डित जीवन दर्शनगत एवं फैशनगत उपलब्धि सिद्ध कर देते हैं। अवसर जो मिलता है, मौके से लाभ उठाना ही चाहिए।

फैशन' वाली बात किसी समय छायावाद के लिए भी कही जाती थी। फैशन' का महत्व कम से कम कोएण से तो आंका जा सकता है यह नवागत 'फैशन के लिए स्वयं को उदारतापूर्वक समर्पित कर देती है। हमारे ऋषि आचार्यों में नयी कविता के संदर्भ में फशन परक उदारता भी दृष्टिगोचर नहीं होती।

नयी कविता ने ऋषि आचार्यों के आलोचना ग्रन्थों में अवर्णित छायावादी कवियों के अन्तस में सतत प्रवाहित धारणा का खण्डन किया है अथवा यह कहना अधिक समीचीन होगा कि उस सीमा को तोड़ा है उससे आगे बढ़ी है। छायावादी कवि क्षण से क्षण को धूल मिलाकर यानी व्यवस्थित आवेगयुक्त अनुभूति धारा ही काव्य कथ्य बना सके इस कारण व्यवस्थित अनुभूति धारा से पृथक् कटा हुआ क्षण अनुभूत अपने सम्पूर्णत्व में उनका संवेद्य नहीं बन सका बूँद धारा से कट कर भी धारा की इकाई है और स्वय में महान है यह बात तब उनकी समझ में न आ सकी। आती भी कैसे। इसका कारण उनका व्यवस्थित धारागत जीवन भी हो सकता है। अनुभूति-आवेग को उन्होंने गीतों में गहा किन्तु आवेग का आदि और अन्त भी होता है और कभी-कभी अनुभूति आवेग बन ही नहीं पाती उसका आदि और अन्त एक बुलबुले के साथ ही स्पष्ट होकर रह जाता है। इस क्षण-अनुभूति की परतों को नये कवि ने तोड़ा है किन्तु इसमें छायावादी अनुभूति-समर्थक ऋषि आचार्यों की भौंहों में वही द्विवेदीयुगीन गाँठें उभरी हैं जिनकी कभी उन्होंने कटुतम आलोचना की थी। व्यवस्थित अनुभूति धारा को जीना स्वय में महत्वपूर्ण बात हो सकती है और है भी। नया कवि भी अपने युग बोध के साथ समग्रत्व में इसे जी रहा है किन्तु पृथक खण्डित क्षण सत्य को काव्य स्तर पर गह पाना अपने आप में कठिन और महत्वपूर्ण दोनों ही है। विस्तार में से विस्तार के एकल बिन्दु को गह पाना क्षण की सार्थकता को उजागर करना है।

नये कवि ने कविता की पठन-क्रिया को भी क्रान्तिकारी अभिनव आयाम सौंपा है जिसका योगदान कविता के भविष्य निर्मित काव्यशास्त्र में स्थाई रूप से होगा। नयी कविता 'गुरु गृह पढ़न गए रघुराई अल्पकाल चौपाई पद्धति से या दोहा छप्पय अथवा गीतिका अथवा रोला उल्लाला आदि की तरह नहीं पढ़ी जा सकती। पठन क्रिया के लिए भी सम्प्रति युग बोध अपेक्षित है। नयी कविता ने पूर्ववर्ती काव्य गायन-पठन पद्धति से भिन्नत्व स्पष्ट कर अपनी लय और गति को पृथक परिपार्श्व में स्थापित कर लिया है। इससे भी

व्याख्या प्रस्तुत है– पत्ती पर बैठी चिड़िया उड़ती है इसलिए पत्ती काँपती है और थोड़ी देर म वापिस स्थिर हो जाती है। यह सुना और देखा गया है कि चिड़िया के टहनी या शाख पर बैठकर उड जाने जाने से लचक खाने के कारण टहनी काँप जाती है। चिड़िया को पत्ती पर बठती बतलाकर व्याख्या कार न मूल कविता पर एक और कविता करदी है' कनुप्रिया'' को नयी कविता की प्रतिनिधि कृति मानकर उसकी उपलब्धियों का विवेचन किया गया है जबकि कनुप्रिया' कविता तो दूर परिष्कृत गद्यकाव्य भी नहीं है। एसे कवियों को भी लेखक ने प्रतिनिधि नये कवियों म सम्मिलित कर लिया है जिनक तीन-तीन संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं फिर भी उसका कोई व्यक्तित्व सामने नहीं पाया है साथ ही एक पुरानी कवयत्री को नयी कवयत्री मान लिया गया है, य कुछ नमूने हैं जिनक आधार पर अनुमान लगया जा सकता है कि प्राध्यापक वर्ग मे नयी कविता किस रूप म समझी गई है (या समझी जा रही है)।

बिम्ब को काव्योपलब्धि का आत्यन्तिक मान स्वीकार करने वालों म हजरत ऐजरा पाउन्ड का नाम बहुत चर्चित रहा है जिनकी आस्था थी— It is better to present one image in a life time than to produce Voluminous works

बिम्ब में ताजगी सघनता एवम् उसका उत्प्रेरक होना आवश्यक है बिम्ब उपमा प्रतीक, बाक्य शब्द-अभिव्यक्ति वैचित्र्य भ्रान्ति से निर्मित होता है (हो सकता है)। सादृश्य मूलक अलकारा म रूपक बिम्ब के सर्वाधिक समीप पड़ता है किन्तु बिम्ब क्षेत्र रूपक से अधिक विस्तृत है। पाश्चात्य काव्य विचारक सी डी ल्युइस न बिम्ब मे अनुभूति का घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर दिया है। बिम्ब एक सीमा तक सघन रूप निर्मित करता है क्रमश अनुभूति से सम्पृक्ति प्राप्त कर उससे एक तान हो जाता है। रूपक म प्रस्तुत अप्रस्तुत का बोध अपनी सम्पूर्ण अर्थ-वत्ता सहित अनुभूति क अन्तिम छोर तक या अभि व्यक्ति क अन्तिम बिन्दु तक बना रहता है। बिम्ब प्रस्तुत को क्रमश विस्मृत करता हुआ अन्ततोगत्वा अनुभूति पिण्ड हो जाता है।

कविता म बिम्ब विषयक यह धारणा रखना कि वह स्वय में ही अपना एक दृष्ट है (जसा कि कुछ कृतिकारा की धारणा है) नितान्त भूल होगी। बिम्ब स्वयम् को बिम्बित करने मात्र का लक्ष्य लेकर नहीं चलता वह सूक्ष्म जटिल अनुभूति प्रत्यय को ग्राह्य बनान क लिए सहायक होकर आता है। बिम्ब को साध्य समझन वालों को सी डी ल्युइस द्वारा अपने महत्वपूर्ण ग्रन्थ— The Poetic Image म दिया हुआ निम्नलिखित वक्तव्य सम्परामश रूप में ग्रहण

कर लेना चाहिये—Image does not image itse f ' अपितु वह तो किसी चाप अभिव्यक्ति का निमित्त मात्र है।

नयी कविता म विभिन्न प्रकार के बिम्बों के साथ शब्द बिम्ब तथा बिम्ब प्रतीका का विशेष महत्व है यह नयी कविता की गौरवमयी उपलब्धि है जो पूर्ववर्ती काव्य धाराओं में इस वैविध्य क साथ उद्भूत नहीं हुई। 'अभी बिलकुल अभी' कविता सग्रह के कवि केदारनाथ सिंह का आग्रह बिम्ब को ही कविता निकष मान लेने का है—'एक आधुनिक कवि की श्रेष्ठता की परीक्षा उसके द्वारा आविष्कृत बिम्बो के आधार पर ही की जा सकती है मैं बिम्ब निर्माण की प्रक्रिया पर इसलिए ज़ोर दे रहा हूँ कि आज काव्य के मूल्याकन का प्रतिमान लगभग वही मान लिया गया' १ यह बिम्ब के प्रति आत्यन्तिक मोह है। धूप क धान' कविता सग्रह की सशक्त कविता डाकघनी' मे वायु उद्वेलित चटुल लहरियां का मन्दिर बिम्ब गिरिजाकुमार माथुर की बिम्ब पकड़ क प्रति पाठक को आस्थावान बनाता है—

गप घोड़े पर चढ़ी
दुलकी चली आती हवाएं
टाप हल्के पड़े जल में
गोल लहरें उछल आए।

शमशेर के कविता सग्रह कुछ और कविताएँ" (सम एनग्रटर पोइम्स वाले अंग्रेजी स्टाइल मे) तथा अन्य कविताएँ कत्थई गुलाब थामे हुए हैं 'पीली मुलायम लटें' पूरा आसमान का आसमान' 'राग' आदि मे बिम्बो की सफल अभिव्यक्ति हुई है। यद्यपि खण्डित बिम्ब भी शमशेर की कविता म अत्यधिक है, लेकिन खण्डित बिम्बों को शुद्ध कविता क लिए साधक नहीं बाधक मानता हूँ कारण काव्यात्मक तर्क सगति का केन्द्रीय सूत्र वह नहीं बन पाता। खण्डित बिम्बों की पुष्कल उपलब्धि प्रयोगवादी, कविता म सम्प्राप्त है। प्रयोगवादी कविता का विकास एकबारगी रुक गया इसके अनेक कारणो म से अति प्रमुख कारण उसकी खण्डित बिम्ब उपलब्धि है जिसस किसी स्तर पर कविता जटिल और दुर्बोध हो जाती है।

जैसा कि निवेदन कर चुका हूँ कि नयी कविता का बिम्ब प्रतीक उसकी अपनी उपलब्धि है मात्र शिल्प विषयक ही नहीं रचना-प्रक्रिया मत्र भी। बर्टेण्ड रसेल ने An enquiry into meaning and truth के पृष्ठ २ पर लिखा है Images infect as symbols just as words do लेकिन प्रतीक और

१ तीसरा सप्तक—पृष्ठ १८३

बिम्ब म अन्तर है, वही अन्तर जो चित्र और बिम्ब म है। बिम्ब वस्तु का प्रस्तुतीकरण है जिसका रचना प्रक्रिया से गहरा संबंध है प्रतीक वस्तु विचार का प्रतिनिधि है। प्रतीक बिम्ब अज्ञय की कविता में यथानुकूल उपलब्ध है, चन्द्रमा के लिए प्रतीक बिम्ब इसी परिप्रेक्ष्य की उपलब्धि माना जायगा। यह बात दूसरी है कि उसम शिल्प-प्रभाव शिथिल है—

मूत्र सिंचित मत्तिका के वृत्त में
तीन टाँगों पर खड़ा
नतग्रीव धैर्य धन गदहा

'कौन से संदर्भ दे दू" कविता सग्रह की 'वसात ग्राम' शीर्षक कविता में चन्द्रमा क लिए प्रतीक बिम्ब किंचित् अधिक सुगढ़ बन पड़ा है—

'नि शब्द
रात न—
फूस बेले में
भर कर दूध
चुपके से
सिरहाने रख दिया'

शब्द बिम्ब उपलब्धि में कृतिकारा की उपयुक्त शब्द-प्रयुक्ति की आवश्यकता का परिचय तो मिलता ही है साथ ही शिल्प-गठन की महती उपलब्धि उनम अनायास प्राप्त हो जाती है। निम्नोद्धृत कविता म 'बस शब्द एक विस्तृत बिम्ब का आधार हुए है यदि इस शब्द—बिम्ब के स्थान पर कोई दूसरा शब्द रख लिया जाय अथवा उस शब्द को निष्कासित कर दिया जाय तो संपूर्ण बिम्ब बिखर जायगा—

पतीला में खबीजी
गंध बघुआ
बस गई घर नगर
गलियारे तलक—'

नयी कविता को प्रयोगवादी कविता समझने-समझाने का भ्रम प्रयत्न अभी तक चल रहा है उसकी उपलब्धियाँ प्रयोगवादी कविता की उपलब्धियाँ मानी जाकर एकांगी और अतिवादी आलोचना का विषय बन रही हैं—'कठिनाई यह है कि पाठकों को नई कविता म न रस मिलता है, न आनन्द न उसम उच्च सौन्दर्य के दर्शन होते हैं। क्या यह कहना उचित होगा कि प्रयोगवादी कविता म मूलत जीवन की अस्वीकृति है उसक रचयिताओं क लिए जीवन निस्सार है, इसलिए

निम्दय होकर वे रोते सिसकते हैं उह सुन्दर की अपेक्षा वीभत्स रस की अपेक्षा नीरसता आनन्द की अपेक्षा घुटन तथा बोध अनुबोध की अपेक्षा अबोध और दुर्बोध शब्दजाल से ही अधिक प्रेम है यदि ऐसा न होता तो नीरसता कुंठा अहवाद लयहीन बेतुकी रचनाओं की इतनी वकालत करने की जरूरत न पड़ती १। रामविलास जी के इस गहन चिन्तन खण्ड से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि वे युगबोध से पिछड़े साहित्यिक मानदण्डों से ही नयी कविता का 'नाप' ले रहे हैं।

प्रयोगवाद और नयी कविता को एक समझने की भूल तो उन्होंने भी की ही है। नरेन्द्र शर्मा द्वारा लगाये गये रूस-प्रशंसीय नारे उन्हें कविता प्रतीत होते हैं या फिर उपदेशक की टोपी लगाकर दूसरों को भाषण देने के रोग से पीड़ित 'पदो जाल अहेरी' कविता सग्रह के कवि श्री अनन्त का निम्न वक्तव्य उन्हें श्रेष्ठ काव्य उपलब्धि प्रतीत होगा—

आ घुटन की खाह से बाहर निकल
झील के थिर नीर पर कुमकुम धरा
देख कितनी छविमयी है दूब वसना
किस कदर है रूप गर्वा यह धरा।

दूब वसना रूप गर्वा धरा' का महत्वपूर्ण उपदेश अनन्त जी की मौलिक उपलब्धि है नयी कविता का कोई कवि ऐसा करने में सफल नहीं हो पाया है ?

नयी कविता की प्रारम्भिक रचनाओं में विकृत कुंठा यौन वर्जनाएं अहं और वक्तव्यों से साक्षात्कार होता है इस प्रकार की उपलब्धियाँ प्रथमत उसकी प्रारम्भिक उपलब्धियाँ हैं जिनको आधार बनाकर उसका सम्पूर्ण स्वरूप विश्लेषण नहीं किया जा सकता कारण—ये उपलब्धियाँ उसके परिपक्व स्वरूप का बोध कराने में असमर्थ हैं द्वितीयत उपयुक्त प्रवृत्तियों को साहित्यिक कथ्य बनाने में नये कवि की अनुभूति-ईमानदारी पर सदेह करना अनुचित होगा नये कवि की अनुभूति-ईमानदारी को स्वीकार करने में समीक्षकों की हेटी नहीं होगी। नयी कविता में स्वयं को छायावादी कविता की भाँति अनावश्यक रूप से सजाया नहीं है और न ही प्रगतिवादी कविता की तरह स्वयं को 'खुरदरा' बनाया है। उसका शिल्पबोध अनुभूत का सहगामी है।

मानव के प्रति गहरी आदर भावना नयी कविता का प्रमुख दर्शन आयाम है। प्रथम बार कविता क्षेत्र में मानव के 'भीतर' को सर्वांगत वाणी देने का स्तुत्य प्रयास नयी कविता ने किया है। लक्ष्मीकान्त वर्मा मानव के भीतर स्थित मानव को 'लघुमानव' की सज्ञा देते हैं। यह इमारत छायावादी आलोचनात्मक शब्दावली स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह के आधार पर गढ़ी गई है, 'लघु

१ आस्था और सौन्दर्य पृ० २१३ ११७

शब्द' हीनता के अर्थ मे रूढ है अत इस संज्ञा में छायावादी उपयुक्त शब्दावली जैसी गरिमा भी नहीं है। अधिक बुद्धिसंगत होगा यदि इसको आन्तरिक मानव कहा जाय तो।

नयी कविता न धर्म राजनीति द्विवेदीयुगीन नैतिकता उपदेश-सेंसर से मुक्त होकर प्रथम बार साहित्यिक अनुभूति-सच्चाई से मानवीय कुंठा अह वैयक्तिकता यौन वर्जना आदि को मानव का आन्तरिक सर्वाधिक सत्य होने के कारण काव्य सवद्य बनाया है।

नयी कविता म नये के प्रति आत्यतिक मोह होने के कारण कहीं-कहीं कविता वैचित्र्य और चमत्कार की परिधि में सिमटकर रह गई है। इस प्रकार की उपलब्धि नयी कविता की मात्रात्मक रूप म अति न्यून उपलब्धि है। वचित्र्य आदि मदारीपन गम्भीर उपलब्धि रूप म समादृत न होन क कारण शनै शनै कूच कर रहा है।

विषय-वविध्य के साथ नयी कविता म विषयो की एकरमता भी पर्याप्त मात्रा म देखी जा सकती है। विषयगत एकरसता के कारण कही-कहा शिल्प म भी एकरसता आ जाती है जिसस कवियो के पृथक अस्तित्व का भास कम हो पाता है बिना कृतिकार के नाम के कविता के शिल्प स अनुमान लगाना कठिन हो जाता है कि किस कृतिकार की रचना है किन्तु गत दो तीन वष की उपलब्धियाँ सिद्ध कर रही हैं कि कृतिकारो का शिल्प और बोध मे अपना पृथक व्यक्तित्व उभर रहा है।

सूर्य धूप रात शाम नीम (उपमान आदि के रूप में) बसत आदि विषय लगभग सभी कवियो क वर्ण्य रहे हैं। 'धूप' और शाम पर सर्वाधिक कविताएँ लिखी गई हैं। भारतीय सात तीन वर्ष में शाम दो मन स्थितियाँ तथा शाम एक थकी लड़की विषय एकरसता के सन्दर्भ में देखी जा सकती है। 'शाम स्वय म एकाकी बोध का प्रतीक बिम्ब है भारती की निम्नोद्धृत कविता में यह बोध विद्यमान है।

शाम—
एक सफर म थकी हुई लड़की-सी
आई और मेरे पास बैठ गई।

गिरिजा कुमार माथुर क कविता संग्रह म भी शाम पर अनेक कविताएं मिल जायेंगी 'धूप के धन' और 'शिलापंख चमकीले' में उपर्युक्त सत्य साक्षी जा सकता है। धूप के धन' म शाम की धूप' तथा सांयकाल' कविताएँ इस परिप्रेक्ष्य की ही उपलब्धि हैं। केदारनाथ सिंह की शामें बेच दी हैं सर्वेश्वर दयाल की सुबह स शाम तक हृदय है कविता सग्रह अनन्तर से लेकर 'आगन क पार द्वार' तक में शाम पर अनेक कविताए सकलित हैं साथ ही धूप और बसत पर भा। शाम' पर कमलाकान्त सर्वाधिक कविताएँ शमशेर ने लिखा हैं। जिस प्रकार शाम युग बोध क एकाकी सवेदन का बिम्ब प्रतीक

है उसी प्रकार सूर्य नयी चेतना का नीम जीवन की कड़वाहट, म्लानपन, तिक्तता आदि का प्रतीक रूप है 'रात टूटन निराश व्यक्तित्व और आस्था का प्रतीक बनकर अभिव्यक्ति पाती रही है। 'धूप' भी नयी चेतना की प्रतीक प्रतिनिधि है साथ ही बिम्बात्मक अभिव्यक्तियों के अधिक अनुकूल भी। 'धूप' का बिम्बमय प्रस्तुतीकरण नयी कविता की सीधा और तरल देन है।

नयी कविता में व्यंग पर्याप्त मुखर हुआ है, पूर्ववर्ती काव्यधाराओं से तुलनात्मक रूप में इन वैभव का भावात्मक और गुणात्मक अन्तर स्पष्ट है। जटिल जीवन की तिक्तता ने नयी कविता के लगभग प्रत्येक कवि को व्यंग करने के लिये बाध्य कर दिया है। युग की कड़वाहट और आक्रोश को वाणी देने के लिये व्यंग पद्धति ने नयी कविता को शक्तिशाली बनाया है। व्यंग और वक्तव्य में एक बहुत झीनी दीवार होती है। कृतिकार व्यंग की मर्यादा होने से बचाये रहे अन्यथा व्यंग वक्तव्य बन जाए।।

नये कवि ने कविता को मनोरंजन का साधन नहीं माना है यही कारण है कि नयी कविता में बौद्धिकता का पर्याप्त समावेश हो गया है। कहीं-कहीं अत्यधिक बौद्धिकता होने के कारण गया कविता गद्यात्मक भी हो जाती है यह उसकी प्रशंसनीय उपलब्धि नहीं मानी जा सकती। कवि को संतुलन रखना आवश्यक है इस कोण के अभाव में तथाकथित कृतिकारों को नयी कविता के नाम पर गद्य लिखने का सुअवसर अनायास ही प्राप्त हो जाता है और कविता में नीरसता दुरूहता और खुरदरापन बिना प्रयत्न किये ही आ जाता है। अतिविचारात्मकता भी कविता को गद्यपरक बना देती है। अतिवैयक्तिक प्रतीकों का स्वीकार करने के कारण भी कविता अतिरिक्त रूप में बोझिल हो जाती है।

युग-बोध के बदलते हुए स्तर अपने अनुकूल भाषा प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं अतः संवेदन स्तर में क्रान्ति होने पर भाषा को भी करवट बदलनी पड़ती है। नयी कवि के सम्मुख भी भाषा की प्रबल समस्या है। 'तीसरा सप्तक' सम्पादक ने नयी कविता की 'नयी भाषा' की समस्या को हृदयगम किया है—

नयी कविता की प्रयोगशीलता पहला आयाम भाषा से सम्बन्ध रखता है निःसंदेह जिसे अब नयी कविता की संज्ञा दी जाती है वह भाषा प्रयोगशीलता को 'वाद' की सीमा तक नहीं ले गई है—बल्कि ऐसा करने को अनुचित भी मानती रही है प्रत्येक शब्द का प्रत्येक समर्थ उपभोक्ता उसे नया संस्कार देता है नये कवि की उपलब्धि और देन की कसौटी इसी आधार पर होनी चाहिए जिन्होंने शब्द को कुछ नहीं दिया है वे लीक पीटने वाले से अधिक कुछ नहीं हैं भले ही जो लीक वह (यहाँ 'वे' शब्द होना चाहिए था) पीट रहे हैं वह अधिक पुरानी न हो।" शब्द का नए 'संस्कार तथा नये

'संदर्भ' सफलता के साथ देने में कृतिकार की प्रतिभा की परख हो जाती है। गिरिजा कुमार माथुर केदारनाथ सिंह स्वयं प्रकाश शमशेर आदि इस परिपार्श्व में कार्य कर रहे हैं। शब्द नया देना स्वयं में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसका समादर होना ही चाहिए। भाषा विकास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किन्तु शब्द को नया संस्कार देने को ही नये कवि की उपलब्धि कसौटी मान ली जाय ऐसा सोचना भारी भूल होगी। शब्द को 'नया संस्कार देने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है कविता को नये शब्द देना इस तथ्य की उपेक्षा समक-सम्पादक कदाचित् इसलिए कर गया है कि उसने अपने कविता संग्रह आंगन के पार द्वार में नये शब्द न देकर मात्र बाण भट्ट की आत्मकथा की शब्दावली का ही पिष्टपेषण किया है।

नयी कविता की भाषा को नये शब्द देने का महत्वपूर्ण कार्य गिरिजाकुमार माथुर ने किया है किन्तु शिला पंख चमकीले के परिशिष्ट में बीस पच्चीस शब्दों की तालिका प्रस्तुत करके जिसमें अधिकांश शब्द ऐसे हैं जिनका सरकार की पारिभाषिक शब्द निर्मात्री समिति ने निर्माण किया है और जिनका डा रामविलास शर्मा ने आलोचना की है उनके आधार पर स्वयं को नयी शब्द प्रयुक्ति के लिए आवश्यक घोषित करना अधिक शोभनीय नहीं है। नयी कविता भाषा के ऐसे बिन्दु पर आकर खड़ी हुई है जहाँ से कई मार्ग फटते हैं। शमशेर कुछ और कविताएँ की भूमिका में भाषा के हिन्दी-उर्दू मिश्रित स्वरूप पर बल देते हैं। उर्दू मिश्रित हिन्दी नयी कविता की भाषा स्वीकार नहीं की जा सकती वह हमारे जीवन-समीप बोध को सम्प्रेषण देने में समर्थ नहीं हो सकती। कुछ कवि अंग्रेजी आदि के शब्दों को नयी कविता की भाषा में प्रयुक्त कर कहीं सन्तोष और अभिमान का अनुभव करते हैं कि वे कदाचित भाषा को नयी दिशा दे रहे हैं। उनके सन्तोष अनुभव करने के इस व्यक्तिगत अधिकार को कौन छीन सकता है।

जीवन-समीप संवेदन को सम्प्रेषण देने के लिए जीवन-समीप भाषा को ही स्वीकार करना पड़ेगा। हमारे जीवन में हमारी ही भूमि की उपज इतने शब्द पल रहे हैं कि यदि उनकी समर्थ हाथों से पोषण मिले सम्यक दाय प्राप्त हो तो हम किन्ही भाषा का शब्द-करण वहन न करना पड़े।

नयी कविता के अनेक रचनाकार शब्दों का अपव्यय करने में सिद्धहस्त हैं इससे न तो कविता का ही कुछ भला होता है और न ही भाषा का। कविता में उपयुक्त शब्द प्रयुक्ति का विशेष महत्व है रेमो दे गूरमों ने भी उपयुक्त शब्द प्रयोग पर अत्यधिक बल दिया है। उपयुक्त और सयाचित भाषा में काव्यवस्तु का सीधा बिम्बात्मक सम्प्रेषण कवि-कुशलता को द्योतक स्वीकार किया जाता रहा है।

शब्दों की परम्परा निहित छिलका उतार कर उसे नवता से भावित करने की भी आवश्यकता है उन्हें नये सन्दर्भ और नये मान सौंपने पड़ेंगे। भारती ने इस ओर ध्यान दिया है उसने नये शब्द दिए हैं किन्तु शब्दों का अपव्यय भी उसने किया है। कुछ पुराने शब्दों के प्रति उसका मोह ज्यों का त्यों बना हुआ है साल तीस वर्ष की अधिकांश कविताओं में 'जादू' शब्द का प्रयोग हुआ है जो नितान्त घिसा पिटा पुराना शब्द है बिल्कुल खोटा आधुनिक युग-बोध-सम्प्रेषण में सर्वथा असमर्थ।

पुछ कवि "शब्द" प्रयोग करने के लिए शोध योजना करते हैं इससे नयी कविता की भाषा समस्या सुलझेगी नहीं अपितु उलझने की ही अधिक सम्भावना है। शब्द तो साधन हैं उन्हें साध्य स्वीकार करना कविता-क्षेत्र म अपराध ही है। शब्दों को नई अर्थवत्ता यथार्थ की धूल म से शब्द-मोतियों को खोज निकालना उपयुक्त अवसर पर कवि की रचनात्मक प्रतिभा और परख पर आधारित है।

नयी कविता की पूववर्ती धाराओं ने अभी तक सच्चे यथार्थ को वाणी नहीं दी थी। (साम्यवादी आलोचकों का कथन है कि यथार्थ का दोशर प्रगतिवादी कृतिकार को ही हासिल हुआ है) प्रगतिवाद ने यथ र्थ को कथ्य बनाने का प्रयत्न किया था किन्तु केवल उतने ही यथार्थ को जो उसके बाद का हित साधक हो सकता था उसकी यथार्थ अभिव्यक्ति अधिक खुरदरी और वादाश्रित थी। नयी कविता ने यथाय ग्रहण करने म एसे किसी आग्रह को ध्यान में नहीं रखा। नयी कविता म वर्णित यथाय अधिक सजीव अधिक उदात्त अधिक काव्योपलब्धिपरक है।

नयी कविता ने अपनी उपलब्धियों से हिन्दी साहित्य को नए छन्द नयी भाषा नया शिल्प नया काव्य शास्त्र नया बोध बिम्ब एवं रचना-प्रक्रिया-गत आयाम दिए हैं। प्रयोगवादी ने अपने वादत्व छोड़कर स्वयं को नयी कविता को समर्पित कर नयी कविताओं की उपलब्धिया को सँवारा ही है।

(सुरेन्द्र उपाध्याय)

●●●

उर्दू की नयी कविता

●

चूकि यह लेख उर्दू की नयी कविता के विषय में है इसलिए मैं सिर्फ नयी कविता और नए कवियों के विषय म ही बात करूंगा। सन् १८५७ की हार के बाद जब भारत म राष्ट्रीय सघर्ष का युग आरम्भ हुआ, तो एक नयी कविता पैदा हुई। यह कविता मीर और गालिब की कविता से काफी अलग है। और हाली से कैफ़ी आज़मी तक फली हुई है। यह राष्ट्रीय संघर्ष की कविता है। जस जैसे हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप बदलता गया वैसवसे ही इस कविता

'संन्दर्भ' सघता के साथ देने में कृतिकार की प्रतिभा की परख हो जाती है। गिरिजा कुमार माथुर केदारनाथ सिंह स्वय प्रसन्न शमशेर आदि इस परिपार्श्व में कार्य कर रहे हैं। शब्द' नया देना स्वयं में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसका समादर होना ही चाहिए। भाषा विकास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किन्तु शब्द को नया सस्कार देने को ही नये कवि की उपलब्धि कसौटी मान ली जाय ऐसा सोचना भारी भूल होगी। शब्द को 'नया सस्कार देने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है कविता को नये शब्द' देना इस तथ्य की उपेक्षा ससक-सम्पादक कदाचित् इसलिए कर गया है कि उसने अपने कविता सग्रह 'आंगन के पार द्वार' में नये शब्द न देकर मात्र बाण भट्ट की आत्मकथा की शब्दावली का ही पिष्टपेषण किया है।

नयी कविता की भाषा को नये शब्द देने का महत्वपूर्ण कार्य गिरिजाकुमार माथुर ने किया है किन्तु शिला पख चमकीले' के परिशिष्ट में बीस पच्चीस शब्दों की तालिका प्रस्तुत करके जिसमें अधिकाश शब्द ऐसे हैं जिनको सरकार की पारिभाषिक शब्द निर्मात्री समिति ने निर्माण किया है और जिनकी डा रामविलास शर्मा ने आलोचना की है उनके आधार पर स्वयं को नयी शब्द प्रयुक्ति के लिए जागरूक घोषित करना अधिक शोभनीय नहीं है। नयी कविता भाषा के एस बिन्दु पर आकार खड़ी हुई है जहाँ से कई मार्ग फटते हैं। शमशेर कुछ और कविताएँ' की भूमिका में भाषा के हिन्दी उर्दू मिश्रित स्वरूप पर बल देते हैं। उर्दू मिश्रित हिन्दी नयी कविता की भाषा स्वीकार नहीं की जा सकती वह हमारे जीवन-समीप बोध को सम्प्रेषण देने में समर्थ नहीं हो सकती। कुछ कवि अंग्रेजी आदि के शब्दों को नयी कविता की भाषा में प्रयुक्त कर बड़ी सन्तोष और अभिमान का अनुभव करते हैं कि वे कदाचित भाषा' को नयी दिशा दे रहे हैं। उनके सन्तोष अनुभव करने के इस व्यक्तिगत अधिकार को कौन छीन सकता है।

जीवन-समीप संवेदन को सम्प्रेषण देने के लिए जीवन समीप भाषा को ही स्वीकार करना पड़ेगा। हमारे जीवन में हमारी ही भूमि की उपज इतने शब्द पल रहे हैं कि यदि उनको समर्थ हाथों से पोषण मिले सम्यक् दाय प्राप्त हो तो हम विदेशी भाषा का शब्द-ऋण वहन न करना पड़े।

नयी कविता के अनेक रचनाकार शब्दों का अपव्यय करने में सिद्धहस्त हैं इससे न तो कविता का ही कुछ भला होता है और न ही भाषा का। कविता में उपयुक्त शब्द प्रयुक्ति का विशेष महत्व है रेमी दे गूरमों ने भी उपयुक्त शब्द प्रयोग पर अत्यधिक बल दिया है। उपयुक्त और मर्यादित भाषा में काव्यवस्तु का सीधा बिम्बात्मक सम्प्रेषण कवि-कुशलता को द्योतक स्वीकार किया जाता रहा है।

शब्दों का परम्परा निहित छिलका उतार कर उसे नवता से भावित करने की भी आवश्यकता है उसे नये सन्दर्भ और नये मान सौंपने पड़ेंगे। भारती ने इस ओर ध्यान दिया है, उसने नये शब्द दिये हैं किन्तु शब्दों का अपव्यय भी उसने किया है। कुछ पुराने शब्दों के प्रति उसका मोह ज्यों का त्यों बना हुआ है 'सात गीत वर्ष' की अधिकांश कविताओं में 'जादू' शब्द का प्रयोग हुआ है जो नितान्त पिसा पिटा पुराना शब्द है बिल्कुल सादा आधुनिक युग-बोध-सम्प्रेषण में सर्वथा असमर्थ।

कुछ कवि शब्द प्रयोग करने के लिए शोध योजना करते हैं इससे नयी कविता की भाषा-समस्या सुलझेगी नहीं अपितु उलझने की ही अधिक सम्भावना है। शब्द तो साधन हैं उन्हें साध्य स्वीकार करना कविता-क्षेत्र में अपराध ही है। शब्दों की नई अर्थवत्ता यथार्थ की धूल में से शब्द-मोतियों को खोज निकालना उपयुक्त अवसर पर कवि की रचनात्मक प्रतिभा और परख पर आधारित है।

नयी कविता की पूर्ववर्ती धाराओं ने अभी तक सच्चे यथार्थ को वाणी नहीं दी थी। (साम्यवादी आलोचकों का कथन है कि यथार्थ का दीदार प्रगतिवादी कृतिकार को ही हासिल हुआ है) प्रगतिवाद ने यथार्थ को कथ्य बनाने का प्रयत्न किया था किन्तु केवल उतना ही यथार्थ को जो उसके वाद का हित साधक हो सकता था उसकी यथार्थ अभिव्यक्ति अधिक सुन्दरी और वादाश्रित थी। नयी कविता ने यथार्थ ग्रहण करने में ऐसे किसी आग्रह को ध्यान में नहीं रखा। नयी कविता में वर्णित यथार्थ अधिक सजीव अधिक उदात्त अधिक काव्योपलब्धिपरक है।

नयी कविता ने अपनी उपलब्धियों से हिन्दी साहित्य को नए छन्द नयी भाषा नया शिल्प नया काव्य शास्त्र नया बोध बिम्ब एवं रचना प्रक्रिया-गत आयाम दिए हैं। प्रयोगवादी ने अपना वादत्व छोड़कर स्वयं को नयी कविता को समर्पित कर नयी कविताओं की उपलब्धिया का सँवारा ही है।

(सुरेन्द्र उपाध्याय)

●●●

उर्दू की नयी कविता



चूँकि यह लेख उर्दू की नयी कविता के विषय में है, इसलिए मैं [illegible] और नए कवियों के विषय में ही बात करूँगा। सन् १-१७ की [illegible] जब भारत में राष्ट्रीय संघर्ष का युग आरम्भ हुआ, तो एक [illegible] यह कविता मीर और ग़ालिब की कविता से [illegible] हाली से कफ़ी आज़मी तक फैली हुई है। [illegible] जब पसे हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन का [illegible]

का रूप भी बदलता रहा है। परन्तु इसका बुनियादी ढाँचा नहीं बदला। हाली, इकबाल चकबस्त सुरूर जहाँनाबादी दुर्गासहाय बिस्मिल व सरदार जाफरी कौम की अलग-अलग परिभाषा जरूर करते हैं परन्तु पुकारते हैं कौम को ही। इसीलिए मैं इस कविता को एक ही सिलसिले की कड़ी मानता हूं। सन् १६३० में जब पूर्ण स्वराज्य का नारा लगाया गया तो सन् १६३६ में साहित्य में प्रगतिशील आन्दोलन संगठित रूप से आरम्भ हुआ। यानी बुनियादी तौर पर यह राष्ट्रीय कविता का युग था।

सन् १६३६ के साहित्यिक विद्रोह ने दो रूप धारण किए। एक मार्क्सवादी बगावत हुई। इस विद्रोह ने व्यक्ति को नहीं देखा केवल समाज को देखा और उसी को इकाई माना। इस विद्रोह के फलस्वरूप बहुत प्राणवान और सशक्त साहित्य पैदा हुआ किन्तु यह एकतरफा साहित्य भी है। इस प्रगतिशील साहित्य में व्यक्ति नजर नहीं आता इसीलिए समाज की तस्वीर भी बहुत साफ दिखाई नहीं देती है। दूसरी बगावत मीराजी और राशिद आदि ने की। इस कविता ने समाज की उपेक्षा कर केवल व्यक्ति को देखा और उसे ही इकाई ही माना। केवल सेक्स का मोहरा विद्रोहा बनाकर धर्म और नैतिकता पर हमला किया। चूंकि यह कविता समाज से बिलकुल कटी हुई थी इसलिए यह व्यक्ति को भी नहीं समझ पाई। व्यक्ति तो समाज के सन्दर्भ में ही समझा जा सकता है।

लेकिन जब देश आजाद हुआ, तो पूरा वातावरण ही बदल गया। और अब जो नया कविता पैदा हुई वह मार्क्सवादी प्रगतिशील कविता से भी जरा अलग है और मीराजी की शायरी से भी। यह नयी कविता व्यक्ति और समाज के सम्बन्ध की कविता है। इसने जिन्दगी को इकाई माना है। इस जिन्दगी में व्यक्ति और समाज दोनों साझेदार हैं। आज का नया कवि टॉपिकल (Topical) कवितायें नहीं लिख रहा है। अर्थात् राजनीति अब वस्त्र न रहकर शरीर का एक अंग बन गई है। वस्त्र के देखने वाले उस नहीं देख पा रहे हैं। और आज का कवि उस अकेलेपन और सन्नाटे को समझने का प्रयत्न कर रहा है जिसने औद्योगिक प्रगति के साथ आदमी को हर तरफ से जकड़ लिया है। अब उसकी आवाज भी ऊँची नहीं है। क्योंकि अब वह पूरी कौम से बात नहीं कर रहा है व्यक्ति-व्यक्ति को सम्बोधित कर रहा है। इसीलिए उर्दू की नयी कविता का संगीत भी बिलकुल बदल गया है और शब्दावली भी। किसी भीड़ से बात करने के लिए तो गूँजदार शब्दों की आवश्यकता होती है किन्तु किसी व्यक्ति से बात करते समय वजन और तड़कते शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता।

संगीत और शब्दावली के साथ-साथ इस नयी कविता का लैण्डस्केप (Land Scape) भी बदल गया है। अब फाँसियाँ नहीं हैं कि कोई शाहिर यह कहे

उफुक़[1] से साथ उफुक़ फाँसियों के झूले हैं।

और न अब वे कैदखाने ही हैं जिनमें बैठकर जाफ़री को यह कहना पड़े

प्यालों के चेहरों पर
मुफ़लिसी बरसती है।

अब वह सहरा[2] भी नहीं है जो घर छोड़कर मिलता है। अब तो वीराने शहरों तक आते हैं। अब दीवारों के जंगल उग आये हैं। आदमी अपने शहर में भी अजनबी है और अपने घर में मेहमान बना हुआ है। शहरों का ज़िक्र अब भी होता है परन्तु अब शहर बदल गये हैं। यह वह शहर नहीं है जिसका नाम दिल्ली था और मीर का दिल बन गया था—कि दिल उजड़ता था तो मीर दिल्ली को याद कर लिया करते थे

दिल की वीरानी का क्या मज़कूर[3] हो
ये नगर सौ मर्तबा लूटा गया।

अब तो शहर ऐसे हैं कि दिल उजड़ता देखते हैं तो आँखें फेर लेते हैं और अगर आँखें चार हो भी जाती हैं तो ढिठाई से मुस्कराने लगते हैं। नयी कविता इसी दर्द इसी तनहाई और इसी सन्नाटे की कविता है। राष्ट्रीय कविता का कवि काल कोठरी में भी अकेला नहीं था। आज का कवि अपने घर में भी अकेला है। इसलिए आज की कविता दरवाज़ा, दरीचा वीरान गलियां, अजनबी सड़कों और बेदर्द शहरों की कविता है।

चूंकि यह लैण्डस्केप नया है और यह शब्दावली नयी है इसलिए हमारे आलोचक इस कविता से डरे डरे नज़र आ रहे हैं। हमारे पास इस नयी कविता को आँचने और खरे-खोटे में फ़र्क़ करने के साधन भी नहीं हैं।

यहीं एक बात और कहना चलूं यह कहना तो बहुत आसान है कि हर ज़माने में अच्छा और बुरा साहित्य पैदा होता है परन्तु इसका कारण है कि कभी २ अपने ज़माने की ठुकराई हुई कविता, किसी और ज़माने की अच्छी कविता बन जाती है। मैं इससे यह नतीजा निकालता हूँ कि हर युग में चार प्रकार की शायरी पैदा होती है

---

(१) क्षितिज (२) रेगिस्तान (३) बयान करना।

(१) गतिहीन अच्छी कविता (Static Good Poetry) (२) परिवर्तनशील अच्छी कविता (३) बुरी कविता तथा (४) गतिशील बुरी कविता (Dynamic Bad Poetry)।

उर्दू में गतिहीन अच्छे कवियों की मिसाल नासिख और जौक हैं। ये अपने ज़माने के अच्छे कवि थे परन्तु गतिहीन थे और समय परिवर्तनशील होता है। वह इन्हें छोड़कर आगे बढ़ गया और ये वहीं रहे। और परिवर्तनशील अच्छे कवि हैं। व कल भी अच्छे थे और आज भी अच्छे कवि हैं। रंगीन और जान साहब स्थायी रूप में बुरे कवि हैं, ये कल भी बुरे थे और आज भी। नज़ीर अकबराबादी और ग़ालिब की कविता गतिशील बुरी कविता की मिसाल है यह कल बुरी थी आज अच्छी है। जौक के समय में यही फैसला ठीक था कि वह ग़ालिब से अच्छे शायर हैं। लेकिन आज का फैसला उतना ही ठीक है—कि ग़ालिब जौक से बड़े शायर हैं। बात स्पष्ट है। कविता की अच्छाई और बुराई का कोई अटल कानून नहीं होता। इसलिए यह बिलकुल असम्भव नहीं है कि उर्दू की जिस नयी कविता पर आज हम नाक भौंह चढ़ा रहे हैं वह कल अच्छी कविता की मिसाल बन सकती है। जोश और सरदार जाफरी आज स्टेटिक अच्छे कवि की मिसाल हैं। ये लोग इस युग के नासिख और जौक हैं। हम उन का मान करते हैं। फिराक़ और अख्तर-उल ईमान गतिशील बुरे कवि की मिसाल हैं। ये लोग राष्ट्रीय संघर्ष के समय में अच्छे कवि नहीं थे क्योंकि ये कोमल स्वरों के कवि हैं। लेकिन आज ये लोग नयी कविता पर प्रभाव डाल रहे हैं।

परन्तु आज की नयी कविता की बात करते समय एक बात ध्यान में रखना ज़रूरी है। उर्दू पंजाबी और बंगाली का नया साहित्य दूसरी भाषाओं के साहित्य से अलग है। ये तीनों भाषाएँ अब दो देशों की भाषाएँ हैं। मेरा ख्याल है कि उर्दू की नयी कविता की भाँति बंगाली और पंजाबी की नयी कविता भी दो हिस्सों में बँटी हुई दिखाई पड़ रही होगी। उर्दू में तो यही हुआ है। हिन्दुस्तानी उर्दू की नयी कविता पाकिस्तानी उर्दू की नयी कविता से अलग है।

हिन्दुस्तानी उर्दू की नयी कविता मृगनयनी भी है, और गजगामिनी भी। इस की बड़ी-बड़ी हैरान आँखें घबरा घबरा कर हर तरफ देख रही हैं। परन्तु इस के कन्धों पर ५ हज़ार वर्ष की सभ्यता का बोझ भी है। इसलिए यह चौकड़ियाँ नहीं भर सकती। पाकिस्तान की नयी कविता के कन्धों पर यह बोझ नहीं है। क्योंकि उसके पास अपनी कोई परम्परा नहीं है। वह तो परम्पराओं की तलाश में है। चूंकि पाकिस्तान के पास कोई इतिहास नहीं है इसलिए

इस्लाम और अमरीका की टक्कर में इस्लाम हार रहा है और अमरीका जीत रहा है। और वहां एक असौन्दर्यशाली कनपुरी तथा खुरदुरी कविता का जा रही है। वहां का नया कवि कविता की अच्छाई और बुराई के विषय में सोच कर अपने आपको हलकान नहीं करता। वह तो केवल चौंका देने की फ़िक्र में रहता है। ये 'टेढ़ा कविता' पाकिस्तान की सारी नयी कविता न सही परन्तु वहाँ की नयी कविता पर ये टेढ़ी छाप बहुत गहरी है।

पर मुझे तो जिस बात ने एक तरह की खुशी दी वह यह है कि पाकिस्तान हिन्दू और सिखों की कमी बुरी तरह महसूस कर रहा है। अय्यूब खाँ कुछ कहें—परन्तु अगर लाहौर का कोई मुसलमान कवि सन् १९६२ में 'काली पूजा' लिखेगा और अगर प्रसिद्ध साहित्यिक मासिक अदब लताफ़ हर महीने पुरानी उर्दू के नाम पर कबीर नानक, और मीरा की कवितायें छापेगा और उन्हें अपना विरसा (धरोहर) कहेगा वहाँ के नये साहित्य में हिन्दी-संस्कृत के शब्दों की वृद्धि होगी और शायर दोहे लिखेंगे तथा हिन्दू देवमाला से मिम्बल लेंगे तो मैं यही कहूंगा कि अय्यूबखाँ का यह खयाल ग़लत है कि रावी का किनारा और झेलम का पानी हिन्दुओं और सिखों को भूल गया है। वहाँ का नया साहित्य तो यह बता रहा है कि उन्हें अब हिन्दुओं और सिखों की बहुत याद सता रही है—और साहित्य झूठ नहीं बोलता है साहब।

पाकिस्तान का नयी कविता के विषय में एक बात और कहनी है। वह पूरे आदमी की तलाश में है। सलीम अहमद ने एक लेख में लिखा है—औरत की तरह शायरी भी पूरा आदमी माँगती है। जैसे कविता के केवल दो ही रूप हैं या तो वह धर्मपत्नी है या वेश्या।

हिन्दुस्तानी उर्दू की नयी कविता के सामने आधे-पूरे आदमी का सवाल नहीं है। क्योंकि हम कविता को न पत्नी समझते हैं और न वेश्या। यहाँ की कहानी ही दूसरी है। आज़ादी के बाद यहाँ परम्पराओं की वे जंजीरें पहनने को जी चाहने लगा था जिन्हें प्रगतिशील आन्दोलन ने तोड़ दिया था। इसलिए कविता ने पलट कर माज़ी (भूत) की ओर देखा। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि कविता माज़ी की ओर मुड़ गई। परन्तु स्वतन्त्रता माज़ी की याद ज़रूर करती है। इस लिए इस नयी कविता ने एक बार फिर पुराने कवियों के साथ साथ पुराने फ़ार्म को भी हाथ लगाया। मीर और सौदा फिर पढ़े जाने लगे ग़ज़लें तो फिर ग़ज़लें ही हैं। ये नये कवि क़सीदे मसनवियाँ और शहर-आशोब लिखने लगे। ग़ज़ल ने ताबाँ और मख़्दूम जैसे काफ़िरों को मुसलमान बना दिया। ताबाँ तो अब

सिर्फ़ ग़ज़लें ही लिखते हैं। मख़दूम भी अब धड़ाधड़ ग़ज़लें लिख रहे हैं। और हद तो यह है कि ग़ज़ल का जादू सरदार जाफ़री के सर पर चढ़कर बोल रहा है। जां निसारी, जो ग़ज़ल के विरुद्ध छिड़ने वाले संग्राम के प्रसिद्ध योद्धा थे वे आज दीवाने को ग़ज़लों से हार मानकर बढ़े नज़र आ रहे हैं। परन्तु नयी कविता का बुनियादी फ़ॉर्म फ्रीवर्स है। इन कवियों में विमल कृष्ण और मोहम्मद अली जैसे लोग भी हैं जिनकी कविता पाकिस्तानी मालूम होती है। शायद यही कारण है कि इनकी कविताएँ पाकिस्तानी रिसालों में ही छपती हैं। और जब हिन्दुस्तान का कोई रिसाला नयी कविता का विशेषांक निकालता है तो उसमें इन लोगों की कविताएं स्थान नहीं पाती हैं।

आजकल वहीद अख़्तर, ख़लीलुर्रहमान आज़मी बलराज कोमल बैकल माहिर शहाब जाफ़री भार पाशी, विश्वनाथ दर्द हसन नईम काज़ी सलीम मज़हर इमाम निदा फ़ाज़ली अज़ीज़ तमन्नाई शफ़ीक़ फ़ातिमा शेरा शहरयार, अज़मत अजमली मोहम्मद अली ताज साज़ तमकनत अज़ीज़ क़ैसी अमीर आरफ़ी वग़ैरह बढ़ भांति नए तजुर्बे कर रहे हैं। ये प्रयोग फ़ॉर्म की दुनिया में भी हो रहे हैं और कॉन्सेप्ट की दुनिया में भी।

फ़ॉर्म के सिलसिले में मैं दो प्रयोगों का ज़िक्र ख़ासतौर से करना चाहता हूँ। एक मज़हर इमाम की आज़ाद ग़ज़ल का तजुर्बा है। इन्होंने फ्री-वर्स में ग़ज़ल लिखने की कोशिश की है—

'डूबने वाले को तिनके का सहारा आप हैं
इक तूफ़ां है किनारा आप हैं।

परन्तु ये एक ही आज़ाद ग़ज़ल लिखकर रह गए।

दूसरा महत्वपूर्ण प्रयोग अज़ीज़ तमन्नाई का है। उन्होंने उर्दू में अपने सॉनेट का एक संग्रह प्रकाशित कराया है। सॉनेट पहले भी लिखे गये हैं परन्तु उर्दू के किसी कवि ने इतने सॉनेट नहीं लिखे हैं कि उनकी एक किताब तैयार हो जाये।

मैं ऊपर कह चुका हूँ कि यह कविता भाषण नहीं देती है इसलिए अब कोई बलराज कोमल विद्यार्थियों पर अपनी कविता लिख रहा है तो वह जोश मलीहाबादी की तरह एक ऐसा भाषण नहीं देता जो उन्होंने किसान के बारे में दिया था या जिस लहजे में अली सरदार जाफ़री ने दुनिया को जगाया था। कवि कोमल कहता है—'विद्यार्थी—

छुट्टी होने पर घर जाकर सो जायेंगे
पतेंगुराने बिस्तर से उगने वाले रंगीं ख़्वाबों में खो जायेंगे।'

अब इसी जगह पाकिस्तान के एहसन अहमद 'अश्क' की कविता का एक अंश देख लीजिए ताकि लैण्डस्केप वाली बात साफ हो जाय—

ख़ल्क की नजरों से बचने के लिए
शहर से दूर निकल आये थे ...
यक-ब-यक ... से इक नूर का धारा फूटा
हसन घबरा के कहा—
आओ छुप जायें अंधेरे में ...

हम उजाले में मुहब्बत भी नहीं कर सकते।'

'अश्क' की इस नज़्म का शीर्षक 'डरपोक' है। परन्तु मुझे शीर्षक से अधिक इस कविता के शहर में दिलचस्पी है। यह वह शहर नहीं है जिसके विषय में मीर ने कहा था—

'दिल भी गोया एक दिल्ली शहर है'

यह एक औद्योगिक नगर है। इसमें बड़ी भीड़-भाड़ है, तिल रखने की जगह तो मिल जाती है परन्तु दिल रखने की जगह नहीं मिलती है। इसलिए मैं कहता हूँ लैण्डस्केप बदल गया है। अब चलिए शफ़ीक़ फ़ातिमा 'शेरा' के 'पाक नगर' में चलें—

शगुफ़्ता घास में ये ज़र्द ज़र्द नन्हे फूल
न जाने किसलिए पगडंडियों का तकते हैं।

और वह देखिए मोहम्मद अलवी अपनी खिड़की खोल रहे हैं—

खिड़की से अब घर में धूप उतरती है
सरदी से मुरझाये बदन खिल उठते हैं।'

यह भाषा नयी है। इसका संगीत भी नया है और लैण्डस्केप भी नया है। हिन्दुस्तानी उर्दू की नयी कविता पाकिस्तान की नयी कविता की तरह किसी ऐसे कमरे में बन्द नहीं है जो हवा की मुलाक़ात से काँप जाता है। यहाँ के वहीद अख़्तर 'वनवास' में लिखते हैं—

अहदे[1] सूतनिक के शहर तमद्दुन[2] का एक बनजारा
दोश[3] पे असनाद[4] और कुतुबख़ाना का भारी पुश्तारा[5]
इसको भी बनवास मिला है चौदह साल या सोलह साल'

१-युग २-सभ्यता ३-कंधा ४-प्रमाण पत्र ५-गट्ठर

यह बनजारा राम से ज्यादा अकेला है क्योंकि इसके साथ न इसकी सीता है और न लक्ष्मण। बस तनहाई का यही दर्द इस नयी कविता का विषय है। इसलिए शेरा कहती है—

सूखी घास पे चिनगारी ही पड़े तो कुछ हंगामा हो

तनहाई का दर्द दोना देशों में एकसा है—

उजाड़ शहर पड़ा है चल चलो चुपचाप।'

असलम अंसारी का एक शेर सुनिये—

'इस नगरी में हर चेहरे पर
तनहाई की गर्द पड़ी है।

यही दर्द पाकिस्तान में जाहिद डार की जबान से यूं बोलता है—

किन शब्दों में बात करूं मैं लोगो
किन शब्दों को समझोगे तुम बोलो
ऐसा न हो तुम तनहा और मैं तनहा रह जाऊं

और फिर प्रतिध्वनि के बन से किसी हिन्दुस्तानी शहरयार की आवाज आती है—

'पुकारते हैं किसी अजनबी मसीहा को ।'

शहरयार क्योंकि किसी बन्द कमरे में नहीं है, इसलिए उसके लिए—

'भूरी का लमहा दहक उठा है
शगूफे शाखा पर सर उठाये
पिजा की बातों पर हँस रहे हैं ।
बहार गुलदान से चन्द कदमों के फासले पर खड़ी हुई है।'

बहार का यही विश्वास हिन्दुस्तानी उर्दू की नयी कविता को पाकिस्तान की नयी कविता से अलग करता है।

मुझे यह नयी कविता बहुत पसन्द नहीं है परन्तु मैं इसे बुरा नहीं कहता। मुझे नहीं मालूम कि यह अच्छी है या बुरी। मैं अभी केवल इतना ही कह सकता हूं कि इसका संगीत शब्दावली शब्दों की बैठक और इस लैण्डस्केप में एक नयापन है। अभी इसे परखने की कसौटी नहीं बनी है। इसीलिए अभी मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि शायद यह नयी कविता गतिशील खराब कविता (Dynamic bad Poetry) है।

अब सुनिये शहरयार की एक कविता। शीर्षक है 'सत्ता का अपमान'—

उम्मीदों के दिये जलाये
कब से इस मन्दिर में
जिसकी दीवारें हैं रेत के ऊपर
कलश है जिस पर नाकामी का
मजबूरी का लमहा-लमहा
महरूमी का तिलक लगाये
यास के बुत पूज रहा है।'

नये कवि के इस व्यक्तित्व को यह प्रश्न परेशान कर रहा है—

खाली हाथ अगर हम पहुँचे
अपने वतन
तो लोग कहेंगे
खाली हाथ चले आये हो" ""
जाओ-जाओ
वापस जाओ।' (शहरयार)

यानी यह नया कवि खाली हाथ वापस जाने से डरता है और अभी तक इनके हाथ खाली हैं। अभी इसकी झोली में उस हौसले के सिवाय और कुछ नहीं है जिसे यात्रा पर लेकर निकला था। परन्तु यह भी कम महत्व की बात नहीं है कि वह हिम्मत नहीं हार रहा है। अगर वह हिम्मत हार गया होता तो या तो जज़्बी की तरह चुप हो गया होता या यामिक़ की तरह शायरी करने से तोबा कर चुका होता यतींवा की तरह ग़ज़लें लिख लिखकर जिन्दगी के बाकी दिन गुज़ार देता। मुझे यह नयी कविता राष्ट्रीय कविता से अधिक साहस-सम्पन्न नज़र आती है। यह अकेली है मगर हिम्मत नहीं हार रही है। बार बार कहती है—

माज़ी का आईना मैंने तोड़ दिया है
माज़ी का आईना मैंने वक़्त के पत्थर से टकराकर तोड़ दिया है।
उसके तेज नुकीले टुकड़े मैंने
यादों के इस गाँव के बाहर
आँसू के तालाब में जाकर फेंक दिये हैं।
अब ये तेज़ नुकीले टुकड़े
मेरे मुस्तक़बिल के तलुवों में न चुभेंगे।'
● (अमीर आरफ़ी)

'स्वार्थों की दीवार से उतरो
आओ चलो
दुनिया को देखें। (शहरयार)

•

'चलो कि आज सितारों की सैर कर आयें,
कोई यह कह न सके आदमी से कुछ न हुआ
जिसे जमाना जिसे आप मौत कहते हैं
हमें यह मौत न मिलती तो मर गये होते।

• (मोहम्मद अली ताज)

आरी सपेरन काहे तू नित छेड़े राग नये।
तेरे बीन के कारन मेरे सपने रूठ गये।

• (ताज सई॰)

दुख की बंजर धरती हमने सींची है जब रोये।
दिन की फ़सल खड़ी देखी है गर रात को आँसू बोये।
हमने अपने प्यार के दाग को रोशन दिल में रक्खा–
तुमने अपने दुख के धब्बे गंगाजल से धोये।'

• (सज्जाद बाक़र रिज़वी)

गुंचे हों बेकरारे नसीमे सहर नहीं
काँटे भी चाहते हैं ठण्डी हवा चले।

• (सागर मदनी)

ये नयी कविता की चन्द मिसालें हैं। देखिये इस विषय पर कई किताबें लिखने की जरूरत है। मैं इसे एक लेख में कैसे समेटूं ---और अत में सुनिये मेरा एक शेर—

प्यासी रातें भी काटी हैं दिन भी गुजारे उलझन के
पेठ से हमने हार न मानी, घर न गये हम सावन के।

(राही मासूम रज़ा)

•••

आधुनिक मराठी कविता एक विहगावलोकन



आधुनिक मराठी कविता के जनक केशवसुत (१८६६ १९०५) के तुतारी-नाद ने मराठी कविता को दीर्घकाल हो म विद्रोह और विश्व भावना के विस्तृत भाव पटल पर प्रस्तुत किया था। आम्हीं कोण सतारीचे बोल नवा शिपाई और तुतारी जसी कविताएँ आत्म-परीक्षण मानव प्रतिष्ठा और विश्वजनीन भावनाओं से ओतप्रोत थी। विकास के प्रथम सोपान ही में मराठी कविता में प्रकृति प्रेम-सौन्दय, मानव-समाज और राष्ट्र विश्व की विविध भाव-सरणियों का ऐसा मिला-जुला रूप व्यक्त हुआ कि सम्पूर्ण विकास में आज तक काव्य प्रवाह को किसी एक विशिष्ट भाव-युग क चौखटे म विभाजित नही किया जा सकता। नारायण वामन तिलक कवि विनायक कवि बी० दत्त गोविन्दाग्रज बालकवि और भास्कर रामचन्द्र ताम्बे आदि कवियो ने आधुनिक मराठी कविता के मंगलाचरण को बीसवीं सदी के प्रथम दो दशकों म विकास की दिशाएँ प्रदान कीं। कवि विनायक न अपनी राष्ट्रीय कविताओ द्वारा देश और समाज की विषम-स्थितिया को ओजपूर्ण वाणी म व्यक्त किया। बाल कवि क काव्य मे प्रकृति और सौन्दर्य की सुकुमार व्यञ्जना हुई। भास्कर रामचन्द्र ताम्बे न प्रम और शृ गार की भावभूमि पर मराठी भावगीत परम्परा का प्रारम्भ किया। गोविन्दाग्रज की कविता म विफलता और निराशा (प्रम और मृत्यु') की धारा का सूत्रपात हुआ। भावभूमि की व्यापकता का अनुमान इसी बात स लगाया जा सकता है कि प्रारम्भिक विकास के इस चरण म हमें पारिवारिक विषयों की सामान्य संवेदनाओं की भावपूर्ण व्यञ्जना भी दृष्टिगोचर होती है। कविता के विकास का द्वितीय सोपान कवि विनायक 'बाल कवि' और ताम्बे की क्रमश राष्ट्रीय प्रकृतिपरक एवं शृ गार भावगीत परम्परा को सूक्ष्म अनुभूतियों और लाक्षणिक व्यञ्जनाओं न धरातल पर प्रतिष्ठापित करता है। -

सन् १९२० क पश्चात् रवि किरण मण्डल की स्थापना एक महत्वपूर्ण घटना है। इस मण्डल ने कविता को जनप्रिय बनाने की दिशा म महत्वपूर्ण कार्य

'ख्वाबों की दीवार से उतरो
आओ चलो
दुनिया को देखें। (शहरयार)

●

चलो कि आज सितारों की सैर कर आयें,
कोई यह कह न सके आदमी से कुछ न हुआ
गमे ज़माना जिसे आप मौत कहते हैं
हमें यह मौत न मिलती तो मर गये होते।

● (मोहम्मद अली ताज)

अोरी सपेरन काहे तू नित छेड़े राग नये।
तेरे बीन के कारन मर सपने रूठ गये।

● (ताज सईद)

दुख की बंजर धरती हमने सोची है जब रोये।
दिन को फसल खड़ी देखी है गर रात को आँसू बोये।
हमने अपने प्यार क दाग को रोशन दिल में रक्खा—
तुमने अपने दुख के धब्बे गंगाजल से धोये।'

● (सज्जाद बाक़र रिज़वी)

गुंचे हो बेक़रारे नसीमे सहर नहीं
काँटे भी चाहते हैं ठण्डी हवा चले।

● (सागर मेहदी)

ये नयी कविता की चन्द मिसालें हैं। देखिये इस विषय पर कई किताबें लिखने की ज़रूरत है। मैं इसे एक लेख म कैसे समेटूं और अंत म सुनिये मेरा एक शेर—

प्यासी रातें भी काटी हैं दिन भी गुज़ारे उलझन के
जेठ से हमने हार न मानी पर न गये हम सावन के।

(राही मासूम रज़ा)

●●●

आधुनिक मराठी कविता
एक विहगावलोकन

●

आधुनिक मराठी कविता के जनक केशवसुत (१८६६ १९०५) के तुतारी-नाद ने मराठी कविता को शैशवकाल ही में विद्रोह और विश्व भावना के विस्तृत भाव फलक पर प्रस्तुत किया था। आम्ही कोण, सतारीचे बोल, नवा शिपाई और तुतारी जैसी कविताएँ आत्म-परीक्षण, मानव-प्रतिष्ठा और विश्वजनीन भावनाओं से ओतप्रोत थीं। विकास के प्रथम सोपान ही में मराठी कविता में प्रकृति प्रेम-सौन्दर्य, मानव-समाज और राष्ट्र-विश्व का विविध भाव-सरणियों का ऐसा मिला-जुला रूप व्यक्त हुआ कि सम्पूर्ण विकास में आज तक काव्य प्रवाह को किसी एक निर्दिष्ट भाव-युग के चौखटे में विभाजित नहीं किया जा सकता। नारायण वामन तिलक, कवि विनायक, कवि बी० रत्त, गोविन्दाग्रज, बालकवि और भास्कर रामचन्द्र ताम्बे आदि कवियों ने आधुनिक मराठी कविता के मंगलाचरण को बीसवीं सदी के प्रथम दो दशकों में विकास की दिशाएँ प्रदान कीं। कवि विनायक ने अपनी राष्ट्रीय कविताओं द्वारा देश और समाज की विषम-स्थितियों को भावपूर्ण वाणी में व्यक्त किया। बाल कवि के काव्य में प्रकृति और सौन्दर्य की सुकुमार व्यञ्जना हुई। भास्कर रामचन्द्र ताम्बे ने प्रेम और शृंगार की भावभूमि पर मराठी भावगीत परम्परा का प्रारम्भ किया। गोविन्दाग्रज की कविता में विफलता और निराशा (प्रेम और मृत्यु) की धारा का सूत्रपात हुआ। भावभूमि की व्यापकता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रारम्भिक विकास के इस चरण में हमें पारिवारिक विषयों की सामान्य संवेदनाओं की भावपूर्ण व्यञ्जना भी दृष्टिगोचर होती है। कविता के विकास का द्वितीय सोपान कवि विनायक, बाल कवि और ताम्बे की क्रमश: राष्ट्रीय, प्रकृतिपरक एवं शृंगार भावगीत परम्परा को सूक्ष्म अनुभूतियों और लाक्षणिक व्यञ्जनाओं के धरातल पर प्रतिष्ठापित करता है। -

सन् १९२० के पश्चात् रवि-किरण मण्डल की स्थापना एक महत्त्वपूर्ण घटना है। इस मण्डल ने कविता को जनप्रिय बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य

किया। यशवन्त गिरीश प्रह्लाद केशव अत्रे भवानीशंकर पण्डित कुसुमाग्रज, बोरकर और माधव ज्युलियन द्वितीय सोपान के प्रमुख रचनाकार हैं। इन रचनाकारों में ताम्बे और कवि विनायक की परम्परा का समानान्तर विकास दृष्टिगोचर होता है। प्रह्लाद केशव अत्रे ने व्यंग्य काव्य की सृष्टि की और माधव ज्युलियन ने उमर खय्याम का अनुवाद तथा उर्दू छन्दों का प्रयोग किया। इस प्रकार मराठी कविता १९४५ तक प्रकृति प्रेम-सौन्दर्य और राष्ट्रीय तथा क्रान्तिकारी भावधाराओं से अनुप्राणित विकसित होती रही।

हिन्दी कविता की तरह छायावाद रहस्यवाद प्रगतिवाद और प्रयोगवाद आदि कालक्रम से विभाजन करने का अवकाश मराठी कविता के विकास प्रवाह में नहीं है। इसका यह आशय नहीं कि इस प्रकार की प्रवृत्तियाँ मराठी कविता में नहीं रहीं। जगन्नाथदास रत्नाकर से लेकर पन्त निराला और माखनलाल चतुर्वेदी प्रभृति जैसे हिन्दी कवियों के अनुरूप वैसी ही भावधाराओं के कवि इस विवेच्य अवधि में हुए हैं। अद्यतन काव्य प्रवाह के प्रथम चरण में अनिल (आत्माराम रावजी देशपाण्डे) और मर्ढेकर का सृजन-मोड़ अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

आधुनिक मराठी कविता की सामाजिक चेतना का आधार और जीवननिष्ठ समस्याओं की सामान्य पकड़ अनिल की कविताओं ने दी। वर्तमान जीवन आशाओं को आत्मसात् करने और प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति में मुक्त छन्द की सामर्थ्य उन्होंने ही सिद्ध की। अनिल के साथ ही वा० ना० देशपाण्डे का नाम भी मुक्तछन्द के सन्दर्भ में भुलाया नहीं जा सकता। कान्वमुत की मानव निष्ठा और आशावादी भावना नये सन्दर्भों में अनिल की रचनाओं में स्पन्दित हुई। अनिल की यह प्रगतिशील चेतना किसी वाद-विशेष की पक्षधर न होकर व्यापक मानव संवेदना पर आधारित है। यही मानवतावादी स्वर और गहरी आस्था अनिल को अत्यन्त सशक्त कवि और द्रष्टा के रूप में प्रस्तुत करती है। नयी पीढ़ी के तरुण कवि अनिल से प्रभावित हैं

मर्ढेकर मराठी नयी कविता के प्रवर्तक हैं। उनकी प्रारम्भिक रचनाओं का संग्रह शिशिरागम (१९३९) में गोविन्दाग्रज की परम्परा में आता है। इन रचनाओं में निराश हृदय की करुण व्यंजना मिलती है किन्तु इसी वर्ष द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ हुआ और यन्त्रयुगीन सभ्यता के वातावरण में मानवता के स्रोत सूखने से लगे। मर्ढेकर ने आधुनिक परिवर्तित जीवन-परिवेश में मानव मूल्यों के विघटन और जीवन निष्ठाओं के स्खलन को अनुभूत किया। उनकी कविताओं में

यथार्थ बौद्धिकता और जटिलता का समावेश होता गया। १९४७ में उनका 'काहीं-कविता' नामक संग्रह प्रकाशित हुआ। यही संग्रह नव-काव्य का प्रथम उद्घोष है। बम्बई महानगरी में मर्ढेकर ने यन्त्र-सभ्यता के परिवेश में मानवीय सम्बन्धों की वंचना देखी और इस सबकी कवि-मन पर हुई प्रतिक्रिया ने घृणा, निराशा और जुगुप्सा की भावना को जन्म दिया

> जगायची पण सक्ती आहे।
> मरायची पण सक्ती आहे।

(जीवित रहने और मरने दोनों ही पर प्रतिबन्ध है) महसूस करते हुए कवि ने जन-सामान्य के जीवन और मरण को इस प्रकार देखा

> गरिब बिचारे बिळांत जगत
> पिपांत मेले उंदरी दडून।

(असहाय गरीब लोग बिलों में जीते हैं और कनस्तर में छिपकर से प्राण छोड़ देते हैं) दूसरे संग्रह (आणखी काहीं कविता' १९५१) में कवि और अधिक विचार प्रधान सूक्ष्म और तीव्र हो गया

> जद्धि पाप्याची नजर फिरावी
> अनोळखीच्या उरावरूनी
> इथ सारथ्याची भेकडवृत्ती
> वावरत असे अगम्यांमधुनी
>
> अपरिचित के वक्षस्थल पर से
> जब दुष्ट की निगाहें फिरती हैं
> वैसे हा इन सब लोगों की कायरता
> जीवन में आचरण करती है!

प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से मर्ढेकर ने पौराणिक सन्दर्भों को आधुनातन बिम्ब परिवेश में व्यक्त किया। यांत्रिक नवीनतम उपमाएं उठाईं। रोजमर्रा के जीवनावश्यक उपादानों को काव्य-उपकरण बनाया। अग्रेजी भाषिक शब्दों का मुक्त प्रयोग किया। इतना ही नहीं उन्होंने प्राचीन छन्द अभंग-ओवी को आधुनिक भाव व्यंजना के लिए उपयोजित किया। मर्ढेकर ने मुक्त छन्द में (एक कविता अपवाद रूप में छोड़कर) कविताएं नहीं लिखी हैं। यह महत्वपूर्ण तथ्य नवकाव्य के इस पुरस्कर्ता के साथ सदा जुड़ा रहेगा। तमाम विफलता और घृणा के बावजूद मर्ढेकर की मानव और जीवन में घनी आस्था थी और यही कारण है कि उनका संवेदनशील कवि विडम्बना देख तिलमिला उठा।

प्रकृतवाद प्रायडियन दृष्टि—बिन्दु से पु० शि० रेगे की कविताओं में व्यक्त हुआ है। उत्तान शृंगार और नारी के प्रति अत्यन्त ही मांसल दृष्टिकोण उनकी कविता का मूल भाव है। शरच्चन्द्र मुक्तिबोध के शब्दों में 'रेगे की नारी-दृष्टि भोग प्रधान है उनकी कविता मानो स्त्री-देह का ब्योरेवार वर्णन ही है।' वा० रा० कांत 'रुद्रवीणा' में क्रांतिकारी कवि के रूप में दिखाई दिये किन्तु नयी कविता के परिवेश में उनकी रूमानी रचनाएं भी मिलती हैं। मर्ढेकर से प्रभावित और उनकी-सी ही अवसाद-ग्रस्त दृष्टि वसंत हुजरनीस की 'बदया रहलो' कविता संग्रह में दृष्टिगोचर हुई। इधर उनकी कविताएं देखने को नहीं मिलती।

अ० द० भावे (ग्रार्न्स हुलवें भिग—दा संग्रह) ने अपना कविताओं म आर्थिक विषमता और आधुनिक सभ्यता पर कटाक्ष किय हैं। महानगरीय जनजीवन और मध्यमवर्गीय त्रासदी का मार्मिक स्वर उनको विशेषता है। श्रमिकों का दयनीय अवस्था का भी सहानुभूतिपूर्ण चित्रण किया है। ग्रामोपाध्ये की कविताए निलावित्री' में संग्रहीत हैं। भौतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में मानवीय मूल्यों का अवमूल्यन कर दिया है। उनका कविताओं में यह असन्तुलन प्रतीकों के माध्यम से उद्घाटित हुआ है।

विंदा करंदीकर शरच्चन्द्र मुक्तिबोध और मंगेश पाडगांवकर ये तीन नाम मराठी नयी कविता के समसामयिक समृद्ध स्वरूप को सहज प्रकट कर देते हैं। विंदा करंदीकर अपने प्रथम संग्रह 'स्वेदगंगा' में क्रांति और ओज के कवि थे। किंतु मृदगंध' और ध्रुपद' संग्रहों में उनका नया रूप सामने आया। उनका रचनाकार जहाँ उद्दाम शृंगार के मांसल दृश्य उपस्थित करने म सानी नही रखता वहीं सामाजिक विषमता पर वज्राघात करने मे नहीं चूकता है। जहाँ कवि ने मध्यमवर्गीय जीवन की विषमता को प्रकट किया है वही उसमे प्रखर मायावादी स्वर भी सुनाई पड़ता है

रोने की भी शक्ति नहीं है
हँसने की भी शक्ति नही है।

किन्तु दूसरे ही क्षण कवि का आस्था प्रधान स्वर गूंजता है

मुझे दीख पड़ते हैं
भविष्योन्मुख स्वीकारशील जीवन के
लाल लाल बाल ''
क्रांति के तूफानों में बार बार
जनता के पेट में
अग्नि है अग्नि है ......
जनता के ऐक्य में

सावा की लहर है ''' '' ''

जनता की नसा म

लाल लाल रक्त है'''''' ''

जनता की मुक्ति हेतु

अभी एक समर शप '' ''''''

विंदा करंदीकर का मुक्तछंद प्रवाह और लय की दृष्टि स बजोड़ है। महाराष्ट्र की स्थानीय रूप-गंध विनाशकता उनके बिम्बों में सजीव हो उठी है।

शरच्चन्द्र मुक्तिबोध में आर्थिक विषमता और सामाजिक दुरावस्था के प्रति असंताप और विद्रोह का स्वर ऊँचा हुआ है। उनका विद्रोह-आक्रोश सामान्य जन क प्रति सहानुभूति से ओतप्रोत और आशावादी है। साम्यवादी चिंतना कवि के अन्तमन में सक्रिय रहती है। किंतु वह अपनी संस्कृति और परिवेश से विच्छिन्न नहीं होता। राजनीतिक आग्रह रचना प्रक्रिया और मानवीय संवेदनाओं में सन्निहित हो कलात्मक ढंग स व्यक्त होता है। 'नवी मलवाट' 'यात्रिक' आदि संग्रहों में उनकी सशक्त रचनाए हैं। आक्रोश और तिलमिलाहट जैसे हरदम कवि को मथती रहती है

मेर केश-जाल म घर्राता है क्रुद्ध वात ''

और भी—

दहक उठें सारे जन

ऐसा अग्नि-गीत गा

गीत हो त्वेष का, विषमता-द्वेष का

विद्रोही गीत एक लौह दण्ड सा

साहे न हाथों का

कठोर गीत गा '' ''

मुक्तिबोध की मुक्तछंद योजना और नवीनतम सन्दर्भों मे आक्रोश-व्यंजना नयी कविता के परिवेश में सामाजिक मनुष्य की प्रतिष्ठा की दृष्टि स अप्रतिम है। मंगेश पाडगाँवकर (जिप्सी छोरी आदि संग्रह) मुलतः प्रकृति और सौन्दर्य के कवि हैं। नव-रोमान्टिसिज्म क धरातल पर वे हल्की संवेदनाओं का मूर्त और अमूर्त बिम्बों में कुशलता से व्यक्त करते हैं। सौन्दर्य की प्यास लिय उनका जिप्सी कवि मन प्रकृति क रंग-रूप रस-गंध को सशक्त बिम्बों में गूंथता आनंद-हाक देता रहता है। उनकी प्रेम की कवितायें सूक्ष्म और मार्मिक हैं। इस सौंदय दृष्टि के अतिरिक्त पाडगाँवकर में सामाजिक चेतना भी परिलक्षित होती है। शब्द-चयन

गति-मय और आत्मीय बिम्बों के कारण पाडगांवकर की कविता का कलात्मक पक्ष बहुत ही प्रभावकारी और सुगढ़ होता है। मंगेश पाडगांवकार सूक्ष्म संविद भाषा के कलात्मक कवि हैं।

सदानन्द रेगे भी प्रकृतिपरक सौन्दर्य दृष्टि के रचनाकार हैं। रेगे ने छोटी कविताओं के रूप में व्यंग्य बहुत सुन्दर प्रस्तुत किये हैं। अक्षरवेल संग्रह में उनकी छोटी कवितायें अत्यन्त प्रभावकारी हैं। जहाँ रेगे प्रकृति के छोटे छोटे मादक दृश्य बिम्बों में बाँध लेते हैं वहीं दूसरी ओर उनकी रचनाओं में दुर्बोध और विक्षिप्त कल्पना भी कम नहीं। वसंत बापट भी ताजी व्यंजना की दृष्टि से महत्वपूर्ण कवि हैं। रोमाण्टिक धारा और सामाजिक चेतना का समन्वय उनमें मिलता है। लेखिकाओं में इंदिरा और पद्मा का कृतित्व महत्वपूर्ण है। इन्दिरा रोमाण्टिक धरातल पर नवीन संवेदना अत्यंत ही बारीकी से उतारती है। आत्मलीन उदासी का विशिष्ट मूड ताज-टटके सशक्त बिम्बों में कलात्मक रूप से उनकी कविताओं में मिलता है। पद्मा की कविताओं में पारिवारिक जीवन के हृदयग्राही चित्र मिलते हैं। ये भी कोमल संवेदनाओं को सधी रेखाओं और पूर्ण बिम्बों में कुशलता से उतारती हैं। दोनों ही में अनगढ़ता कहीं नहीं—कलात्मक विन्यास दृष्टिगोचर होता है।

इधर के और नये किन्तु मान्यता करने वाले कवियों में दिलीप पुरुषोत्तम चित्रे, शंकर रामाणी, रमेश तेण्डुलकर, भारती प्रभु और सरिता पदकी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों ने बौद्धिक सजगता और वास्तववादी अग्रोप से आधुनिकतम भावबोधों को और भी माविन्य से छुआ है। पश्चिम के कवियों का प्रभाव इन पर देखा जा सकता है।

मराठी नयी कविता एक स्वाभाविक-आत्मीय प्रक्रिया में विकसित हुई है। मर्ढेकर को बहुत विरोध सहना पड़ा था। फिर भी मराठी नवकाव्य आन्दोलन और गिरोह प्रयत्नों का प्रतिफल नहीं रहा है। वैचारिक दुर्बोधता कल्पना की विक्षिप्तता होते हुए भी मराठी नयी कविता अनुवाद-सी कहीं नहीं लगती। संवेदनागत और व्यञ्जनागत असन्तुलन नहीं दीख पड़ता। यही कारण है कि रूप रस गंध रंग प्रकृति प्रेम-सौन्दर्य संस्कृति-मानव-जीवननिष्ठ और आधुनितम अभिशप्त जीवन की विडम्बना सब कुछ एक साथ मराठी नयी कविता में परिलक्षित होते हैं।

(चन्द्रकान्त देवताले)

●●●

वर्तमान गुजराती कविता

●

स्वाधीनता के बाद तीन समय कवि विदा हो गए—हरिश्चन्द्र भट्ट, कृष्णलाल श्रीधराणी और प्रह्लाद पारेख। उनकी अनेक रचनाओं में शुद्ध सौन्दर्यानुराग झलकता है। पाँचवें दशक के प्रारम्भ में प्रह्लाद पारेख कृत 'बारीबहार' का प्रकाशन हुआ और गुजराती कविता ने जागरूक समाजाभिनिवेश से कुछ मुक्ति पाई। इसी दशक के अन्त तक राजेन्द्र शाह भी आ पहुँचे जिनकी 'ध्वनि' में गुजराती पाठक ने एक अनाविल सौन्दर्य-लोक के दर्शन किये। चतुर्थ दशक में सामाजिक यथार्थ का आलेखन करने वाली रचनाओं की बहुलता थी 'ध्वनि' में ऐसी एक भी रचना नहीं। केवल कविता-तत्त्व तुष्टि का कारण बने इस कदर यहाँ है। उनका चौथा काव्य-संग्रह 'शान्त कोलाहल' ६२ में प्रकाशित हुआ। इसमें भी वे 'ध्वनि' में सर्जित निरुद्‌देश्य आनन्द के खुशगवार माहौल में ही डूबे हुए दीखे। राजेन्द्र ने गीत रचनाएँ भी काफी दी हैं। उनमें बंगाली एवं मारवाड़ी गीतों-लोकगीतों की लय का उपयोग किया गया है। इस कवि के 'वनवासी के गीत' मस्त तूफानी प्रणय की महक तथा ताज़गी लिए हुए है। ऐसी रचनाओं में पुनरावृत्ति का भय बना रहता है। फिर भी हिन्दी कवि ठाकुर प्रसादसिंह के 'वंशी और मादल' के गीतों के साथ राजेन्द्र के इन गीतों का पढ़ना कम रसप्रद नहीं है।

उमाशंकर और सुन्दरम् पिछले तीन दशक के मूर्धन्य कवि हैं। सुन्दरम् के संवेग बड़े प्रबल हैं। उनकी कुछ रचनाओं में 'प्रिमिटिव फोर्स' का आस्वाद प्राप्य है। उमाशंकर में मानस सर की स्वस्थता है तो सुन्दरम् कभी कभी उमड़ते नद के समान बहते नजर आते हैं। बारीकी दोनों की रचनाओं में लक्षित होती है। विचार की दृष्टि में सुन्दरम् की गति एक ही दिशा में तथा गहराई को छूने में मग्न प्रतीत होती है। उमाशंकर गति और स्थिति—सार्वभौमिकता पसन्द करते हैं। सुन्दरम् की प्रारम्भिक कविताओं में वर्ग-वैषम्य पर व्यंग्य किये गये हैं। उनमें मार्क्स-दर्शन के अनुसार कुछ वर्ग-संघर्ष की भावना व्यक्त हो गई है। फिर वे गाँधीवाद को स्वीकार करते हैं और अन्ततः अरविन्द-दर्शन के उपासक बनते हैं। हिन्दी कवि पन्त और सुन्दरम् की गति कुछ समानान्तर-सी दीखती है।

उमाशंकर का सौन्दर्य-बोध रवीन्द्र के निकट और उनकी जीवन-दृष्टि गांधी के सन्निकट है। उनके समक्ष विश्वप्रेम है। उन्हें मानव-मात्र से लगाव है। उसमें बसा मनुष्य बृहत्तर विश्व को प्यार करने वहां का विलयन करने में अपने अस्तित्व की सार्थकता महसूस करता है। 'यात्रा' के सुन्दरम में भी यह उदात्त तत्व है किन्तु वे जन-जीवन के सान्निध्य से हटकर एक कोने में जा बैठे और उन्होंने जीवन को समझने के लिए एक निश्चित दर्शन का कवच पहन लिया। देखें इस नयी अनुभूति की रचनाएँ भी बिना दिये वे कैसे रह सकते हैं ?

उमाशंकर निशीथ (४०) की एक लम्बी कविता आत्मना खंडेर (१७ सानेट) में एक विशिष्ट अर्थ में अंतमुक्त हुए हैं। यहाँ मानव जीवन को आकांक्षाओं के साथ निजी विक्षिप्त मनस्थितियों का प्रभावोत्पादक अंकन है। प्राचीना ('४४) में पौराणिक पात्रों को उमाशंकर ने नवजीवन का सत्व पिलाया है। ये पात्र अपने स्थान पर खड़े होने पर भी युगों की सीमाओं को बेधकर हमारे आँगन तक दृष्टि पहुँचा पाये हैं। यहाँ प्राचीन पात्रों में अधिष्ठित जीवन में वर्तमान युगचेतना की धड़कन सुनाई देती है। युद्ध के कारण विघटित जीवन-मूल्यों के बीच मानव-जाति की पुरानी पीड़ाओं को कवि ने यहाँ नये अर्थ दिये हैं। आतिथ्य' (४६) से जीवन की संवादिता और प्रसन्नता मुखरित हुई है। वसंत वर्षा ('५४) में प्रकृति के निविड़ आश्लेष तथा विश्व मानव के प्रेम की प्राप्ति का संतोष स्वर के रूप में हैं। यहां स्वाधीनता के बाद लिखा गया 'जीर्णजगत' नामक काव्य है जिसमें समाज प्रतिष्ठित प्रवचकों के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त हुआ है। उसका पूर्वार्द्ध देखिये—

मुझे मुर्दों की बास आये !
सभा में समिति में बहुत से पंथों में
जहाँ नये निर्माण की बातें करें
दकियानूस जबड़े।
एक हाँ के पीछे हाँ की भेड़िया धसान
मिस शायद किसी के मर्द मुंह से मा,
उसे दुत्कार से भाई मगर ये थरथराना
विचरते मन्द नित्य
श्वास लेते अर्द्धसत्य असत्य में
शरठ हँगि कहीं कहाँ जवान पूरे
निरखकर भावी को लेते जम्हाई
भगाते कुण्डली संकुल ऐसी भाड़कर
कि सत्य का अवरुद्ध हो जाय गला,

मुझे निशिदिन मुझे हुए फूलों की बास आये।

मुझे मुर्दों की बू सताये!

पुष्प स सत्कर सजे रूप में विहरते

शव समाज की हर चोटी से हर घाटी पर चाहे विचरते।

जंगलों म कष्ट तो कम नहीं हुए

कुर्सियाँ बनतो रहा अगणित!

पुष्प भी खिलते रहे हैं बाग में

और सजाई जा रही है गर्दनें

अचेतन की आरती में चेतना हवि हो रही।

छिन्न भिन्न छु' ('५६) कविता में व्यक्तित्व और समाज को व्यवस्थिति में विस राव कवि को खलता है। यहाँ मनुष्य ने प्रच्छन्न आतर रूपा से आक्रान्त होते हुए भी कवि ने उनके प्रति एक प्रकार के ऋण भाव को स्वीकार किया है। इस अनवस्था और विखण्डिता के युग में हम पर छाई हुई विवशता का इकरार करने वाले दूसरे दो प्रतिभा सम्पन्न कवि स्वातंत्र्य के बाद प्रकाश में आये श्री निरंजन भगत और श्री प्रियकान्त मणियार।

आधुनिक गुजराती कविता में शब्द शिल्प की क्षमता उमाशंकर के बाद सबसे अधिक निरंजन मे है। निरंजन विश्व-कविता क अध्येता हैं। उनका कक्ष पुस्तकों की दीवारों स बना है। गुजराती-बंगाली कविता के अतिरिक्त पाश्चात्य भाषाओं की कविता के अध्ययन से भी श्री भगत ने काव्य-शिक्षा ग्रहण की है। वे कविता पर बातचीत नहीं कर सकते भाषण दे देते हैं। वैसे चर्चा में आक्रामक दीखन पर भी उनकी दृष्टि गाँधी प्रणीत अहिंसक मानवता-दृष्टि है। उनकी कृतियों के बहिरंग पर कल्पना (Image) प्रतीक आदि पर—बाल्लेयर इलियट रिल्के आदि कवियों का यथोचित प्रभाव लक्षित होता है। उनके प्रतिनिधि संग्रह 'छन्दालय म आकार निर्मिति का आश्चर्यजनक कौशल है नगर-संस्कृति के विकास क फलस्वरूप व्यक्तिमन के सूनेपन का अनूठा अंकन है। 'प्रवालद्वीप' (बम्बई पर लिखित काव्यगुच्छ) म व्यंजित युगबोध निरंजन को सत्यान्वेषी तथा मनुष्यों के परम चाहक क रूप में परिचित करवाता है। परस्पर के यान्त्रिक व्यवहार क कारण मनुष्य का हृदय पराजित-सा हो गया है इसका निरंजन को बेहद गम है। अघ अमर्याद आकांक्षाओं के पीछे दौड़ते हुए मनुष्य भ्रान्ति के अंधकार म फसकर दिग्भ्रमित हो गया है। निरंजन का यह स्वर उनकी एक छोटी कविता 'अहमदाबाद' में भी सुनाई देगा। कुछ पंक्तियाँ देखिए

यह न शहर मात्र धूम्र के धुएँ
रुंधते जहाँ मनुष्य के रुए रुए।
असह्य नेत्र में अदम्य रूप की सुधा
खिलती तथापि व्यर्थ हो यहाँ तथा–
गौरवाग्रये' पड़ सदा उदार कर्ण-सी
मिल-मालिकों के घर सुवर्ण-सी।

प्रियकान्त की रचनाओं में प्रथम पंक्ति से ही उन्मेष झलकता है। सारी रचना का ताजगी के साथ निर्वाह होता है। प्रतीकों व नये उपमानों से समृद्ध समग्र कृति एक स्वायत्त प्रतीक होती है। उनकी 'चालतां चालतां' कविता में छाया के प्रतीक के सहारे आज के मनुष्य के अंतर्जगत की चहल-पहल का मनोरम आलेखन हुआ है। कवि ने विभिन्न मन:स्थितियों की सुरेख तस्वीरें खींची हैं। 'अश्व' नामक कविता में सूर्य के रथ का वहन करने वाले सात अश्वों में ही एक अश्व यहाँ तांगे में जुड़ा हुआ अलक सुबह से ही बरसते पानी में तरबतर काँप रहा है। ऊर्ध्व स्थिति से च्युत आज के मनुष्य के गमगीन परिवेश, और उसमें मजबूत सह मनुष्य का यह अश्व अप्रतिम प्रतीक बन सका है। प्रियकान्त ने कुछ मधुर गीत भी लिखे हैं जिनमें राधा-कृष्ण के परस्पर सम्बोधन का आधार लिया है। दूसरे भी अनेक नये कवियों ने इस पुराने आधार से नई उपलब्धि के लिए प्रयोग किये लेकिन वे प्रयोग मात्र पुनरावर्तन बन कर ही रह गये।

बालमुकुन्द दवे प्रजाराम और उशनस् तीनों परम्परा प्राप्त और प्रचलित काव्य रूपों एवं काव्योपकरणों का उपयोग करने वाले प्रयोगों में न उलझकर कविता सिद्ध करने के प्रयत्न में मग्न रहने वाले कवि हैं। प्रजाराम भी राजेन्द्र की तरह 'प्राशमुग्ध' हैं। उनका संवेदना-पटल कोमल ऋजु है। अरविन्द-दर्शन को अंगीकार कर लेने से जो लाभ-हानि सुन्दरम् की कविता को हुई वही प्रजाराम की कविता के साथ भी हुआ। बालमुकुन्द में असाधारण सहजता तथा प्रासादिक माधुर्य है। उच्च स्तर के कवि होते हुए भी वे लोकप्रिय हैं। लोकगीतों में सहज और खुमार में इन्होंने काफी अच्छे गीत लिखे हैं।

उशनस् विषय-वस्तु की दृष्टि से समृद्ध हैं। वे लिखते हैं ख़ूब लेकिन वाकई उनमें सर्गशक्ति है। कोई भी विषय उनकी लेखनी का उत्तेजित कर सकता है। भारतवर्ष पर लिखे गये उनके काव्यों में विभिन्न प्रदेशों का व्यक्तित्व नैसर्गिक सुषमा मानव रचित कलाकृतियाँ और भिन्न-भिन्न जनसमुदायों की जीवन्त छवियाँ उतारी हैं। उशनस् ने प्रबन्ध काव्य के क्षेत्र में भी हस्तक्षेप किया है। उनकी

१ श्री नरेश मेहता ने 'फागुन मासे' जैसे सप्तमी के प्रयोग किये हैं।

कविता की इबारत में प्रल्हहता ऊबड़-खाबड़ता और सर्वशब्द समभाव है। उनकी प्रारम्भिक रचनाओं में संस्कृत की अपरिचित शब्दावली की भरमार के कारण दुरूहता थी। 'आर्द्रा' में उनका विकासक्रम दिखाई देता है।

इन तीनों के साथ अन्य कवि हैं श्री जयंत पाठक वेणीभाई पुरोहित मकरन्द दवे पिनाकिन् ठाकोर हरीन्द्र दवे नन्दकुमार पाठक सुरेश दलाल हसित बूच आदि। गांधीयुग के श्री स्नेहरश्मि सुन्दरजी बेटाई मनसुखलाल झवेरी करसनदास माणेक पूजालाल स्वप्नस्थ आदि भी आज लिख रहे हैं। बाद में लिखने का प्रारम्भ करने वाले किन्तु कोरे तथ्य उगलने वाले अनेक कवि कविता को उपेक्षा क्षेत्र समझकर लिख रहे हैं।

श्री हसमुख पाठक नलिन रावल तथा विनोद अध्वर्यु प्रयोगशील हैं। ये साम यिकता का मम पकड़न में प्रवृत्त काव्य शिल्प म प्रवीण पाश्चात्य कविता के अध्ययन का सदुपयोग करने वाले गत दशक के नये कवि हैं। उनमें उमाशंकर निरंजन की तरह समाजाभिमुखता भी है निसर्गाभिमुखता भी है वैयक्तिक मन स्थितियों का अंकन भी है।

श्री हेमन्त देसाई और दिलीप झवेरी ने संयोग विप्रयोग की कुछ कविताओं में मांसल प्रणय की भावपूर्ण अभिव्यक्ति की है। बाद में ये दोनों अपना अनुकरण करने लगे। इनके समान कम उम्र के श्री चन्द्रकान्त सेठ और योसेफ मेकवान उज्ज्वल भविष्य के इंगित दे चुके हैं।

तीन चार वर्ष में यहाँ अछांदस रचनाओं का शोरगुल मचा हुआ है। गत वर्ष अहमदाबाद में अछांदस कवियों का एक बड़ा उग्र जुलूस निकला था। इस दल में कुछ कवि छन्दों में अच्छी रचनाएं देने वाले हैं कुछ गजलकार हैं तो कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने छंद का कभी स्पर्श भी नहीं किया है। छंद में जिसकी यथेष्ट गति हो, वे ही मुक्त छन्द में सही माने में कामयाब हो सकते हैं यानी अछांदस की आव श्यकता को समझ सकते हैं अगर है तो। इस समझदारी के कारण श्री गुलाम मोहम्मद शेख और श्री सुरेश जोशी इस विधा में कुछ भास्वरा रचनाएं दे सके हैं।

'छिन्न भिन्न छुं' कविता में श्री उमाशंकर ने गुजराती के चारों कुल के छंदों का विनियोग किया है। उसमें और एक अन्य लम्बी रचना 'शोध' में बीच-बीच में गद्य खण्डों का सार्थक प्रयोग हुआ है। पहली रचना में लयकी टूटन और धड़कन इस कदर सुनाई देती है कि जीवन का छिन्न भावैहव भिन्नता हूबहू उभर उठती है।

श्री सुरेश जोशी ने 'प्रत्यञ्चा' ('६१) में कुछ अच्छांदस रचनाएं दी हैं कुछ रचनाओं में छंद को गद्य के निकट लाने का प्रयास किया है तो कहीं कहीं अलग अलग लय वाले वाक्यों को प्रास की दीवारों से नियन्त्रित किया है। इस दृष्टि से 'चार अन्धकार', सूर्यो आदि रचनाएं पठनीय हैं। प्रतीकों के माधिक्य एवं सयोजनत्व की कुछ रचनाएं चर्चा के लिए पसन्द करने योग्य हैं — रोज रात, है, हुं सामसु छुं' हठ' आदि रचनाओं में दृश्यमान और अदृश्य—विजुअल और ऑडिटरी—दोनों प्रकार के प्रतीक प्राप्त होते हैं। प्रत्यञ्चा' में कवि के दाम्पत्य जीवन अर्थ-भ्रान्ति का अनुभव कर रहे हैं। हाँ व्यवहार के शब्दों की शक्तियों का कविता में अतिक्रमण होना चाहिए किन्तु किस हद तक ? मा तीव पौराणिक प्रतीक—mith के विनिष्ट प्रयोग तथा नए प्रतीकों के कारण ये रचनाएं मर्यादित पाठकों के लिए ही हैं।

Pure Poetry के प्रवर्तकों में एक फ्रेंच प्रतीकवादी कवि का यह कथन श्री सुरेश जोशी ने आत्मसात् कर लिया है— Poetry is not made of ideas *but of words* —कविता विचारों से नहीं शब्दों से बनती है। कविता में विषय का महत्व नहीं है। बात ठीक है क्योंकि हिमालय पर लिखने से कोई रचना भव्य हो जाएगी इसकी किसी कवि को पूर्ण प्रतीति नहीं होती। परन्तु जो कुत्सित जगत के विषय हैं, उन्हीं पर लिखने से कविता सिद्ध होगी इस भ्रान्ति से श्री सुरेश जोशी मुक्त नहीं है। मतलब कि उनकी रचनाएं विषय के चुनाव की दृष्टि से अधिक महत्व रखती हैं।

प्रत्यञ्चा' को पढ़कर हम इस ज़माने के अजीबोगरीब दर्दों से वाकिफ होते हैं। कवि ने यहाँ यन्त्रयुग की पैदाइश के अनुकूल एक विद्रोही दर्पपूर्ण नास्तिक, भोगवादी क्षणवादी, सशंक पात्र को उभारा है जो तमाम रचनाओं के नेपथ्य में बैठे बैठे बोलता है। रोमान्टिक कवियों की तरह पात्र की प्रवृत्ति भी भोग परायण और मरणोन्मुखी है।

ये और नए तमाम अच्छांदस रचनाकार मूल्यों के आदर्शों के विरोधी हैं। तथाकथित मूल्यों और कोरे आदर्शों का तुकपाठी उच्चारण तो किसी भी स्वातन्त्र्योत्तर कवि ने नहीं किया। हम ओर्णजगत रचना देख चुके हैं। फिर भी लगता है कि इस नवजवान कविता की निर्भीकता केवल नेतिवाचक नहीं हो सकती। इसके पीछे कोई विधेयात्मक बल होना चाहिए। तनिक विषयान्तर से बात करूं। श्री जे० कृष्णमूर्ति ने बार-बार कहा है कि जो कुछ कहा गया है उसको बिना सोच-समझ स्वीकार कर लेने से हमारी रचनात्मक शक्तियाँ कुण्ठित हो जाती हैं। हम अपने आसपास कल्पित आदर्शों के भयजन्य किले खड़े कर लेते हैं और फिर दब-दबकर

जीत हैं। मनक मर्यादामा में पालन म जीवन को सहज गति लुप्त हो जाती है। और एम शब्दों का आरोपण करन वाल नता लोग अपने आचरण से इन्ही आदर्शों की विडम्बना करते रहते हैं। यह सब देखकर आज का कवि आर्शकित हो गया है। वह दूसरा के खोखल उद्गारो का अनुसरण करना नहीं चाहता। जिस बात की उसे प्रतीति नही है उसके पीछे वह क्यो मारा मारा फिरे? मनुष्य को अब एस शासनस्य पथप्रदर्शक की आवश्यकता नही है। आवश्यकता है स्वतंत्र व्यक्तित्व वाल मनुष्या की जो अपनी बात को स्वय समझने की कोशिश कर। दूसरों के दिय हुए उत्तरो को अपने प्रज्ञा का हल समझकर स्वीकार कर लन म सूक्ष्म प्रवचना पड़ी हुई है। पुरानी आस्थाए टूट गई हैं और नई आस्थाए जगी नहीं हैं इसलिए आज का कवि संदिग्धता का अनुभव कर रहा है।

वेदना का गीत गान म य कवि गौरव नही मानते वेदना को विवशता समझते हैं अत व अक्सर कटु और तीखे हो बैठते हैं। स्वप्न या विस्मय की प्रवृत्तियों पर कविता लिख बठे इस कदर य कभी प्रभावित नही होते। मन की गहरी और सूक्ष्म हलचल के अकन में इनकी रुचि है और इसके लिए वे उपेक्षित पदार्थों को प्रतीक बनाते हैं। भद्र और कुत्सित का स्निग्ध और दुरित का सुन्दर और असुन्दर का भेद उनकी दृष्टि म नही है क्योकि व दृष्टि में होने में ही विश्वास नही करते। चेतना के समस्त स्फुरायमाण अशा को अभिव्यक्ति मिल रही है इस अन्दाज से य कवि अपन तमाम संवेगो को व्यक्त करते हैं अभिधा का य लोग विरोध करते हैं किन्तु स्वयं अनेक बातें निरावरण कहन म सार्थकता का अनुभव करते हैं। इन कवियों में कभी-कभी लगता है कि शैली का स्थान 'फ शन' न ले लिया है और अधिकाश में नय उन्मेष की जगह प्रयोगदास्य ही लक्षित होता है।

इस तरह अद्यतन रचना के विषय मे अभी यही संदिग्ध स्थिति बनी हुई है। तीन-चार साल में ही इस विधा न (चाहे नेतिवाचक ढंग से ही) पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। इन उत्साही कवियो म कुछ शक्तिशाली भी हैं। उनका उज्ज्वल भविष्य सभव है यदि वे स्वस्थता दृष्टि तथा अनुशासन को स्वीकार करें। परन्तु कठिनाई यह है कि कुछ तो मुक्त छंद को छन्दमुक्ति समझकर दौड़ पाय हैं। वे नहीं जानत कि छंद क मोटे नियमों की अपेक्षा बारीक लय को हासिल करना मुश्किल है। अर्थानुवेषी अवलंब का भी अभाव देखकर लगता है कि य कवि कविकम के प्रति गंभीर नहीं हैं। असंगत प्रतीको का ढेर खड़ा कर देने से कविता सिद्ध नही होती। कविता कान का विषय है इसलिए अथ ग्रहण करने से पूर्व हम शब्द की ध्वनि स्पर्श करती है। अर्थ क संवाहक क रूप म नाद सौन्दर्य की उपासना कवि के लिए श्रयस्कर है। दो शब्दों के बीच संवाद जगाने क लिए लय अनिवार्य है।

सच का यह काम श्री सुरेश जोशी और श्री गुलाम मोहम्मद शेख ने उठाया है। असल की तरलता यदि हमारे निजी जीवन में नहीं है तो छंद में कहाँ से आएगी ? स्थल की अचंचल स्थिति का अंकन श्री सुरेश जोशी कुछ रचनाओं में कर सके हैं। इन दोनों कवियों की कृतियों में कला का अनुशासन प्रवर्तित है। 'अंधकार घन हूँ' तथा 'जमनमेरना खबियर' नामक कविताओं में श्री शेख ने बारीकी को पकड़कर मूर्त करने की तथा ध्वनि रंग का परस्पर संक्रमण करने की क्षमता दिखाई है। दूसरी रचना में इतिहास को सजीव किया है।

यहाँ हम श्री सुरेश जोशी की रचना देखें जिसमें एकांत को विभिन्न आकार देने वाले उपमान देकर दृश्यमान बनाया गया है। सूक्ष्म पदार्थों का परिपार्श्व खड़ा करके एकान्त को स्पर्श-क्षम बनाया गया है। एकान्त में विभिन्न भय-छायाएँ भरने का कवि का प्रयास सविमान देखिये

मैं तुझे देता हूँ एकान्त।
हास्य की भीड़ के बीच एकाध तनहा आँसू,
शब्द के कोलाहल के बीच एकाध बिन्दु मौन
अगर तुझे हिफाज़त करनी है तो
यह है मेरा एकान्त।
विरह जैसा विशाल
अन्धकार जैसा घन
तेरी उपेक्षा जैसा गहरा।
जिसका गवाह नहीं सूरज
नहीं चाँद।
ऐसा निहायत एकान्त।
ना भड़कना मत।
नहीं छू गई उसे मेरी छाया
नहीं छिपाया उसमें मैंने अपना शून्य
यह एकान्त जितना मेरा
उतना ही दो दरख्तों का
उतना ही सागर का,

ईश्वर का।

यह एकान्त
नहीं है हमारे शून्य की रमणभूमि
नहीं है हमारे विरह की विहारभूमि
निपट एकान्त
मैं तुझे देता हूं एकान्त।

रचना के उत्तरार्ध में श्री सुरेश जोशी ने इनकार का विधेयात्मक उपयोग किया है और इस तरह एकान्त की रिक्तता को उभारा है। एकान्त में दूसरा व्यक्ति उपस्थित नहीं होता यहाँ दूसरा उपस्थित है बल्कि कवि उसे सम्बोधन कर रहा है। सम्बोधन पद्धति का कुशल प्रयोग कवि कर पाये हैं। इन सब विरोधों की सहायता से एकान्त को अंकित किया है। परिणामस्वरूप सम्बोधन करने वाला पात्र भी निर्मोही संवेगशून्य उदासीन नजर आता है।

श्री सुरेश जोशी और शेख के अतिरिक्त श्री सितांशु यशश्चन्द्र और लाभशंकर ठाकुर भी आशास्पद हैं। श्री प्रसन्नेय राधेश्याम शर्मा और श्रीकांत शाह की रचनाएं संग्रहीत हुई हैं। आदिल मंसूरी मनहर मोदी प्रबोध परीख सुभाष शाह भरत ठक्कर मणिलाल देसाई ज्योतिष जानी आदि अनेक उत्साही नवयुवक इस क्षेत्र में उद्यम कर रहे हैं।

(रघुवीर चौधरी)

●●●

आधुनिक पंजाबी कविता की प्रवृत्तियां

●

पंजाबी कविता में आधुनिक चेतना अथवा जागृति का प्रवेश उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में लगभग हुआ। इसके पूर्व पंजाबी कविता में शृंगार वर्णन की ही प्रधानता थी। यह शृंगार कहीं तो आध्यात्मिक रूप ग्रहण कर लेता था कहीं सामाजिक धरातल पर उतर कर विशुद्ध शरीरी रूप में अभिव्यक्ति का मार्ग खोज लेता था। यह स्थिति ग्यारहवीं शताब्दी (बाबा फरीद) से लेकर इसी सदी के पूर्वार्द्ध या उसके बाद तक रही। पंजाबी में इसको 'रवायती पर

परम्परागत कविता धारा' का नाम दिया गया है। किन्तु यह परम्परा हिन्दी की भाँति रीति-प्रथा पर आधारित नहीं था वरन् भाव छन्द और व्यंजन शैली तक ही सीमित थी। ग्यारहवीं शताब्दी से लेकर उन्नीस सौ तक की कालावधि में जितना साहित्य रचा गया उसमें कला की दृष्टि से आध्यात्मिक कविता का ही मूल्य अधिक बढ़ता है।

सातवीं शताब्दी से पूर्व पंजाबी में लिखने वाले दो प्रकार के व्यक्ति थे। एक संत अथवा फकीर जो जनजीवन से सम्बन्धित थे। दूसरे वे व्यक्ति जो विशेषकर सामान्य या ग्रामीण जनता के लिए लिखते थे। कुछ आध्यात्मवादी संतों को छोड़ कर प्रायः सभी अनपढ़ व्यक्ति थे। सन् १६०० तक पंजाब का पढ़ा लिखा व्यक्ति पंजाबी को गंवारू भाषा समझता था। इसलिए पंजाबी साहित्यकार इस समय तक ब्रज भाषा में ही साहित्य-साधना करते रहे। उन्नीस सौ तक ही नहीं अभी कुछ दिन पूर्व तक पंजाबी के साहित्यकार अपनी मातृभाषा को छोड़कर उर्दू को धारण लेते रहे हैं। उर्दू साहित्य में अधिक योगदान पंजाबियों का रहा है।

भाई वीरसिंह ने सर्वप्रथम शिक्षित कहे जाने वाले पंजाबियों के हृदय में पंजाबी भाषा के प्रति श्रद्धा का बीज बोया। पंजाबी को साहित्य में प्रतिष्ठा देने के साथ भाई वीरसिंह ने पंजाबी कविता को नया मोड़ दिया जिससे हम उन्हें आधुनिक युग का जन्मदाता मानते हैं। उन्होंने कविता को रवायती अर्थात् परम्परा के सीमित घेरे से निकाल कर आधुनिकता का रूप दिया। यद्यपि उनका भावजगत प्रधानतः शान्ति प्रधान शृंगार ही रहा किन्तु इसके साथ उन्होंने नैतिक उपदेशात्मकता तथा देश प्रेम का भी कलात्मक रूप में व्यक्त किया। भाई वीरसिंह तथा उनके समकालीन कवियों में यहाँ आधुनिक परम्परा व्यापक रूप में प्रस्फुटित हुई। उन्होंने एक-मात्र भावजगत को ही नई चेतना नहीं दी वरन् कविता को युगबोध के साथ जोड़ कर सामाजिक धरातल पर लाकर दिया। उन्होंने नई चेतना के साथ छोटी कविता भावात्मकता नवीन शिल्प एवं नया छन्द प्रबन्ध भी दिया जिससे पंजाबी कविता स्थूलता से निकल कर सूक्ष्म भाव व्यंजना तथा मार्जित शब्दों का युगान्तर-कारी रूप धारण कर गई। भाई वीरसिंह यद्यपि स्वयं आध्यात्मिक परिधि से बाहर नहीं निकल सके पर उन्होंने औरों के लिए मार्ग अवश्य प्रशस्त कर दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि धनीराम चात्रिक ने पंजाबी कविता में पंजाबी संस्कृति देश प्रेम व्यापकता के साथ चित्रित किया। पंजाबी कविता की इस नई चेतना के पीछे पाश्चात्य सभ्यता अंग्रेजी साहित्य तथा तात्कालिक राजनैतिक धार्मिक तथा सामाजिक आन्दोलन का गहरा हाथ है। पंजाब में उन दिनों राजनीतिक क्षेत्र में लाला लाजपतराय

मरम्मार अजीतसिंह आदि का दगाभक्तिपूर्ण आन्दोलन चल रहा था धार्मिक क्षेत्र म सिंहसभा की अकाली लहर अपने शिखर पर थी। कुछ छिटपुटी सामाजिक लहरें भारतीय जीवन या पंजाब के जनजीवन को प्रभावित कर रही थी जिनका प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव तात्कालिक पंजाब साहित्य पर पड़ा। इन्ही आन्दोलनों के बीच पजाबी कविता में जो व्यक्ति सबसे अधिक उभर कर आया वह था प्रो० पूर्णसिंह। उनकी कविता धर्म की दृष्टि स पूर्ववर्ती तथा समसामयिक कवियो से भिन्न कोण लेकर आई। प्रो० पूर्णसिंह की मुक्तक कविता म एक मुक्त वातावरण था। आरम्भ क बाद पंजाबी कविता म पजाबी संस्कृति की सम्भवत सब स अधिक तथा व्यापक अभिव्यंजना हुई।

१६३० तक आते आते कविता म एक नयी धारा का जन्म हुआ जिसको रामाण्टिक धारा का नाम दिया गया है। इस समय के प्रमुख चार कवि हमारे सामने आये। मोहनसिंह बावा बलवन्त अमृता प्रीतम और सफीर। ये सब कवि मूलत रोमाण्टिक तथा प्रम क कवि हैं। बावा बलवन्त भी किसी सीमा तक श्रृंगारिक कवि कहे जा सकत हैं। इनको प्राय सभी पजाबी आलोचक असफल प्रेम का कवि कहते है। वास्तव म ये कवि भोग्य आत्मा हैं (बावा बलवन्त का छोडकर)। मेरी नजर म इनकी प्रेम प्रधान कविता कभी न तृप्त होने वाली वासना की अभिव्यक्ति है। मोहनसिंह की श्रृंगारिकता पर उर्दू की श्रृंगारिक भावना का इतना गहरा प्रभाव है कि उसके नीचे मोहनसिंह का अपना व्यक्ति दब सा गया है। इसीलिए मोहनसिंह का भाव जगत निज का न होकर उर्दू कविता का भाव जगत है। उनकी गजलें तो बहुधा उर्दू गजल की छाया मात्र या अनुवाद मात्र लगती हैं। अमृता प्रीतम का अध्ययन क्षेत्र सीमित होने के कारण उनकी कविता उर्दू तथा अन्य भाषाओं के प्रभाव से बची रही और व्यक्तिगत अधिक हो गई। मौलिकता की दृष्टि से मैं इसको अमृता की सफलता ही मानता हूँ। इसी कारण उनका व्यक्तित्व किसी प्रभाव के नीचे दब नही सका किन्तु गहराई तथा व्यापकता का उनमें अभाव ही रहा। उर्दू प्रभाव के कारण जहाँ मोहन अपनी कोई एक शैली निर्धारित नहीं कर सके वहाँ अमृता प्रीतम सफल रूप में अपनी शैली को एक सीमा तक अवश्य ल गई। प्रीतमसिंह सफीर की कविता एक आध्यात्मिक श्रृंगार की कविता है। जीवन म यद्यपि वह भौतिक प्रेम से पीडित रहे किन्तु उन्होंने इस इन्द्रिय प्रेम को अतीन्द्रिय रूप द दिया। वह इसको घसीट कर आध्यात्मिक क्षेत्र मे ले गये जिससे वह रहस्यवादी कहलाये। बावा बलवंत की स्थिति इन तीनों कवियों स भिन्न रही। उनका काव्य जगत श्रृंगार तक ही सीमित नही रहा। वह आरम्भ म ही अनेक सामाजिक पक्षो को एक साथ लेकर चले।

नये-पुराने कवि भी नयी कविता में दिग्भ्रम उत्पन्न कर रहे हैं। इतना सब कुछ होने के उपरान्त भी कुछ नये कवि नयी कविता के मूल तत्व को परख कर इसके निर्माण म लगे हैं।

नयी पंजाबी कविता म एक और उपयोगी बात घटित हुई है जिसको मैं पंजाबी कविता के लिए सौभाग्य की बात ही मानता हूँ। यह है पंजाबी नयी कविता पर मानवतावाद के नारे का बोझ न लादना। हिन्दी नयी कविता के कुछ आलोचकों ने नयी कविता की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए 'मानवतावाद' को उसके गले ज़बरदस्ती बाँध दिया है जैसे छायावाद के अन्तिम दिनों म छायावाद के साथ 'सर्वात्मवाद' का जोड़ दिया गया था। कविता वाद के सहारे नहीं जीती न किसी वाद से उसकी कीमत बढ़ती है। कविता की उच्चता या श्रेष्ठता तो उसके आंतरिक कथ्य म है वही कविता का सत्य है। पंजाबी की नयी कविता यदि पूर्ववत् इसी दिशा म आगे बढ़ती रही तो यह अपने वर्तमान मे ही साहित्य की स्थायी निधि बन जायगी। यह उत्तरदायित्व पंजाबी की नयी कविता के प्रबुद्ध कवियों पर है। पंजाबी का आलोचक तो अभी प्रयोग मे फँसा हुआ है।

पंजाबी की नयी कविता म सबसे प्रमुख स्वर 'व्यक्ति वैशिष्ट्य' का है। पंजाबी की रोमाण्टिक काव्यधारा भी मूलत व्यक्तिवादी ही रही है। किन्तु इसकी व्यक्तिवादिता म तथा नयी कविता के 'व्यक्तिवैशिष्ट्य' म यही अन्तर है कि रोमाण्टिक कवियो की व्यक्तिवादिता वर्गगत अधिक थी किन्तु नयी कविता का व्यक्ति-वैशिष्ट्य कवि के अपने व्यक्ति तक सीमित है (सबका व्यक्ति है)। इसी कारण 'अमृता प्रीतम' की पीड़ा मे तात्कालिक नारी वर्ग की पीड़ा का स्वर है और नये कवियो म उनके अपने अपने व्यक्ति की अनुगूंज। इस अन्तर के कारण दोनों धाराओ की अभिव्यक्ति-पद्धति में भी वैषम्य है। रोमाण्टिक धारा की अभिव्यक्ति म समानता है नयी कविता की अभिव्यक्ति मे परस्पर भिन्नता या पृथकता है। इनमे से कविता के लिए कौनसी उपयोगी है मैं यहाँ इसके बारे में कुछ न कह कर यही कहूँगा कि समान अभिव्यक्ति पद्धति मे कवि का व्यक्ति तथा व्यक्तित्व पूर्णत व्यक्त नहीं हो पाता और व्यक्ति वैशिष्ट्य पद्धति में व्यक्ति तथा व्यक्तित्व के विकास के लिए पूर्ण अवकाश रहता है।

नयी कविता में दूसरा स्वर असंतोष का है। यह असंतोष व्यक्तिगत अपूर्णताओं विफलताओं व यान्त्रिक जीवन की विघटनकारी विसंगतियों के कारण उत्पन्न हुआ है जिसके कारण नयी कविता में एकांतिक कटुता अधिक व्यक्त हुई है। स्वर्ण तथा सुखबीर म इस भावना का स्पष्ट रूप दिखाई देता है। जगतार म तो एकांतिक कटुता सबसे अधिक तीक्ष्ण है। इन

सब की एकांतिक कटुता विभिन्न मन स्थितियों के रूप में अभिव्यक्त हुई है।

असंतोष के साथ प्रस्तुत काम तथा यौन-सम्बन्धों में विघटित होने वाली मन स्थिति के अनेक रूप भी मिलते हैं। चेतन उपचेतन के द्वन्द्व की सहज और विचित्र क्रियाएँ मोहनजीत में अधिक है।

पंजाबी नयी कविता में व्यंग्य का अभाव है। यूं कहना चाहिए कि दो एक कवियों को छोड़कर व्यंग्य है ही नहीं। जिनमें है (जैसे गुरचरण रामपुरी) वे रामाण्टिक काव्यधारा से बह कर आये हैं। मैं इसको नयी पंजाबी कविता के सौभाग्य की बात मानता हूँ। क्योंकि व्यंग्य से कविता में तीक्ष्णता तो आती है पर कविता के प्रभाव की गहराई कम हो जाती है। सहज तथा सूक्ष्म व्यंग्य को कविता का विरोधी न मानकर पूरक ही मानता हूँ।

जैसा कि मैं ऊपर लिख आया हूँ प्रत्येक कवि में व्यक्ति-वैशिष्ट्य है। इसी कारण इनकी कविता की आकृति एक दूसरे से भिन्न है।

सुखबीर की कविता नवीन तथा दैनिक जीवन के रूपाभास की कहीं अस्पष्ट जटिल तथा कहीं वास्तविक अभिव्यक्ति है। इधर कुछ कविताएँ अस्पष्टवादी शैली को आधार बना कर लिखी हैं। इसकी कविता का छन्द मुक्तक है छन्द की लय में भाव संहिति न्यून है।

तारासिंह में सांकेतिक अर्थ-व्यंजना है। वह जीवन के घृणित जीवन-स्तरों की अपेक्षा जीवन की सहज तथा स्वाभाविक व्यंजना के पक्ष में हैं। इन्होंने अपनी कविता में नवीन प्रतीकों तथा बिम्बों का सृजन किया है। व्यक्त भाव तथा भाषा की सानुरूपता उनकी कविता का विशेष गुण है।

स्वर्ण महमास के कवि हैं। उनकी कविता 'क्षण' में जीती है। इसीलिए उसमें मूड-खण्डों की भरमार है। जीवन की व्यापकता न सही असंतोष एकान्तिक कटुता अजनबीपन कुंठा भ्रान्ति अवश्य उनकी कविता के मूल स्वर हैं। वस्तुतः यही उनके अपने जीवन का भ्रम है। शैली उनकी अपना विशेषता लिये दिखाई देती है। या शिल्पगत् चातुर्य उनकी कविताओं में विशिष्ट है।

जगतार की कविता में क्रन्दन कटुता तथा पीड़ा का आधिक्य है। इसका सामाजिक धरातल भी है और इसमें मुक्ति पाकर नव्य समाज की स्थापना का प्रपंच भी है। यह घोर निराशा में आशा का आँचल थामे रहते हैं। जगतार का आशावाद (जो मार्क्सवाद की देन है) बरबस उनकी कविता पर बोझ प्रतीत होता है।

मीशा की कविता में धार है। उनकी कविता भावुकता से मुक्त है। वैसे कविता की लय गद्यात्मक है भाषा का स्वर भी। उसमें नये प्रतीकों का संयोजन अवश्य पाया जाता है।

कृष्ण प्रशान्त नयी कविता में दार्शनिकता का प्रणयन करने में सफल हैं। उन्होंने आज के जीवन की विषमताओं को समीप से देखकर तटस्थ द्रष्टा के रूप में उनका चित्रण किया है। आधुनिक काव्य के विभिन्न रूपों का सशक्त चित्रण उनकी कई कविताओं में दिखाई देता है। दूसरी ओर सतिकुमार ने परम्परा से हटकर यन्त्रयुग से विगलित व्यक्ति के स्वानुभूत चित्र खींचे हैं। एक पूर्ण क्षण में जिये सम्पूर्ण जीवन की सांकेतिक अभिव्यक्ति उनकी अधिकांश कविताओं का वैशिष्ट्य है। नैतिक सम्बन्धों के प्रति प्रच्छन्न अनास्था औपचारिकता की अवास्तविकता पर कटु, परन्तु सूक्ष्म व्यंग्य द्वारा सतिकुमार ने अपनी कविताओं में इधर जीवन के नये धरातलों को छुआ है। व्यक्ति-मह के साथ जीवन-सत्य की स्वीकृति निश्चय ही पंजाबी नयी कविता की एक नयी दिशा का संकेत है।

(शांतिदेव)

•••

भारतीय अंग्रेजी कविता एक अनुलेख

•

भारतीय अंग्रेजी कविता को १९४७ से अब तक का लघु समय प्रयोग और विस्तार के लिए मिला है। इस काल में विकास का यह अवधि बड़ी महत्वपूर्ण है जिसमें कवियों ने एक नयी वाक्शैली की खोज की है। यह बात किसी आधुनिक आलोचना-ग्रन्थ से उद्धृत प्रतीत हो सकती है किन्तु कोई भी कह सकता है कि ऐसा है नहीं। यह विकास एक लघु परम्परा को बनाये रखने के सदर्भ में काफी महत्वपूर्ण है, यद्यपि राघवेन्द्रराव ने सरोजिनी नायडू तारुदत्त और श्री अरविन्द को अंग्रेजी के सर्जक न मान कर 'कारीगर' माना है। इनकी शैली पर किसी को आपत्ति नहीं है। आपत्ति है तो उस चेतना के अभाव पर जिसके कारण तारुदत्त गुलाबों को जगाने वाले क्षण क्या तुम्हें नहीं जगायेंगे जैसे चटकीले भावुक गीत लिखती चली जाती हैं सरोजिनी नायडू जान-बूझ कर मनोहर भारतीय बिम्बों का प्रयोग करती हैं और अरविन्द सर्वत्र प्रतावादी हिन्दू आध्यात्म से नाता जोड़ते हैं (उनके अनुयायियों का दावा है कि अरविन्द ने आत्मवाद का प्रयोग कर उसे गहरी काव्योचित प्रतीकात्मकता में ढाल दिया है।)

१९४७ के बाद किसी कवि में यह बात नहीं मिलती। यह एक महत्वपूर्ण आन्दोलन है क्योंकि वस्तु और शैली की दृष्टि से ये कवि एक विशिष्ट वर्ग के

हैं। यह कहने के साथ ही कई आपत्तियाँ उठ खड़ी होती हैं कि ये कवि कलकत्ता मद्रास बम्बई और दिल्ली के शहरी कवि हैं कि इनकी जाति-चेतना में एक दिखावा अन्तर्राष्ट्रीयता का प्रसार और कृत्रिमता है जो इन्हें जनसमुदाय से दूर ले जाती है कि उनके विचार और प्रतिध्वनियाँ स्कूल-कालेजों में पढ़ी हुई Ode to Nightingale जैसी कविताओं से प्रभावित होती हैं, कि वे उस भाषा में लिखते हैं जिसके विरुद्ध स्थानीय भाषाओं के क्षेत्र मज़बूती से खड़े हैं कि उनके कोई वास्तविक पाठक भी नहीं हैं अतः अंग्रेज़ और अमरीकन कवियों की दया और भारतीयों की दूषित प्रशंसा उन्हें मिलती है, कि वे आधारहीन हैं जैसे निराशा में टी वर्गी मना-स्वाम्‍द !

ये सब तर्क मान्य होकर भी विवादग्रस्त हैं। इन सोलह वर्षों में ऐसा भी बहुत कुछ हुआ है जो एक आशामय स्थिति का प्रमाण है। डा० श्रीनिवास अय्यंगर ने १९४३ में भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य पर प्रकाशित पी० ई० एन० पुस्तिका में लिखा था 'मेरा विचार है कि हम वहाँ के किस में हैं जहाँ मृत व्यक्तियों की अस्थियाँ भी नाप नहीं हैं। हमारे पास न कोई निर्देशिका है, न कोई निधि-सूचि न कोई विश्वसनीय परिचय-पुस्तिका है और न कोई भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य का विस्तृत सर्वेक्षण। १९४३ की इस पुस्तिका में केवल ७० पृष्ठ थे। १९६२ में एशिया पब्लिशिंग हाउस ने डा० अय्यंगर की एक ६०० पृष्ठों की पुस्तक Indian writing in English प्रकाशित की जिसमें स्वातन्त्र्योत्तर कविता के ही ५० पृष्ठ हैं। अंग्रेज़ी में लिखने वाले भारतीय कवियों का सजीव व्यक्तिकरण मतभिन्नित रूप से विकसित और भारतीय परम्परा से समन्वित होती कविता का प्रत्यक्ष प्रमाण है अंग्रेज़ी का व्यवहार अधिकाधिक हो रहा है जब वह भी भारतीय भाषाओं में से एक है। और प्रभावशाली साहित्यिक क्षेत्रों की व्यूह रचना के बावजूद यह तथ्य डा० आर० रेड्डी के शब्दों में भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य भारतीय साहित्य से अलग नहीं है विस्तृत रूप में स्वीकार किया जा रहा है।

भारतीय अंग्रेज़ी कवि को ठीक-ठीक समझने के लिए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि भारत की सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ कभी भी इंग्लैण्ड या अमरिका जैसी नहीं रहीं। भारतीय संस्कृति एक 'गहराई' लिये हुए है जिसे पं० नेहरू 'पुनर्लिखित पाण्डुलिपि' कहते हैं और भारतीय साहित्य विविध रंगों का सामंजस्य है। इन रंगों में अंग्रेज़ी का हल्का-सा रंग पहले ऐतिहासिक रूप से और अब भावनात्मक रूप से एक अन्तर्राष्ट्रीयता और अभिजात्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। वार्यलाम्बू का वदनामय अन्त परावर्तन साहा के सादे सामणिक व्यंग्य इजकिएल की नंगी ईमानदारी मारिस की रूमानी वेदना

राघवेन्द्र राव के संयमित रंग और छलनाएँ मेरी एस्तवर की उपचेतन की परिकल्पनाएँ पी० डी० मिश्रेन्द्र का न्यूरोटिक प्रतीकवाद, प्रदीप सेन के तीखे और निष्कपट ईसाई मूल्य केवलिमन मियो की पीड़ा छिपाए हुए सरलता ये सब परिपक्व प्रतिक्रियाओं के लक्षण हैं। ये शायद नगर संस्कृति की प्रतिक्रियाएँ हैं किन्तु सत्य होने के कारण कपाटन वाली हैं। 'क्वेस्ट' में आधुनिक भारतीय अंग्रेजी कविता की समीक्षा करते हुए डविड मैकयूच्चियन ने लिखा था "अ बद्ध शताब्दी के कवि तरुण अन्वेषी और वैयक्तिक हैं। अंग्रेजी उनकी अभिव्यक्ति का स्वाभाविक माध्यम है—कोई विदेशी भाषा नहीं अपितु वह भाषा जिसमें उनकी संवेदना अत्यंत संतोषप्रद आकार ग्रहण करती है वह भाषा जिसमें वे प्यार करते हैं' जैसा श्री लाल का कहना है। श्राग उन्होंने लिखा है भारतीयों द्वारा अंग्रेजी में लिखी गयी कविताएँ इस बात का ठोस प्रमाण देती है कि वे परिपक्वता तक पहुँच रहा हैं।

(पी० लाल)

●●●

आधुनिक मलयालम कविता

●

अनुकरण युग के आचार्य राजा केरल वर्मा के समय से लेकर शुद्ध आत्मा की अभिव्यक्ति के आधुनिक युग तक की मलयालम काव्य धारा की विस्तृत चर्चा करना यहाँ अनिवार्य मालूम नहीं होता। आधुनिक युग के काव्यकारों पर गत काव्य प्रवृत्तियों का पूरा-पूरा प्रभाव पड़ा है यह ठीक है। स्वर्गीय महाकवि श्री कुमारन आशान उल्लूर और वल्लत्तोल आधुनिक मलयालम काव्य जगत के सर्वाधिक प्रभावशाली कवि रहे हैं। इनके समय मुख्य रचनाएँ खण्ड-काव्य की कोटि में आती हैं। कोमल और उच्च सकल्प दार्शनिक विचार स्वस्थ सर्गात्म कला ये सब उनकी रचनाओं में दर्शनीय विशेष गुण हैं। मगर इसी समय के अंतिम चरण में श्री चङ्ङम्पुषा कृष्ण पिल्लै की धूम थी। आप इतना मधुर एवम् आकर्षक रचनाओं से मलयालम पाठकों को हठात् आकर्षित कर सके। आप गान-गन्धर्व कहलाने लगे और सर्व साधारण के प्यारे कवि बने। आपका निधन १६४८ (सन्) में हुआ। पर आज तक उनकी अमिट छाप मलयालम काव्य धारा में परिलक्षित है। उपयुक्त कवियों की रचनाओं द्वारा सामाजिक राष्ट्रीय धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में ठोस स्पन्दन हो सका और पर्याप्त परिवर्तन आ सका।

सन् १६५० से लेकर मलयालम काव्य-कारों में श्री जी० शंकर कुरुप का नाम सब से ऊपर मुखरित रहा। आज भी यही हाल है। श्री जी० शंकर कुरुप की रचनाएं पाठकों के अन्तर्मन को सचेत करके उस सद्भावनाओं के ताजमहल में प्रविष्ट करा लेती हैं। आपकी काव्य-सरिता रहस्यवाद छायावाद समन्वयवाद धवनतावाद मानवतावाद आदि काव्यापम मार्गों का अनुसरण अतिक्रमण कर चुकी है। और जहां से होकर वहां पूरे विश्वास के साथ और लक्ष्य पर स्थिर दृष्टि रखते हुए।

श्री वेरिणकुलम गोपाल कुरुप मलयालम गीति-काव्य युग के अद्वय प्रथम कवि हैं। आपकी कविताओं में ताल-लय का सुन्दर सामजस्य दर्शनीय है। आधुनिक मलयालम कवियों में आपका श्रेष्ठ स्थान है।

श्री पाला नारायणन नायर की रचनाओं में दर्शनीय केरलीयता का भाव अन्य कवियों के समक्ष अलग अस्तित्व का माना जा सकता है। आप केरल की सीमा मखला को अपनी कविता के सहारे व्यापक बनाने का अजस्र परिश्रम करते हैं।

श्री वलाप्पिल्ली श्रीधर मनोन का अपना अलग काव्य-पथ है। वैज्ञानिक दर्शन की नींव पर सुन्दर कलात्मक अभिव्यक्ति करने में आप विजय पा गये हैं। आपकी अधिकतर रचनाएँ संवेदनशील अनुभूतियों की उपज हैं। अदम्य काव्यात्मक प्रेरणा स्वतन्त्र चिंतन सच्ची परख आदि आपकी कविताओं की विशेषताएँ हैं। जहाँ वैलोप्पिल्ली मानवता के वायुयान में चढ़कर समूचे जगत का भ्रमण करता है वहाँ श्रीमती बालामणि अम्मा मातृत्व के काव्य बिन्दु में सारे जगत को केन्द्रित कर देती है। सारे स्पन्दना का एकमात्र केन्द्र उस कवियित्री के लिए मातृत्व है। आपकी कविताओं में दुरूहता की गुंजाइश अधिक मात्रा में मिलती है।

श्री पी० कुञ्ञिरामन नायर की कविताओं में आध्यात्मिकता की अधिकता है। उनकी कल्पना जैसी ऊँची उड़ान अन्यत्र दुर्लभ है। फिर भी रचनाएँ अतीव आकर्षक और मधुर हैं।

काव्यक्षेत्र में किसी प्रकार के बाह्य एवं आभ्यन्तर परिवर्तन न लाने वाले कवि हैं श्री के० के० राजा। वही पुरानी छंदोबद्धता और वही पुरानी चिंतन प्रणाली! मलयालम काव्य जगत में आपका यह अकेला रहना निराला मालूम होता है। श्री ओ० एन० वी० कुरुप और श्री वयलार रामवर्मा की रचनाएँ नवीन मलयालम काव्य-गति में विशेष आकर्षक और लोकप्रिय सिद्ध हुई हैं। इनकी कविताएँ गेय तथा विप्लवपरक हैं। आज इन दोनों युवा-कवियों में भाव जगत का पर्याप्त अंतर आ गया है। इनकी सृजन शक्ति भी अविरत है। श्रीमती सुगतकुमारी

ऐसा कवियित्री हैं जिन्होंने अपने लिए पृथक रास्ता ढूंढ निकाला है। उनकी कविताओं में पीड़ा तथा व्यथा का सागर उमड़ पड़ा है। फिर भी उनमें गति है जो जीवन को झलका दिखा जाती है।

मलयालम काव्य-जगत में अन्य भारतीय काव्य में दिखाई पड़ने वाली प्रमुख सारी प्रवृत्तियाँ मिलती हैं। भाव-पक्ष और कलापक्ष से सम्बन्धित परिवर्तनशील नवीन काव्य-रूप भी पाये जाते हैं। टी० एस० इलियट की अव्यवस्थित तथा टूटी हुई कल्पना से युक्त काव्य रीति भी मलयालम में स्थान पा रही है। इस दिशा में श्री एन० वी कृष्णवारियर श्री एन एन० कक्काड श्री अय्यप्प पणिक्कर आदि कवियों का परीक्षण चल रहा है। श्री कृष्णन नायर चरियान क चरियान जी कुमारपिल्लै, पी० भास्करन आदि असंख्य कवि मलयालम काव्य भारती की बराबर सेवा कर रहे हैं। जीवन के विविध पहलुओं का संकेत निर्देशन करते हुए मलयालम काव्य धारा नये-नये भावों और नये नये बाह्य रूपों और आयामों को अपनाने की चेष्टा कर रही है।

(एन० चन्द्रशेखरन नायर)

●●●

आधुनिक तमिल कविता

●

तमिल-काव्य की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। तमिल में काव्य साधना बहुत ही प्राचीन काल से प्रारम्भ हुई थी। ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में रचे गये महत्वपूर्ण काव्य ग्रंथ अब भी उपलब्ध हैं। काव्य गुणों की दृष्टि से ये काव्य बहुत ही उच्चकोटि के हैं। तमिल की यह काव्य धारा अबाध गति से प्रवहमान रही। विभिन्न युगों में काव्य के वर्ण्य विषयों में भी परिवर्तन होता रहा है। तत्कालीन राजनैतिक सामाजिक धार्मिक परिस्थितियों के अनुकूल काव्य की वर्ण्य वस्तु भी बदलती रहती है। संघकाल (ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियाँ) की तमिल कविता में प्रकृति प्रेम और वीरता काव्य की वर्ण्य वस्तु रहा। उसके बाद की शताब्दियों का तमिल-काव्य भक्ति भावना से ओत प्रोत है। तमिल की यह भक्ति-काव्य धारा कई शताब्दियों तक प्रवहमान रही। फलस्वरूप तमिल का अधिकांश काव्य भक्ति-रस स्निग्ध हो गया जिसे हम आधुनिक तमिल कविता कह सकते हैं उसका आविर्भाव उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में ही मानना उचित है। तमिल-काव्य के क्षेत्र में आधुनिक युग के प्रधान प्रवर्तक

थी सुब्रह्मण्य भारती थे। भारती ने तमिल के काव्य क्षेत्र में ही नहीं बल्कि साहित्य के अन्य अंगों के क्षेत्रों में भी नवीन युग का आरम्भ किया। भारती के आगमन के पश्चात् ही आधुनिक तमिल कविता को दिशा निश्चित हुई। भारती की काव्य-साधना महान् थी। यही कारण है कि आधुनिक तमिल कविता का प्रारम्भिक काल 'भारती-युग' के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। कविता के क्षेत्र में उन्होंने क्रांति मचायी थी वह युग जन-जागरण का प्रारम्भिक काल था। भारती ने कविता की परम्परागत शैली को त्याग कर नये नये छन्दों में जन प्रिय भाषा में नये नये भावों एवं कल्पनाओं से भरी गयी कविताएँ रची। भारती-युगीन काव्य में भाव भाषा और छन्द सभी में प्राचीनता का परिष्कार और नवीनता का समावेश हुआ। भारती के पश्चात् तो अनेक कवि हुए हैं जिन्होंने भारती की कविता से प्रेरणा पायी है। आज तो तमिल कविता कानन में अनेक सुकुमार फूल खिल हैं। भारती के समय से आधुनिक तमिल कविता की उत्तरोत्तर प्रगति हुई और काव्य के क्षेत्र में बहुमुखी प्रवृत्तियों के दर्शन हुए।

जिस तरह आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में विषय की दृष्टि से विविधता और विभिन्न प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं ठीक उसी तरह आधुनिक तमिल कविता की भी बहुमुखी प्रवृत्तियाँ रही हैं। आधुनिक हिन्दी कविता की जो प्रमुख प्रवृत्तियाँ रही हैं वही करीब करीब आधुनिक तमिल कविता की हैं। हिन्दी काव्य-क्षेत्र में विविध वादों का जन्म हुआ। छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद आदि विभिन्न वादों के मूल में जो तथ्य रहे हैं उन सब के दर्शन आधुनिक तमिल-काव्य के क्षेत्र में भी होते हैं। किन्तु अन्तर इतना ही है कि तमिल कवि अपने को जान-बूझकर किसी विशिष्ट वाद के संकुचित क्षेत्र में बाँधना नहीं चाहता। साथ ही साथ यह बात भी द्रष्टव्य है कि तमिल आलोचकों ने भी विविध वादों के अन्तर्गत रखकर कविताओं का मूल्यांकन करने की पद्धति नहीं चलायी। परन्तु यह बात अवश्य है कि आधुनिक तमिल कविता के क्षेत्र में छायावादी रहस्यवादी प्रगतिवादी प्रयोगवादी प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। तमिल कवि के विषय में यह कहना कठिन है कि अमुक कवि छायावादी है या प्रगतिवादी है। एक एक कवि की कविताओं में एक से अधिक वादों के दर्शन होते हैं।

यहाँ आधुनिक तमिल कविता की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियों की चर्चा करेंगे। चूँकि आधुनिक तमिल कविता का जन्म भारती की कृतियों से माना जाता है अतः भारती की कविताओं की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालना आवश्यक है। भारती की अधिकांश कविताएँ राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत हैं। उनकी कविताओं में देश प्रेम समाज-सुधार आदि विषयों का समावेश हुआ है। इस

कोटि की कविताओं की मूल भावना है देश भक्ति। आधुनिक तमिल कविता की यह एक प्रबल प्रवृत्ति रही है। इस कोटि के कुछ कवियों ने केवल तमिल भाषा और तमिल-संस्कृति का यशोगान करने से ही सन्तोष कर लिया है किन्तु अधिकांश कवियों का दृष्टिकोण व्यापक रहा है। राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता के रचयिताओं में सबसे ऊँचा स्थान भारती का ही है। राष्ट्रीय भावना की कविता के अन्तर्गत गांधी-दर्शन की भी अभिव्यक्ति हुई है। श्री रामलिंगम पिल्लै की कविताओं में विशेष रूप से गांधी-दर्शन की बहुत सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।

हिन्दी की छायावादी कविताओं से साम्य रखनेवाली कविताएँ भी पर्याप्त मात्रा में तमिल में रची गई हैं और रची जाती हैं। परन्तु तमिल की इन कविताओं को 'छायावाद' की उपाधि नहीं मिली है। छायावादी कविताओं की सभी विशेषताएँ उन तमिल कविताओं में मिल जाती हैं। हिन्दी में छायावादी काव्य का जो सामान्य स्वरूप स्वीकृत हुआ है वही उन्हें विभिन्न करने का प्रयत्न किया है। छायावाद वास्तव में एक विशेष प्रकार की भाव-पद्धति है। जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण का आधेय नवजीवन के स्वप्नों और कुण्ठाओं के सम्मिश्रण से बनी है। रूप विधान अन्तर्मुखी तथा वायवी है और अभिव्यक्ति है प्रकृति के प्रतीकों द्वारा। छायावाद में कवि विश्व के कण-कण में प्राणों की छाया देखता है और उसमें व्यक्तिवादी भावनाएँ प्रकट की जाती हैं। उसमें विषय नहीं स्वयं कवि और उसका राग विराग प्रधान हो जाता है। छायावाद में कवि की कल्पना या अनुभूति रहती है।

जीवन की विषम परिस्थितियों के विपरीत उसे कल्पना-लोक में सुख मिलता है। अनन्त स्वरूप प्रकृति के दोल में वह भूलकर कल्पना का खेल करता है और छन्द का आवरण डालकर अपनी अभिव्यक्ति करता है। छायावादी कविता में कवि अपनी व्यथा-वेदना सुख-दुख आदि को विश्व की व्यथा-वेदना सुख-दुख के रूप में रखकर सर्वग्राहक बनाता है। वह अपनी अनुभूति को प्रधान रखता है। छायावादी कवि प्रकृति का चेतन स्वरूप देखता है। वह प्रकृति को निर्जीव या कोरे उद्दीपन रूप में नहीं मानता। उस पर कवि अपनी भावनाओं का आरोपण करता है। प्रकृति पर नारी भाव के आरोप द्वारा या नारी के अतीन्द्रिय सौन्दर्य के प्रति अपने कौतूहलपूर्ण दृष्टिकोण द्वारा वह अपने अवचेतन मन में हुई शृंगार भावना प्रकट करता है। छायावाद की कोटि में आनेवाली तमिल कविताओं के रचयिताओं का भी यह सामान्य रूप रहा है। इस कोटि की कविताओं के रचयिताओं में अनेक तमिल कवियों के नाम लिए जा सकते हैं। मुख्य रूप से भारती दासन' कम्ब दासन', सोमु आदि कवि उल्लेखनीय हैं।

आधुनिक काल की कुछ तमिल कविताओं में रहस्यवाद की भी झलक मिलती है। रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तर्निहित प्रवृत्ति का प्रकाशन है जिसमें वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शान्त और निश्चल सम्बन्ध जोड़ना चाहता है। रहस्यवाद हृदय की वह अलौकिक अनुभूति है जिसके भावावेग में जीवात्मा अपने समीप और पार्थिव अस्तित्व से असीम और सूक्ष्म महत् अस्तित्व के साथ तादात्म्य का अनुभव करने लगता है। इस रहस्यवादी प्रवृत्ति से युक्त कुछ तमिल कविताएँ भी आधुनिक काल में रची गयी हैं। योगी सुद्धानन्द भारती देनिक विनायकम पिल्लै आदि कवियों की अनेक कविताओं में रहस्यात्मक प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

प्रगतिवादी कविताएँ भी पर्याप्त मात्रा में आधुनिक काल में रची गयी हैं। तमिल में प्रगतिवादी के लिए 'मुर्पोक्कु' शब्द प्रयुक्त होता है। 'मुर्पोक्कु' शब्द का साधारण अर्थ है 'आगे बढ़ना'। तमिल में प्रगतिवाद से तात्पर्य 'मुर्पोक्कु' शब्द के साधारण अर्थ से ही है। हिन्दी में भी प्रारम्भ में प्रयोगशीलता का ही जोर रहा। फिर 'प्रगतिवाद' ने साम्प्रदायिक रूप प्रकट करना प्रारम्भ किया और वह काव्य प्रगतिशील न रहकर प्रगतिवादी हो गया। प्रगतिवादी मनोवृत्ति के मूल में जो धारणा है वह जीवन में गतिशीलता ही है। यथार्थ में जीवन प्रगति का ही पर्यायवाची है। इसलिए इसे प्रत्येक क्षण में आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। जीवन में जीना चाहिए और जो कुछ जीवन के सामने है वही सत्य है। अतः वस्तु-जगत् से आँखें मेरी नहीं जा सकती। वस्तु जगत से परे अध्यात्म अथवा परलोक आदि कुछ नहीं है। जीवन में साम्य होना चाहिए। जीवन में साम्य के लिए समाज में साम्य की आवश्यकता है। शोषक वर्ग का घोर विरोध होना चाहिए। जीवन में हेय और श्रेय दो पक्ष हैं श्रेय का पक्ष प्रबल करने के लिए हेय का चित्रण भी होना चाहिए। प्रगतिवाद की इन मूल प्रवृत्तियों को लेकर तमिल में अनेक कविताएँ रची गयी हैं और रची जा रही हैं। इस कोटि में तमिल के अनेक तरुण कवि आते हैं।

हिन्दी में 'प्रयोगवाद' के नाम से जिस प्रवृत्ति का जन्म हुआ करीब-करीब वही प्रवृत्ति आधुनिक काल के कुछ तमिल कवियों की रचनाओं में भी देखी जा सकती है। प्रयोगवादी कविता का मूल तत्त्व स्वभावतः ही काव्य विषयक प्रयोग अथवा अन्वेषण है। हिन्दी में प्रयोगवादी कविता के नाम से जिन कविताओं की रचना हुई है उनमें पुरानी और नई भावना को ही उलट-पुलट कर सजाने की प्रवृत्ति है। उनमें प्रगतिवाद का विकृत रूप चित्रित हुआ है। ऊल-जलूल भाव और बेसिरपैर की शब्द-योजना मात्र है। लेकिन तमिल में 'प्रयोगवाद' केवल काव्य विषयक नवीन प्रयोगों के अर्थ में ही स्वीकृत हुआ है।

शिल्प के क्षेत्र में नवीन प्रयोग करना ही तमिल की प्रयोगवादी कविता का लक्ष्य दीखता है। अनेक तरुण कवियों ने तमिल म इस प्रकार के प्रयोगो का परीक्षण किया है। एक अन्य प्रकार की कविता भी तमिल म रची गयी है और रची जा रही है जिसको हम वैयक्तिक कविता' कह सकते हैं। यह एक प्रकार स भिन्न आत्मपरक कविता है। इस कविता की अपनी अलग विशेषता है। एक ओर जहाँ यह प्राचीन आत्म निवेदन पूर्ण काव्य स भिन्न है दूसरी ओर छाया वाद की प्रच्छन्न आत्माभिव्यक्तियों से भी अलग है। वैयक्तिक कविता का विषय आज के समाज की व्यक्तिगत समस्याएँ हैं। य समस्याएँ मूलत 'काम' और अर्थ' क चारो ओर केन्द्रित हैं। काम-परक कविताओं म रसिकता और प्रेम के दर्शन होत हैं। इनके अभाव और अपूर्ति म निराशा और व्यथा की अभिव्यक्ति होती है। इस कविता का आधार मानव क भौतिक अस्तित्व की स्वीकृति है। अत मानव क लौकिक संघर्ष की जय-पराजय से ही इसकी उत्पत्ति हुई है। जीवन के सहज संघर्ष से उद्भूत होन क कारण इस जीवन दर्शन का विकास अत्यन्त स्वाभाविक रीति से हुआ है। इसी कारण से इसम एक स्वाभाविक आकर्षण भी है। साथ ही वैयक्तिक कविता या तो गीतों में होकर फूटी है या मुक्तक रूप म। कुछ रचनाएँ एसी भी हैं जो छन्दों का बन्धन मानकर नहीं चली हैं।

आधुनिक तमिल कविता की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियों की चर्चा करने के उपरान्त कुछ प्रमुख कवियो और उन की मुख्य रचनाओं का परिचय देना आवश्यक हो जाता है। जसा कि पहल कहा जा चुका है सुब्रह्मण्य भारती* आधुनिक तमिल कविता के जन्मदाता हैं। भारती की अधिकांश कविताओं म राष्ट्रीय भावना ही मुखरित है। भारती की कविताओं ने जन मानस म राष्ट्रीय चिन्तन और राष्ट्रीय एकता की भावनाओं को अनायास ही जगा दिया है। उनकी कविताएँ प्राणवान् हैं। उन म भावनाओं की उमड़ती धारा है। देश की आज़ादी क लिए कवि का हृदय तड़प उठा। कवि न उस दिन का स्वप्न देखा था जब कि भारत माता के करो स बेड़ियाँ गिर पड़ेंगी और भारतवासी दासता के मोह से मुक्त होंगे। कवि की तीव्र आकांक्षा निम्न पंक्तियों म स्पष्टत: प्रकट हुई है

एन्द्र तणियुम इन्द सुदन्तिर ताहम् ?
एन्द्र मडियुम एंकल अडिमैयिन मोहम् ?
एन्द्र मतन्नै कै विलङ्गुकल पोहुम् ?
एन्द्रिमतिन्नलकल तीन्दु पाटयाहुम् ?

* ३६ वर्ष की आयु म सन् १९२१ ई म ही इस महान् कवि का स्वर्गवास हो गया।

(कब बुझेगी हमारी यह स्वतन्त्रता की प्यास ? कब मिटेगा हमारा यह दासता-मोह ? कब गिर पड़ेंगी ये बेड़ियाँ माँ के करों से ? कब दूर होंगी हमारी यातनाएं ?)

भारत की भावात्मक एकता को चाहने वाले भारती की अन्तरात्मा से जो वाणी निकली है वह द्रष्टव्य है

'मुप्पदु कोडि मुखमुडैयाल उयिर
मोइम्पुर ओन्ड्रुडैयाल—इवल
चेयुम मोष्ठी पदिनेट्टुडैयाल एनिर
चितनै ओन्ड्रुडैयाल'

(हमारी भारतमाता तीस करोड़ (अब चालीस) मुख वाली है। किन्तु उसकी जान तो है एक ही है। यह अठारह भाषाएं बोलती है। किन्तु उसका चिन्तन तो एक ही है।)

पांजाली शपदम। (पांचाली की शपथ) नामक खण्ड-काव्य भारती की अमर रचना है। महाभारत के एक अंग के आधार पर रचित इस काव्य में भारती ने आरम्भ से अन्त तक सरल लोक-छन्दों का ही प्रयोग किया है। इसे काव्य-रूपक भी कहा जा सकता है क्योंकि द्रौपदी के रूप में भारती ने देश की स्थिति का प्रतीक चित्र खींचा है और संकेत से यह बताया है कि जिस प्रकार पांचाली की शपथ पूरी हुई उसी प्रकार भारत के भी शत्रु दासता अन्धविश्वास विभेदकारी तत्व इत्यादि अन्त में मर जायेंगे और फिर एक बार उस के अच्छे दिन आयेंगे।

भारती प्रकृति प्रेमी थे। सूर्योदय सूर्यास्त वर्षा वसन्त आंधी कोयल मलय पवन नदी समुद्र आदि विभिन्न विषयों पर उनकी कविताएं विश्व काव्य-कानन के अमर सुमन हैं। 'कण्णन पाट्टु' (कान्हा के गीत) में भारती ने प्राचीन तमिल काव्य-शैली को नया रूप दिया है। श्री कृष्ण को उन्होंने नायक नायिका सखा पिता शिशु भृत्य स्वामी शिष्य गुरू आदि विभिन्न रूप में वर्णित किया है। कोयल का गीत (कुयिल पाट्टु') एक मौलिक स्वप्न-काव्य है। भारती ने इसमें एक सुन्दर प्रेम-कहानी का वर्णन किया है। सरस रहस्य रस एवं शृंगार रस से ओतप्रोत यह काव्य बहुत ही रोचक है।

आधुनिक काल के तमिल कवियों में भारती के पश्चात् देसिक विनायकम् पिल्लै 'भारतीदासन्' और रामलिंगम पिल्लै ये तीनों ही अधिक प्रसिद्ध हुए हैं। देसिक विनायकम् की लोकप्रियता का अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि वे कविमणि नाम से अधिक विख्यात हैं। कविमणि अत्यन्त सहृदय कवि

हैं। उनकी भाषा में जो मिठास है वह दूसरे कवियों की भाषा में नहीं। उनकी कविताएँ आप ही आप सुन्दरतम रूप धारण कर लेती हैं। ऊपर से लाई गयी कृत्रिम सुन्दरता उनकी कविताओं में भी नजर नहीं आती। भाषा में एक स्वाभाविक बहाव है। कविमणि ने एडविन अर्नाल्ड की लाइट आफ एशिया तथा उमर खैयाम की 'रुबाइयात' का तमिल में अत्यन्त सुन्दर पद्यानुवाद प्रस्तुत किया है। मीरा के गीतों के आधार पर इन्होंने प्रेम की जोत शीर्षक मधुर कवितावली रची है।

शिशु हृदय की कोमल भावनाओं का चित्रण करने में 'कविमणि' सर्वोपरि हैं। उनकी अनेक कविताओं में शिशु के उद्गारों का सुन्दर चित्रण हुआ है। प्रथम शोक शीर्षक कविता में एक छोटे बालक के हृदय की व्यथा का अत्यन्त मार्मिक वर्णन है। बालक अपनी माँ से पूछता है

माँ जुही खिली हरसिंगार की कली विकसित हुई मल्लिका भी खिलकर सुगंध छिड़का रही है। उपवन में तोता बोल रहा है और भौंरा गुनगुनाता हुआ उसे खोज रहा है। भैया कहाँ हैं माँ? उसके बिना अकेले मैं कैसे खेलूं माँ?' माँ उत्तर देती है फूल की तरह खिला था वह अब कुम्हला गया है। नहीं वह तो परमात्मा के पास खेल रहा है वेग खेल रहा है।

'शेफालिका' शीर्षक कविता में सरस कल्पना और यथार्थ चित्रण का जो सजीव एवं सुन्दर सम्मिश्रण है वह देखते ही बनता है

मधुमय सुमन भर उपवन में
घनी सुवास भरी बयार जब
वर्षे वधु-सी आकर ठहरी
तब क्या प्रमुदित शेफालिके ?
हरे पत्तों लाल पत्तों से
लदा है घना घट का वृक्ष
उसके ऊपर जा बैठी हो
दमू कैसे मैं शेफालिके? "

'कविमणि समाज की स्थिति में परिवर्तन चाहते हैं। उनके कवि-हृदय से यह अन्याय सहा नहीं जाता कि मेहनत करे कोई और उसका फल भोगे और ही कोई। स्वामित्व किसका शीर्षक गीत में वे कहते हैं

मन्त्र रटने से कहीं होती है खेती ?
भूमि के स्वामी तो वही हैं जो श्रम करें

'भारती दासन' ग्राज के तमिल कवियों म सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। ये पुरट्ची कविनर' ('क्रांतिकारी कवि') कहलाते हैं। य सुब्रह्मण्य भारती क अनन्य भक्त हैं अत इन्होंने 'भारतीदासन' का नाम अपना लिया है। 'भारतीदासन' की अनक कविताएँ 'छायावाद' क अन्तगत आती हैं। उनकी प्रकृति-वर्णन की कविताएँ बहुत ही सुन्दर हैं। एक कविता का भाव इस प्रकार है

'मरी आँख बचाकर वह पीछे से आया।
मुझे कुछ ठण्डी-सी लगी वह लगी मरे पास।
आलिंगन करन लगी प्रेम-पाश में आबद्ध हुआ।
उस सुख का अनुभव करने लगी जिस
वह स्वय नही समझ पाती थी।
मैंने सोचा वह समझ जायगी
किन्तु यह क्या सामन एक और स्त्री खड़ी है।
यह बोलन वाली मरी पत्नी है पहले वाली मन्द पवन थी।

'भारतीदासन' की अनक कविताओं में प्रगतिवादी दृष्टिकोण दिखाई देता है। रूढ़ि-विरोध शायितों का करुण गान शोषकों के प्रति घृणा और रोष क्रांति का सन्देश साम्यवाद का समर्थन नारी का गौरव-गान मानवतावाद वेदना और निराशा सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण, सामयिक समस्याओं का चित्रण आदि उनकी प्रगतिवादी कविताओं क वर्ण्य विषय हैं। उनकी एक कविता का भाव इस प्रकार है

'जीवन के अंतिम क्षण तक
बैल की तरह काम करते रहो
खून को पसीने में बहाते रहो
क्या तुम्हारा परमात्मा भी आँखें बन्द कर बैठ गया ?
खाली पट वाल य दरिद्र 'दास'
अगर जाश म आ जायें तो
मरे पट 'यजमानों' को क्षण में गिरा दें।
फिर तो 'दास' और 'यजमान' का अन्तर ही न रहे।'

'भारतीदासन' न तमिल भाषा के प्रति अत्यधिक प्रेम अभिव्यक्त किया है। उनकी कई कविताएँ मातृ भाषा तमिल की मधुरता की प्रशंसा में हैं। उनकी कविताओं क अनक सग्रह निकल चुके हैं। कुडुम्ब विलक्कु' (घर का दीपक) अल्लकिन चिरिप्पु' (सुन्दरता की हँसी) 'पाडियन परिसु' भारतीदासन कविताएँ' आदि उनक कविता सग्रह है। श्री रामलिंगम पिल्लै गाधीवादी कवि हैं। उनकी कविताओं

म गांधी-दर्शन की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। इनको मद्रास का 'आस्थान कवि' (राजकीय कवि) माना गया है। राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त इनकी कविताओं के अनेक संग्रह निकले हैं। राजाजी ने इनके विषय म एक बार कहा था कि तिलक का बोया हुआ बीज सुब्रह्मण्य भारती बनकर अंकुरित हुआ, तो गांधीजी का बोया बीज रामलिंगम बनकर निकला।'

'तमिलन इदयम' नामक कविता-संग्रह म रामलिंगम पिल्लै की बहुत अच्छी कविताएं सकलित हैं।

भारती के पश्चात् उपर्युक्त तीन कवियों के अतिरिक्त आज अनेक कवि तमिल कविता को सजा रहे हैं। योगी शुद्धानन्द भारती की कविताएँ भी उच्च कोटि के काव्य गुणों से युक्त हैं। इन्होने 'भारत शक्ति' नामक एक बृहत्काव्य लिखा है। इसके अतिरिक्त सकड़ों स्फुट कविताएँ और गीत रचे हैं। इनकी कविताओं का एक संग्रह है 'कवि स्वप्न'। ये प्रकृति प्रेमी हैं। कहीं कहीं प्रकृति-वर्णन से युक्त इनकी कविताए 'छायावाद' की कोटि की बन जाती हैं। इनके ऊपर पाश्चात्य कवि 'शैली' का काफी प्रभाव पड़ा है।

श्री सुब्रह्मण्य योगी की कविताएँ प्रगतिवादी और वैयक्तिक हैं। 'तमिल कुमरी' इनकी कविताओं का संग्रह है। शिल्प के क्षेत्र म इन्होंने कुछ नये प्रयोगों का परीक्षण भी किया है। कवि 'सोमु' की कविताओं म एक अद्भुत शक्ति है। इनकी कविताओं म शब्दों का चयन बहुत ही सुन्दर है। सरलता और सरसता इनकी कविताओं की दो विशेषताएँ हैं। 'इलवेनिल' शीर्षक कविताओं म प्रकृति का विभिन्न कोणों से चित्रण हुआ है। इनकी कुछ कविताएँ छायावादी हैं। मुडियरसन की कविताओं म कल्पना का सौन्दर्य, भावों का उत्कर्ष, शब्दों का गाम्भीर्य ये सभी गुण विद्यमान हैं। ये 'भारती दासन' की शैली को अपनाते हैं। इन की अनेक कविताएँ छायावाद की कोटि म आती हैं।

'कम्बदासन' तमिल के मस्त कवि हैं। वह जीवन को मधुमय रसमय नजर से देखते हैं।

समस्त प्रकृति 'कम्बदासन' को प्रेममय दीखता है। रवि-किरणों म लहरों के गीत म कमल के सौन्दर्य म भ्रमर की गुनगुनाहट म उन्हें प्रेम ही प्रेम नजर आता है। कुछ कविताओं मे रहस्यवाद की झलक मिलती है। कम्बदासन की अनेक कविताएँ प्रगतिवादी हैं। पर इनकी श्रमिकों से सम्बन्धित कविताओं म वह तीखापन नहीं है जो 'भारतीदासन' की कविताओं में देखने को मिलता है।

कवि 'कण्णदासन' ने भी अनेक सुन्दर कविताएँ रची हैं। इनकी कविताओं

म शब्द-चयन यद्दन आकर्षक होता है। कविताएँ कुछ प्रयोगवादी हैं, कुछ वैयक्तिक। इनके अतिरिक्त आज के तमिल कवियों म पेरियस्वामी 'तूरन', वाणीदासन', अण्णामनै, 'मुरदा 'इलम् भारती', डा० मु० शेरीफ, रघुनायनु तमिलण्णल' भास्करत्ताण्डमान आदि उल्लेखनीय हैं। इनकी कविताओं मे छायावादी, प्रगतिवादी और प्रयोगवादी प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। लोक गीता को शली म कविताए प्रस्तुत करने वाला मे कातमंगलम् सुब्बु तिरिच्चाड सीताराम आदि प्रमुख हैं। कोत्तामगलम् सुब्बु ने ग्रामीण किसाना की बोली में कविता लिखने की नयी परम्परा चलाई है। उनकी कविताओ की विशेषता यह है कि भाषा के साथ साथ, कल्पना एव भाव भी ग्रामीण किसाना क हात हैं। फलत उनकी कविताओं में असाधारण माधुर्य पाया जाता है।

बच्चा के लिए सरल भाषा म सुन्दर कविताएँ रचनेवाला म सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं श्री अल वल्लियप्पा। इनकी कविताओ के अनेक सग्रह निकल चुक हैं। 'मलरुम उल्लम' वल्लियप्पा की कविताओ का एक अच्छा संग्रह है।

शिल्प के क्षेत्र में नये प्रयोग करने वाला म 'पुदुमै पित्तन', पिच्चमूर्ति, 'सुरभी' कि० व० जगन्नाथन आदि के नाम लिय जा सकते हैं। चल चित्रा के लिए गीत रचनेवाला की एक अलग ही गोष्ठी बन गयी है। इनमें पापनाशम शिवन कण्णदासन कम्बदासन शेरीफ मरुदकासी आदि कविया ने कुछ अच्छे गीत रचे हैं।

तमिल कविता के विषय में यह कहना कठिन है कि आज किस वाद' का प्राबल्य है। जैस प्रयोगवादी कविता को नयी कविता' का नाम हिन्दी में प्राप्त है, उस तरह तमिल भाषी प्रयोगवादी कविता को नयी कविता' मानने को तैयार नही। हाँ! कविता के क्षेत्र म नये प्रयोग अवश्य हुए है। किन्तु ये प्रयोग हमेशा होते ही रहते हैं।

(मलिक मोहम्मद)

●●●

कन्नड में नयी कविता

●

संसार का धर्म है बदलना। संसार का धर्म ही साहित्य का भी धर्म है। इसका अपवाद नही है कन्नड साहित्य। करीब पन्द्रह सौ वर्षों से कन्नड साहित्य अब तक उतार-चढ़ाव देखता आया है। उसमे ज्वार भाटा आया है। जैस युग बदला वैसे कन्नड साहित्य भी बदला। कन्नड़ काव्य म परिवर्तन हुआ।

कन्नड में नयी कविता आई अग्र जी के प्रभाव से। लगभग ७-८ साल पहले। किन्तु यह नई कविता धीरे धीरे शक्ति-संचित करके बढ़ने लगी है। प्रारम्भ में इस कविता का विरोध भी हुआ तो भी विरोध से उसकी प्रगति को बल मिला। परंपरागत मार्ग का तजकर यह नई कविता गतिशील हुई है इसलिए इस का नाम भी पड़ा। किन्तु आज की नई कविता ने हरिहर राघवांक रत्नाकर सवज्ञ और मुद्दण की कृतियों में जो सन् १६०० के पहले की है को दृष्टि में रखा है।

नई कविता की वस्तु कल्पना, शैली तथा वदिश सभी नवीन हैं। यह मुक्त स्वच्छन्द छन्द का पसंद करती है प्रतिमाओं का सहारा लेती है। किन्तु प्रतिमा सज धज कर आती है। इसकी वस्तुओं में वही पुरानी वस्तुएँ ही हैं जैसे समुंदर साँझ-सवेरा आत्मा मृत्यु धूलि विद्यालय इत्यादि।

नई कविता को तुरही बजाने वाले हैं विनायकजी (वि० कि० के० गोकाक) ही कहा जाय तो अत्युक्ति या धृष्टता नहीं होगी। नई कविता के रचनाकारों में श्री अरविंद नाडकर्णी श्री पशुपति रेड्डी श्री आर जी कुलकर्णी प्रो० बी० एच० श्रीधर, श्री चेन्नवीर कणवी श्री जी० एस० शिवरुद्रप्प आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

धूलु

कुलितव सिडिदेद्दु नित
गांधी टाप्पिग किन्तु बिसाडिद
गोड गे हाकिद देव देवियर चित्र नोड़िद
धूलु ! धूलु !! धूलु !!!
धूलु मुसुकिदे देवर चित्रके।

आर० जी० कुलकर्णी

[बैठा हुआ उठ खड़ा हुआ गांधी टोपी फेंकी दीवार पर टँगी देव देवियों की तस्वीरें देखी धूलि ! धूलि !! धूलि !!! धूलि चढ़ गई है देवों की चित्रों पर]

सत्तात्ममगल सत्तु

किटेस किटेल कोशद नूरा लेख-
स्मृरने पुटदलि सिक्कुव आत्मद
पदियव्युगलत्यसत्त्य सुत्तलु
काणुत्तिवया विचित्र रा श्रव

नगरऽोलब्बा प्रवुगत्त नुरिगतव
कडे कडे कष्पिरिवाडं वनक ।   बी० एच० श्रीधर

[मिटस साहब क कोग म एक सौ तिरपन पृष्ठ पर मिसने वाली घ्रात्मा के दचि (ब्लाक) प्रनगिनत नारा प्रार दीख रहे हैं विविध रा"य क नगर में, उन का नृय दखा देखा रे सब तक प्राँसें न फूट गइ ।]

समुद्र मोहिनी

प्रहा समुद्रवे !
वि"वव्यापी समुद्र लहरिय !
ना ईग मण्णिन मडकेयलि प्राणव हूलिटु
कप्परिसुत्तिद्दे होटलिम ऐसक्रीमु
सवियुत्तिद्दे चित्रपन्द प्रमकसरत्तु—
एदुरु नगुत्तित्तु समुद्र नारय क्षारहास्यलि ।   प्ररविंद नाडकर्णी

[प्रोह ! समुन्र ! विश्वव्यापी समुद्र की लहरें ! मैं मुद्र हू मिट्टी के मटके में प्राण को गाडकर हाटल का प्राईसक्रीम चल रहा था चित्रपट की प्रेम की कसरत का प्रानन्द लूट रहा था सामने समुंदर फनिल क्षारहास में हस रहा था ।

जड

लसनेयर बन्निनडे
हाविनोनु जाल्व जडे
कालिन्यितिलिदु कारलड ग कवलोडेदु
प्रसित्त हरिद जडे !

कुरकुल जीवाकपण परिणत मा
पाँचसिय जडे
सीतय कण्णीरीनु जडे
मा मा ई जड गन्नि मिंद कडे !

संजयलि हगलु कन्नय कसलय
मान जडे
वसगिनलि इरुलु विन्नुव वेल्लनय
वेलकु जडे !

जडेया" विरुगिसि" तायमुख मात्रइन्पिू
काणदल्ल ?   जी० एस० शिवरुद्रप्प

[ललनाम्रा की पीठ पर सप की भाँति लटकता हुम्रा जूड़ा का'लिदी (सर्प) की माइ। गदन के पास शाखा म घटकर इधर उधर झूलने वाला जूड़ा। कुरकुल क प्राए लने वाला यह पाँचाली का जूड़ा। सीता क ग्राँसुग्रा में भीगा हुम्रा जूड़ा। ग्ररे ग्ररे इस जूड़े का ग्रत कहाँ? साँझ म दिन को कुरेदने वाले ग्रंधकार का काला जूड़ा। सवेरे म रात को खाने वाला सफद प्रकाश का जूड़ा। जूड़े के दूसरी ग्रोर मुड़ा हुम्रा माता का मुख तो ग्राज भी नही दीख रहा है तो?]

इसी प्रकार ओरों की रचनाएँ भी हैं जिसम विनायक जी का वैद्य विद्यालय' गोपाल कृष्ण महिग जी का भूमिगीत' भी मदाहूर है।

नई कविताम्रो की सम्यक समालोचना इनकी विशेषताम्रा की जानकारी म्रादि लेकर जनता का ध्यान पंडितों का ध्यान नई कविताम्रों का ग्रोर खींचा जाय, ता इनका भविष्य उज्ज्वल होने की सभावना है।

(गुरुनाथ जोशी)

●●●

समसामयिक उडिया कविता



बीसवी शताब्दी क द्वितीय दशक मे महात्मा गाँधी के जातीयताबोध ग्रौर रवीन्द्रनाथ के विश्व-प्रकृति के साथ मानवता क एकात्म्य एवं सौन्दर्य-बोध ने उड़िया काव्य धारा को विशष रूप से प्रभावित किया था। किन्तु मधुसूदनदास गोपबन्धुदास म्रादि प्रमुख नेताम्रा का भाषावार प्रदेश-गठन का ग्रान्दोलन तथा उत्कल के प्रतिवेशी बंगवासियों का उडिया विद्वेष जातीयता के भाव को ग्रखिल भारतीय स्तर से उतार कर प्रादेशिक स्तर पर ले ग्राया। उत्कल की सारस्वत वीणा से इसके दो स्वरा का जो समाहार उठा उसका ग्राभास हम हरिहर महापात्र मायाधर मानसिंह गोदावरिश महापात्र नित्यानन्द महापात्र कृष्णचन्द्र त्रिपाठी राधामोहन गोडनायक ग्रादि प्रमुख कवियो की काव्य धारा से होता है। सत्य शिव को ध्यान म रखकर कविता के रूप ग्रौर विषय-वस्तु मे समन्वय का तथा कविता मे ध्वनि एव गेयता के माध्यम स लय को बनाये रखने का श्रेय इन्ही कविया को है।

तृतीय दशक क मध्य भारत को एक समाजवादी राष्ट्र के रूप म बदल देने के लिए जातीयता ग्रान्दोलन उग्र हा चला तो काव्य धारा को एकाएक नया मोड

मिला। उस समय उड़ीसा बिहार से अलग होकर एक स्वतन्त्र प्रदेश बन चुका था। और उसी समय इंग्लैण्ड में मैकनिस डेलवी, रूस में मायकोव्स्की एवं स्पेन में एन्टोनियो मच्छादो 'लेफ्ट रिव्यू' (वाम पथ) को केन्द्र मानकर प्रगतिशील कविता लिख रहे थे। इनकी रचनाओं से भारत का प्रादेशिक साहित्य विशेष रूप से प्रभावित हुआ था। उड़िया-काव्य में इस भाव-धारा का प्रवर्तन सच्चिदानन्द राउतराय ने किया और स्वयं को वाम-पंथी कवि के रूप में प्रचारित किया।

अनन्त पटनायक, ज्ञानेन्द्र वर्मा और कुंजबिहारीदास की रचनाओं में भी इस भाव धारा की स्पष्ट झलक मिलती है। इनके काव्य का विषय मार्क्सवाद का श्रेणी-संघर्ष था और कृषक एवं श्रमिक वर्ग का हित साधन इनका लक्ष्य था। किन्तु उड़िया में यह भाव धारा अधिक दिनों तक न चली। सामंत श्रेणी और जमींदारों से शासित और शिल्प के क्षेत्र में अनुन्नत उत्कल के लिए ऐसी कविता मात्र एक फैशन बन कर रह गयी। एल्डस हक्सले के अनुसार इस प्रकार की कविता में कला की एकान्तिकता (Sincerity in art) के अभाव का आभास होता था। स्वाधीनता के बाद ही यह काव्य धारा सूख गयी। मायाधर मानसिंह इस प्रकार की कविता पर क्रुद्ध होकर कह उठे

दस-बीस साल पहले उड़िया-काव्य में हंसिया-हथौड़े की बाढ़ आयी थी। कामरेड स्टालिन ऐसा कहते हैं अतः एक पंक्ति से निकृष्ट पद्य भी उच्च कोटि की कविता जैसे प्रतीत होने लगते थे। किन्तु तत्कालीन वाम पंथी प्रगतिवादियों की पूरी टोली ने अपने अग्रणी नेता सच्चिदानन्द राउतराय समेत अब चोला बदल लिया है।

कला राजनीति की परिचारिका नहीं है। ताजमहल और कोणार्क का निर्माण राजनीतिक दल के निर्देश से नहीं हो सकता। तथा मन्नचिन्ता चमत्कार फातरे कविता गुच्छ के अनुसार तत्कालीन कविताएँ प्रत्यक्ष होकर भी सामन्त श्रेणी के पाठक के मन में जन-चेतना का बीजारोपण करने में समर्थ हुई थीं। इतना ही नहीं, जब उत्कल में सामन्तवाद के विरुद्ध विप्लव की अग्नि प्रज्वलित हो रही थी इन कवियों ने ही उसमें पूर्णाहुतियाँ दी थीं और कितने ही शहीद बन गए थे।

मानसिंह सौन्दर्य-बोध राष्ट्रीयता और मानवीयता के कवि हैं। काव्य धारा का स्खलन उनसे नहीं हो सका। द्वितीय महायुद्ध के बाद जब उत्कल के तरुण कवि अन्तर्राष्ट्रीय चिन्ताधारा के प्रति पूर्णतः समर्पित हो चुके तो इन्होंने खिन्न होकर कहा — "और अब एक अन्तर्राष्ट्रीयतावादी तरुण-दल मैदान में

उतरा है जिसकी जड़ें बड़ी नहीं हैं और जिस छोटे छोटे पाउंड और इलियट कल्तान का गौरव न मिल जाय य स्वयं अपने सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सके। तथाकथित 'शली' के एक अग्रगामी लेखक विनोदचन्द्र नायक समसामयिक उड़ीसा में कवि-कम की स्वच्छाचारिता के लिए कुख्यात हैं।

भारत की अन्यान्य प्रादेशिक भाषाओं पर इलियट डायलन थॉमस, एजरा पाउण्ड आदि प्रमुख कवियों का जैसा प्रभाव पड़ा वैसा ही उड़िया काव्य पर। किन्तु इन कवियों का रूपकल्प एवं शब्दानुप्रास इस सम्प्रदाय के उड़िया कवियों के लिए दुःसम रहा। इतना ही नहीं कृत्रिम भाव और कुत्सित वस्तु वर्णन म ही इन्होंने कवि-कम की इतिश्री समझी। रमाकान्तरथ जनामणि नरेन्द्रकुमार, ब्रह्मानन्द महन्ति, राइम राय आदि कवि इस श्रेणी म आते हैं। य कवि कला सृष्टि के मापदण्ड वजन एवं चयन (Elimin tion and Selection) के प्रति सचत नहीं थ।

समसामयिक कविता की द्वितीय धारा रोमान्सवादी है। सत्यानन्द सम्पतिराय चिन्तामणि बेहरा जानकीवल्लभ महान्ति दुर्गामाधव मिश्र कृष्णचरण बेहरा दुर्गाचरण परिडा विद्युत्प्रभा देवी तुलसीदास निनाद रान्तराय ब्रजनाथरथ रवीन्द्रकुमार पाणी उमाकान्त एडा आदि कवि इसी श्रेणी के हैं। इन कवियों ने अट्टूट अलंकार एवं छन्द का त्याग किया और जीवन की छोटी-छोटी संवगपूर्ण घटनाओं को सपन के माध्यम से व्यक्त किया।

एक और दल फ्रेंच उद्बोधनपरक कविता (French resistance poem) का भांति देश की सुप्त चेतना को जागृत करने वाली कविताए लिख रहा है। चीनी आक्रमण के बाद इस प्रकार की कविताओं की संख्या म वृद्धि हुई है।
कविता का परिणाम व कवि-संख्या का प्राचुर्य देखकर लगता है कि असंयत रूपकल्प असंलग्न भावधारा अप्रचलित शब्द-विन्यास व अपटु हस्त द्वारा गद्य छन्द के व्यवहार से कवित्व का स्फुरण क्लीव हो गया है। ऐसा लगता है कि राजनैतिक आदर्शहीनता जीवन की विशृंखलता और अस्वस्थ समाज की प्रतिच्छवि से कविता श्रीहीन हो गयी है। नवोदित कवियों में समाज के गुण-दोषों के चयन की मानसिक शक्ति अभी आ नहीं पायी है और प्रतिष्ठित कवि वर्तमान समाज से घृणा से मुंह फेर बैठे हैं।

इस परिवर्तनशी— का सहानुभूति कर इसके सुख दुख और
आशा निरा वाले नय वि में अभी कुछ समय
और ~

इच द्र नायक

आधुनिक तेलुगु कविता

★

श्री गुरजाडा अप्पाराव भी कवियों से आधुनिक तेलुगु साहित्य का श्रीगणेश हुआ था। परिणाम की दृष्टि से अल्प होने पर भी उनकी कविता लोकगीत सम्प्रदाय की सुषमा से आप्लावित है। एक नवीन मानवतावादी दार्शनिकता के सहारे सामान्य मानव के सुख दुखों का चित्रण उन्होंने किया था। दिन बीतते बीतते उनका व्यक्तित्व ज्यादा प्रभावशाली तथा व्यापक बन गया था।

श्री रायप्रोलु सुब्बाराव की रचनाओं के साथ साथ आधुनिक तेलुगु साहित्य में मधुर कल्पनात्मकता का प्रादुर्भाव हुआ था। उस प्रसन्न मधुर कल्पना-जगत् की चरम सीमा तक पहुचने का श्रेय श्री देवुलपल्लि कृष्ण शास्त्री को है। कई महान कवियों ने सामान्य आडम्बर विहीन मानव के सर्वांगीण चित्रण, बाल्य सुलभ सरलता प्राकृतिक सौंदर्य लौकिक वासनाओं से अतीत विशुद्ध प्रणय की महत्ता तथा देशभक्ति की गरिमा आदि उत्तम वस्तुओं को प्रस्तुत करने में मधुर कल्पना प्रधान इस कविता की उपासना की थी।

जीवन की कठोर वास्तविकताओं के चपेट में आकर हारकर जब भाव कविता नीरस होने लगी तथा जब वह स्वर्ण मंदिर में प्रतिष्ठित एक प्राणहीन मूर्ति बन गयी, तब श्री श्री के विद्रोह का शंखनाद गूज उठा। उनकी कविता प्रलय कारी वेग से बह निकली। मार्क्सवादी आदर्शों से प्रेरित होकर उन्होंने परम्परा गत अंध रूढ़िवादी सिद्धांतों की शृंखलाओं को एकदम तोड़ डाला। भव्य भविष्य के आलोकमय अग्रसर होने का डंका बजाया। आधुनिक प्रगतिवादी दल के वे अग्रदूत बने।

साहित्य क्षेत्र में कवि सम्राट विश्वनाथ सत्यनारायण का अनन्त विश्वरूप का साक्षात्कार-सा हुआ। प्राचीन परम्परा मार्ग के समर्थक होते हुए भी उन्होंने विभिन्न रचना प्रक्रियाओं के प्रयोग के द्वारा आधुनिक साहित्य संसार में उथल पुथल मचा दी जिसकी ओर समकालिक आश्चर्यचकित होकर देखते रह गये। इधर वे एक बृहत् रूप में अद्भुत ढंग से रामायणीय कथा पर एक महाकाव्य की रचना करने में संलग्न हैं।

वैयक्तिकवादी कवियों में कवि जाषुवा का एक प्रमुख स्थान है। उनकी सुस्वाद मधु मधुर शैली प्राचीन परंपरानुगत धाराओं में बहती है। लेकिन उनके विचार पुरानी बोतल में नवीनतम द्राक्षासव से हैं। स्पष्टता तथा नवीनता के कारण उनका प्रभाव अत्यन्त व्यापक तथा प्रचलित है।

भाव कविता का माधुर्य 'गेयम' में मूर्तिमान हुआ। पिछले कुछ सालों में गेयम के उज्ज्वल रूप का कई तरह के कई छंदों में समग्र विकास हुआ। बसवराजु, नन्दूरी सुब्बाराव, कृष्णशास्त्री, श्रीश्री दाशरथी तथा नारायण रेड्डी जैसे प्रतिभावान कलाकारों के हाथों से प्रचलित लोक कविता के सांचे में, इसका सर्वांगीण सुन्दर रूप ढाला गया है।

कुन्दुर्ति आंजनेयुलु, आरुद्रा गोपाल चक्रवर्ती तथा शिरिशिराम विश्वम आदि कवि नये कवियों के हाथों में गद्य कविता तथा स्वच्छन्द कविता कलात्मक पठन सपन्न हुआ है। अपूर्व विविधता तथा कठोर वास्तविकता के आधुनिक जीवन की दुर्गति को इनकी धारावाहिक विचारधारा चरम सीमा तक ले गई है।

पाश्चात्य भौतिकता के रसहीन क्षेत्रों में विफल विचरण करने के बाद विभिन्न अनिश्चित तथा संदेहास्पद आदर्शों की विफल साधना के बाद आज जीवन के वास्तविक मूल्यों का अन्वेषण हो रहा है। आज के कई कवि शुष्क सिद्धान्तों एवं कोरे नारों की व्यर्थता को महसूस करने लगे हैं। उन्होंने जान लिया है कि सुन्दर स्वप्नों के भविष्यत् की पृष्ठभूमि की स्थापना के लिए प्राचीन तथा नवीनता के उत्तम सामंजस्य की आवश्यकता है।

(अमरेन्द्र चतुर्वेदी)

***

कवि-परिचय
और
कविताऐं

सकेंतिका

वीटनीक कविताएँ ६

एलेनजिन्स वर्ग	—	असली महत्वपूर्ण वस्तु
जक केरुएक	—	हड्डियाँ
मिकाएल होरोविज	—	आगामी युद्ध के बाद
एड्रियन मिचेल	—	लार्ड होम जिन्हे ५००० पौंड मिलते हैं
बोम्	—	पग्न और पक्ष
पाल ब्लैकबन	—	प्रतीक्षा
ब्रदर एंटोनिनस	—	शब्द जन्म
मार्टिन सेमूर स्मिथ	—	एक इमारत के पास मिला खत
सी एच सिसन	—	युवती

यूरोप की कविताएँ २०

फ्रांस

पियेर रिवेर्डी	—	काला और सफेद
पाल जिल्सन	—	अस्थियों का मरसिया
जाक्स डूसेट	—	तुम्हारे चारों ओर

जर्मनी

बरतोल्ड ब्रेख्त	—	बेचारा बी० बी०
हेलमुट हीसेन बुटेल	—	टुकड़ा
वर्नर रेफेन्ड	—	ओठों पर पवन
होल्टलंग	—	रात्रि संगीत
इंगेबोर्ग बाखमान	—	दुपहर को

ग्रीस

रेम्को कम्पट	—	कवि

डच

गैरिट आशटेवग	—	सूय
हन्स लोडईजिन	—	पिता के लिए
आद्रियाँ मोरिअन	—	एक लड़की
मॉरिस गिलियाम्स	—	एक बच्चे की मौत पर

आइसलण्ड

सिगुरदुर ए० मैग्नुसन	—	?

रूस
बोरिस पास्तरनाक — गाँव
ब्लाडीमीर मायकोव्स्की — तुम्हारा ख्याल है तुम कर सकते हो ?
ज्यार्जी इवानोव — उपयोग
एव्जेनी एव्टुशेंको — बाबीयार
एलेक्जान्दर येसेनिक वोल्पिन— कौमा
रूमानिया
जी बकोविया — आखिरी कविता
माग्दा इसानोस — यदि न्यायपूर्वक 'बी' लिया होता
स्पेन
गार्सिया लोर्का — आत्महत्या
रफ़ाएल आलबेर्ती — दुराशंका
मिगुएल हरनान्देज — साँड की तरह
युगोस्लाविया —
इवान इवानजी — रेलगाड़ी
वेस्नापरून — सामने चेहरा
लटिन अमेरिकन कविताएँ ४६
मक्सिको
ऑक्टावियो पाज़ — स्पष्ट
एनरीक गाजालेज मार्टीनेज— बन्द बगीचा
लुई करनूदा — बहुत पहले का बसन्त
जेवियर विलौरुशिया — बर्फ में कब्रिस्तान
क्यूबा
रेने एरिज़ा — लौटने पर
इसेल रिवेयरी — कितनी धीमी
पेरू
सेजार वलेजा — अनंत चौपड़
इक्वेडोर
जाज करेरा अन्द्रादे — मिट्टी के घर
युरुगुवे
जुलयो हररा य'रासिग — नगण्या का रंग मंच
ब्राज़ील
मानुएल बान्देरा — पूर्ण मृत्यु

अर्जेण्टाइना
जाजलुई वारेजीज — उपवन
रिकार्डो ई० मोलोनारी — नहीं आयेगा
सिल्वीना ओकेम्पो — निद्राहीन पैलीनरस
चिली
पा लो नरू न
वि सेंते हुई दीव्रो — स्थिर बिन्दु
— स्त्री
कनाडियन कविताएँ
वॉव डार्टनिंग
फिलिस वेव — सत्य ६५
विल बिसेट — टूटे हुए नग्न कविता
से० वी० हुर्ज — हृदय म कवि
फ क डिवी — मृतकों का स्वप्न पगम्बर नहीं हो
रेमेण्ड जे० फ्रेजर — महादिवस
मार्टिना विलन्टन — मैं और वे
— लघु कविताएँ
करेबिया की कविताएँ
ए जे सिमूर
फक ए कौलीमोर — सूर्य सुडोल अग्नि है ७५
डेरेक वाल्काॅट — विद्रोही
समएल सेलवी — अग्निभूत नगर
मार्टिन कार्टर — सूर्य
ट्राम कौम्बस — आवाजें
एल्फ्रेड प्रेग्नेल — ?
— दोस्त को खत
न्यूजीलैंड की कविताएँ
चार्ल्स ब्रेश
डब्लू हाटस्मिथ — आत्मा का आत्मा से वार्तालाप
लौरी रिचडस — अग्नि शिखायें
मौरिस डुगन — श्मशान गृह
क्नेथ मेकन्नी — एक निवेदन उन सबसे
पीटर ब्लंड — गली की औरत
हुवर वियरफोड — एक वृक्ष की मौत
— कैक्टस

गोर्डन चलिस — समान रखे हुए ताप का मनुष्य
रूथ डलास — समुद्र पर बादल

आस्ट्रेलियन कविताएँ ९१

जूडिथ राइट — प्रेमियों का दल
डोरोथी हीवेट — नाविक की वापिसी
क्लेम क्रिस्तेसेन — कविता
आर ए सिम्पसन — दुर्घटना
जेम्स कर्बेट — मृत्युलेख
डोरोथी ऑवेटर लोनी — विदा गीत
ग्वेन हारवुड — पानी के किनारे
डेविड रोजस — मरते हुए संसार पर पुनर्विचार
डेविड मार्टिन — निबन्ध विचार

अफ्रीकी कविताएँ १०३

दक्षिणी अफ्रीका
उईस क्रीग — काल गिरिशृंग काली हवा
जेक कोप — यदि तुम लौट आओ
सी एम वान डेन हीवर — आहत तरु, मृ सरदार
गाई बटलर — मैं
इन्ग्रिड जोन्कर — मैं नहीं चाहता
राय मक्नाब — यूरोप और अफ्रीका
रूथ मिलर — भटकाव
तानिया वान जिल — मृत

युगाण्डा
कोलिनराय — अफ्रीका
जोजफ जी मुटिगा — अफ्रीक रात को भोगो
अलबट बी ओगारो — प्रत्युत्तर

नाइजीरिया —
अइग हीगा — रीति हिंसा
क्रिस ओकिग्बो — मूक बहनों का गीत
मेल सोयिनका — टेलीफोन वार्ता
गोवरिअल ओकारा — रात तट पर एक रात

मेडगास्कर
ज्याँ जोजक रिवेग्ररिवेलो — हमारी प्रगति
घाना
मवेसी ब्रू — याचना
कांगो
जी एफ डी चिकाया
उतामसी — जन्त्र मन्त्र के साथ नाचो
सेनीगल
डेविड डयाप — तुम्हारी उपस्थिति, मुझ को बताओ
लियोपोल्ड सेडार सेंघोर — नीलिमाएँ
मल्जीरिया
मब्दुल वहाब मल वयाती — मल्जीरिया को बसन्त मौर बच्चे
मलेक हद्दाद — जो इतिहास बन गये मैं जानता हूं
मिश्र
उमर मबू रिशेह — पोर्ट सईद का गीत, प्रश्न
मनवर नफेह — दो प्रेमी
एशियाई कविताएँ
फिलस्तीन
इब्राहिम तोकान — कबूतर
मुहम्मद कासिम — बास्केट बाल का खिलाड़ी
मकरम फ़ादिल — कहाँ चुनूंगा मैं फूल !
टर्की
फाजिल हुस्नु उगलारका — नग्न मुखा
सी टरान्सी — मृत्योपरान्त
इजराइल
इतजिक मैंगर — मैं यही हूँ
बर्नार्ड कॉप्स — शांति बम
जापान
शिन ऊका — कर्नल मौर बम
हिरोसी इवाता — बिल्ली मौर चिड़िया
यू सूवा — शरद का पुरुष
मिनोरू योसिमोका — विगत

— समुद्र
हाइगाकू होरीगुची — नाई की दुकान पर
टारायामा मोटो
फिलिपीन्स — दो कविताएँ
जी वस वुनाम्रो
मलाया — मि० शान मूमेड
ई तियाग हाग
कोरिया — बर्फ
किम सू-यु ग — भूमध्यसागर पार करते हुए
को-यॉन — कार्नेलिया जो अमरीका में मिलो
मिन जाई शिक
इण्डोनेशिया — मेरा घर एक कमरा
चयरिल अनवर — जागरण
सितोर सितुमोरंग — अमागा कोजन
डब्ल्यू एस रेन्द्रा
वियतनाम — वापसी
तो थुई येन — पर्वतों पर वसन्त आता है
वान दाई
लंका — रात्रि में भय
जॉर्ज केट — दरवाजा
धर्मो शिवरामू
भारत
हिन्दी — माँ निषाद प्रतिष्ठाँ
कुँवर नारायण — समझदार लोगों की कविता
कैलाश वाजपेयी — अवस्तु करण
गिरिजा कुमार माथुर — उम्र का माया
जगदीश गुप्त — चार छोटी कवितायें
जगदीश चतुर्वेदी — लोकान्तरण
ठाकुर प्रसादसिंह — दो कविताएँ
नेमिचन्द्र जैन — मध्याह्न
बालकृष्ण राव — स्फटिक प्रभ
भवानी प्रसाद मिश्र — गीत
माखनलाल चतुर्वेदी — बाहर एक जादूगर
रामदरश मिश्र

शम्भुनाथसिंह
शमशेर बहादुरसिंह — यात्रा के बाद
श्रीकान्त वर्मा — सारनाथ की एक शाम
— बुखार में कविता
बंगला
विनयमजुमदार — पहली कविता
शक्ति चट्टोपाध्याय — गुप्तचर
सुनील गंगोपाध्याय — नारी नगरी
मानस राय चौधुरी — अनुभव
उर्दू
रफ़्त सरोश — बस
निदा फाज़ली — तुम्हारे खत
शहरयार — इत्तज़ा
जावद कमाल — नींद
राही मासूम रज़ा — ग़ज़ल
मराठी
प्रभाकर माचवे — सध्यारण्यकोपनिषम् । परोपजीवी
बा० भ० बोरकर — अभंग
शिरीष प — दुख का हिम
आ० रा० देशपाण्डे अनिल — किसी एक बरसात में
— देर से आई बरसात
गुजराती
योसफ मेक्वान — यहाँ भी
अब्दुल करीम शेख — अश्वत्थामा
हेमन्त देसाई — असहाय कवि
दिलीप ज़वेरी — धब्बा
पंजाबी
कृष्ण अशांत — गंदा रुमाल
तारासिंह — निमन्त्रण
सुखवीर — होंटस एक मंजिल
स्वर्ण — युग्म
अंग्रेजी
पी० लाल — एक रंग चित्र
पद्मनाथ शमशेर — पशुपतिनाथ-टेम्पुल

बी० वी० मनिक्कर	—	मैनहटन-स्ट्रीट
सुनीता बैनर्जी	—	रिफ्लेक्शन
प्रजनी मोहन्ती	—	४२ वीं कविता
नारायण चिन्तामणि		
महाशब्दे	—	परिवर्तन का एक चक्र
राम महाबली	—	देवमास ?
नयनतारा सहगल	—	दीवार
मोनिका वर्मा	—	अब कोई मकसद नहीं
निसिम इज़िकिएल	—	सम्बन्ध
अनुसूया आर० दोनोय	—	रोटी और स्वातन्त्र्य

मलयालम

वलोप्पल्ली श्रीधर मेनन	—	ये मग्रास, नन्हा मुन्हे
बालामणि अम्मा	—	बढ़जा मुन्ने ! आगे
सुगतकुमारी	—	निशा कुसुम

तमिल

पुदुम पित्तन्	—	मांगो मत
कम्बदासन	—	फरियाद कर्मफल
भारती दासन	—	तिमिर
सुब्रह्मण्य भारती	—	हमारा देश

कन्नड़

अरविन्द नाडकर्णी	—	समुद्र मोहिनी
पशुपति रेड्डी	—	कारिन्दा
पी० वेंकटरमण आचार्य	—	चालीस के करीब
सिद्दण मसली	—	टन् टन् टन्
रामचन्द्र शर्मा	—	वसुन्धरा

उड़िया

विनोदचन्द्र नायक	—	भाड़े का मकान
प्रद्योत्र महान्ति	—	मोरी
मायाधर मानसिंह	—	एक अनेक

तेलुगु

वनकुधरम	—	मैं
मन्दाग्री	—	अजलि
स्फूर्तिश्री	—	ऐ सौन्दामिनी



नौ ट्बीनीक कविताएँ

एलेन गिन्सबर्ग
जक केरुएक
मिकाएल होरोविज़
एड्रियन मिचेल
ओम्
पाल ब्लैकबर्न
ब्रदर एंटोनिनस
मार्टिन सेमूर स्मिथ
सी० एच० सिसन

एलेन गिन्सबर्ग	जन्म १९२६, बीटनीक कवियों में अग्रणी। हाउल एण्ड अदर पोयम्स प्रसिद्ध संग्रह, भारत में भी रहे।
जक केरुएक	प्रसिद्ध बीट कवि, कई संग्रह प्रकाशित।
मिकाएल होरोवित्स	सम्पादक—'न्यू डिपार्चर्स', इंगलैण्ड के क्रुद्ध कवियों के एक नेता।
एड्रियन मिचेल	प्रसिद्ध क्रुद्ध कवि 'न्यू डिपार्चर्स' दल के सदस्य।
बोम्	वास्तविक नाम—पोलिनिया डी हॉलविल क्रुद्ध नयी कवयित्रियों में अग्रणी, 'न्यू डिपार्चर्स' से सम्बद्ध।
पाल ब्लकबर्न	जन्म १९२६, कवि सम्पादक अनुवादक, कई पुस्तकें प्रकाशित।
ब्रदर एण्टोनिनस	जन्म १९१२, बेहद लम्बी कविताओं के कारण प्रसिद्ध दि क्रूकेड लाइन्स ऑफ गॉड—प्रसिद्ध संग्रह।
मार्टिन सेमूर स्मिथ	इंगलैण्ड की सुप्रसिद्ध पत्रिका 'एक्स' से सम्बद्ध।
सी० एच० सिसन	ये भी 'एक्स' से सम्बद्ध।

असली महत्त्वपूर्ण वस्तु • एलेन जिन्सबर्ग

(लॉफिंग गैस द्वारा अचेतनता की ओर कदम)

महान् संवादी सत्ता में मेरी उपस्थिति
की गहरी संवेदना
जिसमें अब धारणा से परे की
असवाग्निता भाग लेगी

मैं फिर यहीं वापस आ गया हूँ—यांत्रिक
भ्रम की अनुभूति अपने मूढ़ भाग्य पर लौट
आई है—क्षुद्र विस्मय-संगीत के साथ—
मैं छोड़ देता हूं

भयकर वास्तविकता के अनंत समकालिक
रूपाकारों के आभास जो गलती से प्रकट होकर
कुछ नहीं के मूर्खतापूर्ण चेतना प्रदेशों में
छूट गये हैं

शून्य के बंद होते गम्भ छिद्र में लुप्त
होते हुए—'रुको' का चिह्न जो चक्कर खाकर
आँख के आकार में सामने ठहर जाता है—
मुझे आँख मारता है और हम लुप्त हो जाते हैं। •

हड्डियाँ • जैक केरुएक

मैंने
साफ साफ
देखा

इस
सारे
व्यक्तित्व
प्रदर्शन
के नीचे छिपा कंकाल

मनुष्य
और उसके गर्व
का अन्त में

हड्डियां के सिवा
क्या शेष रहता है ?
रातोंरात उसके नृत्यों का
पीपे भर भर शराबों का
जो उसके गले से उतर गईं
…ह ड्डि याँ…
कब्र में वह
सड़ता है
कीड़े उसे
खाते रहते हैं •

आगामी युद्ध के बाद • मिकाएल होरोविज

क्यों हम ध्वस्त क़टर नगरों म मरें   क्या
हम सितारे नहीं, जो एक सुन्दर मनत उद्यान
बना सकें   क्यावि

अभी उड़ता पतगें ही मीनारों म लगा घटियाँ देख सकती हैं
जिन्हें कोई सुन नहीं सकता—सब ग्रात्माएँ
ग्रौर मन नय सफाई साबुन स
धुल चुके हैं—

नौटिंग हिल के
तिमजिले घर की बात है

पहली मजिल पर
हर मेजेस्टीज सर्विस के
कामकाजी लोग रहते थे
जिन्हें बमों पर रोक लगाग्रो ग्रान्दोलन से
कुछ लेना दना नहीं
—ग्रगर क्वीन गई
तो इग्लैंड डूब जायगा—
वे खामोशी से ग्रपना काम धधा करते ग्रौर
ऊपर जाते हुए जरा भी किसी से छू गये
तो कहते 'माफ़ कीजियेगा

दूसरी मजिल पर
तेरह निष्कासित
सभी शक्ला ग्राकारो ग्रौर रगा के हर वक्त
शोर मचाते पार्टियाँ करते—ग्रौर क्या भयकर सगीत
जैसे हिस्टीरिया मे पीड़ित हों
वसा में उनके बगल में कोई बठता नहीं था
वे सभी ग्रपने लिए ग्रपन साथियों, ग्रौर पालतू जानवरा के लिए
हमेशा कुछ न कुछ ग्राना देते रहते

ऐसी ही और भी वाहियात बातें—
और आखिरी मंजिल का यह दम्पति—
यह तो मुझे आम पतित है
—ये दोनों क्यों हमेशा ही भीतर बाहर
ऊपर नीचे बीच में आते जाते रहते हैं—उनका
मिसेसिपा से बेहद गहरा सबंध है
जो सितारा के नीचे जमीन के ऊपर सब तरफ फैले हैं
नीचे वाले उनकी परवाह नहीं करते
सिर्फ जब तब उपहास कर लेते हैं—
पर जब उनके जीवन में हस्तक्षेप होता है
तब दुघटनाएँ शुरू होती हैं—
और अब तो बम गिर चुका है
जिसने सभी दिन ताड़ दिये हैं •

एड्रियन मिचेल

लॉर्ड होम जिन्हें ५००० पौंड मिलते हैं

लॉर्ड होम लॉर्ड होम जिनका आयताकार चेहरा है
जो सुदर नहीं तो एकदम बदसूरत भी नहीं है
पर सपाट सपाट जैसे युग का एक आइना !
और लार्ड होम का सपाट आयताकार चेहरा
सपाट आयताकार चेहरे वालों की लम्बी परम्परा की ही उपज है
सुसंस्कृत उनके दर्जी ने कहा, चतुर कची से
कीमती ढंग से लॉर्ड होम के बढ़िया कपड़े कतरते हुए।
अपार दौलत उनकी शिक्षा पर रंग ढंग पर बहाई गई है—
योग्य परम्परा के योग्य वंशज !
लार्ड होम लॉर्ड होम ने अपने आयताकार चेहरे का
मुह खोलना शुरू किया।
मुह खुलने लगा खुलता रहा और पहने आया
फिर पूरा फिर बिलकुल ही खुल गया—

एक साफ़, क्लोरोफ़िल स पूर्ण, खाई, जिसम
संकट के समय लोग बसेरा ले सकते हैं।
इस खाई से शब्द अंग्रज़ी म निकलने शुरू हुए
जिनका आशय यह हुआ कि अंग्रेज बर्लिन को प्यार करते हैं—
तुम्हें याद है वह शहर, जिसकी हर आँख पर एक स्वस्तिक था
जहाँ सभी समझदार रोते थे यहूदी और गर-यहूदी
उन्होंने कहा कि उस शहर से प्यार के लिए सभी अंग्रज
अणुबम की राख में मिल जाने को तयार हैं
पर उन्होंने कहा, पर भूलो मत उन्होंने कहा, पर, पर
वे ऐसा करेंगे नहीं।

लॉर्ड होम, लॉर्ड होम कायर हैं, मुर्गी बराबर भी जिनका कलेजा नहीं
सपाट धूल भरे चेहरों की परम्परा के अयोग्य।
मैं धूल हो जाना चाहता हूँ लोकतंत्र प्रेमी स्वतंत्र उद्योग की धूल।
मेरे शरीर का हर अणु टूटने को व्याकुल है।
ध्वंस तथा अग्निकाण्ड के बाद से मेरे सभी अग्रज अणु
उस स्थान पर देश भक्तिपूर्वक एकत्र होने लगे हैं जहाँ
पहल मेरा दिल उठते गिरते बादल देखा करता था।
ध्वंस और अग्निकांड के बाद स अणुओं की सेना
जो पहले मेरे जीवन क कार्यों में काम आती थी
अब उस पुरवा हवा की आतुर प्रतीक्षा कर रही है
जो उसे लौह आवरण क पार उड़ा ले जाय
और मास्को पर तब तक बरसाये
जब तक रूस के बुरे आदमी और बुरी औरतें अपाहिज न हो जायें। •

पंख और पंख • ध्योम्

वह पंख
हवा से उड़कर
मेरे परों पर आ गिरा
मैंने उसे उठाया देर तक देखता रहा
और गहरी उदासी स एक आह भरी
इस पंख पर सफद धब्बे थे

मेरे किस भाग्य का सूचक था यह पंख ? मेरी स्मृति घूमी,
आत्मा ने कब्जा लिया और इन्द्रियाँ विगत की सुगन्धों में
डूबने लगीं   यह पंख मैंने अपनी जेब में रख लिया
एक आह भरकर   और   आँखें बंद करके
उसकी मानो भीगी त्वचा चमाचम हो रही थी
खुले हुए ओठों में सुन्दर दाँत दिखाई दे रहे थे और सफेदी
में चिपी गमार आँख जैसे कुछ कह-सी रही थी।
जब वह एड़ियों पर घूमी
उसकी छातियाँ लहराईं
और उसके शरीर में भरी शक्ति ने जैसे मुड़कर अंगड़ाई ली।
वह देखता रहा देखता रहा   बिना हिले चुपचाप
इस दृश्य ने उसे जकड़-सा लिया
हृदय में एक इच्छा उठी   टूटे फूटे शब्दों में उसे
पास आने को कहा।   वह उसकी बगल में आ बैठी
पर वह स्तब्ध ही रहा एकदम चुप   उस एकाकीपन से
दिया दिया जो उसके नेत्रों की कोर में
छिपा हुआ बैठा था
वह प्रश्न-दृष्टि से देखता रहे   एक संकुचित मुसकान
अजान ही उठी उसकी शक्ति से बेखबर।
एक अनोखा पंख   उसने सोचा यह बड़ा हलका
और कोमल है   बड़ा पतला   और चमकीला।
किस चिड़िया से टूटकर यह उड़ आया है   कौन सी हवा
उसे यहाँ पहुँचा गई है
क्या यह इतना ही खोया हुआ है जितना दिखाई देता है और फिर
वह खुद अपनी गहराइयों में जाकर खो गया   फिर भी ...
उसकी त्वचा कितनी चमकदार है
जैसे समुद्र की चट्टान हो
और दूसरी ओर देखकर
वह आगत का सोचने लगा
यह अनोखा पंख जिसने उसके भावों को भाँप लिया
और बुद्धि को स्तम्भित कर दिया   त्वचा का यह कालापन

ऐसा मनोज्ञ और ऐसा सच्चा
क्या यही वह गहराई है जिसे वह सोचता है कि वह समझ पाया है?
वह उस छू नहीं सका वह निषिद्ध पत्र था।
एक पत्नेदार पत्र मेरे पैरों के पास उड़ आया, मैंने उसे
एक आह भरकर अपनी जेब में रख लिया। ●

प्रतीक्षा ● पाल न लैकयर्न

पृथ्वी मुड़ती है
शिशिर की सन्ध्या की ओर
शीतल शारदाय प्रकाश
(पृथ्वी
घूमती रहता है।)
सायंकाल के झरोखों को
भर रहा है मैं अकेला
बिस्तर पर लेटा हूँ

उठते सूरज की गुलाबी रोशनी में रंगी
सफ़ेद दीवार के पार
एक मक्खी उड़ती है
दरवाज़े तक आती है
जगह जगह रुकती है
चुपचाप

मेरे असंतोष की आड़ी वक्र रेखाएँ
मेज़ के इधर उधर मँडरा रही हैं
मुक्त, अध चेतन, अर्धमत्त
मन को मित्रों से भर रहा हूँ ●

शब्द-जन्म • ब्रदर एंटोनिनस

एक गहराई
विराट अंतर्निष्ठा
शून्यता अपनी ही रिक्तता से आतंकित
अंधेरा अपनी ही स्वार्थता से पराजित
किसी संकेत के लिए बेचैन

क्या संकेत ?

अचर्चित
अपनी मूर्च्छना में प्रकम्पित—
बहुत दूर तक ।

कौन ?

खिलते हुए
रूपांतर के अपने गुण में
उभरते हुए ।

समर्पित
अक्षर एकाग्रचित्त
निश्चय से समन्वित ।

धारणा
शुद्ध संगति से उत्पन्न ।
इच्छित नहीं, अनुभूत
घोषित नहीं स्वीकृत ।
आयामों में विस्तृत—
बाह्य अभिनन्दन ।

अद्भुत स्वतन्त्रताओं में सुधारित,
समोद्भासित
प्राचीनताएं विघटित ।

स्वभव्यता से भी अछूते,
पूर्ण से अधिक
विलक्षण । ●

मार्टिन सेमूर स्मिथ

एक इमारत के पास मिला ख़त

मेरे प्रिय

पेंग वेस्ट में बनती इस इमारत की बगल में मैं लगा पड़ा हूँ । सुबह के १ बज कर ५ मिनट हुए हैं बड़ी सर्दी है । कुहरा मेरे चारों ओर घिर रहा है खंभो

की तरह। मुझे बहुत कुछ सोचना है खास तौर पर यह
कि सुबह होने पर मैं क्या करूंगा ?
यह सब मैं कोयले के टुकड़े से लिख रहा हूँ
एक फटे चिटे अखबार के दागी टुकड़े पर
सुबह के घनघनाते साइरन बजने से पहले
शायद यह तुम्हें मिल जाय। न मिले तो,
मेरे बारे में सोचना पर मेरा पता मत लगाना। ●

युवती ● सी० एच० सिसन

अटलान्टा सी डावाँडोल तुम सड़क पर चलती हो।
कुछ ही समय पहले तुम किसी की पुत्री थी,
अब इस झुंड की माँ हो।

तुम्हारा एक हाथ एक छोटे बच्चे को पकड़े है
दूसरा परा के पीछे एक और को थामे है
और हँसती हुई तुम एक तीसरे के पीछे भाग रही हो।

तुम्हारे स्वस्थ उदर में एक गुफा है
जिसमें से ये इस सुगंधित संसार में आये।
ये पक्षियों की तरह हैं, पर तुम्हारी आँखों पर
रेखाएं खिंचने लगी हैं,
जो शरीर तुमने अपनी सुहाग शय्या को दिया
उसे देखकर लड़के अब सीटियाँ नहीं बजाते।

जल्द ही तुम समझ जाओगी कि आशा
जिसके पीछे अभी तुम भाग रही हो,
कप में रखे पानी की तरह ले जानी होती है।
अन्ततः तुम इसे ऐसे ही पकड़ोगी
जब यह सब भाग-दौड़ ज्ञान मात्र में बदल जायगी
और उसकी लोट-पोट से तुम उल्टी हुई चादर हो जाओगी। ●



यूरोप की कविताएँ

तीन फ्रेंच कविताएँ
पाँच जर्मन कविताएँ
एक ग्रीक कविता
चार डच कविताएँ
एक आइसलेण्ड कविता
पाँच रशियन कविताएँ
दो रूमानियन कविताएँ
तीन स्पेनिश कविताएँ
दो युगोस्लाव कविताएँ

•

फ्रांस

पियेर रिवेर्दी अग्रणी आधुनिक फ्रेंच कवि।

पाल गिल्सन पेरिस रेडियो से सम्बद्ध रहे, नयी पीढ़ी के कवि एवं उपन्यासकार।

जाक्स डूसेट अधुनातन अग्रणी कवि।

जर्मनी

बरतोल्त ब्रख्त (स्व०) विश्वविख्यात नाटककार, कुछ कविताएं लिखीं, बाद में मार्क्सवादी हो गये।

हेलमुट हौसेन बूटल जन्म १६२१, कई कविता संग्रह प्रकाशित।

वनर रेफल्ड अधुनातन कवि और विद्वान, काफ्का पर थीसिस कुछ समय भारत में भी रहे।

होर्स्ट लग जन्म १६०४, रहस्यवादी तथा मौलिक तत्वों की अनुभूति के कवि।

इंगबोग बाखमान जन्म से आस्ट्रियन महिला, कविता और कहानियों के दो संकलन प्रकाशित कविता में युद्ध की तीव्र अनुभूतियां हैं।

ग्रीस

रैम्को कम्पट प्रसिद्ध ग्रीक कवि एवं विद्वान।

आइसलैण्ड

सिगुरदुर ए० मगनुसन नयी पीढ़ी के अग्रणी कवि कुछ समय पूर्व ही भारत आये थे।

रूस

बोरिस पास्तरनाक (स्व०) नोबल पुरस्कार मिला और उससे बड़ी हलचल मची, गीतों के कई संग्रह प्रकाशित काफ़ी अनुवाद कार्य किया। क्रान्त्योत्तर रूस के प्रमुख कवियों में एक।

अलाडीमीर मायकोव्सकी : (स्व०) ३७ वर्ष की आयु में आत्म हत्या की, जिसका रूस और यूरोप के साहित्य-मानस पर बड़ा असर पड़ा। रूसी क्रान्ति और भविष्य वाद के प्रमुख कवि।

ज्यार्जी इवानोव (स्व) रूस त्याग कर फ्रांस में रहे अनास्था के कवि।

एव्गनी एव्तुशेंको युवक रूसी कवि अमेरिका घूम चुके अब क्यूबा में हैं।

एलेक्सांदर येसेनिन पिता भी प्रमुख रूसी कवि थे।

वोल्पिन ३८ वर्षीय नयी परम्परा के कवि; गणितज्ञ तथा तार्किक। जेलों में खूब रहे।

स्पेन

गार्सिया लोर्का (स्व) पुरानी परम्परा के स्पेनी कवि फ्रांकों के दलवालों ने हत्या कर दी। जिप्सियों, सांड-युद्धों, प्रेम घृणा मृत्यु आदि पर खूब लिखा।

रफाएल आलबर्तो पुरानी परम्परा से आरम्भ करके अति-यथार्थवाद तक लिखते रहे हैं। स्पेनिश गृहयुद्ध के बाद अर्जेन्टाइना में रहने लगे।

मिगुएल हरनान्देज ३२ वर्ष की आयु में मृत्यु जेलों मे रहे। बहुत संक्षिप्त सरस और भावपूर्ण कविताए लिखी।

यूगोस्लाविया

इवान इवानवी दूसरे महायुद्ध के समय के बन्दी शिविरों में रहे। दो कविता संग्रह और एक उपन्यास प्रकाशित।

वेस्ना परन ४१ वर्षीय प्रसिद्ध यूगोस्लावियन कवयित्री दो कविता संग्रह प्रकाशित।

काला और सफेद • पियेर रिवेर्दी

इस लैंप के विशाल श्वेत वृत्त को छोड़कर
और किसके समीप रहूँ
बुड्ढे ने एक-एक करके
अपने सब हाथी-दाँत निकाल लिये हैं,
य बच्चे जो मरते हो नहा
इनके गुस्से का लाभ ही क्या
यह बुड्ढा—
ये दाँत—
पर यह वही सपना नहीं था
जब उसे लगा कि वह ईश्वर के बराबर
बड़ा हो गया है तब उसने
अपना धर्म बदल दिया और
अपना पुराना अँधेरा घर भी छोड़ दिया
तब उसने नये वस्त्र खरीदे और
एक अलमारी खरीदी
पर वृत्त के समान श्वेत चमकता शिर
झाड़ियों पर पड़ी मामूली गेंद
से अधिक कुछ भी नहीं रहा
दूर से गेंद हिलती प्रतीत होती है,
इसके बगल में एक कुत्ता है
और यदि यह गेंद ही हो
तो इस रूप में यह कब तक हिलती रहेगी
कुछ पता ही नहीं चलता। •

अस्थियों का मरसिया • पाल निलसन

धूल यह दीवाल की थी
इस कोई सन्देह नहीं था
कि इसे उस युग की अच्छी जानकारी थी

जब दीवालों के भी कान होते थे और
नष्ट पग्ध्वनियां गलियारों में गूंजती थीं

कल शाम की गर्मी से अब भी परेशान
स्मृति की राख के भीतर
इतना चमक अभी बाकी थी
कि द्वारों के बीच खड़े भूतों को
प्रश्नों को रोशन कर सके—जो
चाहे खाना खाते लोगों की आकृतियां हों
मेज़ के नीचे जिनकी नाव डूब गई
या फ़ैशनपरस्त का चश्मा हो
या लंपट का आवरण हो
या किसी मृत स्त्री के बाल हों

नीम-हकीम का सब रोगनाशक पाउडर
भी कुछ नहीं कर सका
पर कोई पुरोहित की बात नहीं सुन सका
आदमी राख ही होता है
राख हो में वह मिल गया है
उसके घर-जीवन में कुछ कमी-सी लगती है
कुछ ऐसा अभाव
जो पत्थरों को भी पिघला दे
पर राष्ट्रों की श्मशान भूमि में
अब पत्थर भी शेष नहीं हैं

सारी दुनिया पूरी तरह
जाने कहां खो चुकी है। ●

तुम्हारे चारों ओर • लारेंस डूरेल

तुम्हारे शरीर के चारों ओर
पारदर्शी मांस वाली मछलियां हैं
और नक्काश मज़ारों का एक स्वर्ग

जिस मधकार ग्रस रूप स काटता है
चुम्बना क मध्य हम खेल रहा है

तुम्हारे स्तनों के चारों मोर
दूध स भरी नस-नाडियाँ हैं
कबूतर जिनका कोई नीड नहीं
मौर फूलो के खिलने हुए गुच्छ
तुम्हारे चरणो के साया में उगने हैं

तुम्हारे मुख के चारों मोर
हसी की फुहारा की दावन हैं
कुतरे हुए फल के स्वाद से पूर्ण
भयहीन शब्दों से युक्त
जो शून्य से भी हलके हैं

तुम्हारी माँखो के चारों मोर
जवान लडका के चेहरे हैं
माँसुमा के नमक स मज्जित
मौर तुम्हारे नयना के इधर उधर
फैली सुगधों से सुसज्जित

तुम्हारे सिर के चारा मोर
तुम्हारे विविध सपने हैं
बचपन की निश्चित नीदें हैं
जो मन कभी नही सोयगा
हजारा तरह के विचार हैं
जो जानते नही किधर जायें
दुखिया का टोप मौर
मेरे तुम्हें कहे शब्द हैं

जब भी मैं तुम्हें चूमता हू
तुम्हारे गले की बिजलिया के नीचे
मस्फुटित पोस्तों का स्फुरण होता है ●

बेचारा बी बी • बरतोल्त ब्रेख्त

मैं बरतोल्त ब्रख्त काले जंगलों का निवासी हूँ।
माँ मुझे पेट में लिये ही शहर आ गई थी।
और जब तक मैं मर नहीं जाता
जंगलों का शीत मुझसे अलग नहीं होगा।

कोलतार के शहर में मैं खुश ही हूँ
शुरू से ही मैं मौत के सब प्रतीकों से युक्त हूँ
समाचारपत्रों से, शराब और तम्बाकू से।
सन्देही और आलसी और अन्ततः सन्तुष्ट।

लोग मुझे पसन्द करते हैं। मैं उनकी
प्रथा के अनुसार बाउलर टोप लगाता हूँ।
मैं कहता हूँ ये बड़े नुक्ताचीं लोग हैं।
पर कोई बात नहीं मैं खुद भी ऐसा ही हूँ।

सुबह के वक्त मैं कभी कभी कुछ स्त्रियों को
अपनी रॉकिंग कुर्सियों पर बिठाकर खुश खुश
उन्हें देखा करता हूँ और उनसे कहता हूँ
मैं ऐसा आदमी नहीं जिस पर तुम विश्वास कर सको।

शाम को मैं पुरुषों को अपने पास एकत्र करता हूँ।
हम सब एक दूसरे को 'श्रीमान्' से सम्बोधित करते हैं।
वे मेरी मेज पर पैर रखकर बैठते और कहते हैं
जल्द ही सब ठीक हो जायगा। पर कब यह मैं नहीं पूछता।

सुबह की भूरी उषा में देवदार उदासी से हिलते और
पक्षी तथा उनके बच्चे रोने लगते हैं तब मैं
शहर में अपना गिलास खतम करता हूँ और सिगार
फेंककर चिन्तित मुद्रा में सोने चला जाता हूँ।

इन नगरों से जो गुजरता है वही शेष रहेगा—मानो हवा।
लोग घर में खुश रहकर भी उसे खाली कर जाते हैं।

हमें पता है कि हम भूमिका मात्र हैं और हमारे बाद
यहाँ जो वस्तु आएगी—वह उल्लेखनीय नहीं होगा।

आगामी भूचालों में मुझे आशा है कि तब भी
के कारण मैं अपनी सिगरेट नहीं फेंकूँगा—
मैं बरतोल्त ब्रेख्त काले जंगलों से बहुत समय पूर्व
माँ के पेट में रहते हुए ही कोलतार के नगरों में फेंका हुआ। •

टुकड़ा • हेलमुट हीसेनबूटल

क्षितिज सभी गोल हैं।
धरती की सपाट चकती पर
मैं दूरस्थ घण्टाघरों की ध्वनियाँ हूँ।

रेडियो कहता है
स्वाधीनता असम्भव वस्तु है
फिर एक रिकार्ड
अर्नाल्ड शाएनबर्ग का फ़ोर्थ स्ट्रिंग क्वार्टेट।

सूरज मेरी जेल कोठरी से दूर है।
हवा में तैरती
शहर की रेलों की गड़गड़ाहट
बड़ी मीठी लगती है।

अप्राप्य की निराश और कुण्ठित सुधाएं।
जाने के अनेक समय
आने का कोई नहीं। •

ओठों पर पवन • गुनर रेफेल्ड

ओठों पर पवन
थपकी देती है
अगले दरवाज़े का
आइने में मिटाती है
रातों के साथ
गर्द पर नग्न करती है
गोपन को नामहीनता को
उतरती है लहरों में
दम्पति की लय में
पर्दे में
स्वीकृत समय के सम्मुख। •

रात्रि संगीत • होर्स्ट लैंग

अब अच्छी तरह सोओ निशा से एकरूप होकर
दिन को भूल जाओ, तारीख से उतर जाओ,
चाँद और तारों के रस को इंद्रियों में समाने दो
भारहीन शीतल और शून्य बन जाओ।

अगर पतवारहीन यह नाव—
रक्त-भरे सपनों से फिसल फिसल जाओ,
ताज़ा तूफानों से मुक्त आसमान को महसूस करने को
पेड़ों के आगे चुपचाप लेट जाओ।

भय को भगाओ, लोगों को भूल जाओ
अभाव के छोटे मीठे बच्चे बन जाओ
याद करो उन सख्त हाथों का जिनसे एक दिन
धरती के गर्भ से तुम निकाले गये थे।

अँधेरे की पर्तों में खतरे भरे हैं
छिपे रहो दृष्टि को नष्ट कर दो
सत्ताहीन कर दो चुपचाप चुप सी—
अभी तुम जीवन के विनाश और मृत्यु से अजनबी हो। •

दोपहर को • इंगेबोर्ग बाख़मान

गर्मी के दिनों में
जब नींबू के वृक्ष चुपचाप फूलते हैं
नगरों से दूर दिन का एक भाग
रोशनी की पीली किरणें बिखेरता है
दोपहर हो गई है,
धूप फव्वारे में तर रही है
मलबे के ढेर पर भ्रमरता का पक्षी फोनिक्स
अपने पीड़ाग्रस्त पंख खोलता है
और पत्थर फेंकने के कारण विकृत हाथ
उगते अनाज में डूब जाता है।

जहाँ जमन आसमान धरती को काला कर रहा है
एक सिरहीन देवदूत मानवी घृणा की कब्र ढूंढने में लगा है
वह उस हृदय की कुंजी सौंप जाता है।

दिन का एक गंवार पहाड़ी के पार जाकर खो गया है।

सात साल बाद
तुम्हारे पुराने विचार वहीं तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं—
फाटक के सामने लगे फव्वारे पर
ज्यादा मत घूरो मत घूरो
तुम्हारी आँखें आँसुओं में डूब जायगी।

सात साल बाद
उस घर में जहाँ मुर्दे पड़े हैं
कल के जल्लाद सोने के प्यालों में
शराबें पी रहे हैं
पर तुम्हारी आँखें झुकी हैं झुकी हैं
दोपहर हो गई है

रात के भीतर

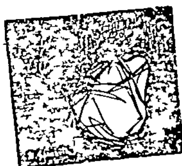
लाहा तड़प रहा है झण्डे काँटा पर
लटक हैं और अग्नि सपनों की
चट्टान जंजीरा में जकड़े
गरुड को उठाये हैं।

रोशनी म बंधी भारा भय से काँप रहा है।

उसकी जंजीरें उतारो उस स्तूप से
नीचे लाओ उसकी आँख
अपने हाथों से ढक दो
कि कोई भी परछाईं उस पाड़ित न करे।

जहाँ जमन धरती आसमान को काला किये है
बादल शब्दों का पीछा कर रहे हैं
खोहा को मौन से भरते हुए
ग्रीष्म क उह हल्की वर्षा म सुग पान म पूर्व।
जो कमनीय नहीं वह भूमि पर घूम फिर रहा है
फुसफुसाते में व्यक्त होता

दोपहर हो गई है। ●



एक ग्रीक कविता

कवि • रेम्को कैम्पर्ट

पूरा तोपखाना
एक हाथ में लिए
भावनाओं से गूंजते
भारी आसमान के नीचे
मैं खड़ा रहा।

एक खाली दीवाल पर
लोगों ने लिखा
स क ट
कोई अक्षर अधूरा नहीं था।

उन्हें मेरी आँखों पर विश्वास नहीं रहा
मेरी दृष्टि पर भरोसा छोड़कर
उन्होंने मुझे एक घर में भेज दिया

एक घर में, जहाँ दाँत सड़ रहे थे,
जो चारों तरफ पानी से घिरा था
पर जिसकी चिमनी चिड़िया से भरी
एक पुरानी टूटती हुई चिमनी
जो चिड़िया से जीवित थी।

जिसका एक दीवाल सफेद थी
फिर जहाँ एक नाव भी आ गई
घर घर जाने के लिए।

उन्होंने मुझे घर भेज दिया
एक हाथ में
यात्राओं भरा थैला
और दूसरे में
पूरा तोपखाना देकर। •

सूर्य • गैरिट आशटर्बर्ग

सूय म आरम्भ होती है मौत
आरम्भ होती है एक प्यारा निशाना लेते हुए
बधन तोड गम खेतों पर दौडती हुई धूप ।
नगी सड़का पर अपने पवित्र पाँवा से जाते हैं हम
उस सर्वशक्तिमान ने हम विच्छेन्नि किया
और कही पराजय नही गई है ।
अपना रक्त—सारे सूर्यों क साथ मिलान को हर माँ
स्वच्छित है
हमार रक्त कणों से उठाकर
ओ वसन्त—सूर्य नशे म चूर दौडता है बन्धन-मुक्त । •

पिता के लिए • हूस लोडइजिन

पिता हम रहे साथ
धीमी चमती रेखों म फूला बिना
वे राते फेकती थी हस्तावरणों की तरह
पिता हम रहे साथ
उस अधकार म भी पिता
जब तक पिट नही गये हम चुप में—
अब तुम गये कहाँ—किधर घुडसवारी में
एक हरी कार—ठण्डी छोटी हवा म
अथवा न्नि ने नही उतारे अपने हस्तावरण
उस मेज पर जहाँ रोशनी की लकीरें
मुलायम आरामदेही का आगमन निश्चित है ।
मेरे ओठ
मेरे नाजुक ओठ बन्द है •

एक लड़की • आद्रियाँ मोरिअन

मेर अन्दर है मेरा रक्त भा ध्वनि हीन
जावन को दोबारा रखने के लिए
मेरे भयभीत हाथ
मेरी गोद—लज्जा स प्रताडित
सकुचित और चकित।
मेर हिमपिण्ड छाटे हैं—उन्हें आवृत्त करन
मैं पहनती हूँ गीतमय रेशम अपन अन्दर
भो मरे समय
छोड दो मुझे इस अज्ञानबोध और यौवन के मोद म
मैं बहुत छोटी हूँ
लघुतम … ।•

एक बच्चे की मौत पर • मॉरिस गिलियाम्स

हमारी अंगुलियाँ जुदा हैं।
क्रॉस के नीचे
तुम्हारे भूरे बाल सो रहे हैं।
अपनी आँखों की स्मृति मे
एक बार फिर पहुँचते हैं तुम्हारे पास।
स्वप्न स अधिक
बातें निद्रा म और हमारे कार्यों में
एक अन्धी क्रिया
कि—तुम्हें ले लिया गया है। •

इन कविताओं के अनुवादक गंगाप्रसाद विमल

आइसलैण्ड की एक कविता

? • सिगुरदुर ए० मैग्नुसन

समय के पीछे
जिसने मुझे माँ के गर्भ से निकाला
कौन मुझे हाथ में थामकर पकड़े है
समय के पीछे
प्रश्न यह है
कुण्डली सर्प सेब के साथ •

गाव • बोरिस पास्तरनाक

शोर थम गया है। मैं रंगमंच पर आ गया हूँ।

द्वार के चौखटे पर झुककर
मैं सुदूर ध्वनि में यह सुनने की चेष्टा करता हूँ
कि मेरे जीवन में क्या क्या घटेगा।

हज़ारों अँधेरा-चश्मा से रात्रि का
सर्वग्रासी अँधेरा मेरे ऊपर केन्द्रित हो रहा है।
अब्बा पिता अगर यह सम्भव हो तो
यह प्याला मेरे सामने से हटा दो।

तुम्हारा यह कठोर नाटक मुझे पसन्द है
और मैं यह अभिनय करता सन्तुष्ट भी हूँ।
पर यह दूसरा नाटक शुरू हो रहा है,
इसमें मुझे अपनी इच्छा कर लेने दो।

दृश्यों का क्रम निश्चित हो चुका है
और मार्ग का अंत भी सुनिश्चित है।
मैं अकेला हूँ, सब डूबा जा रहा है।
ज़िन्दगी में चलना मैदान में चलना नहीं है। •

व्लादीमीर मायकोव्स्की

तुम्हारा ख्याल है तुम कर सकते हो ?

सहसा मैंने रोज़मर्रा के नक्शे को समुद्री लहरों पर दे मारा
और गिलास के भीतर से रंगों के इंद्रधनुष इधर उधर छितराए।
जिलेटीन की तश्तरी से मैंने निकाली
समुद्र के गालों की तिरछी तिरछी हड्डियाँ।
नन्ही एक मछली के पंखों में
मैंने नये ओठों की आकांक्षाएं पढ़ीं।
और तुम,
क्या तुम पानी के नलों की बाँसुरी पर
स्वप्न-संगीत बजा सकते हो ? •

उपयोग • ग्यार्जी इग्नातोव

अमानवी भाग्य से क्या
तक किया जा सकता है ? क्या युद्ध
किया जा सकता है ? सब धोखा है ।

पर इस उदास नीली शाम पर
अभी भी मेरा राज्य है ।

और आसमान   शाखों के बीच
लाल किनारों पर मोतिया' ~~
जामुनी झाड़ियों में कोयल गा रही है
घास पर एक चींटी चल रही है
शायद किसी को इसका उपयोग हो ।

शायद इसी तथ्य का कुछ उपयोग हो
कि मैं हवा में सांस ले रहा हूँ
कि मेरा ओवरकोट बायीं तरफ
सूर्यास्त की रोशनी में नहा रहा है
और दायीं तरफ सितारों में डूबा जा रहा है । ●

बाबी यार • एव्जेनी एव्तुशेंको

बाबी यार कियव (रूस) के बाहर एक खड्ड का नाम है
जहाँ नाजियों ने ७० हजार यहूदियों को जीवित
मार डाला था ।
●●

यहाँ कोई स्मारक नहीं खड़ा है ।
मुझे डर लग रहा है ।
आज मेरी उम्र उतनी हो गई है
जितनी सम्पूर्ण यहूदी जाति की है
मैं अब अपने को देखता हूँ
यहूदी हूँ मैं ।

अब मैं प्राचीन मिस्र के मध्य से गुजरता हूं।
यहां मैं मारा गया हूं क्रास पर चढ़ाया गया हूं
और आज दिन तक कीलों के घाव शरीर पर लिये हूं।
मैं अपने को
        ड्रेफस के रूप में देखता हूं।
यह फिलस्तीनी भेदिया भी है, न्यायाधीश भी है।
मैं सींकचों के भीतर हूं।
                घिर गया हूं।
लोग मुझ पर पत्थर बरसा रहे हैं गालियां दे रहे हैं थूक रहे हैं।
धिक्कार करती स्त्रियां
            मेरे चेहरे पर पट्टियां बांध रही हैं।
तब मैं अपने को देखता हूं—
                बियालिस्टाक का एक नौजवान लड़का।
खून बह रहा है, धरती भीग गई है।
बार-रूम के उपद्रवी लफंगे
जिनमें वोडका और प्याज की बू निकल रही है—
असहाय मुझे एक बूट ठोकर से परे डाल देता है।
इधर वे शोर कर रहे हैं
                "यहूदियों को मारो रूस जिन्दाबाद।"
उधर एक दुकानदार मेरी मां को मार रहा है।
ओ मेरे रूसी भाइयो!
                मैं जानता हूं
                तुम प्रकृति से
अन्तर्राष्ट्रीय हो।
परन्तु जिनके हाथ साफ नहीं रहे
वे अक्सर तुम्हारा पावन नाम लेते हैं।
मैं अपने देश की श्रेष्ठता जानता हूं।
कैसे दुष्ट हैं ये यहूदी-विरोधी
जो बिना संकोच के अपने को
'रूसी जातीय संघटन'† कहकर पुकारते हैं।

† एक संस्था जिसने ज़ार युग में यहूदियों का नाश कराया।

उपयोग • व्याज़ीं इयानोव

अमानवी भाग्य से क्या
तर्क किया जा सकता है ? क्या युद्ध
किया जा सकता है ? सब धोखा है।

पर इस उष्ण नीली शाम पर
अभी भी मेरा राज्य है।

और आसमान   शाखों के बीच
लाल किनारों पर मोतिया ···
जामुनी झाड़ियों में कोयल गा रही है,
घास पर एक चींटी चल रही है
शायद किसी को इसका उपयोग हो।

शायद इसी तथ्य का कुछ उपयोग हो
कि मैं हवा में साँस ले रहा हूँ
कि मेरा ओवरकोट बायीं तरफ
सूर्यास्त की रोशनी में नहा रहा है
और दायां तरफ सितारों में डूबा जा रहा है। •

बाबी यार • एव्जेनी एव्तुशेंको

बाबी यार कियेव (रूस) के बाहर एक खड्ड का नाम है
जहाँ नाज़ियों ने ७ हज़ार यहूदियों को जीवित
मार डाला था।
••

यहाँ कोई स्मारक नहीं खड़ा है।
मुझे डर लग रहा है।
आज मेरी उम्र उतनी हो गई है
जितनी सम्पूर्ण यहूदी जाति की है
मैं अब अपने को देखता हूँ
यहूदी हूँ मैं।

यहाँ मैं प्राचीन मिस्र के मध्य से गुजरता हूँ।
यहाँ मैं मारा गया हूँ क्रॉस पर चढ़ाया गया हूँ
और आज दिन उन कीलों के घाव शरीर पर लिये हूँ।
मैं अपने को

ड्रेफ़स के रूप में देखता हूँ।
यह फ़िलिस्तीनी श्रेणियाँ भी हैं न्यायाधीश भी हैं।
मैं सींखचों के भीतर हूँ।

घिर गया हूँ।
लोग मुझ पर पत्थर बरसा रहे हैं गालियाँ दे रहे हैं थूक रहे हैं।
चीत्कार करती स्त्रियाँ

मेरे चेहरे पर पट्टियाँ बाँध रही हैं।
तब मैं अपने को देखता हूँ—

बियालिस्टाक का एक नौजवान लड़का।
खून बह रहा है धरती भीग गई है।
बार-रूम के उपद्रवी लफ़ंगे
जिनसे वोडका और प्याज की बू निकल रही है—
असहाय, मुझे एक बूट ठोकर से परे डाल देता है।
इधर वे वार कर रहे हैं

"यहूदियों को मारो रूस जिन्दाबाद।"
उधर एक दुकानदार मेरी माँ को मार रहा है।
आ मेरे रूसी भाइयो!

मैं जानता हूँ
तुम प्रकृति से
अन्तर्राष्ट्रीय हो।
परन्तु जिनके हाथ साफ नहीं रहे
वे अक्सर तुम्हारा पावन नाम लेते हैं।
मैं अपने देश की श्रेष्ठता जानता हूँ।
कैसे दुष्ट हैं ये सैमाइट विरोधी
जो बिना संकोच के अपने को
'रूसी जातीय संघटन'† कहकर पुकारते हैं।

---

† एक संस्था जिसने ज़ार युग में यहूदियों का नाश कराया।

मैं अपने को देखता हूँ
एक फ्रॉक के रूप में,
वसन्त की शाम सा कोमल।
मैं प्यार करता हूँ।
भारी भरकम शब्दों की मुझे जरूरत नहीं है।
मेरी जरूरत है
कि हम एक दूसरे को समझें।
हम कितना कम देख
या सूंघ सकते हैं।
पत्तियाँ हम मना है
आकाश मना है
फिर भी हम यह सब कर सकते हैं—
आलिंगन
अन्धेरे कमरे में कोमलतापूर्वक।
वे यहाँ आ रहे हैं?
डरो नहीं।
यह आवाज़ तो वसन्त की हा है
वसन्त यहाँ आ रहा है।
तो मेरे पास आओ।
जल्दी से अपने ओठ दो।
क्या वे नीचे द्वार तोड़ रहे हैं?
नहीं यह तो बर्फ टूट रही है
बाग़ी पार पर जंगली घास लहरा रही है।
वृक्ष बड़े अमंगलसूचक लग रहे हैं
मानो न्यायाधीश हों।
यहाँ सब वस्तुएँ मौन रोदन कर रही हैं
और अपना सिर खोल लेने पर
मैं अनुभव करता हूँ कि
मेरे बाल सफेद हुए जा रहे हैं।
और मैं खुद
यहाँ गड़े हजारों हजारों के ऊपर
एक गहरे, ध्वनिहीन, रोदन से व्याकुल हूँ—

मैं वह वृद्ध हर हूँ
जिस यहाँ गोली लगी
वह हर बालक हूँ
जिसे यहाँ गोली लगी।
मेरी सत्ता यह सब
कभी नहीं भूलेगी।
गरजन दो
अन्तराष्ट्रीयता को
जब तक इस धरती का
एक एक सेमाइट विरोधी न मर जाय।
अपने आसुरी क्रोध में
सब सेमाइट विरोधियों को
मुझसे घृणा करने दो
जैसे मैं यहूदी ही होऊँ।
और इसी कारण
मैं सच्चा रूसी हूँ। •

कौआ • अलेक्जाण्डर येसेनिन-वोल्पिन

एक रात आतंक के दिनों में मैं थॉमस मोर को पढ़ रहा था
कि कहीं यूटोपिया की उपेक्षा मेरे ही सिर न मढ़ी जाय
उसके लम्बे उबानेवाले विवरणों में मैं ढूँढ़ रहा था
युद्ध मुक्त देशों में आवारगी के लिए कष्ट दिये जाने का समर्थन
यद्यपि इसे " ऐसी आवारगी के लिए युद्ध की जरूरत नहीं होती
क्या थॉमस मोर गहरी बात कहता है ?

और मैं उस राष्ट्र के बारे में सोचता रहा, जहाँ
स्वतन्त्रता अपमानित होती है
सहसा द्वार पर आहट हुई- कौन आया है इतनी रात को ?
शंका और दुख से भरकर मैं चिल्ला उठा, 'यह दोस्त नहीं हो सकता
मेरे सब दोस्त जेलों में बन्द हैं " जरूर कोई चोर होगा।

उल्लसित आशा से मैंने पुकारा ओर आओ भीतर आओ।
पर आवाज़ आई काँव काँव 'फिर नहीं'।

समझ गया। यह वह पुरातन कौआ था। जल्दी मे
मैंने खिडकी खोली और परिचित महान कौए को सामने देखा।
बेसब्री से भीतर घुसकर उसने परीक्षा की दृष्टि चारों ओर डाली
हडबडाकर मैंने उससे कहा, तुम जमीन पर हो बैठ जाओ,
इस घर मे मेज कुर्सी नहीं है कृपया जमीन पर ही बैठ जाओ।
जमीन ही है और कुछ नहीं।

कुछ खिन्न-सा कुछ रुष्ट-सा वह जमीन पर बैठ गया
सभी परदे खुल गये   मेरे पास किताबें बहुत हैं
फडफडाकर उसने उन्हें देखा और अपनी काली शक्ल
सामने करके आँख मिचकाई और मार शीर्षक पर चोंच मारी
सहसा उत्तेजित हो वह 'मोर' पर चोंच मारता ही रहा
और काँव काँव कर बोला यह नहीं।

मैं चकित रह गया। बोला ऊपर बैठे तुम मेरे आचरण की
ऐसे कठोर शब्दों म भर्त्सना क्या करते हो मायावी पक्षी
पहेली छोड़कर अपने मन की बात आधी तो कहो कैसे
तुम्हारी खाई को पार करूँ ? मैं डरता रहा हूँ कि इससे पहले
भद्र जनों में ऐसी खाइयाँ और भी अनेक बन चुकी हैं
पर वह बोला काँव काँव फिर नहीं।

कौवे ओ कौवे समय यह सैनिकों को चाहता है, कवि को नहीं।
तुम शायद हमारे मतभेदों को अच्छी तरह समझ नहीं सकते।
क्या पता इस युग की हमारी लड़ाइयों के विषय म कल की प्रतिमाएँ
क्या लिखें, नयी कृतियाँ का मुकुट लोकवार्ता का चतुर उपयोग
और शायद हमारी कल्पित वार्ता को ही विषय बनाया जाय।
पर कौवा बोला काँव काँव, नहीं नहीं।

ओ पैगम्बर तुम सामान्य पक्षी नहीं, क्या ऐसा विदेश कोई नहीं
जहाँ कला पर स्वतन्त्र विचार अवध्य न होता हो ? क्या मैं
ऐसे देश म अगर हो तो कभी पहुँच सकूँगा और मारा नहीं जाऊँगा ?

पाश्र्व म या नीदरलैंड म, क्या मैं यथापवादी और रोमांसवादी
झगड़े की पुरातन समस्या का कभी निर्णय कर सकूंगा ?
पर कौवा यही बोला कभी नहीं।

नहीं नहीं।' कौवा बोलता रहा 'एसा दश समुद्र के पार है
तभी सहसा दो सनिक भीतर घुस आये साथ म चोबीदार लिये
मैंने उनका स्वागत नहीं किया, बल्कि मुंह पर थूक दिया,
और कौवा गम्भीर कौवा, कांव कांव करता रहा, नहीं नहीं।
फिर नहीं। और अब मैं आ ठेला पतीक्षा कहता हूँ 'फिर नहीं।
अब फिर उठना नहीं है कभी नहीं।

रूमानिया की दो कविताएं।

आख़िरी कविता • वी॰ त्रकोविया

जिसे कोई नहीं जानता उसे भूलने के लिए मुझे शराब पीना चाहिए,
गहरे गानाम में छिपा कुछ भी न बोलता मैं वहाँ बढ़ूँगा
धूम्रपान करूँगा और अपने आप से भी गुम हो जाऊँगा
शायद दुनिया से बचने का और कोई उपाय नहीं है।

जिन्दगी को सड़कों पर चिल्लाने और मौत को
पटरियों पर चलने दो सदियों में कष्ट को अकेला छोड़ दो पास में
गुजरते मुर्दों कवियों को शोकगीत लिखने के लिए।
जानता हूँ
स्वप्न की भूख काफ़ी नहीं है
स्वप्न की रचना के लिए,
मेरे ऊपर की बारिश तूफ़ान और क्रोध
मेरे समय के इतिहास का अन्त होंगे।
लोग कहते हैं कि दुनिया मेरा इन्तज़ार कर रही है।
प्यार करने का पर मुझे शक है,
प्यार सदा द्वीपद्वीय होता है। यह मैं जान सका
उन्हीं की तरह कहकर आओ महान् भविष्य मेरे पास आओ।

लेकिन मैं जिसे कोई नहीं जानता उसे भूल जाने की छुट्टी चाहूँगा
अपने अपराधों की माफ़ी मांगना और उनकी भी
जो मुझे सड़क के दूसरी पार से देख रहे हैं उनके प्राण से
भर्त्सना का कोई शब्द नहीं निकलता। वे उदासी से मुस्कराते हैं
'शायद' दुनिया से बचने का और कोई उपाय नहीं है? •

मार्दा इसानोस

यदि न्यायपूर्वक बाँट लिया होता

ऊपर के पहाड़ों के दर्रों में
मैं विभाजित हुआ रहता हूँ

मेरा सिर चट्टानों से मिलना जुलता है
जो शिखरों की प्रशंसा में गूंज रहे हैं
शिखर जिन्हें मैं कभी छू न सकूंगा
न जो कभी प्रकाशित ही होंगे।

यदि इस संसार का सब दर्द
न्यायपूर्वक बांट लिया गया होता
कुछ दुख तुम्हारे लिए कुछ मेरे लिए
तो मैं इस जवानी में न मरता।
और भी काफ़ी समय तक मैं
सूर्य और हरियाली का आनन्द ले पाता
और भी काफ़ी समय तक मैं
वनों और वृक्षों के बारे पर गीत गाता
कितने उद्यान लूट जाने को शेष हैं
मैं खेतों, सतरों और फूलों की
गोलाइयों को अच्छी तरह नाप सकता।

यदि इस संसार का सब दर्द
न्यायपूर्वक बांट लिया गया होता
तो और भी कुछ समय तक मैं
खेतों की रोशनी को काट सकता।
लेकिन मैं अपने दोस्त को पुकारूं
जो मुझे इन पहाड़ों की सुइयां ला दे
ऊंचे आसमान में हवाओं के पास
जो मेरे सिर के पास चलने को आती हैं,
गड़रिया को चुपचाप जलती अग्नि के पास।
ज़िन्दगी! कुछ के लिए तुम पकवानों भरा मेज़
होती हो मेरे लिए घोड़े की सख्त लगाम
जो बेकाबू इधर उधर दौड़ता फिरता है।
तुममें खुशी का या डर का कोई संतुलन नहीं है
मैं तुमसे मिलता हूं, दुख पाता हूं, छोड़ देता हूं भूल जाता हूं।●

आत्महत्या • गार्सिया लोर्का

(जो इसलिए हुई कि तुम अपनी ज्यामिति नहीं जानते थे)

बच्चा चेतना खो रहा था।
सुबह के दस बज रहे थे।

उसका हृदय भर उठा था
टूटे डंठलों, मुरझाये फूलों से।

उसे लगा कि उसके मुख में
एक ही शब्द शेष रहा है।

जब उसने दस्ताने उतारे
कोमल राख उसके हाथों से गिरी।

खिड़की से एक मीनार दिखाई देती थी।
उसने खुद को खिड़की और मीनार अनुभव किया।

उसने देखा कि सामने रखी घड़ी
स्थिर दृष्टि से उसे ताक रही है।

सिल्क के सफेद दीवान पर
उसने अपनी शांत लेटी छाया देखी।

बगैर ज्यामितिक आकार के
हथौड़े से आईना चूर चूर कर डाला।

उसके टूटते ही छाया की एक बड़ी धार
अवकाश विश्रामघर पर हमला करने लगी। •

दुराशंका • रफाएल आलबेर्ती

तुम्हारे पीछे, कभी न पास,
कोई अपने शब्दों से
तुम्हारे नेत्रों को बींध रहा है।

तुम्हारे पीछे, शरीर-हीन

आत्माह्वान।
सपन में धुएं से भरी आवाज
जो टूट जाती है।
धुएं से भरी आवाज
जो टूट जाती है।

अपने शब्दों से, भूठे भरोखों से।

अंधे धनकर मृत्यु के साथ चलने
सोने की सुरंग से
जिसमें काले शीशे जड़े हैं
तुम एक गली में घुसते हो।
गली में तुम खुद ही
अपनी मौत से मिलते हो।
और कोई तुम्हारे पीछे कथा के पास
जहाँ भी तुम जाओ। ●

सांड की तरह ● मिगुएल हरनान्देज

सांड की तरह मैं शोक और दुख के लिए
पैदा हुआ सांड की तरह मैं अपनी बगल में
नारकीय चिह्न से अंकित हूँ और मनुष्य के
रूप में अपनी आंधों में एक बाज से।

सांड की तरह मैं अपना अमाप हृदय
बहुत छोटा पाता हूँ और चुम्बनयुक्त
प्रेम के समक्ष मैं तुम्हारे प्रेम के लिए
सांड की तरह युद्ध करता हूँ।

सांड की तरह मैं दंड से बढ़ता हूँ
मेरी जिह्वा मेरे हृदय में नहाई हुई है,
मेरा गले पर सबल पछुआ हवा चलती है।

सांड की तरह मैं तुम्हें भगाता और तुम्हारा
अनुगमन करता हूँ तुम मेरी आकांक्षा
सांड को चिढ़ाने की तरह, तलवार पर रख दो। ●

रेलगाड़ी • इवान इवानजी

कौन जानता है कोई कहाँ और क्या जाता है
कब कमे और किसके साथ वह मिल जायगा !
सभी यह नक्षत्र आकाश के मध्य
अपनी असमाप्य यात्रा में
बिना कहीं पहुँच, गुजरते रहते हैं।

और सभी यह पाते हैं कि
शहरों में स्टेशनों पर और गाँवों में स्टॉपेज पर
उनकी प्रतीक्षा करने वाला भाग्य बंधा हुआ है
(क्योंकि कुछ को ज्यादा और कुछ को कम मिलता है)

शायद एकाध मिनिट के लिए
गाड़ी कहीं रुकेगी और य कोई नहीं जानता
कि यह चलना क्या नहीं है ?
फिर चलने पर यात्रा अपने गन्तव्य का अनुमान करता है
पर उसी स्टेशन पर वही दूर हो जाती है। •

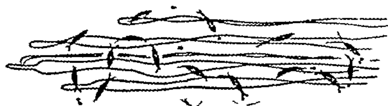
साया में चेहरा • वेस्ना परुन

यद्यपि मुझे उसका नाम याद नहीं है
पर मैं जानती हूँ
कि पक्षियों को वह बहुत प्रिय था
और मेरी आँखों में
उसकी मीठी मुस्कान उतर-उतर आती है

चारों तरफ लोग घन फिर रहे हैं
पर मैं अपना मुंह नहीं मोड़ती
क्योंकि मैं पुराने तूफानों की
आवाजों में डूबी हुई हूँ

समुद्र पक्षी भी अपने मृत मित्र को भूल चुका है
तो तुम्हीं क्यों शोक करती हो ?
पक्षी पहाड़ों पर वन अपने घोंसले को भूल चुका है
उत्तर और दक्षिण अब उसे समझ नहीं पड़ते

समुद्र अभी भी अशांत है
पर मैंने परदा गिराया नहीं है
मैं रक्षा माँगती हूँ नुकीले शूलों के दंड से
समुद्री गहराइयों के भय से। ●



लैटिन अमेरिकन कविता

चार मेक्सिकन कविताएँ

दो क्यूबियन कविता

पेरू की एक कविता

इक्वेडोर की एक कविता

युरुगुव की एक कविता

ब्राज़ील की एक कविता

अर्जेण्टाइना की तीन कविताएँ

चिली की दो कविताएँ

मक्सिको

आक्टावियो पाज	अग्रणी मक्सिकन कवि और विचारक इटली म राजदूत रहे। अब भारत म राजदूत हैं।
एनरीक़ गोंजालज मार्टीनेज	(स्व०) पुरानी पीढ़ी क होने पर भी नयी पीढ़ी के अग्रणी स माने। गहन बौद्धिक कवि ताए लिखी।
लुई करनूदा	स्पेन छोड़कर मक्सिको मे रहने लगे। कविता पर पर्याप्त यूरोपीय प्रभाव।
जवियर विलोरुतिया	(स्व०) कवि, नाटककार अनुवादक, अमरिकी कविता से प्रभावित।

क्यूबा

रेने एरिजा	क्यूबा के युवक कवियो मे अग्रणी।
इसल रिवेयरो	नयी पीढ़ी के प्रमुख कवि।

पेरू

सेजार वलेजो	(स्व) प्रसिद्ध कवि राजनीतिज्ञ। फ्रेंच शलियों स प्रभावित फ्रास मे हा ४२ वर्ष की अवस्था म मृत्यु।

इक्वेडोर

जोर्ज करेरा अन्द्रादे	इक्वेडोर के प्रसिद्ध कवि दुनिया भर म घूम हैं।

युरुगुवे

जूलियो हरेरा य रीसिग	(स्व०) उत्तर स्पेन की लैण्ड-स्केप सम्बन्धी कविताएँ बहुत प्रसिद्ध हुईं यद्यपि वहाँ कभी नहीं गए।

ब्राज़ील

मानुएल बान्देरा	आधुनिकतावादी कवियों में अग्रणी, कई संग्रह प्रकाशित।

अर्जेण्टाइना

जॉर्ज लुई बोरेखेस	आतंकपूर्ण कहानियों के कारण पिछले दो दशकों में बहुत प्रसिद्ध हो चुके हैं। कविताएँ कम ही लिखीं।
रिकार्दो ई० मोलीनारी	अर्जेण्टाइना की सूनी विस्तृत भूमि नदियों व पहाड़ों के कवि। पुराने व नये का अद्भुत सम्मिश्रण।
सिल्वीना ओकाम्पो	प्रसिद्ध कवयित्री रवि बाबू से घनिष्ठ सम्बद्ध रहीं। आपकी बहन प्रसिद्ध पत्रिका सूर की सम्पादिका रहीं।

चिली

पाब्लो नेरूदा	विख्यात कवि शक्ति और तेज के धनी, अति यथार्थवाद का अनुकरण करने के बाद कम्यु-निस्ट हो गये।
विसेंते हुइदोब्रो	पेरिस में दादावाद और अति यथार्थवाद का अध्ययन किया। फिर अपने देश में ये प्रभाव लाये।

लपट • ऑक्टावियो पाज़

आकाश और रोशनी के खण्डहर तुम्हारी गहरी छाया को
पूजते हैं प्यार जिसकी परछाई की ओर
मेरा हाँफती हुई साँस भागती है एक जीवित वृक्ष
जो अपनी अस्पष्ट फड़फड़ाहट से पूर्व
विद्युत् की चमक की तरह उगता और उठता है।

एक देवता-प्यार-उन्मत्त और काला,
नाम और वाणीहीन जीवित देवता,
गहरी स्तब्धता को गीत में परिणत करता है,
मेरी शक्तिहीन जिह्वा का बीज म बम्लता है
मदगामी दुनिया को लपट बना देता है
जो अपनी अग्निमय छातियों म एक और
अद्भुत गुप्त और भयंकर अग्नि छिपाये है

इस लपट के लिए बुलबुल विलाप करती है,
वन्य आकार, बीज के तूफान अश्रु और रोग्न
रात को पार करते हैं जब तक कि उनके गुस्से
क भागा के प्रवाह पृथ्वी को सोमा तोड नहीं देते,

दुनिया ऐसी जीवित लपट के लिए मरती है
प्रम की महिमा म ऊँचे उठकर और औरतें
पृथ्वी पर दौड़ती फिरती हैं पागल घोड़े अपने
जलागारों की अपेक्षा हृदय की धड़कनों के
काले चश्मा से पानी पीना पसन्द करते हैं,
जब तक कि व अपनी खतरनाक साँस से
मेरे शरीर के स्थिर प्रमान-तारे को ढक नहीं लेते

इस तीखी लपट के लिए रक्त बहता है
मेरे कानों म एक तूफान फट पड़ता है,

मरी मुलसी हुई जबान गूंगा हो जाती है
मौर दिल की धड़कनों के धुन पर हम मौन
मौर तृष्णा को पहुँचन तक दौड़ते रहते हैं

इस गुप्त लपट के लिए मैंने दुनिया बुझा दी,
जो भी इसे नहीं चाहता, उसे मैं नष्ट करता हूं,
छायाओं के भीतर मैं इसे पहचान सकता हूँ
मौर इसके रक्त म सदा के लिए डूब जाता हूं। •

बंद बागीचा • एनरीक़ गोंज़ालेज मार्टीनिज़

मेरे प्रतीक्षारत हृदय पर, भविष्य या विस्मृत भूत स
उठती आवाज़ें, जो कभी जीवित थीं, मौर आत्माएँ
जो कभी जन्मी ही नहीं यूं प्यार सटखटा रही है
मानो यह कोई बेहद पुराना घर हो

प्यार की पहली रात की मधुर ध्वनि
चाँद की रोशनी का तरंगहीन संगीत
जीवन भर व्यर्थ चेष्टा से पालित आदर्श

मैं इस खटखटाने का रहस्य जानता हूँ
दाग हुए दिनों में इसने वह दाहक ज्वर दिया
जिसको आज ज़िन्दगी विनयपूर्वक छिपाना चाहती है—

आत्मा ने सहज मौन होकर रात्रि का दीप
जला लिया है द्वार बन्द कर लिये हैं
मौर अब वह कोई उत्तर नहीं देता। •

बहुत पहले का वसंत • लुई करनूदा

अब इस संध्या के वासन्ती सूर्यास्त में
जब फूलों में गिरी ओस से मैग्नोलिया भीग है
उन सड़कों से गुज़रना, आसमान में चाँद को

बढ़ते हुए देखना, एक जाग्रत स्वप्न-सा होगा…
पक्षियों के दल अपने विलाप से आकाश को
विस्तृत कर देंगे फुहारे का जल अपनी शुद्धता से
पृथ्वी की गहरी आवाज़ को ऊपर बिखेरेगा
और तब आसमान और धरती एकदम चुप हो जायेंगे –
निर्जन के किसी कोने में अकेले अपना सिर
अपने हाथों में लिये, ऐतिहासिक प्रेत की तरह
तुम यह सोच सोचकर रोते रहोगे कि
जिन्दगी कितनी खूबसूरत थी और कितना व्यर्थ … •

बर्फ़ में क़ब्रिस्तान

जेपियर विलोहूशिया

बर्फ़ में क़ब्रिस्तान जैसी चीज़ दुनिया में दूसरी नहीं है।
श्वेतता पर रखी श्वेतता के लिए क्या नाम है ?
आकाश ने क़ब्रों पर बर्फ़ के अनुभूतिहीन पत्थर फेंके हैं
और अब बर्फ़ पर बर्फ़ के सिवा कुछ भी शेष नहीं है—
हाथ पर सम्न के लिए रखे हाथ की तरह।
पक्षी आसमान को पार करना चाहते हैं
हवा के अदृश्य गलियारों को घायल करने के लिए
कि बर्फ़ के एकान्त को कोई भी बाधा न रहे
यह समग्र हो सके
बर्फ़ की ही भाँति जीवित रह सके
क्योंकि यह कहना पर्याप्त नहीं है
कि बर्फ़ का क़ब्रिस्तान स्वप्नहीन निद्रा की तरह
सूनी खाली आँखों की तरह होता है—
यद्यपि इसमें कोई अचेतन और निद्रित शरीर होता है
एक नीरवता पर दूसरी नीरवता के गिरने-सा
विस्मरण के रिक्त आघात-सा
पर बर्फ़ के क़ब्रिस्तान जैसी दूसरी कोई चीज़ नहीं है—
बर्फ़ यद्यपि सभी वस्तुओं पर नीरव होती है
पर रमणीय समाधि पर, उन ओठों पर
जो अब कुछ नहीं बोलेंगे, उसकी नीरवता और भी बढ़ जाती है— •

दो क्यूबिदन कविताए :

लौटने पर • रेने एरिज़ा

मैं उस यात्रा से लौटा हूँ
जिसमें स्वत को निर्वासित समझता था
मैं आईनों म देखता हूँ
मरे यह मैं ही हूँ ?
शायद मेरी आँखे मत्र
नगर बसी हो गई ह
पर यह मैं ही हूँ
मैं पुरातन आईना के
मकड़ी-जाल स पराजित हूँ

पारदर्शिता
किसी ईश्वर का दिये
चुम्बन के अंधेरे म
डूब गई है
पर उस अंधेरे म भी
पहेलियों का प्रसव सम्भव है

उस कोण के भीतर छुपा हूँ
जहाँ मेरे शत्रु मुझे पा नही सकते
उस भूमि को खाली हाथ
गुप्त रूप से लूटता
हँसी को घसीटता हड्डिया से ढका
पाछे नीचे मैं हूँ। •

कितनो धोमो • इसेल रिवयरो

कितना धीमा है यह उडान
नगर स ऊपर उठने कबूतरा की
रोशनी के उनके पंख कितन सड चुके हैं

बढ़ते हुए देखना, एक जाग्रत स्वप्न-सा होगा ''
पक्षियों के दल अपने विलाप से आकाश को
विस्तृत कर देंगे फुहारे का जल अपनी शुद्धता से
पृथ्वी की गहरी आवाज़ को ऊपर बिखेरेगा
और तब आसमान और धरती एकस्म चूर हो जायेंगे ''
निर्जन के किसी कोने में अकेले अपना सिर
अपने हाथों में लिये, प्रागैतिहासिक प्रेत की तरह
तुम यह सोच सोचकर रोते रहोगे कि
जिन्दगी कितनी खूबसूरत थी और कितनी व्यर्थ •

बर्फ़ में कब्रिस्तान जेर्जियर पिलौरुशिया

बर्फ़ में कब्रिस्तान जैसी चीज़ दुनिया में दूसरी नहीं है।
श्वेतता पर रखी श्वेतता के लिए क्या नाम है ?
आकाश ने कब्रों पर बर्फ़ के अनुभूतिहीन पत्थर फेंके हैं
और अब बर्फ़ पर बर्फ़ के सिवा कुछ भी शेष नहीं है—
हाथ पर सदा के लिए रखे हाथ की तरह।
पक्षी आसमान को पार करना चाहते हैं
हवा के अदृश्य गलियारों को धायल करने के लिए
कि बर्फ़ के एकांत को कोई भी बाधा न रहे
वह समग्र हो सके
बर्फ़ की ही भाँति जीवित रह सके
क्योंकि यह कहना पर्याप्त नहीं है
कि बर्फ़ का कब्रिस्तान स्वप्नहीन निद्रा की तरह,
सूनी खाली आँखों की तरह होता है—
यद्यपि इसमें कोई अचेतन और निष्क्रिय शरीर होता है
एक नीरवता पर दूसरी नीरवता के गिरने-सा
विस्मरण के रिक्त आग्रह-सा
पर बर्फ़ के कब्रिस्तान जैसी दूसरी कोई चीज़ नहीं है—
बर्फ़ यद्यपि सभी वस्तुओं पर नीरव होती है
पर रक्तहीन समाधि पर, उन ओठों पर
जो अब कुछ नहीं बोलेंगे, उसकी नीरवता और भी बढ़ जाती है— •

लौटने पर • रेने एरिज़ा

में उस यात्रा से लौटा हूँ
जिसमें स्वतः को निर्वासित समझता था
मैं आईनों म देखता हूँ
अरे यह मैं ही हूँ ?
शायद मेरी आँखें अब
नगर बसी हो गई हं
पर यह मैं ही हूँ
मैं पुरातन आईनों के
मकड़ी-जाल स पराजित हू

पारदर्शिता
किन्नी ईश्वर का दिये
चुम्बन के अंधेरे म
डूब गई है
पर उस अंधेरे म भी
इहलियों का प्रसव सम्भव है

उस कोए के भीतर छुपा हूँ
जहाँ मेरे प्रभु मुझे पा नहीं सकते
उस भूमि को खाली हाथ
गुप्त रूप से लूटता
दुमी को घसाटता हड्डियों स ढका
पीछे नीचे मैं हूँ। •

कितनो धीमी • इसेल रिवेरो

कितनी धीमा है यह उडान
नगर स ऊपर उडत बादलों क
रोशनी क उनक पत्र गिरन लग हुए हैं

जिन पर नया तरह के कीड़े पदा हो रहे हैं
गहूँ की बालियों पर हवा कितनी धीमी है
कितनी धीमी है गति इस नये विनाश की
इस नये युद्ध की ।

मेरे ओठ इस युग की प्रशंसा करने को अभ्यस्त हैं
धीमी ध्वनियां और संहारों का यह युग
प्रशंसा करके भूल जाने को ।
जी नहीं
मैं इसमें कोई भाग नहीं लूंगा ।
इस नये हत्याकाण्ड से
मेरा नाम अनुपस्थित रहेगा ।

कितनी धीमी है बोध की यह प्रतिक्रिया ! ●

अनंत चौपड़ • सेजार पवेसे

हे ईश्वर, मैं जा हूं उसके लिए रो रहा हूं
तुमसे अपनी रोज़ की रोटी लेने के लिए मैं दुखी हूं
यह बेचारा विचारहीन मिट्टी तुम्हारी बगल में
सूख सूखकर उखड़ती पपड़ी नहीं है—

हे ईश्वर, अगर तुम आदमी होते
तो तुम जानते कि ईश्वर कैसा हो
पर तुम जो हमेशा ईश्वर ही रहे,
अपनी सृष्टि को कुछ समझ ही न सके
आदमी धीरज से तुम्हें सहता है—ईश्वर वह है।

आज जब मेरी मंत्रमुग्ध आंखों में मोमबत्तियां
यूं जल रही हैं जैसे मैं दण्डित व्यक्ति होऊँ, तुम भी
हे ईश्वर, अपनी रोशनियां जला लो और आओ
हम चौपड़ का पुराना खेल खेलें 'पर दाव' ओ
जुआरी, जब सारी दुनिया तुम्हारे सामने आ गिरेगी
तब मौत की खाली आंखें मिट्टी के दो पासे बन
उस आखिरी तौर पर जान लेंगी।

हे ईश्वर, इस अंधी और बहरी रात में
तुम खेल नहीं सकोगे क्योंकि पृथ्वी एक
घिसी हुई चौपड़ है, जो लोट-पोट होने के कारण
गोल हो गई है, और इसलिए कब्र के
खोलने के अलावा यह कहीं रुक नहीं सकती। •

इक्वेडोर की एक कविता

मिट्टी के घर • जॉन करेरा अन्द्रादे

मैं ताश की इमारत में रहता हूँ
रेत के घर में हवा के महल में
और हर मिनिट दीवालें ढहने के,
बिजली गिरने के इन्तज़ार में बिताता हूँ
स्वर्ग से न जाने कब नोटिस आ जाय
तनेय की उड़ान में मौत आ धमके
खूनी चाकू-सा हुक्म आकर
फरिश्तों की राख हवा में उड़ा दे।

तब मेरा मिट्टी का घर नहीं रहेगा
और मैं खुद को नये सिरे से नंगा पाऊँगा
मछलियाँ और चमकते सितारे, अपने
उलट चुके स्वर्ग में वापस लौटने लगेंगे।
जो भी यह रंग है पक्षी या नाम है
मिलकर मुश्किल से एक रात हो सकेंगे
और सिर्फ़ डैना और प्रेम के शरीर पर
जो फलों और कपोल का बना है
आखिरी तौर पर निद्रा या छाया की तरह
अस्मरणीय धूल छा जायगा। •

युरुगुवे की एक कविता

मृगण्यों का रंगमंच • जूलियो हरेरा य रीसिग

लैण्डस्केप है बाइबिल के एक अबोध पृष्ठ-सा
मृत्योन्मुख संध्या एक पर्वत पर झुकती है और
सूर्य की अन्तिम किरणें इधर उधर बिखरे घरौंदों में
एक बेहद महीन-सा धागा पिरो देती है—

एक भाप उठती है चुपचाप, गले के अनवरत
भारीपन की, एक गहरी असंगति की
गाँव के सामने रात धीमे से मुस्कराती है
श्वेत चेतना लिये धुंधनुमा मौत-सी

जैतूनी और हरे-नीले मैदानों में भेड़ों के दल
मेघाकार कुहलिकाओं से एकत्र होते हैं
जैसे सौ रुचिर वर्ष एक एक कर चुन रहे हों

एक टिड्डा गुलाब-गंधित शान्ति को भंग करता है
बगल में खड़ा, चाँद का आलिंगन करती, फैक्ट्री
आज की वस्तुओं में विगत का रोमांस भर रही है। •

माज़ोल की एक कविता

पूर्ण मृत्यु • मानुएल बान्देरा

इस तरह मरना
कि कोई निशान
कोई छाया शेष न रहे
छाया की स्मृति भी शेष न रहे—
किसी मानव हृदय में
मानव मस्तिष्क में
मनुष्य की त्वचा में।

ऐसी पूर्णता से मरना
कि किसी दिन यदि कोई
तुम्हारा नाम किसी पृष्ठ पर देखे
तो पूछे 'यह कौन था ?

इससे भी ज्यादा पूर्णता से मरना
कि यह नाम भी न रहे। •

उपवन • जॉन लुई योरनीज

शाम होते ही
उपवन के दो या तीन रंग थकने लगे।
पूर्ण चन्द्र की महत्ता मित्रता
पहले-सी हलचल नहीं पैदा करती।
आज आसमान तीखा है
शायद किसी फरिश्ते की मौत का संकेत दे।
उपवन आकाश और शिखर से संचालित।

उपवन वह खिड़की है
जहाँ से ईश्वर आत्माओं को निरखता है।

उपवन वह ढाल है
जिस पर लुढ़ककर स्वर्ग धरा में आता है।
गम्भीर अनन्त
सितारों के चौराहे पर प्रतीक्षा करता है।
कुआं छत्ता और पेड़-पत्तियों की दोस्ती में
जीवन बिताना कितना खूबसूरत है। •

नहीं आयेगा • रिकार्डो इ० मोलीनारी

नहीं यह वापस नहीं आयेगा यह प्रकाश
यह सवेरा न यह सुन्दर चमन, जो खो गया है।
अब ये वापस नहीं आयेंगे असम्भव, सदा
न जीवन न नाश न पतन न मानवी आकांक्षा।

नहीं, वे क्या आयें ? कोई नहीं लौटता— व्यर्थ है सब—
न कुछ दिन पहले का गुलाब जो झड़ चुका है
न वह रंगबिरंगा शाखा न वह जनी हुई पत्ती
न वह चेहरा न वह नदी न जीवन का वह गर्वित समय।

नहीं कभी नहीं, ओह मेरी मृत्यु—कितनी भयंकर !
मुझे समृद्धि में रहने दो या दरिद्रता, अपमान,
चरम अत्याचार और पूर्ण नाश में फेंक दो।

मेरे लिए अभी और आतंकपूर्ण
कठोर, नीरव—शून्यता—शायद एक लहर
प्रेम हाँ जो अप्रमाणित ही आ गया है। •

निद्राहीन पैलीनरस • मिलीना ओईम्पो

(पलीनरस मान लो तुम एक अज्ञात तट पर पड़े रहोगे)

लहरें, समुद्री सेवार और ढूहें,
टूटे और घोषपूर्ण शंख नमक
और आयोडीन की बू क्रुद्ध तूफान
अस्थिर डालफिन मछलियाँ और

थके हुए सायरन-वादकों के दल भी
उन शान्तिमय देशों की पूर्ति नहीं कर सकेंगे
जहाँ तुम गहरे जहाजों को दूर रखने वाले
स्थिर चरणों से घूमते फिरते थे।

पलीनरस तुम्हारा बंद समुद्रोन्मुख चेहरा
स्तब्ध रात्रि को जाग्रत रखता है।
नग्न, यहाँ पड़े रहकर

तुम फिर सदा के लिए रेत पर मर जाओगे
और पत्थर की सी जड़ असावधानता से तुम्हारे
नख और बाल लताओं के साथ उगने लगेंगे। •

स्थिर विन्दु • पाब्लो नरूदा

मैं कुछ नहीं जानूंगा न कल्पना करूंगा
कौन मेरी ग्रसत्ता को सिखायगा
प्रयत्न के बिना सत्तावान होना ?

जल कैसे यह सहन कर सकता है ?
पत्थरों ने किस आकाश का स्वप्न देखा है ?

ग्रचल जब तक वे प्रव्रजन
दूरस्थ देश जाने को ठहरे
ग्रपने बाणों पर चढ़कर
शीतल द्वीपों की ग्रोर उड न चले ।

ग्रपन गोपन जीवन म स्थिर
भूमिगत नगर की भाँति
दिन उतरते चले जाय
पकड न आने वाली मोम की तरह
कुछ नष्ट नहीं होगा न ग्रसफल होगा
जब तक हम फिर जन्म नहीं लेते
जब तक ग्राज दिन लुटी हुई भूमि
फिर पुराने वसन्त स भर नहीं जाती—
ग्रनवरत रूप से निस्पन्द स्वत को
ग्रसत्ता से बाहर निकालते हुए ग्रभी भी
फूला लगी डाल होने के लिए । •

स्त्री • विन्सेंते हुइदोब्रो

उसने दो कदम ग्रागे रखे
फिर दो कदम पीछे रखे
पहले कदम ने कहा नमस्ते श्रीमानजी

दूसरे कदम ने कहा नमस्ते श्रीमतीजी
बाक़ी कदमों ने फुसफुसाकर पूछा बालबच्चे कैसे हैं
यह दिन बेहद ख़ूबसूरत है मानो कबूतरों भरा आसमान

वह एक चटकती चोली पहने थी
समुद्र ने उसे झुलाकर सुलाया था
वह अपने सपने एक हवादार कमरे में गाड़ आई थी
वह अपने दिमाग़ में टँगे एक मृत व्यक्ति को साथ लाई थी।
जब वह वहाँ पहुँची उसका एक सुन्दर अंग अभी भी मीलों दूर था
जब वह चली कुछ उठा और आसमान में पहुँचकर उसका इंतज़ार
करता रहा
उसकी दृष्टि बड़ी पीड़ित थी और पहाड़ों पर ख़ून बरसाती रही
जब उसकी छातियाँ खुलीं जैसे उसकी उम्र की शाम कम्पित हो उठी
वह कबूतर का घेरे आसमान सी ख़ूबसूरत थी
उसका मुख जैसे इस्पात का बना था
और मौत का झण्डा उसके ओठों पर लहरा रहा था
समुद्र की तरह वह हँसती और उसके पेट में भरे अंगारों का
अनुभव करती थी
समुद्र की तरह जब वह अपने सब तटों की हत्या कर देता है
समुद्र जो उफनता है और शून्य में गिरता है
जब जिन्दगी बहुत हलकी हो जाती है
जब सितारे हमारे सिरों पर गुनगुनाते हैं
उत्तरी पवन के आँखें खोलने से पहले
हड्डियों के लैण्डस्केप में वह बड़ी ख़ूबसूरत लगती थी
उसकी जलती हुई आँख और गिरे हुए पेड़ सी दृष्टि
जैसे कबूतरों के घोड़े पर चढ़ा आसमान। ●

दस कनाडियन कविताएँ

जॉन डाउनिंग — कनाडा के नये कवि। कविताओं में दार्शनिक पुट, एक संग्रह प्रकाशित।

फिलिस वेब — जन्म १६२७, कोलम्बिया विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की प्राध्यापिका। कविताएँ शक्ति और नावीन्य से पूर्ण। अनेक बार पुरस्कृत। प्रकाशित संग्रह—'द सी इज़ ऑल्सो ए गार्डन'

बिल बिसेट — २३ वर्षीय कवि व चित्रकार। अपूर्व मौलिकता के धनी। भाषा की विचित्रता के कारण कविताओं का अनुवाद काफी कठिनाई से हो पाता है।

के० बी० हुड — नयी पीढ़ी के युवा कवि, 'मैटेक्स' के सहायक सम्पादक। 'माउन्टेन' नाम से टाइप्ड पत्रिका निकालते हैं।

फ्रैंक डिवी — २३ वर्षों से वस्तुओं के भीतर की मनोवैज्ञानिकता खोजने में लगे हैं।

पाटिशा विल्सन — २३ वर्षीया कवयित्री एवं चित्रकर्मी। कविताएँ 'पैशन' और कामनाओं से पूर्ण।



सत्य • बॉब ब्राउनिंग

चारों तरफ शान्त स्थिर बर्फ
का विस्तार
चिल्ला चिल्लाकर यह सत्य
घोषित कर रहा है
—यह नग्न सत्य
कि अब कहने को
कुछ भी शेष नहीं है। •

टूटे हुए • फिलिस वेब

हमें पूर्णता दो, हम टूटे हुए हैं।
लेकिन यह पूछना किससे और क्या ?
विनाशक सत्य घर तक आ पहुँचा है
वर्षों का कार्य तरंगों से टकराकर टूट चुका है।

खण्डित देवता, खुद ही मूर्तिभंजक,
क्या हम लेज़ारस से सम्बन्धित हैं ?
(कायल का पतन ही अटूट गीत है)
जॉन धरती पर गिरकर टूट गया है,
ईसा पेरिस में एक साल बिताकर,
मेट्रो में घूम फिरकर सेन में डूब चुके हैं।
हम अपने व्यर्थ देवता फिर न लड़े नहीं करेंगे।
ईसा के घाव अभी तक हरे हैं अचानक ही वे
जिस-तिस आम्मी पर प्रकट हो जाते हैं।
पीड़ा हो तो उसका कारण भी होता है।

ऑफीलिया हैमलेट अथेलो लियर
किट स्मार्ट विलियम ब्लेक जॉन क्लेयर
वान गोग पिरांडेलो का हेनरी चतुर्थ

बराई डा नेर्वाल, एन्टोनिन मार्टी हैं—
ये सभी अन्धकार का मुकुट पहन हैं
यह ठीक भी है।

अपने आक्रमण के प्रति खुद जिम्मेदार
हमें उनकी परम्परा और अपनी मृत्यु मिली है।
ग्रीक सगमरमर, पश्चिम के इतिहास में टूटता,
श्वेत और श्वेततर होता जाता है।
यदि हम भी ऐसे ही श्वेत हो सकें—
प्राक सभ्यता के प्रकाश से खण्डित हो सकें—

विनाश में एक न्याय होता है
क्यूँकि शायद वही ठीक हो।
पागलों के लिए पागलखान बनाये जाते हैं
और मरीजों के लिए अस्पताल
युद्ध आक्रमण का शिल्प होता है
जिसका प्रतीक है घावों भरा ईसा का शरीर।
हम पूर्ण या सुन्दर या अच्छे क्यों हैं?
क्या बिलकुल टूट-फूट जाने के लिए? •

नग्न कविता • फिलिस वेब

बढ़ते हुए
हमारे घरों के बीच का
अंतर नापने को।
लगता है
मैं तुम्हारा स्वागत करूं।
तुम्हारा मुख चारों ओर से
मेरी अभ्यर्थना करता है।
जगह है।
और
यहाँ
और यहाँ भी और
यहाँ भी
और तुम्हारे मुख के
चारों ओर सब ओर।
आज रात
स्वच्छता। मेरे भातर
और कमरे में।
मैं घिरी हूँ
एक विचार से
कुछ दीवारों से।
यह घाव!
फिर तुमने अपना
निशान छोड़ दिया।

या हमने
छोड़ा
त्वचा चुपचाप
सिहरती रही।

यह ब्लाउज़
मेरे कमरे में
एक मेज़ है एक लैंप
एक मक्खी और
मारयाना मूर की दो किताबें।
मैंने अपना ब्लाउज़
नीचे डाल दिया है।

जब तुम नहीं आये थे
तब मैं तुम्हें अपने मन में
लिए थी। अच्छा मन है यह
जो पूर्णता को समग्र रूप में
ग्रहण करता है।

तुम मर जाओ।
मैं पालथी लगाये
बिस्तर पर बैठी रही।
मैंने कहा
आत्म-करुणा के लिए
जगह नहीं है।
मैं झूठ कहती।

सुबह की सुनहरी
रोशनी में
तुमने कपड़े पहिने।
मैंने अपना चेहरा
बालों से छिपा लिया।
जिस कमरे में तुम रहे
वह यहीं रहेगा।

तुमने मुझे स्पष्टता दी।
कितने ही उपहार
पहिनाये।
कविताएँ नग्न
सूरज की रोशनी में
धरती पर नाच रही हैं। •

हृदय में • थिल थिमेट

समाए इस घर को
घेरे हैं
एक महावृक्ष
बबामोर की गाँठों की तरह
मेरे हृदय को

पकड़े है
बगीचे में बिल्ली
जिसे मॉरिस देखता है

जिसकी नाक पर हमेशा
एक तितली होती है
कल्पना की फुड़िया की तरह
काल पद्मा वृक्ष के भीतर झूम रहे हैं
मॉरिस की नाक हिलती है
और वस्त्र कांपते हैं। ●

कवि • निल बिसेट

उसकी नीला कमीज़
घुटनों तक आती थी।
और ज्यादा गम मत करो
उसके पादरी ने कहा।

बच्ची
तुमने बहुत कुछ देख लिया।
अब और गुब्बारे नहीं हैं,
या है?

खड़िया रंगे चेहरे
पुराणों की कीमती मृत कथाओं पर रो रहे हैं
बच्चे! तुम पीले सूर्य में
वापस जा सकते हो
घास की कुल आठ पत्तियों ने
ही उत्तर दिया

चीनी मिट्टी के हाथ
सोने की अंगूठियां पहिनने में संकोच करते रहे
हरियाली की एक लहर
और यह विरत है
बच्चे चले गये हैं। ●

मृत मा का स्वप्न • के० वी० ह्ज

मैने सपना देखा—
मेरी माँ मेरे भीतर आ गई है और
अर्ध-चन्द्र की तरह मेरे सिर में बातें कर रही है,
मेरे बन्द ओठों के पीछे उसके बोलते ओठ
मेरी बाँहों के पीछे उसकी घूमती फिरती बाँहें
मेरे काँपते पैरों के पीछे उसके पर
मेरे शरीर में एक आत्मा उतर आई।

मेरे सपने जम आये ह और
मेरे आसमानों में झण्डों की तरह उड़ रहे हैं
नये नय सपन मुझे आ रहे हैं पता नहीं
उनका अत कहाँ होना है

पीढ़ियाँ मेरे भीतर खदबदा रही हैं
नए नए शिशु जन्म ले रहे हैं
आत्माए मेरी शुष्कता में कम्पित हो रही हैं,
मैं जो मौन और अन्धेरे का पिता हूँ—
ऐसा अन्धेरा जो जमकर ठोस नहीं होता
चुप बैठा हृदय म हो रहे इन अद्भुत आन्दोलनों
पर विचार ही करता रह सकता हूँ। •

पैगम्बर नही हो • क० पी० ह्ज

तुम पैगम्बर नहीं हो—
तुम ऐसे देश के एक आदमी ही हो
जहाँ के लोग भेड़े हैं
बेंची पर झुकी भूलों सी।

ये मेमन जिनकी खालें उतर चुकी हैं,
चुपचाप अपने जलाये जाने का इन्तज़ार कर रहे हैं।

उनके पात्र भेड़ों के उपहास व गौरव से भरपूर हैं
जो मृत्यु के वसंत की हरारत में
और भी तेजी से नाचने लगती है
लाल रंग के उस गलीचे पर
जो मन्दिर के वक्र तोरण से
उजलते सूरज तक बिछा है।

पर द्रष्टा ने वयप्रांत में बैठे
सूरज को देखा

बढ़ती हुई कालिमा जैसा
फूलते आसमान में
वह तुम्हारे नर्तन पर
स्तुतियाँ नहीं गा सका

भेड़लोलुप तुम
सांड से हिंस्र प्रिय
स्तूप पर गुर्राते
और ज्यादा कब्र खोदने से थककर
जब वह सांस लेने को रुका
तब चिता की आग में से
ज़िन्दगी की कामना प्रकट करता भेड़ को
पैगम्बर ने उत्तर देना भी उचित नहीं समझा।

तुम पैगम्बर नहीं
एक आदमी ही हो ऐसे देश के
जहाँ के लोग भेड़े हैं। सच्चा संत
तुम्हारी तरह जवान
नहीं चला सकता। वह
अन्धेरे आसमान में धुएं की एक लहर
दर्ज कर हो

अपने हथियार रख देगा
और मृत सूर्य के शव के समीप
खुद भी लेट जायेगा। ●

महादिवस • फ्रैंक ढियो

म्राज
पुरानी कविताएं नष्ट करने का
दिन है

नाश्ते से पहले ही उन्हें नष्ट कर दें

म्राठ
शरारती
महान् चित्रकार
दो म्रोरा के भी चिथड़े
टोकरी में
रद्दी हुए पड़े हैं।

म्रौर म्रब ये रकाबियां
बची हुई चाय म्रौर टोस्ट
जिन्हें
मैं फेंक सकता हूं
उन बनावटी चेहरों पर
जो मुझे चारों तरफ से
बांधे हैं। •

मैं और वे • रेमण्ड जे० म्र उर

बड़े बंगला वाले म्रौर बड़ी कारा वाले
लोग मुझे नहीं जानते—
मेरे प्रश्नों भरे बादलों के पार वे मुझे नही देख सकते;
शहर के ध लड़के भी मुझे नहा जानते
जो मैं   क पूट स हा तृप्त हो जाते हैं—
के दोस्त   । ग्र्यािरया भी करते हैं
पर मेरी ।   हानी
यह बड़े दा

नशे म ही मैं जीवित हो पाता हूँ
जब हम सब घुलकर एक हो जाते हैं—
'परदसी' बनकर मैं सुखी नहीं हो पाता
मैं रोमास का अभिनय भले ही करूं
पर यह भी उतना आसान नहीं है—
मैं लागों की आवाजें सुनता रहता हूँ
यद्यपि वे कहते कुछ भी नहीं हैं
मैं कमरे के मध्य को घूरता रहता हूँ— ●

लघु कविताएँ ● मार्टिना क्लिन्टन

बह जायगा
एसे दिन जसा कि आज है
लोहे के
गडर पुल पर लगे
कठोर
हो उठे हैं और कान्तिहीन
नगर वहीं है जहाँ मैं हूँ
पर अब ताले में बन्द।

● ● ●

आज रात मैं लड़की हूँ जवान
उठे हुए स्तन गिरा हुआ पेट
आज मैं रोएँदार बकरो की सवारी करूंगी
अंधेरी गुफाओं में माठ अंगूर खाऊंगी
मरे सपनों को कोइ नहीं जानता।

● ● ●

मैं लड़की हूँ नशीली आँखो वाली
तुम्हारे लिए मैं एक गाना गाऊंगी
जो बीच में श्वेत है
रेनायर मरा पिता, तुम्हारे लिए चित्र अंकित करेगा
मेरे स्वस्थ शिशुओं का। ●

कैरेबिया की कविताएँ

ए जे सिमूर	ब्रिटिश गायना के प्रमुख कवि, त्रियक-ओवर-मल के सम्पादक। एक एन्थॉलॉजी भी सम्पादित की। विन्डेयु विभाग म कार्य करते हैं।
फ्रैंक ए कोलीमोर	प्रमुख कवि, बिम' त्रमासिक के सम्पादक। चार संग्रह प्रकाशित।
डरेक वालकाट	कवि नाटककार। तीन संग्रह प्रकाशित। ट्रिनिडाड गार्जियन के स्टाफ में हैं।
समुएल सेलवॉ	कवि कथाकार। अंग्रेजी भाषा को एक नया मोड़ दिया है। लन्दन में रहते हैं। कई पुस्तकें प्रकाशित।
मार्टिन कार्टर	ब्रिटिश गायना के युवक कवि और आलोचक।
ट्राम कोम्बस	बारबेडोस' के नवीनता प्रेमी युवक कवि। दो संग्रह प्रकाशित।
एल्फ्रेड प्रगनेल	भावुक कवि

सूर्य सुडौल अग्नि है • ए जे सिमूर

सूर्य सुडौल अग्नि है अन्तरिक्ष में घूमती
श्वेत झरनों से पोषित
और पृथ्वी है शक्तिहीन सूर्य।

सूर्य आज मेरी हड्डियों में गहरा जा घुसा है।
सूर्य मेरे रक्त में है, मेरी त्वचा के नीचे रोशनी बह रही है
सूर्य शक्ति का ध्वज है जो धुंधलाते सितारे पर
बरस रहा है।

वृक्ष और मैं परस्पर भाई हैं। वे ऊँचे वृक्ष
जो खोखले आकाश में अपनी शाखाएँ उठाये
पत्तियों के छोटे-छोटे हाथ ऊपर से देखता तक
पहुँचा रहे हैं जो सूर्य का दूसरा नाम है
और कभी कभी मेरा भी। हम भाई हैं।

रोशनी की परत श्वेत शक्ति हवा में से गिरती आती है
—यहाँ की सब रोशनी ऊपर से नीचे ही फली है—
वह हरी पत्तियों से जादू छनती है और फूलों को छूकर
खुशबू से भर देती है।
यह सभ्यता
सूरज ने अपनी लौह किरणों के बल
नदी की कीचड़ में उत्पन्न की है।
सूर्य मेरे रक्त में है। •

विद्रोही • फ्रैंक ए कौलीमोर

विद्रोही सदा ही हुए हैं। परम्परा के
विरोधी कुछ शहीद हो जाते हैं
कुछ बच निकलते हैं। पथन व्यक्ति ही
परिवर्तन करने में समर्थ होते हैं।

नियमों का क्लेशप्रद पाकर अमीरा
यंचन तोड़ देता है, बीज धरती से बाहर
फूट पड़ता है। पगम्बर पादरी और राजा
सदा सीमाएं खींचते रहे और वे टूटती रहीं।
विद्रोही सदा अपने राज्य की योजना करता है
कभी आसमान में तो कभी धरती पर
सर्वोत्कृष्ट राज्य मणि की तरह उज्ज्वल।
फिर जब विद्रोहियों की बनाई सड़कें पक्की
हो जाती हैं और विद्रोह अधिकार में बदल जाता है।
लाल झण्डे, लाल-फीताशाही बन जाते हैं
तब फिर नये विद्रोही जन्म लेते हैं।
उनके लिए ईश्वर को धन्यवाद। वे सदा
होते ही रहेंगे।

अग्निमृत नगर • डेरेक वाल्कॉट

जब उस सस उपदेशक ने गिरजा-युत आकाश को छोड़कर
सब एकमात्र कर लिया तब मैं उसकी मज्जा से अग्निमृत
नगर की कहानी लिखने बैठा। आंसुओं में धुंधुआती मोमबत्ती
की आंख-सन्देह विश्वासों के प्रेम से कुछ ज्यादा ले मैंने यह कहा
दिन भर मैं बाहर ध्वस्त यथार्थों के बीच घूमता रहा,
सड़क पर अभी भी प्रवचकों-सी खड़ी दीवारों पर चकित होता
पक्षियों भरा आसमान गूंजता-सा बादल रुई के गट्ठर से
लुटेरों द्वारा फटे हुए और सफेद अग्नि के बावजूद

धुआं भरे आसमान से जहां ईसा खड़े थे, मैंने पूछा आदमी
क्यों रोता पीटता है अपनी काठ की दुनिया टूट जाने पर?

नगर में पत्त कागज थे और पहाड़ियां विश्वासों के समूह
जैसे बालक दिन भर घूमता रहा, हर हरी पत्ती उसके लिए एक सांस थी

और वह प्यार फिर उठने लगा जिसे मैंने मृत मान लिया था
मौत का आशीर्वाद आग का बपतिस्मा बेकर। •

सूर्य • सैमुअल सेल्वाँ

क्या हम कभी उष्ण परिवेश को पा सकेंगे ? सूर्य,
आकाश में रहकर तुम हमें आकाश के लाल लाल सपनों से
भिगाते हो, तुम जलते हो पर हम नहीं जलेंगे । कैसी
आसानी से तुम इन हरे हरे द्वीपों में लपटें फैलाते हो
किस उद्देश्य से तुम हो आसमान पर, हम धरती पर,
नहीं जान पाते । हम तुम्हें तिरछी नजरों से देखते हैं
गन्ने के खेतों में तुम्हारी जहर भरी मुट्ठी के नीचे मेहनत
करते तुम्हारी तपिश में पसीने से नहा नहा जाते, और
जो बुद्धिमान हैं वे पुराने सवाल पूछा करते हैं, वर्षा
के लिए आसमान निहारते खड़े रहते हैं । सूर्य

मेरी पीठ पीछे खीसें निपोरते मैंने तुम्हें वर्षों से
जून में झुका दिया घन जंगलों की झाड़ियों बीच
एक ओर दिन उगाने के वादे से धोखा देते हुए,
मेरा मौत के लिए मेरे ही बच्चों को फुसलाते हुए
कि उनका जीवन ही संकट में पड़ जाय । मेरी आँख में
आग की लपट, हवा में पानी रोशनी इन हरे द्वीपों पर
लहराती उत्तरी लोगों को इधर आकृष्ट करने को, यह जानते
कि धरती को उलटने कितनी चिड़चिड़ाहट से हम
पड़ोसियों से सीना तनाये रखने को कोमल शब्द कहते हैं
भले ही वस्तुओं की असारता उनके घुटने तोड़ तोड़ दे । ●

आवाजें • मार्टिन कार्टर

सारा आकाश इस हरे वृक्ष के पीछे मर रहा है
वर्षा में सूर्यास्त में पक्षियों के अभाव में ।
जल के विशाल कुण्ड सड़क पर यूँ पड़े हैं
मानो स्मृतियाँ वे समुद्र रेत में धोये जाते हों ।
सूर्य ने कभी जल्दी हार मान ली है

उस समय में जहाँ जब होती है वर्षा—
हवा के विशाल गमले में रखे ओ आग के फूल
आओ वापस आओ इस घर-संसार में।

सिन्दूरी पत्थर मृत्यु का रत्न है
जो समुद्र सूखने पर रेत में मिलता है
और प्रकाश की जिन्दगी कहीं और ठहरेगी
वर्षा और सूरज के पास अब ये अकेले हो।
उगने वाले ओ प्रथम पत्र और गिरने वाले अन्तिम फल
तुम्हारी जड़ें तुम्हारे हवा पाने से पहले पड़ गई थीं।
आसमान इसलिए फला क्योंकि आदमी लम्बा होने लगा
जल का संग्रह से जहाँ पत्थर गिरते और डूब जाते हैं।
और आकार की आत्मा में वह विलक्षण विलयन
एक भोंपे से जाना गया और शब्द में पाया गया
हवा के विशाल गमले में रखे ओ आग के फूल
आओ वापस आओ, इस घर-संसार में। ●

? ● ट्राम कोम्ब्स

एक छलिया मित्र
पीले पुआल के कम्बल पर
गुलाबी सफेद और काले
निष्कलंक बाण
आन्तरिक संगतियों से पूर्ण
काढ़ने आती है

सहानुभूति विरोध अनासक्ति
(?)
मज कुर्सी, जानवर और दोस्त,
मुद्रित विचार,
अन्तिम मन की सभी खुशियाँ हैं। ●

दोस्त को खत • एल्मे द ग्रेग्नेल

तुम और यौवन लौट आये थे
और एक अजनबी देश में
हम एक पहाड़ के
ऊँचे घासदार ढलानों पर
चढ़ रहे थे।
सहसा एक नुकीली कगार पर
दो ग्रीष्मगृह और स्पष्ट दृश्य।
अभ्यस्त व्यक्तिगत जीवन में
हम ठण्डी हवा को पीते रहे
(एक सुनहरे गोबर में खड़े खड़े)
और नीचे दूर तक फैली घाटियाँ।
क्या ही तुम कुछ कहने को मुड़े
सपना ओझल हो गया।

मेरे दोस्त,
तुम क्या कहना चाहते थे? •

न्यूज़ीलैण्ड की नौ कविताएँ

चार्ल्स ब्रश : जन्म १६०६। प्रमुख कवि एवं 'लैण्डफाल' त्रैमासिक के सम्पादक। न्यूज़ीलैण्ड के साहित्य को गति देने में अग्रणी। कई संग्रह प्रकाशित।

बस्तू हार्ट स्मिथ जन्म १६११। कवि और पत्रकार। आस्ट्रेलिया भी रहे। छह संग्रह प्रकाशित।

लौरी रिचर्ड्स नई पीढ़ी की कवियित्री। 'मेट' त्रैमासिक एवं लिटिल अनल ग्रुप से सम्बन्धित।

मौरिस डुग्गन प्रसिद्ध कवि एवं कथाकार। कई संग्रह प्रकाशित।

क्नेप मेक-कनो नई पीढ़ी के प्रतिभाशाली कवि। मेट ग्रुप से सम्बन्धित।

पीटर ब्लण्ड इस दशाब्दी के प्रमुख कवि।

हुबर्ट विथरफोर्ड प्रमुख कवि।

गोर्डन चलिस नई पीढ़ी के अग्रणी कवि।

रुथ डलास जन्म १६१६। सुप्रसिद्ध कवियित्री, कथाकार और पत्रकार। दो संग्रह प्रकाशित।



पहाड़ियों पर जलती हुई अग्नि शिखाएं ऐसी हैं
जैसे मशाल लिये तीर्थ-यात्रियों का कोई दल हो।
द्वार खुला छोड़ दो
अन्दर आ जाओ
रात ठंडा रही है,
दीप उजार ला। •

श्मशान गृह • लौरी रिचर्ड्स

मजबूत स्टील और कंक्रीट की सातवीं मंजिल पर
हिरोशिमा के रक्त-लथपथ बच्चों के साथ
उन्होंने उसे रिपिट कर
नागासाकी के धारदार स्टील से
उसके पार्श्व को बिद्ध कर दिया है।
उसकी श्याम माताओं की सिसकियों से गुम्फ दी है,
न जाने कितनी बार चिल्ला चिल्लाकर
लातें मार-मार कर
कहा है—तुम मुक्त हो तो मेरे बम को कितने
खुदा खत्म करते पड़ेंगे ?
उसके चेहरे पर उन्होंने मनुष्य का खून थूका है
जब पृथ्वी पर नर्क फटा और सारी शान्ति रोई
उन्होंने कहकहे लगाए।
वह एक बार लौट कर जन्म नहीं लगा। •

एक निवेदन उन सबसे • मौरिस डुग्गन

जहाँ मेरी कामना है निश्चय ही वहाँ मेरा प्रेम भी है।
जहाँ अत्यधिक प्रेम है वहाँ अत्यधिक कामना भी है।
जानता हूँ कि जहाँ प्रेम की मृत्यु होगी
वहाँ कामना की मृत्यु हो जाती है।
और प्रतीत होता है कि यहाँ प्रेम छटपटाता रहा है
हाय! वहाँ कामना उभर आती है।

किन्तु कुछ न न जाने किन
सरल माध्यमों से मेरे मन पर अधिकार कर
लिया है
वासना मर गई है,
प्रेम सदा के लिए प्रतिष्ठित हो गया है।

तुम्हें यह कैसे समझाऊँ ?
और यह भी कि,
अब मैं प्रेम अथवा वासना के लिए क्या करूँगा ? ●

गली की औरत ● कैनेथ मेक रेनी

अर्धी धूप की किरणों से ढक गया है
गली को आवृत करने वाला वस्त्र
छाया की रेखाओं और जालीदार त्रिकोणों
तथा सिंह आकृतियों से जैसे बुना गया हो।
अनग्गीव मकान के दर से
एक स्मृति धड़ाके से फूटती है
विस्मृति के समुद्र से
चमकते हुए स्टील की तरह एक छुरा
स्पंदन लाता है।

आज दस वर्ष पहले
एक रात वह चुपचाप खिसक आई थी
और एक रंगीन अनुरक्ति-पूर्ण भेंट
में बाँधे रहा
नक्षत्रों की परिक्रमा का दस्ता का
मेरा तप्त जिह्वा के समीप।

लेकिन अब वहाँ
एक छायाकृति सी
अँधेरे के स्तूप में अन्तर्धान हो गई है।
समय रुक भूल गया है,
जहाँ उसके वक्ष स्पन्दित थे अब कम्पन शान्त है।

केवल मेरी आँखें
समय के उस कुहासे को विद्ध कर देखती हैं
कि गुलबहार का एक छोटा सा पौधा
घास पर लहलहाता है
सूर्य ने फली चटका दी है
छाया की रेखाएँ और सिंह आकृतियाँ
सरक गई हैं।

वह जिसने मेरी मधु ऋतु को धन्य किया था
वह न तो मुड़ी और न विदा का संकेत किया
बस चली गई,
मृत्यु तक। •

एक कुत्ते की मौत • पीटर ज्रोड

श्वान मर गई है
श्वेत लिली पुष्प की तरह बालक उसे घेरे हैं।
किसी ने अत्यन्त त्वरा में
उसकी रक्त जिह्वा को सदा के लिए मौन कर दिया है।
घास घास जहाँ जिन्दगी बह रही थी
वहाँ अब मात्र फटे चिथड़े जमी बर्फ का ठण्डा ढेर है
जिस पर मेरी पुत्री के अनगढ़ आवेश युक्त हाथ हैं।
उसकी दृष्टि में बन्द नहीं हुआ है, कोई हानि नहीं हुई।
वह बार-बार समीप जाता है
उसके लिए मृत्यु की परम नीरवता का कोई अर्थ नहीं है।

सदा की भाँति वह उन्मुक्त घूम रहा है
शिशुओं सी हठ करता, अविश्वस्त खड़ी है
अस्वीकार है उसे यह कि उसके समस्त साहसिक कार्यों
का साक्षीदार,
प्राण होने पर ...समय नाश में उलझा पड़ा है
उसमें क

मात्र इतना ही
किन्तु वह न गई और न चिल्लाई
केवल सब जगह भाग भाग कर कह आई
यह जो नया उसने मुल्क जाना और सीखा।
यहाँ की स्त्रियाँ बनावटी सहानुभूति से पीड़ित हैं
दर्द उनके लिए उतना ही बकवास है
जितना कि डर या रुलाइयाँ।
लेकिन उनसे कहीं अधिक कामकाजी उनके दुनियादार पति
एक दिन की इच्छाओं के साथ
अनिवार्यतः बँधे
बसें पकड़ने को भागते हैं
उस लड़की को प्रतीत होता है कि इस सम्पूर्ण
व्यस्तता में
उसे नहीं पूछा गया है
और मोटी खिड़कियाँ लाकर वह लौट आई है।
वह फिर वृक्षों से घिरी जगह आ गई है
जहाँ अब कुछ भी शव नहीं है।
मात्र रात्रि का शव दफना दिया जायगा
और कल अवकाश होगा
कि जिसमें छोटी लड़की गुड़िया के साथ
कल का अपना कर्तव्य कर सके
और दुनिया को भुला दे। ●

कैक्टस • हुबर्ट क्रियरफोर्ड

यह नारंगिया पुष्प है,
अभावदर्शी श्याम और उत्तेजित वृन्त पर।
या धूल-धक्कड़ रेत और पत्थरों में
इतनी कोमल चमकीली मांसलता के लिए
यह भेदक है।
जिसने इस सजी सजाई भावुकपूर्ण सृष्टि रचना के लिए
कहा गया द्वन्द्व-युक्त प्रेम बना लिया है।

पुण्य और पाप की भ्रांतियों से अस्पृश्य
इसका जन्म महानाश के मानसिक अवशेषों में हुआ है
अपने उन्नय और विस्तार के लिए
छोटा सा वायु-मण्डल हूँढ़ा है
जिसके साथ न तो हमारी और न अन्य किसी की
कोई प्रतिद्वन्द्विता है।
लेकिन युगों-युगों के उपरान्त
जब हम इन छोटी-छोटी उपस्थितियों का स्वागत करते हैं
तो हमारी शिराओं में ताजगी दौड़ जाती है
और जिह्वा रस स्निग्ध हो जाती है। ●

समान रखे हुए ताप का मनुष्य
गोडन सेलिस

संसार किसी भी क्षण खण्ड-खण्ड होकर गिर सकता है
भाग्य है कि ऐसा नहीं होगा
क्योंकि अभी तक ऐसा नहीं हुआ है।
यह सत्य है कि दरारें दिखाई देती हैं
लेकिन ये दरारें नष्ट हुए समय का पूरा करने का उपक्रम हैं
जिससे जन मिल सके विस्तार कर सकें।

लेकिन मैं जो अब तक एकदम सीधा तना हुआ चलता था
गेहूँ की बाली की तरह झुक गया हूँ।
कैसे विश्वास करूँ कि मैं सत् सूँगा प्रचण्ड मध्याह्न
सूर्य का साक्षात्कार कर लूँगा
अपनी रेंगती हुई परछाइयाँ नहीं देखूँगा
अनुभव करूँगा कि अखण्डित हूँ

मैं अनेक प्रकार की धातुओं का बना हूँ
सूर्य के नीचे असन्तुलित उबड़-खाबड़ खड़ा हूँ
स्वीकार नहीं कर सकता कि कहीं एक बूँद आँसू
किसी धातु को नम बना दे और दूसरा कठोर हो जाय
मैं होने के लिए झुकता हूँ।

मेरा आत्मा भी समस्त ताप से धीरे-धीरे सुलगता है
एक दिन कदाचित् और भी अधिक मानवीय-संवेदना की
अग्नि से गरम हो
एक ही धातु में सब धातु मिल जाय
और सब में अधिक साफ़ खरा रह सकूँ
गिरने के लिए तत्पर। •

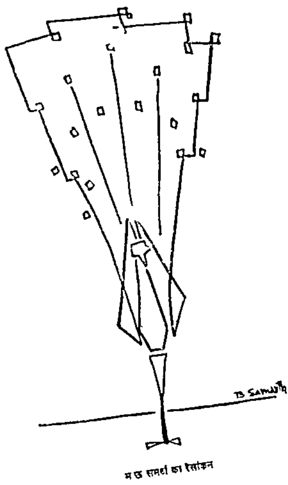
समुद्र पर बादल • रुथ डैलास

मैं विशालकाय मनुष्यों के बीच चलती फिरती हूँ
जिनके पैरों में चमड़े के जूते हैं, जिनके मुख मुस्काते हैं,
मुझे कहीं कोई भिक्षा का पात्र लिये नहीं मिलता,
सब के पास रहने को जगह है।

मेरे देश में
हर बच्चे को लिखना पढ़ना सिखाया जाता है
हर बच्चे के पास गरम कपड़े और जूते होते हैं
हर बच्चे को सुबह शाम खाना मिलता ही है
किसी को दुबला होने की इजाज़त नहीं होती
खटमल या जुएँ कहीं दिखाई नहीं देतीं,
उनका होना ही एक अजूबा है।

अरे! हम अमीरों की तरह रहते हैं
स्विच-स्पर्श पर संगीत बज उठता है,
मध्यरात्रि को भी रोशनी रहती है,
घरों में जल बस झरनों की तरह आता है—
गरम या ठंडा जैसा भी चाहें,
अपने शरीर के सुख के लिए,
मेरे देश में।
दुनियाई छोर के किनारे नई बनती त्वचा का
एक टुकड़ा।

[न्यूज़ीलैण्ड की कविताओं के अनुवादक : [illegible]]



म छ समर्दा का रेखांकन

नौ आस्ट्रेलियन कविताएँ

जूडिथ राइट जन्म १९१५। प्राय नितान्त बुद्धिमान काल की प्रमुख कवयित्री। चार संग्रह प्रकाशित। मास्टरपीस एन्थोलॉजी ऑफ ऑस्ट्रेलियन पोएट्री का सम्मान।

डोरोथी हीवेट जन्म १९२३। कवयित्री एवं कथाकार। अनेक पुरस्कार प्राप्त। अनेक संग्रह प्रकाशित।

जेम्स मैकाले जन्म १९१७। तस्मानिया विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी के प्राध्यापक। निरन्तर मासिक के सम्पादक। कई संग्रह प्रकाशित।

अम्स कार्टर नयी पीढ़ी के कवि। एक संग्रह प्रकाशित।

डोरोथी ऑक्टरलोनी नयी पीढ़ी की कवयित्री। एक संग्रह प्रकाशित।

ग्वेन हारवुड नयी कवयित्रियों में प्रमुख। शब्द और बिम्ब में निखार और चुस्ती।

डेविड मार्टिन प्रसिद्ध कवि एवं लेखक। कई संग्रह प्रकाशित।



प्रेमियों का दल • जूडिथ राइट

सारी दुनिया में अब हम मिलते और युग्म होते हैं।
हम भूले हुओं का दल
रातों को एक साथ हाथों में हाथ लेता है,
अपनी सचिन्त प्रसन्नता में चुपचाप
विस्मृत हो जाता है।
हम जिन्होंने अगणित वस्तुओं की चाह की
इस एक वस्तु के लिए बस एक ही के लिए
सब कुछ छोड़ छाड़ देते हैं।
जानते हैं कि सँकड़ी कब्र में सब
अकेले ही रह जायेंगे।

हमारे चारों ओर अब मृत्यु की सेनाएँ खड़ी हैं।
उनके कदम पास आते जा रहे हैं।
थरथराते हृदय पर अपने गर्म हाथों का ताना डाल दो
और कुछ देर मुझे और निर्भय रह लेने दो।
अँधेरे में ढूँढ कर मुझे अपने से बाँध लो,
क्योंकि नगाड़ों की काली भूमिकाएँ बजने लगी हैं
और हमारे चारों ओर सब प्रेमियों के चारों ओर,
मौत का घेरा जकड़ता आ रहा है। •

नाविक की वापसी • डोरोथी हीवेट

हाथों में सपने सजाये मेरा प्यार घर लौट आया है
आ मुर्गे सुन इस अद्भुत देश में मेरा प्यार लौट आया है।

धूप-सी आँख लिये वह द्वार से फटा पड़ता है
उसकी झोली में उसकी लाखों अनगिनत निधियाँ हैं

यह मोती की सीपी कूम से आई है, डार्विन से आई है कहानी
और यह प्रवाल यह मूँगा, और यह ह्वेल का जबड़ा

मेरा रसोई समुद्र की सुगन्ध से भर भर उठी है
मेरे प्यार का लाई हरी मछलियाँ उछलती फिर रही हैं

अरे डार्विन म ब्रूम तक अपनी निधियाँ फैलाते चलो
और इस छाट से कमरे को अपनी महिमा स भर दो

उसके सीन पर सुबह का सूरज जगमगा रहा है
मरा प्यार उत्तर-पश्चिम क भी उत्तर स यहाँ आया है

अब हम अपनी शय्या पर लेट कर प्यार में डूब जायेंगे
हम चुम्बना का बौछार म वर्षा की आवाज सुनत रहेंगे।

कविता • क्लेम क्रिस्तेसेन

पक्षी के गीत मेरे अन्तर को मोड़त हैं
तुम्हारी आवाज़ ! वहाँ काई शान्ति नहा है
सुबह की चमत्कार आँखा म,
न गम दुपहरी की धूप में, साँझ में
इन्थम पहाड़ियों के साथ।
सारिकाओं के गीतों का अनुकरण करता है एक
वग
रागनी में ध्वनि में फल-बागाना तक
अंगूर मठाओं से आच्छादित दीवारों तक
रिक्ता तक म प्रतिध्वनित होता है
जहाँ लाल पत्तियाँ गिरती हैं।
एक सम्रा पर गोधूलि वेला में
अचानक चमकता है तारों क साथ।

['कविता' के अनुवादक—गंगाप्रसाद विमल

प्रेमियों का दल • जूडिथ राइट

सारी दुनिया में जब हम मिलते और जुदा होते हैं।
हम भूले हुओं का दल
रातों को एक साथ हाथों में हाथ लेता है,
अपनी सक्रिय प्रसन्नता में चुपचाप
विस्मृत हो जाता है।
हम जिन्होंने अगणित वस्तुओं की चाह की,
इस एक वस्तु के लिए बस एक ही के लिए,
सब कुछ छोड़ छाड़ देते हैं।
जानते हैं कि सैकड़ों कब्र में सब
अकेले ही रह जायेंगे।

हमारे चारों ओर अब मृत्यु की सेनाएँ खड़ी हैं।
उनके कदम पास आते जा रहे हैं।
थरथराते हृदय पर अपने गर्म छाया का बाना डाल दो
और कुछ देर मुझे और निर्भय रह लेने दो।
अंधेरे में ढूंढ कर मुझे अपने से बांध लो,
क्योंकि नगाड़ों की काली भूमिकाएँ बजने लगी हैं
और हमारे चारों ओर, सब प्रेमियों के चारों ओर,
मौत का घेरा जकड़ता आ रहा है। ●

नाविक की वापसी • डोरोथी डौरेट

हाथों में सपने सजाये मेरा प्यार घर लौट आया है
आ मुर्गे, सुन इस अद्भुत देश में मेरा प्यार लौट आया है।

धूप-सी आँख लिये वह द्वार में खड़ा हंसता है
उसकी झोली में उसकी सारी अनगिनत निधियाँ हैं

यह मोती की सीपी रूम से आई है, डार्विन से आई है कहानी
और यह मसाला यह मूंगा, और यह हंस का बच्चा

मेरा स्वाद समुद्र की सुगन्ध से भर भर उठी है
मेरे प्यार का भाई हुये मछलियाँ उछलती फिर रही हैं

मेरे शाविन से बूम तक अपनी निधियाँ फैलाते बसो
और इस छोटे से कमरे को अपनी महिमा से भर दो

उसके आने पर सुबह का सूरज जगमगा रहा है
मेरा प्यार उत्तर-पश्चिम के भी उत्तर से यहाँ आया है

अब हम अपनी शय्या पर लेट कर प्यार में डूब जायेंगे
हम धुम्मका की बौछार में वर्षा की आवाज़ सुनते रहें। •

कविता • क्लेम क्रिस्तेसेन

पक्षी के गीत मेरे अन्दर का आहत हू
तुम्हारी आवाज़ ! यहाँ कोई शान्ति नहीं है
सुबह की चमकदार आँखों में,
न गर्म दुपहरी की धूप में, साँझ में
इन्धन पहाड़ियों के साथ।
सारिकाओं के गीतों का अनुकरण करता है एक वेग
रागनी में, ध्वनि में फल-बागानों तक
मजूर लताओं से आच्छादित दीवारों तक
रिक्त तक में प्रतिध्वनित होता है
जहाँ लाल पत्तियाँ गिरती हैं।
एक लम्बा पेड़ गोधूलि बेला में
अचानक चमकता है तारों के साथ। •

['कविता' के अनुवादक—[illegible] विमल

प्रेमियों का दल • जूडिथ राइट

सारी दुनिया में अब हम मिलते और जुदा होते हैं।
हम भूल हुओं का दल
रात्रा को एक साथ हाथों में हाथ लेता है,
अपनी सच्चिन्त प्रसन्नता में चुपचाप
विस्मृत हो जाता है।
हम जिन्होंने अगणित वस्तुओं की चाह की,
इस एक वस्तु के लिए बस एक ही के लिए
सब कुछ छोड़ छाड़ देते हैं।
जानते हैं कि सकठी कब्र में सब
अकेले ही रह जायेंगे।

हमारे चारों ओर अब मृत्यु की सेनाएँ खड़ी हैं।
उनके कदम पास आते जा रहे हैं।
थरथराते हृदय पर अपने गर्म हाथों का साया डाल दो
और कुछ देर मुझे और निर्भय रह लेने दो।
अंधेरे में डूब कर मुझे अपने से बाँध लो,
क्योंकि नगाड़ों की काली भूमिकाएं बजने लगी हैं
और हमारे चारों ओर सब प्रेमियों के चारों ओर,
मौत का घेरा जकड़ता आ रहा है। •

नाविक की वापसी • डोरोथी हीवट

हाथों में सपने सजाये मेरा प्यार घर लौट आया है
ओ मुर्गे सुन इस अद्भुत देश में मेरा प्यार लौट आया है।

धूप-सी आँखें लिये वह द्वार से फन्दा पकड़ता है
उसकी झोली में उसकी ताजी अनगिनत निधियाँ हैं

यह मोती की सीपी ब्रूम से आई है डार्विन से आई है कहानी
और यह प्रवाल यह मूँगा, और यह ह्वेल का जबड़ा

मेरा स्नायु समुद्र की गुञ्जन से भर भर उठी है
मेरे प्यार का लाई हुई मछलियाँ उछलती फिर रही हैं

मेरे दामिन से ब्रूम तक अपनी निधियाँ फैलाते चलो
और इस छोर से कमर का अपना महिमा में भर दो

उसके सान पर सुबह का सूरज जगमगा रहा है
मेरा प्यार उत्तर-पश्चिम के भी उत्तर से यहाँ आता है

अब हम अपनी शय्या पर लेट कर प्यार में डूब जायेंगे
हम चुम्बनों की बौछार में वर्षा की आवाज सुनते रहेंगे। ●

कविता • क्लेम क्रिस्तेसेन

पत्तों के गीत मेरे मन्दर को भाइन है
तुम्हारी आवाज़! वहाँ कोई शान्ति नहीं है
सुबह की चमकदार पाँखों में,
म गन दुपहरी की धूप में, साँझ में
इस्पम पगडियों के साथ।
सारिकाओं के गीतों का अनुसरण करता है एक
वन
रात्री में ध्वनि में फल-बागानों तक
मजूर लतायों से आच्छादित दीवारों तक
रिक्तता तक में प्रतिध्वनित होता है
जहाँ लाल पत्तियाँ गिरती हैं।
एक लम्बा पद गोधूलि बेला में
अचानक चमकता है तारों के साथ। ●

[कविता के अनुवादक—[illegible] सिंह

दुर्घटना

आर० ए० सिम्पसन

किसानों ने एक धमाका सुना
और रोशनी लाई गई देखने के लिए
वह क़यामत जो शीशे और मांस ने की
सामान टूट कर बिखर गया था सड़क पर
किसी भी ज़िन्दगी की तरह। फौलाद
हो गया एक मलबा और व्यर्थ बिखरा रक्त।

और शाम हुई वे दोनों आदमी मर गये।
मैं खड़ा था ठण्डा और परेशान सड़क के
किनारे
जिसे मैंने अपशकुनी पाया टकराई
हुई दो मोटरगाड़ियों से घण्टे भर के लिए
बन्द
गाड़ियाँ ऊपर को मुँह किये जिन्हें कोई
क्रेन ही हटा सकता था।
मैंने सुना भीड़ को प्रकट करते
मोड़ों गलियों और पहाड़ियों में विश्वास—
घात को,
और तब यह कहते कि क्या करेंगे वे
जब कि अर्धरात्रि दूर हो जाने की
शिकायत करने लगी
और दया सोख रही थी एक भयकर
दाग की तरह।
मलबा हटा लिया गया होशियारी और
घृणा के साथ। ●

मृत्यु-लेख • जेम्स कार्वेट

मरी पहुँच म
किन्तु स्पश न करे तुम
इस गूथन हुए इन म
बन्दी हो
यद्यपि किसी न्याय न तुम्हें पकड़ा नहा है।

यद्यपि कोई नाम नहा मिलता
मैं अपना अकड़ का परिचिन्ह करता हूं
तुम्हें ढाक म पकड़ने के लिए
और तुम्हार भविष्य का।

तुम नहीं जानाग मरा नाम
क्योंकि यह अज्ञात है।
तुम नहीं पहचानाग
मेरा चहरा
मरी आकृति युद्ध म मलिन है।
मेरी छिपी हड्डियाँ तक जहरानी हैं।

तुम नहीं समझते हो
मेरे अजीब शब्द ?
मेरा दुष्काल और मरा युद्ध ?

तब सुनो,
मुझमें कुछ कुशलता थी
अपने उद्देश्य को स्पष्ट करने का।
मुझे समझाने दो।

मैंने जापान म एक मगरूप बनाया
पुराने सहारा क मगरूप के समान।
वह एक रेगिस्तान था
सघन शून्य म ... बढ़ी हुई रास्त म बनाया।

जहाँ अब तुम्हारा गेहूँ
खूब फलता है।

मैंने हवा के लिफ़ाफ़े को भर दिया
भयंकर सन्देशों से,
तटस्थ आकाश को
मैंने छुरा भोंक दिया
जिसमें से तुम्हारे मार्ग-दर्शक
जीवन को ले जाते हैं शनिग्रह पर।

लहराते हुए समुद्रों के नीचे
जहाँ नमक के खेत हैं
मैंने एक शार्क को जन्म दिया
अपने तेज़, गर्म दाँतों से काट लेने को
दूर दूर के नगर।

मैंने गलियों को खून से जोत दिया।
मैंने समुद्र को आँसुओं से धो दिया।
मैंने इससे भी अधिक
और बहुत कुछ किया।

लेकिन तुम, जिसका हाथ मैंने पकड़ा है
तुम, जो मेरे स्वप्न बनोगे
अपनी इस पकड़ की विजय को शक्ल देने के लिए,
तुम नहीं समझ सकते।

तुम मेरी प्रताकृति को देखते हो
और देखते रह जाते हो।
तुम मेरी अजीब भाषा को छूते हो।
मेरे दुष्काल, और मर युद्ध को
और कोई उत्तर नहीं पाते।

तब चुपचाप मेरा स्वागत करो
यह बहुत है कि हम मिलें

जहाँ हर आग शीतल करते हैं
तुम्हारे निभय शहर के
नर्म पाँवों को।

क्योंकि मैं आग चलता हूँ
तुम्हारे राजसी अश्वारोहियों के।

मैं समझता हूँ। मैं समझता हूँ। •

विदा गीत • डोरोथी ऑक्टरलोनी

सब वैसा ही था जैसा—जब मैं भीतर गई
तसवीरें दाहिनी ओर ऊपर, कुर्सियाँ अपने स्थान पर
फूल सधे सजे हुए मेण्टल-पीस पर,
मैंने ओढ़ ली यह आवाज़, पहचान लिया चेहरा।
बाहर वही आकाश उसी धरती को मज़बूती से पकड़े था,
हरे पत्ते चमक रहे थे, कुत्ते भौंकते थे बच्चे खेल रहे थे
लेकिन अचानक भीतर हवा ठण्डी हो गई
साँझ जाते हुए रुक गई, मैं भयभीत हो गई।

कुर्सियाँ नाचने लगीं तसवीरें चीख उठीं,
सड़ते हुए फूल बीमार गंध देने लगे,
सफेद दीवारें आपस में टकरा उठीं शान्ति गुर्राने लगी,
फर्श मेरे पाँवों पर उड़ गया अँधेरे में।

दरवाज़ा धक्के से बन्द हो जाता है, हवा मेरे बालों में है
आकाश चला गया है और उसके स्थान पर खड़ा
है भयानक अजनबी,
सूरज को सोखता हुआ

मैं मुड़ती हूँ और ठण्डे, अंधे हाथों से
रास्ता टटोलती हूँ।
लेकिन जहाँ मैं मुड़ती हूँ, वह मेरे सामने

खड़ा है अब भी,
समय को समाप्त करता हुआ, स्पेस पर सवार
क़यामत आ गई है मेरी लड़की अजन्मी है
और मेरे छोटे लड़के का चेहरा शून्य और आकृति-हीन।

पहचान का कोई बिन्दु नहीं केवल घास—
वृक्ष भी मुझे धोखा देता है अन्त में—
छोड़ गये हाथ घास की कठोरता को देखा।
और उसके नीचे का ठण्डी ज़मीन को अपने मित्र की तरह। •

पानी के किनारे • ग्वेन हारवुड

चिकनी, सर्प की तरह ऊपर को उठती
एक समुद्री चिड़िया भाग जाती है इस चट्टान से
मेरे फेंके हुए टुकड़ों को छोड़कर।

और फिर बैठ जाती है झरने और हवा के उफान पर।
जंगली समुद्री घास मेरी छाया में लाल होकर रंगती है।

चिड़िया की उड़ान मेरे कंधों में दुखती है।
उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा, वह परिवर्तित
हो नहीं सकती उसे कोई पीड़ा हो नहीं सकती।

मिट्टी से उत्पन्न आकृतियाँ मिट्टी से ही
पोषित होती हैं, शरीर रहकर निष्कपट।
सत्य क्या है? हृदय पूछता है और बताया
जाता है
तुम भोगोगे और संसार में तथ्य को देखोगे
जब तक कि पीड़ा की प्रतिछाया भी उतनी ही
सत्य नहीं हो जाती, जितनी स्वयं पीड़ा

तुम्हारी सारी शक्ति बिखर जायगी
निराशा में कण-कण होकर,

तुम संसार में खोजोगे; जो कुछ तुम खोज
वह बुराई और अच्छाई के बीच टकराएगा
छान लिए जाने या घृणा किए जाने के लिए।
तुम प्रकृति के सारे सौन्दर्य को समाप्त पाओगे
यद्यपि तब भी वह शून्य की तरह
आलोकित होगी।
'सत्य क्या है?' पूछता है शून्य
जबकि वह चिड़िया बस ही बैठी है
यहाँ और वहाँ
और मैं अपने दुःख के सम्मुख हुए
साम्राज्य की ओर मुड़ता हूँ। ●

मरते हुऐ ससार पर पुनर्विचार

डेविड रोप्स

दिन की रोशनी धीमी हो रही है फिर भी अभी रात
प्रतीक्षा कर रही है दूर तक रुकी हुई साँस की तरह
चुपचाप दे दिए जाने वाले दिन के लिए।

मेरी खिड़की के बाहर कपास के पत्ते
शान्ति को फाड़ कर अलग कर रहे हैं
सारे संसार का घटते हुए पानी की आवाज़ से
लेकिन एक लम्बी तेज़ आवाज़ फाड़ देती है
हम ठहरे हुए दिन को ठीक बीच से
और मूक आवाज़ों को मकानों के शिखर तक पहुँचा कर
चली जाती है अचानक नर्क में गिरी हुई किसी आत्मा की तरह।

रुक नहीं है। बहुत कुछ प्रतिबिंबित रहा है।
हम बहुत जानते हैं और देखते नहीं हैं उन चीज़ों को
जो हम हैं चाहते- जिन्हें हम नहीं जानते।
आह लेकिन इस अवाक अर्धरात्रि में शय्या पर आओ
जब व्यक्तित्व के तमाम नकली चेहरे अलग हो गए हैं।

देखो, आँखें—जो मनुष्यों की आँखें नहीं हैं
लेकिन यन्त्र की चमकदार धुरी की तरह घूमती हैं
हाथ जो एक जीवित हाथ को थाम नहीं सकते
फिर भी सावधान रहते हैं हिसाब लगाने के लिए
फौलाद के हृदय गर्मी में तपे हुए
प्यार के लिए उपयुक्त गर्मी से बहुत अधिक
मस्तिष्क बनाए हुए प्रतिबन्धित, मनुष्य विनिर्मित।

आओ प्रिय! चुपचाप जब तक कि संसार
प्रतीक्षा कर रहा है अपने ही दैत्य की
हमारे अविश्वासों के लबादों को फाड़ देने के लिए।
अविश्वास—हमारे अपने ही होने में, हम जो कुछ हो गये हैं उसमें
क्योंकि मैंने सुना है स्वप्न में घायल हृदय को चीखते
और देखा है, भूरे भौंकते मनुष्यों को गली में मार्च करते
अपने थाल से घृणा की मदिरा बाँटते
और अपने बच्चों को पार्टी और देश को देते
किसी तरह की मानवीय शिक्षा के लिए नहीं।

मेरी खिड़की से बाहर ऐपास के पत्ते
शान्ति की आकाशों में अलग फड़क रहे हैं।
चुपचाप आओ प्रिय! क्योंकि रात आ रही है
जब कोई काम नहीं करेगा
और ऊँची पहाड़ियों के ऊपर
शान्त चट्टानों के शिखर हैं
जो निर्बन्ध सितारों के लिए शान्ति का गीत गाते हैं
जहाँ हम बैठ सकते हैं और अपना निरन्तर प्रार्थनाओं में
मूर्त कर सकते हैं स्वर्ग के सबसे मूल्यवान वरदान शान्ति को
संसार अन्तहीन है आमीन! ●

निर्बन्ध विचार • डेविड मार्टिन

कठिन है विचार को निर्बन्ध करना, क्योंकि यह भटक हो जायगा
तमाम सम्भावनाओं के अजान प्रदेश में, जहाँ पर भ्रमणकारी
शायद ही जानता है अपना उद्देश्य और कभी नहीं बताता
कि उसने एक समुद्र देखा यहाँ, जहाँ पर्वत होने चाहिए।
अनजाने में जो भयंकर है वह यह कि यहाँ क्षितिज कम है
कोई अन्त नहीं है किसी भी दिशा में, इधर या उस तरफ।

तब झूठा यात्री घोषित करता है पार तक पहुँच जाना।
यह, वह लिखता है है वह जमीन जो गत वर्ष हमने खोजी थी।
हमने नदियों को ढूँढा; मिट्टी ऊपर है स्रोत जमे हुए हैं—
हम लौटे हैं उस सड़क से। बहुत से सच्चे साथियों को खोकर,
मैंने एक विश्वासघाती को उड़ा दिया जो कहता था कि वह पसन्द करेगा
वहीं अजनदियों के बीच रहना बजाय उन आशाओं और मुसीबतों को
झेलने के
जो हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं घर पर।'

लेकिन अज्ञात, ज्ञान के अन्तःकरण पर सन्देह करता है।
एक नया अभियान निश्चित होता है नये नेता चुने जाते हैं,
फिर सीमा पार की जाती है और वह झूठ पकड़ लिया जाता है।
ज्यों ज्यों वे जाते हैं अविजित की ओर प्रत्येक एक कंकरी गिराता है
उस मंत्र पर, जहाँ विश्वासघाती पहरे पर खड़ा है।
पर्वत अविकृत होते हैं मिट्टी अच्छी पाई जाती है, नदियाँ
भरी हुई हैं मछलियों से। स्रोत जमते नहीं हैं और
उस प्रदेश को उस व्यक्ति के नाम से पुकारा जाता है
जिसने पीछे मुड़ने से इन्कार कर दिया।

यह वह व्यक्ति है, जो भूल जाता है स्वतन्त्रता के भय के कारण को
जो केवल याद रखता है कि कोई आयत्त हमसे नहीं हुआ है—
सुरक्षा का पूर्णता का निश्चितता का; केवल भाग्य है—
चैन से बैठ सकने की नितान्त असमर्थता का। •

['दुस्तम्भा' से 'निर्बन्ध विचार' शब्द के अनु वाद मांडिस]

देखो आँखें—जो मनुष्यों की आँखें नहीं हैं
लेकिन चक्र की चमकदार धुरी की तरह घूमती हैं
हाथ जो एक जीवित हाथ को थाम नहीं सकते
फिर भी सावधान रहते हैं हिसाब लगाने के लिए,
फौलाद के हृदय गर्मी में तपे हुए
प्यार के लिए उपयुक्त गर्मी से बहुत अधिक
मस्तिष्क बनाये हुए प्रतिबंधित, मनुष्य विनिर्मित।

आओ प्रिय! चुपचाप जब तक कि संसार
प्रतीक्षा कर रहा है अपने ही दर्द की
हमारे अविश्वासों के लबादों को फाड़ देने के लिए।
अविश्वास—हमारे अपने ही होने में हम जो कुछ हो गये हैं उसमें
क्योंकि मैंने सुना है स्वप्न में घायल हृदय को चीखते
और देखा है बूरे भौंकते मनुष्यों को गली में मार्च करते
अपने आप से घृणा की मदिरा बाँटते
और अपने बच्चों को पार्टी और देश को देते
किसी तरह की मानवीय शिक्षा के लिए नहीं।

मेरी खिड़की से बाहर कपास के पत्ते
शान्ति की आवाज़ से अलग फड़क रहे हैं।
चुपचाप आओ प्रिय! क्योंकि रात आ रही है
जब कोई काम नहीं करेगा
और ऊँची पहाड़ियों के ऊपर
शान्त चट्टानों के शिखर हैं
जो निर्बंध सितारों के लिए शान्ति का गीत गाते हैं
जहाँ हम बैठ सकते हैं और अपनी निरंतर प्रार्थनाओं में
मूर्त कर सकते हैं स्वर्ग के सबसे मूल्यवान वरदान शान्ति को
संसार अन्तहीन है आमीन! ●

निर्बन्ध विचार • डेविड मार्टिन

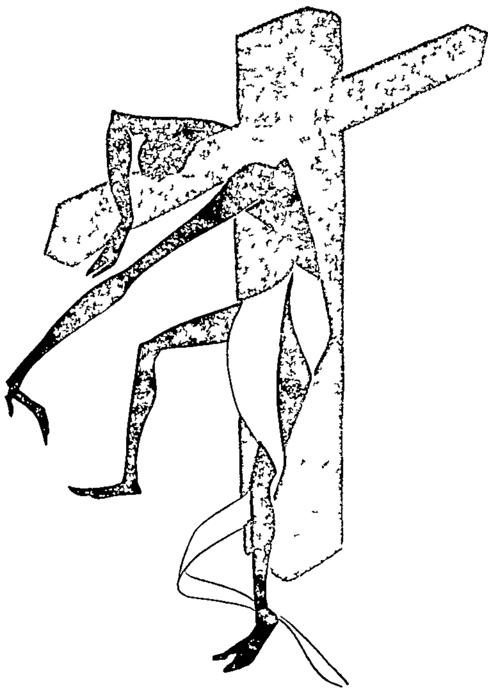
कठिन है विचार को निर्बंध करना क्योंकि यह प्रविष्ट हो जायगा
तमाम सम्भावनाओं के अजान प्रदेश में, जहाँ पर भ्रमणकारी
शायद ही जानता है अपना उद्देश्य और कभी नहीं बताता
कि उसने एक समुद्र देखा यहाँ, जहाँ पर्वत होने चाहिए।
अनजाने में जो भयंकर है वह यह कि यहाँ क्षितिज कम है
कोई अन्त नहीं है किसी भी दिशा में, इधर या उस तरफ।

तब झूठा यात्री घोषित करता है पार तक पहुँच जाना।
'यह' वह लिखता है 'है वह जमीन जो गत वर्ष हमने खोजी थी।
हमने नदियों को ढूँढा, मिट्टी ऊसर है स्रोत जमे हुए हैं—
हम लौटे हैं उस सड़क से। बहुत से अच्छे साथियों को खोकर,
मैंने एक विश्वासघाती को उड़ा दिया जो कहता था कि वह पसन्द करेगा
वहीं अजनदियों के बीच रहना बजाय उन आशाओं और मुसीबतों को
झेलने के
जो हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं घर पर।'

लेकिन अज्ञात, ज्ञान के अन्तःकरण पर संशय करता है।
एक नया अभियान निश्चित होता है नये नेता चुने जाते हैं,
फिर सीमा पार की जाती है और वह झूठ पकड़ लिया जाता है।
ज्यों ज्यों वे जाते हैं अविजित की ओर प्रत्येक एक कंकरी गिराता है
उस कब्र पर जहाँ विश्वासघाती पहरे पर खड़ा है।
पर्वत अधिकृत होते हैं मिट्टी अच्छी पाई जाती है नदियाँ
भरी हुई हैं मछलियों से। स्रोत जमते नहीं हैं, और
उस प्रदेश को उस व्यक्ति के नाम से पुकारा जाता है
जिसने पीछे मुड़ने से इन्कार कर दिया।

यह वह व्यक्ति है जो भूल जाता है स्वतन्त्रता के भय के कारण को,
जो केवल याद रखता है कि कोई आक्रमण हमसे नहीं हुआ है—
सुरक्षा का पूर्णता का निश्चितता का; केवल याद है—
चैन से बैठ सकने की नितान्त असमर्थता का। •

['दुघटना' से 'निर्बन्ध विचार' डेक के अनु० शान मार्टिन]



अफ्रीकी कविताएं

आठ दक्षिण अफ्रीकी कविताएँ
यूगाण्डा की तीन कविताएँ
नाइजीरिया की चार कविताएँ
मैडागास्कर की एक कविता
घाना की एक कविता
कोंगो की एक कविता
सनीगल की तीन कविताएँ



दक्षिण अफ्रीका

उईस क्रीग — जन्म १९१०। पेङ्गुइन की 'एन्थॉलॉजी ऑफ़ अफ्रीकन पोइट्री' के एक सम्पादक।

जेक कोप — जन्म १९१३। कवि कहानीकार पत्रकार। केपटाउन से प्रकाशित मासिक 'कण्ट्रास्ट' के सम्पादक रहे। उपरोक्त एन्थॉलॉजी के सम्पादकों में एक।

सी एम वान डन हीवर — (१९ २–१९५७) पुराने कवियों में प्रमुख।

गाई बटलर — जन्म १९१८। रोड्स विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक। कई संग्रह प्रकाशित।

इन्ग्रिड जान्कर — जन्म १९३३। नयी पीढ़ी की अत्यन्त तेजस्वी कवयित्री। एपार्थेड के विरोधियों में अग्रणी।

राय मकनाब — जन्म १९२३। लन्दन स्थित दूतावास में कल्चरल अन्चा। कई संग्रह प्रकाशित। दक्षिणी अफ्रीकी कविता की एक एन्थॉलॉजी सम्पादित की है।

रूथ मिलर — जन्म १९१९। एक संग्रह प्रकाशित।

आनिया वान विक — जन्म १९१३। प्रखर कवि। दो संग्रह प्रकाशित।

यूगाण्डा

कॉलिन राय — यूगाण्डा के सफल कवि। लोरका का अनुवाद किया है।

जोसफ ओ० मुटिगा मकरेरे विश्वविद्यालय में पढ़ रहे हैं। कई प्रखर कविताएँ लिखीं।

अस्वट ओ० ओंगारो वकीलों का। फिर अध्ययन। तजस्वी कवि।

नाइजीरिया

अइग होगो प० नाइजीरिया में सेंट एण्ड्रूज कॉलिज, ओयो में अंग्रेजी के प्राध्यापक।

क्रिस ओकिग्बो नये कवियों में अग्रणी। रजत नियागा द्वारा सम्पादित 'ट्रांज़ीशन' में सहायक।

वोल सोयिनका कवि व नाटककार। रचनाओं में गहरी व्यथा और व्यंग्य।

घाना

क्वेसी ब्रू घाना की नवचेतना के प्रमुख कवि।

सेनीगल

डेविड डायप सेनीगल के प्रमुख कवि। कई रचनाओं का अंग्रेज़ी में अनुवाद।



काले गिरिशृंग काली हवा • उइस क्रीग

काले गिरि शृंगों के ऊपर काली खाड़ी के पार
स्याह रात में काली हवा बहती है।
दैत्याकार चट्टानों की ओर श्वेत दाँत खाए सागर
किचकिचाता
झपटता है
आज भी बढ़ता और लौट जाता है।

मध्य निशा। तारा नहीं एक भी। अंधकार।
एक निर्जन सड़क खुलती है
बन्द समृद्ध घरों के पार्श्व में। और आसमान में
गरजती

समुन्दर पर चिल्लाती काली अंध हवा से आहत
मनुष्य अपने ही मस्तिष्क के मरुथल में
घिसटता है।

हृदय की कठोर शिला पर मथर जल की तरह
प्रवहमान
प्रेम विच्छिन्न तम विषाद और रुग्ण नैराश्य
केवल काली हवा बिछलता है—
वर्गों विश्वासों और महाद्वीपों पर
समुद्रों और जलयानों पर
जब कि अचानक सड़क की बगल से
अंधेरा चीरता एक प्रकाश उछलता है
और दूर दूर विचरता मस्तिष्क
घाटी के ऊपर इस ठण्डी सड़क पर लौट आता है
जहाँ आँखों में आग फुहार शीत पौधों के
झपट्टों-सी लगती और झिल्ली की चमत्कार आवाज़
गरजती हवा में खो जाती है।

किसी जर्जर कनस्तर से आग फूटती है
गिरती है फिर उछलती है।
वहीं अपयने मकान में आग

फटे कोट में प्रावृत्त एक काला पुरुष
अपने हाथ सेंकता नजर आता है।
चौकोन्नार सनसनाती हवा में
अभिवान्न फकता है। आवाज लौट आती है
और वह हँसता है श्वेत दाँतों की चमक
और चौड़ी काली हँसी।
यह अग्नि जिह्वा पुच्छल-तारे सी जलती है—
स्याह रात में अधूम ज्वाला।
यह निर्जन उजाड़
अब लोगों से भर गये हैं
और तुम्हारे प्रकाश में—
मैं चलता हूँ। ●

यदि तुम लौट आओ • नैक कोप

यदि तुम लौट आओ
एकाकी आँखों से निकले, लौट आओ
धुँआरे दिसम्बर में
और बिखरे आसमान के मखमली मोम से
चुने गये मद हीरक रूप विचित्र
सम्मोहक नक्षत्रों को यदि
एक एक कर ढुलका दो,
यदि सूर्य को जलते आईने की तरह उठाय
आ जाओ तो मैं क्या कहूँगा ?

यदि तुम पुनः बालक हो जाओ
लम्बे क्षीण-गात बालक
धवल कुमुद फूलों की तरह हिमानी त्वचा
मेगनेशियम धातु-सा तुम्हारा शरीर आग भरा
यदि तुम गरजते सागर बन

पहाड़ी पर सजे सायरन यन्त्र और लघु तोपों की
गणना बन्द कर दो—तब भी मैं क्या कहूँगा ?

यदि गिरे हुए शिलाखण्ड पिघल जाय
और सरकते जहाजों की तिरछी चट्टानों पर
कोई सागर सोता न रहे
अतलान्तिक निश्वासों-सा रिक्त हो जाये
गिरजाघर स्वप्नों और प्रार्थनाओं से शून्य
और तुम कुमारियों के रहस्यों पर चकित होने
पास आओ
और रात के साये में नहरें जंगली बकरियाँ
गीली आँख उठाये दीख पड़ें,
यदि तुम्हारा हृदय फिर से स्पन्दित हो—
यह किसी फूल का आभास सिन्दूरी और नीलाभ
शब्दों को इन्द्र की अनुभावे
शारदीय सरिता पर जमी बर्फ से टकराने लगा
को पहचाने और तुम
वायु कुसुम—जड़हीन पुष्पों को
गंध सिंचे घास पौधों में खोजने आओ
तो मैं क्या कहूँगा ?

रत के लहरीले टीले
शोकाकुल हो चीखते हैं मेरे पदचिन्हों पर
यदि मैं उन्नत लजालु बरसा मेघों की तरह
नृत्य करूं
तो क्या मैं अपने में जनम-पुञ्जों को नहीं
                    बाँध सकूँगा ?
पाषाणी गुफाओं का रगिस्तान—चार फूलों का
ऊसर।
यदि तुम फिर कभी काँस की घड़ी से
समय देखोगे
पखुड़ियों पर मद्य और धान में रक्त होगा

शायद तुम सान्ध्य-अनन्त में हृदय की भयावह
            लालिमा फैला दोगे;
शब्दों के कारण ही तो मैं मौन हूँ
क्योंकि कहीं दूर मेरे ही शब्दों के
बीज उगा रहे हैं। •

आहत ज़ुलू सरदार • सी एम वान डेन हीवर

हरित भूमि पर ताम्र वर्णांकित तुम्हारा देह,
घास की चमकती बालियाँ सुबह की ओस
ढुलकाती हैं यहाँ,
जहाँ तुम निश्चय हो—अपनी अन्तिम नींद।
दूधिया परों का तुम्हारा वसन काँप रहा है,
मानो अभी तक युद्धरत हो।
जब कि तुम्हारे पार्श्व में एक खूनी रेले ने
धूलि को सोख लिया है।
भाले के आक्रामक फन पर
तुम्हारा हाथ निर्जीव पड़ा है टेढ़ा और भूरा हाथ।

धुँधली गुफाओं में राजा तुम्हारी प्रतीक्षा करेगा
उसका हाथ आँखों पर छाया करने के लिए उठेगा, और वे
देखेंगी दूर दूर तक नीलाई में
जिधर तुम गये थे—युद्ध में।
वह धमधमाते कदमों और खिसकती ढाल की प्रतीक्षा
करेगा। प्रतीक्षा करेगा नृत्य रत टाँगों पर
श्वेत चमकती बैल-पूँछों की।
भयावह जंगली टाँग।
पहाड़ी ऊँचाइयाँ तुम्हें पुकारेंगी,
उजली रात में आग के समीप बैठ
वह जुलू-लड़की अकेली तुम्हारी प्रतीक्षा करेगी
और उसकी आँखें उगते हुए दिन को घूरेंगी।
पहाड़ियों के साथ चमकता सूर्य

चरवाहा को जगा देगा
उनके गीत सफ़ेद पहाड़ियों में कोहरे के साथ
बन जायेंगे। और फिर से
सभी जीएंगे हमने
जब कि तुम नहा होगे।
और जब बहादुर लड़ाके लौट आयेंगे
सब पहाड़ियाँ गगनाते मार्गों
चटचटाती धर्म डाला और सूय का भार अभिमुख
झलकते नुकीले भाला से
जीवित हो जायेंगा।
तुम साय रहो, अपनी गहरी नींद में सोये रहो
तुम्हारे पंख धूप और पानी म
छितरा गय हैं
शरार जम साय तवे-सा अब नहा रहा
और तुम?
घास का उगती बालियाँ अब भी गिरेंगा
पशु रभायगे, और जीवन पुकारगा
परन्तु तुम?
जहाँ तुम सोय हो नींद घूमती रहेगी। ●

मैं ● गाई वटलर

मन्न शिशिर प्रकाश में चूमता वन।
दूर, कोहरे के रामा से ढका मू गिया चट्टाना के पार
उद्व लित, भारा सम्य उद्वग् समु" के पंजे।
धुआ उगलत विनाहित नगर यहाँ सूर्य का
समग्र आलोक पहल बिखरता है निष्कपट, धुनी किरणे
आँखा और चहरे पर झुक आती हैं
मेरे शीतल सुने हाथा को चूमती हैं।

मैं अपनी पीड़ा को स्वीकारता हूँ क्योंकि
मैं अपूर्ण हूँ, स्वत को तौल नहीं सकता,

बना नहीं सकता, न संयाजित कर सकता हूँ।
आयतन नहीं मुझमें भाड़ की शिला-सी हढ़ता नहीं,
एक स्पंदित उत्प्रेरक व्यक्तित्व का अभाव है
मेरे भीतर।

ओह यह परिक्रमित धरित्री और मानव हृदय
मेरे लिए अभी तक आवृत हैं अपरिचित हैं,
तुम्हें पाने के लिए
विनमित हो, मुक्त-इन्द्रियों से अभिमुख
स्वप्नों को ढककर शून्य के समस्त नगरों से
बाहर निकल, निसृत हुआ हूँ।

मैं बालक की भाँति जिज्ञासु बन अथवा
क्षति पहुँचाने वाले प्रणयी के अनुरूप घूमता रहूँगा।
मेरे उन्मुक्त प्रवाहों पर
सूरज सुख में या दुख में
आश्चर्य, क्रोध या चुम्बनों में ज्योति दे। ●

मैं नहीं चाहता • इन्ग्रिड जोन्कर

मैं नहीं चाहता और अधिक मिलने वाले
न चाय पर न कॉफी पर, विशेषत ब्रान्डी के प्यालों पर
बिलकुल ही नहीं।

सुनना नहीं चाहता कि किस कदर वे
हवाई पत्रों की प्रतीक्षा करते हैं
मैं यह भी सुनना नहीं चाहता कि वे आँखों की
कुहासों में जाग्रत लेटे हैं
जब कि अन्य क्षितिज-से आरम्भ होकर सुख-नींद
सोये हैं।
और मुझे क्या करना है उनकी खोने पीड़ाओं को
जानकर

कि प्रभुत्व गर्भाशय हीन हैं तो प्रभुत्व को 'लुकेमिया
हो गया
कि यह बालक बिना बाजे गाजों के आया और वह
बूढ़ा जिसे लोग भूल गये हैं बहरा है।
हरे चकत्ता म मृत्यु आरोहण की भाँति
व लोग जो समुद्र तट के पास रहते हैं जैसे कि
सहारा म
मुर्दा चेहरों स ईश्वर की तरह जीवित होते हैं।
मैं केवल स्वत हा भ्रमण करना चाहता हूँ
अपने एकान्त क्षणों के साथ,
हाथ को छड़ी की तरह
जिसम विश्वास कर सकूँ कि
मैं अभी भी विचित्र हूँ। ●

यूरोप और अफ्रीका • रॉय मेकनाब

यूरोप प्राचीन मल्लाह था
अभय समुद्रा से आश्वस्त
एशिया की भाँति ही अफ्रीका को भ्रष्ट करता रहा।
दो अमरीकी और सभी इण्डाज
एक पत्नी स सहवास करते रहे हैं पर
उसस कभी विवाह नहीं करते।

अफ्रीका एक शान्त नीग्रो युवती
पूर्ण तरासे अगा म मिला
केप के निकट टखने पकड़ने के हेतु
समुद्र के लाड़-प्यारा से उस प्रलोभित किया गया।

यूरोप उसका प्रमी था किन्तु सूर्य के नीचे प्रम का
अभाव था।
ऊपर हवा म एक बादल उठा
मिलावटी सन्धियाँ आरम्भ हुई थीं
समुद्र किनारे छिन्न क्रॉस लगाता है

बन रावाक उसकी घातक बाग़डे
और हम मल्लाह के किसी पुराने गुनाह के
पतन-स्थान भूत से आक्रान्त हैं।
पुराने यूरोप ने उस चहरे की तलाश की
जिस बचपन में महा- प ने उसे लिया था।
उसने विश्वास और रानि रिवाजों को माजन
का उम्माद की
जस अगा पर जन्म के चिह्न साज जाते हैं।

उसने त्वचा के नीचे कभी नहीं देखा
न हटकर आत्मा को शापना चाहा।
कभी न जाना कि अनल तल में
कहीं अमरीका के हृदय का स्पन्दन है।
नक्काशी चिकलना अमरीका—या अमरीका
जिसके लक्षण ही गलत थे
अब मन्ना † सहित स्पिनावजी नगर
महानुभूति न गीता न भीग हैं। ●

भटकाव • रूथ मिलर

वह दिन याद करो जब सागर लाल हो गया था
लहरों की लालिमा जस सूरज था
लहरें— स्वर्ग भाग —तुरन्त गिर पड़ीं
हम दवत रह एक श्वेत टीन से
और चकित- कि परिवर्तित तत्व इतना बदल सकता है
गहरा-लाल चक्र घनित लोहित किन्तु तब वह इस बार
बिल्ली की आँखों की तरह हरा हमेशा की तरह हरा।
लहरों की तरता हुई उत्तजना से
एक बूँद में असम्भव पाने गुलाब फिर खिल उठते हैं
एक में, दूर रक्तिम धब्बा में।

† इज़राईल की चालीस वर्ष रेगिस्तान में रहने पर ईश्वर द्वारा दिया गया भोजन।

तट म दूध धारा लहरा पर हमने
घुले अतिरिक्त घुले हवा सहश कए देखे
विराट समुद्र ने उठाया, हम लिया गोद में हाथों म
और हम खींचा।
हम बहुत गहरे लिया भगने के बाद अगला पार
बहुत हरा—विशद—एक कदम और
अपशकुनी ज्वार हमस दूर मर गया।
हमसे दूर—चमकदार दिन भी मरा
अलग बिल्कुल एक दूसरे से अलग, अजीब सागर को हमन
छोड़ा अपने ही अन्दर से। ●

मृत • तानिश्रा धान ज़िल

कभी कभी मृत देखने से मुझे आघात पहुँचता है
यद्यपि कई है जो जीवन से बचे हैं
अपने को रिक्तता स आवृत्त किय हुए। आश्चर्य होता है—
क्या वे इतने कम परे हैं और परे रहने म ही
वे एक रास्ते बाँध दत हैं जावन।
केवल कुछ—फलात्मक निर्णयों से तक से जानते हैं जीवन खालना
कैम पवित्र चिह्नों स अब भी गुम रखा जा सकता है।
अभिन्नों को हाथों म बन्द कर देना, जब तक वह धोखा न दे
कई जिन्होंने कुछ नहीं किया नहा दुराग्रह को दिया
अपितु पाया अलग बन्धन आ पर्वतों को जानता था।
उस दिन पीनी वर्जीनिया खूब खिली
पत्थू पाइन का पत्तियाँ जमीन म धसी
यहाँ हत्यारा क लिए पर्वत म कोई भूमि नहीं
बधन क लिए कोई जगह नहीं
फिर भी संसार आनन्दमय है। ●

['भटकाव' और 'मृत' के अनुवादक : गंगाप्रसाद विमल अन्य द० अफ्रीकी कविताएं डॉ० श्याम परमार द्वारा अनूदित]

अफ्रीका • कोलिन रॉय

स्याह हो तुम सुबह की आग भागी धरती को जलाकर
भूमध्यरेखिक धूप बनाने वाली उज्ज्वलता के साथ मे—

स्याह हो तुम तेज वाली मूसलाधार वर्षा में
प्रकाश का स्तम्भ सा गाड़ते हुए उस मस्तक सामने—
स्याह हो तुम चाँदनी में अकेले वृक्ष के नाच
मादल की लय पर नाचते हुए यौवन के नाच में—

स्याह हो ओ अफ्रीका तुम स्याह हो—यहाँ
जहाँ दर्जन भर अनाम माताओं के स्तन
सूखती है नाल नग्न—यहाँ
जहाँ समय की तरह यातना
अपना ही पीछा करती हुई घूमती है फाँसी है—

स्याह हो तुम ओ स्याह हो
तुम्हारी गति लय और तुम्हारा खून—सब स्याह है
एकाकार आत्म में मनहूस नींद में डूबे
या भयावह दौड़ते तूफानी पलायन में
—कहाँ से? कहाँ को?—अपनी गहनतम असंगतता में—

स्याह है कमर स्याह हैं आँखें
स्याह है बन्दर की खाल और खाल ओढ़े,
भालों और मशालों के साथ आदिम रस्म रिवाज की
अनाम रूप-मुद्राएँ—

स्याह है दिन और स्याह है रात
जहाँ पर अजनबी चलते हैं अकेले पगडंडी पर
ओठों पर रस्सी के कलाबाजों-सी मुसकानें सजा कर—

मैं भी हूँ स्याह ओ अफ्रीका
स्याह हूँ तुम से भी अधिक—तुमसे मैं जानता हूँ
तुम नहीं जानते हो इस तथ्य को
और मैं डरता हूँ तुम्हारी यातना से। •

अफ्रीक रात को भोगो • जोजफ जी मुटिगा

अब रात है अभी, अंधेरी
आकाश में बत्ती रोशनी कोई नन्ही नभ में
तुम पग बढ़ाओ सामने से अंधेरे को ठेलते।
तुम डर रहे हो देखते हो हर तरफ परछाइयाँ भागते
हर मोड़ पर मासूम आवाज़ें डराती हैं तुम्हें।
लो आ गया चीता—या कोई खूंख्वार डाकू?
एकाकी तुम साहसी बन बढ़ रहे हो किन्तु एकाकी नहीं हो
भनभनाते कीट कोलाहल मचाते खग तुम्हें हतप्रभ किये रहते
रूप की गोलाइयाँ आनन्द से भरतीं तुम्हारा दृष्टि-पथ
बातास है मादक तुम्हें शीतल बनाता है,
तुम देखते हो, पर कुछ नहीं पाकर ठगे से चकित रहते हो
तुमको न देखा था किसी ने सिर्फ देखा स्तन पिलाते
किसी मादा जानवर ने।
तुम अकेले बढ़ चलते हो उधर चीते और कर चलते बने
शत्रु को भी हिरण पीठें घूमता है शान्त-वन में
उधर स्पन्दन से धरा में छिपे मेंढक टरटराते हैं।
देखता तुमको न कोई और न तुम किसी को देखते हो अकेले ही हो
अपनी संगिनी के साथ हो फिर तुम कहीं हो तुम्हें क्या लग रहा है?
निजी दुनिया में अकेले—क्या तुम क्या नहीं कर सकते?
क्या रहें ऐसे समाजों में जो स्वयं को यातना देता है
सोच कर, तुम कर रहे हो क्या और कैसे कर रहे हो?
आओ अब अंधेरे में चलें और अपनी मुक्ति पायें।

अब उजाला है गगन में बड़ी उज्ज्वल धाम है;
तम चल रहे सब ओर हैं सुख-शान्तिमय परछाइयाँ,
तम अकेले आत्मचिन्तनरत पवन कितना शान्त भी मधुर है?
लोग लापरवाह से घूमते फिरते चले जाते;
हवा है शान्त इतने मधुरतम ये कभी क्या थे क्रूर?
वायु है ताज़ी मगर फिर भी नींद में डूबी हुई।

भोगन दो तुम स्वयं को संक्रमण का काल
साँझ के पक्षी मन्थर गा रहे हैं
मधुरतम संगीत सनातन है अब तो सभी अदृश्य
और लघु कीटाणुओं के शोरगुल की तान, जो अब गा रहे हैं
मेढकों के अमगत स्वर में मिलाकर स्वर
निजी नन्हे से जगत में कहीं पर छिपकर,
भोगन दो स्वयं को सुख, उधर हानि रहित चीत
सड़क पर करते परदे उस ओर मासूम से खरगोश
लॉनों पर कुतरते घास नोचते हैं सब निडर होकर।
क्या करो तुम ? लिपट एकाकी बड़े जामा।
या संगिनी हो साथ जिसकी कमर पर हो हाथ
या फिर बढ़कर चुम्बन करो इस चाँदनी-से मधुर चुम्बन
और रातों को मधुर ताज़ी सुगन्ध रातों का—
भाग डालो जब कि सारे लोग स्मशान धरा में बाग
बैठे ऊँघते हैं धू धुआँती आग के नज़दीक।
मित्र अफ़्रीका यही है, जहाँ वर्षा या कि रातों का
भय है केवल खतरा इसलिए तुम रात में निकलो
मुक्त कर दो स्वयं को इन निकट दमघोंटू हवाओं से
गाँव से निकलो कि आधी रात का लो चूम
चौकसी बनाये रखे तुमको झींगुरों-चमगादड़ों की जाति
तारे और जुगनू स्वयं रोशन राह कर दें तुम्हारी। ●

प्रत्युत्तर ● अल्बर्ट वो ओंगारो

ऊपर वहाँ स्वयं सर्वशक्तिमान,
एक वृक्ष पर
पीड़ा और प्यार से परिपूर्ण
हमको मुक्ति देते।
यहूदी—वे प्रश्न पूछते हैं ?
पहले अपनी ही रक्षा करो।
यूरोपीय—वे हमको दिखाते हैं गम्भीर मुखमण्डल

भगवान् खुद हमारे लिए यातनाएँ सहता है ।
कहा जाता है यह सभी हमदर्दी में ।
वे फकीरों—वे मन में खिलखिलाते हैं
जब तुम पूछते हो पानी के लिए
कितना स्वाभाविक है यह हँसी-मजाक,
मुसलमान—वे मुस्कुराते हैं
बस एक और पैगम्बर ।
हिन्दू—वे चकित होते हैं
मगर वे चिन्ता नहीं करते ।
कम्युनिस्ट—वे कहते हैं
उसका कोई अस्तित्व नहीं ।

सब कुछ हमारा है
पाप दरिद्रता पुण्य और सम्पत्ति ।
पूजक—वे आराधन करते हैं
पत्थर नद-नदी और पेड़ों का
सिर्फ जीव हैं ।
क्या ये प्रकट नहीं करते हैं
समानता का कोई तत्व
पाप के सिवाय
जिसके लिए तुम वहाँ लटके रहते हो ।
फिर मर जाते हो और वे
सभी कहा करते हैं
चलो हम कोई पाप करें ।
वे पाप करते हैं, करते चले जाते हैं ।
और तभी तेज़ी से कोई आवाज़ आती है,
जो सुनायी नहीं देती फिर भी आ जाती है
मैं हूँ तेरी पुण्य भावना और
मैं कहती हूँ कि तुमने किया है पाप
अपने भगवान के विरुद्ध ।
आज्ञा पालन के लिए
वे सभी घुटनों के बल झुक जाते हैं,

हे भगवान, मेरा पाप क्षम्य है
मेरा पाप मानवोचित था हे भगवान।'
और फिर मन में
'नहीं मैं तो मौत के समय पश्चाताप कर लूँगा
क्योंकि मुझे पुनः पाप करना है।'
इस तरह जीवन को जीवित रखा जाता है।
उधर कोई मरता है,
इधर कोई जन्मता है। ■

[युगांडा की कविताएं राजीव सक्सेना द्वारा अनूदित]

रीति-हिंसा • मइग हीगो

कोई जानवर जीवित न रहेगा
नदियाँ सूख जायेंगी
गोलाकार मुद्राएँ टूट जायेंगी
और सम्मुख आयेंगे गिद्ध बाढ़े ~ ~ ।
पवित्र वसन्त तीव्र कामनाओं से रक्त दूषित है ।

हमारे द्वारा पैदा 'बीज-पौधा' चट्टानों पर परिपक्व,
छोटी पत्तियाँ पीड़ा में चरित
काले वक्षों से आवृत कुमारी देवियाँ—यहाँ लाल भट्ठियों में,
प्रज्वलित अलावों में, भूने मोठे शिकार खोजती हुई
मैं शमन करने वाले उनके 'वूडू' • नृत्य सुनता हूँ
और उनके पिघलते हुए प्रसन्न करते हुए चालि में तनाव को
व पवित्रस्थल के पुंसत्वहीन भक्तों को दुःख चिह्न दिखाने
आये हैं । •

मूक बहनों का गीत • क्रिस ओकिग्बो

हम छोटे सुन्दर हैं
हम छोटे सुन्दर हैं
द्वारों से बाहर
एक रिक्त प्राकृतिक दृश्य में

बिना स्मृति हम यत्न करती हैं
हम में से हर एक
अपने ही देश की मिट्टी के पात्र हैं
परन्तु अग्राह्य धून के नहीं ।

• 'वूडू'—नीग्रो तथा अन्य अफ्रीकी जातियों का एक रस्म नृत्य ।

यहाँ केवल नमक-भू है
पाली रेत-तरंगों पर चमकती हैं स्मृतियाँ
हम वहन करता है
हमारे संसार में प्रवाहित
हमारे संसार में जो समफल गीत गया
यह गीत हमारा राजहंस गीत है
यह गीत हमारी साँसों का स्वैच्छिक प्रतीक है।
तुम्हारा कोई गीत राजहंस गीत नहीं
हर साँस को अपनी ध्वनि रहने दो।
यह गीत हमारा राजहंस गीत है ।

यह गीत हमारे संवेगों का धुप है
तुम्हारा मौन रात्रि हवा में फैल गया
इस गंध में बिखरने दो गाताखोरों के सुरील गीत
यह गीत हमारा राजहंस गीत है ।

हर गीत तुम्हारी उत्तेजना का मोह है
परछाई छायाएँ जैसे लम्बी अंगुलीनुमा
हवाएँ तुम्हारे मूत्रों से ठाढ रही हैं ... ...
यह गीत—नमसाडल का संगीत है। ●
[नाइजीरिया की एक कविता, रूपान्तर विमल कुमार अग्रवाल]

टेलीफोन वार्ता ● वोल सोयिनका

किराया तो लग रहा था संगत और स्थिति
निरर्थक थी। मालकिन सौगंध खा रहा था कि वह रहता है
उस घाट से अलग। कुछ और नहीं रह गया था
केवल अपना राज़ कहना था। 'मैडम', मैंने बताया,
'मैं सहन नहीं कर सकता कि यात्रा बरबाद'' हाँ—मैं हूँ एक अफ्रीकी।'
एक मौन। भद्रता की दबाव से बनी हुई शिष्टता का
मौन संचारण। और वह स्वर जब आया तो
लिपस्टिक का पन चढ़ा सोने से मढ़े हुए लम्बे से
सिगरेट होल्डर के पाइप से सुसज्जित। मैं पकड़ गया बुरी तरह

'कितने काले हैं ?   मैंने गलत नहीं सुना था   'आप हलके रंग के हैं
या हैं बहुत काले ? बटन बी। बटन ए। सडी हुई बदबूदार
किसी सार्वजनिक टेलीफ़ोन-घर की साँसें।
लाल बूथ। लाल पिलर बॉक्स लाल-लाल दो मंजिली
बसों की कोननार पर स्निग्ध पिच्च। वह सब था यथार्थ!
झप कर अशिष्ट खामोशी में आत्म-समर्पण कर
अवाक् मैं विवश था फिर बात को स्पष्ट पूछने के लिए।
और दबी ता वह शब्दों पर ज़ोर कुछ और ही बढ़ा रही थी—

'क्या आप काले हैं? या बहुत हलके रंग के ?' रहस्य प्रकट हो गया।
आपका मतलब है—रंग शुद्ध चाकलेटी या दूधिया चाकलेटी है ?'
उसकी स्वीकृति रोग-संक्रामक थी जो अपने प्रकाश से कुचलकर
रख गयी निर्वैयक्तिकता को। शीघ्र ही स्वर का सचरण सम्भल गया।
मैंने कहा 'पश्चिमी अफ्रीकी सीपिया'—और फिर उसे यह था" म
ख्याल आया हो, 'मेरे पासपोर्ट में दर्ज है। कल्पना की उड़ान के लिए
एक खामोशी उस समय तक जब तक ईमानदारी ने उसका स्वर
टेलीफोन के माउथपीस पर झनझनाया 'यह क्या होता है ?' और
मान भी लिया 'मैं नहीं जानती यह क्या होता है ?' 'ब्रूनेटे की तरह।

यह तो काला ही होता है क्यों, क्या नहीं ? नहीं, बिल्कुल भी नहीं
चहरे से मैं ब्रूनेट हूँ मगर मैडम आप मेरे बाकी
शरीर को भी देखें। मेरे हाथ की हथेली मेरे पैर के तलें
सुनहरे भूरे रंग के हैं। और बेवकूफ़ी से मैडम मेरे बैठे रहने के कारण
मेरा पृष्ठ भाग बहुत काला है। एक क्षण रुक तो मैडम, मैंने अपने कान पर
उसके रिसीवर की तूफानी गर्जना सुनकर यूं कहा
मैडम मैंने विनय की क्या आप स्वयं नहीं देखना चाहेंगी मुझको ?
[राजीव सक्सेना द्वारा अनूदित]

रेत तट पर एक रात • गेयरिब्रल आरारा

सागर से आती है दौड़ती हुई हवा
सर्प सर्पों की तरह पटकती हैं फन

रेत और पुनर्मुद्रित फुत्कार उत्थान में
मालड्यूरा के पाँव धो रही है रेत पर कड़ा दबाव देता हुई,
आँख कड़ी रखे हुए केवल हृदय देख सकते हैं
वे चीखते हुए प्रार्थित हैं
मालड्यूरा की प्रार्थना में, छोटे घरों के पीछे से बाहर आ रहे
हैं वे
उच्चजीवन के प्रति आस्था, अवरुद्ध शक्ति से
और बार राशनियाँ चर्चित करता हूँ जाड़ों को बाँहों में बाँह
लिये, घुटन शब्द पीछे छोड़ते हुए
और आग के छात्रिक ताम्बा की तरह मौन भाव करते हुए।

और नष्ट हैं मृत रेत पर
मैं अपने घुटने जीवित रेत पर महसूस करता हूँ
पर दौड़ती हुई हवा उगते हुए शब्दों को मार देता है। ●
[गंगाप्रसाद विमल द्वारा अनूदित]

मैडागास्कर की एक कविता

हमारी प्रेयसि • ज्याँ—जोजेफ रिबयरिवेलो

वह
  कि जिसके नयन निद्रा के अनूठे प्रिज़्म
जिसके अधर स्वप्न गरिमापूर्ण
जिसके पाँव सागर पर टिके हैं सुदृढ़
जिसके दीप्त हाथों में सुशोभित
सीपियाँ उज्ज्वल नमक के खण्ड

वह
  रखेगी उन्हें कुहरे भरी इन खाड़ियों के किनारे पर
बेच देगी अभी नंगे नाविकों के हाथ
जिनकी उस समय तक कट गयी है ज़बान
जब तक वर्षा नहीं आती

वह
  तभी फिर से प्रकट होगी
और हम तब देख पायेंगे
केश उसके पवन में फैले हुए बिखरे हुए
मानो समुद्री घास के तिनके
और शायद मिलें हमको नमक के निःस्वाद कण। •

घाना की एक कविता

याचना • क्वेसी ब्र

तेरे मन्दिर में पूजा के लिए आज हम आये हैं—
हम धरती के पुत्र ।
मर्ग गोपालक ले आये हैं वापस
घर अपनी गौओं को अद्भुत सुरक्षित,
भौंहों से वर्षा के जल को पोंछ
खड़े हुए खामोश बाँसुरी सम्भाले ,
चिड़ियाँ अण्डे सेती हैं अपने कोटर में
अनगाये स्वर से करती हैं इंतजार फिर नयी भोर का।
छायाओं की नाव तटों पर जमी हुई है
अपने पोतों को सागर की छाती से चिपकाये;
घर लौटे हैं सब किसान श्रम की दुनिया से
बैठे हैं अलाव के पास,
कहानी कहते हैं प्राचीन युगों की ।

हम धरती के पुत्रों की प्रार्थना भला अब
तेरे मंदिर में अनसुनी रहेगी क्योंकर
जब कि हमारे हृदय गीत से भरे हुए हैं
और काँपते हैं कातर से अधर हमारे ?
होड़ करते हैं नन्हे जुगनू तारों से
इस अलाव की आँच सूर्य से,
इस तुम्ब का जल सशक्त वाल्टा धारा से ।

फिर भी हम आये हैं जर्जर दरिद्रता को ओढ़े
अपने स्वामी के द्वार याचना करने । ●

कांगो की एक कविता

जन्त्र-मन्त्र के साथ नाचो

जी० एफ० टा० चिकाया ऊ तामसी

यहाँ तो आओ
हमारे तृण बड़े स्वादिष्ट
आओ यहाँ पशु पक्षियो

भंगिमाएँ और ये आघात रोगी हाथ के
कभी बल खाते कभी हर धारणा का गर्भ करते चाक
यह—कौन है ?—जो हमारे भाग्य का निर्माण करता है
यहाँ तो आओ जरा पशु-पक्षियो
यहाँ हर भोर आती है नज़ाकत से
खून भरी है नकाबें
इन्द्रधनुषी स्वप्न हैं—गर्दनों में फाँसियों की रस्सियाँ

यहाँ तो आओ
हमारे तृण बड़े स्वादिष्ट
अपना आगमन पहला
बना चकमक पत्थरों का तीक्ष्णतर विस्फोट
जैसा है अकेलापन
स्थापन करती हमारा भी नवीन प्रकार का। ●

तुम्हारी उपस्थिति • डेविड डायाप

तुम्हारी उपस्थिति में मैंने फिर से अन्वेषित किया अपना नाम
अपना नाम—अब तक जो छिपा था जुदाई के दर्द में
फिर से अन्वेषित की आँखें जिन पर अब नहीं है तापों का परदा
तुम्हारी हँसी ने परछाइयों को बेधती हुई मशालों-सा
उद्घाटित किया है अफ्रीका को, जल में जमे हुए हिम-खण्डों को चीर कर

दस वर्ष प्रियतमे दस वर्ष
हर दिन मरीचिका और टूटे हुए विचारों का
हर रात शराब के जामों से वचन
और वे यन्त्रणाएँ लगती हैं जिनमें आज कल के कटु स्वाद से
रूपान्तरित करती हैं जो प्रेम को सीमाहीन नदी में
तुम्हारी उपस्थिति में मैंने फिर से अन्वेषित किया है अपनी रक्त-स्मृति को
और हँसी के मुक्ता हार गले में चमकते हैं हमारे दिनों के
नित नये उल्लासों से प्रभावान। ●

नीलिमाएँ • लियोपोल्ड सेदार सेंघोर

वसन्त ने बुहार दिये हैं मेरी हिम-जड़ित नदियों के अंचल
नवोदित पौधा सिहर उठता है कोमल त्वचा पर पहले प्रेम-स्पर्शों से।
लेकिन देखो तो जुलाई के मध्य में ध्रुव-देशीय शीत-सा हूँ अन्धा!
मेरे पंख नील निलय की सीमा से टकराते हैं टूटते हैं
मेरी कटुता के बहरे लौह-द्वारों को चीर नहीं पाती है कोई किरण।

गाऊँ मैं कौनसा निशान? कौनसा परन मैं बजाऊँ?
भाला को फेंक कर कैसे मैं पा सकूँगा अपने आराध्य को?
सुदूर दक्षिण के राजसी यौवन! तुम आओगे बहुत देर से मनहूस सितम्बर में।
तुम्हारी अनुराग का विकम्पित उल्लास किस पुस्तक में पाऊँगा?
किस पुस्तक के पृष्ठ पर किन असाध्य अधरों पर

पाऊंगा तुम्हारे मदमाते प्यार का मधुर स्वाद ?
तिलांजलि दे रहा है अधीर प्रलाप मुझको ! आह पत्तों की वर्षा की

मनहूस टप-टप

खेले जाओ ए ड्यूक अपनी निर्जनता का खेल यह तब तक
सो न जाऊं जब तक मैं सिसकते-बिलखते ! ●

मुझको बताओ ऐ अफ्रीका

डेविड द्याप

अफ्रीका, मुझको बताओ ऐ अफ्रीका
यह जो कमर है झुकी हुई— यह क्या तुम्हीं हो ?
यह जो सदा है कमर-तोड़ अपमानों का बोझ—यह क्या तुम्हीं हो ?
यह जो पीठ पर दीखते हैं घावों के लाल चिह्न
और कहते हैं— हां दोपहर की धूप में कोड़े और मार लो
यह क्या तुम्हीं हो ?

एक गम्भीर स्वर उत्तर देता है मुझको
अधीर पुत्र, यह तरु नव पल्लवित और सशक्त
वहां वह वृक्ष श्वेत औ मलीन सुमन
फूलों के बीच गौरवपूर्ण एकान्त का भोगी
वही है अफ्रीका—तुम्हारा प्रिय अफ्रीका
जो बार-बार धैर्य सहित उठ खड़ा होता है बलात्
जिसके फल प्राप्त कर लेते हैं
स्वतन्त्रता का कटु फल। ●

अल्जीरिया

अब्दुल वहाब अल बयाती सुप्रसिद्ध कवि। राष्ट्रीय आन्दोलन को जगाने में प्रमुख भाग लिया।

फिलस्तीन

इब्राहिम तौकान अरब राष्ट्रवादी। अल्पावस्था में मृत्यु। कबूतर अरबी की सुप्रसिद्ध कविता है जिसका स्वर फड़फड़ाहट जैसी ध्वनि देता है।

इराक

मुहम्मद क़ासिम बग़दाद निवासी सुप्रसिद्ध कवि एवं विद्वान। प्राचीन काव्य शैली में नवीन का उत्तम समावेश किया।

अकरम फाहिल नये कवियों में अग्रणी। सुप्रसिद्ध कवि।

जापान

शिन ककी जन्म १९३०। जापानी कविता के प्रमुख आलोचक तथा कवि दो संग्रह प्रकाशित।

हिरोसी इवाता जन्म १९३२। आधुनिक कवियों के वाली दल के सदस्य। एक संग्रह प्रकाशित।

यू सुवा जन्म १९२९। दो संग्रह प्रकाशित।

मिनोरु योमियोका जन्म १९१९। वानी दल के सदस्य। दो संग्रह प्रकाशित।

फिलिप्पाइन्स

ओ० एस कुमायो कमण्ड के सम्पादक। कविताओं में जापानी शैली के प्रयोग।

कोरिया

किम यू सुग जन्म १९२१। नय कवियों में अग्रणी।

को यान जन्म १९२५। कवि और अनुवादक। कोरियाई कविताओं का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है।

इण्डोनेशिया

चयरिल अनवर जन्म १९२२। २७ वर्ष की अल्पायु में मृत्यु। बहुत तीखी और आधुनिक प्रभावों में पूर्ण कविताएँ लिखी हैं वरन् यह कहना अधिक संगत है कि इण्डोनेशियन कविता को नया मोड़ दिया है।

सितोर सितुमोरंग २९ वर्षीय युवक कवि। अनवर के सीधे उत्तराधिकारी। परन्तु कई दिशाओं में उनसे भी आगे।

डब्ल्यू० एस० रेन्द्रा जन्म १९३५। लम्बी कविताएं लिखने में सिद्धहस्त। पुरानी शैली में भी नवीनता का चमत्कार उत्पन्न करते हैं।

वियतनाम

तो थुई यन कवि कहानीकार एवं आलोचक। मात्र २५ वर्षीय।

लंका

जार्ज कीट लंका के विश्वविख्यात चित्रकार एवं कवि।

धर्मो निवराम युवक कवि। आधुनिक चित्रकला में भी अग्रणी।

अलजीरिया को • अब्दुल रहाम अल मयाती

मैं संग्राम म जाता हूँ
राइफल और गोली लेकर।
और सूरज जलाता है
ढलाना और रेता को।
उगो ओ सूरज
उठो ओ बच्चो
क्योंकि अलजीरिया भी
मेरा देश है ।
मैं गीता को पीता हूँ
रोओ मत बच्चो।
जगमगाओ ओ सूय !
शत्रु द्वार पर है।
केवल एक शब्द—
सूरज रोक दिया गया है।
गोली की एक आवाज सुनाई देती है
और शत्रु मर जाता है!

ग्रीष्म प्रवेश करता है
एक जल हुए घर के किनारे।
···और उसके साथ मैं भी।
मेरे लिए नहा है
रास्त स अलग हटना।
लेकिन कौन चीखता है क्यों ?
अलजीरिया के बच्च !
वापस लौट जाओ
विदेशी सैनिको !
'धांय की एक गूज
और शत्रु मरता है
मैं भा घायल होता हूँ

लेकिन मैं चलता हू।
और घायल सूय
जीवन को अग्निकुण्ड-सा जलाता है
मैं मोघ से घुट जाता हूँ
और मूर्च्छा म बड़बड़ाता हूँ।
'एक बूद पानी चाहिए मुझे
साथी मुझे दो
ताकि दद मिट जाय
आग को बुझादो।

रोओ मत ओ माँ !
मैं सचमुच मरा नहीं हू
मृत्यु मेरे लिए प्रतिध्वनि है
अभी, इस समय !
ध्वज से लपट उठ रही है
विद्रोहमयी
मेर देश के एक रक्त से आरक्त
चमकती हुई
मांस का सिपाही
मरे कान में चिल्लाता है
गदे अलजीरियन
मैं तुझे मार डालू गा
अगर तू नहीं कहेगा—
'अलजारिया फ्रांस का है !
लेकिन मैं कहता हूँ
अलजीरिया की जय हो !
विजय हो—अलजीरिया के मेर भाइयों की
स्वतन्त्रता आयेगी
और हमेशा क लिए शान्ति भी !

रोओ मत ओ माँ
सूर्य डूबता है
और पीड़ा समाप्त होती है
मेरे हृदय की ।

और मुक्त खुले कण्ठ से
मैं दुहराता हूँ
अलजीरिया की भूमि
हम कभी नहीं खोएँगे ! •

वसन्त और बच्चे • अब्दुल वहाब अल-बयाती

मृतकों की आँखों के समान
बगदाद के रास्ते पर
बच्चों की आँखें आँसू बरसाती हैं।
वसन्त
हमारे देश में लौट आया है
और हमारे खेतों में,
गुलाब और तितलियों से विहीन।
और हमारे देश में मदिरा बनाई जाती है
मृतकों के आँसुओं से
बच्चों के रुधिर से,
और बंद दरवाज़ों में
मेरे नगर के आँगन में
सूर्य को सूली पर चढ़ा दिया जाता है।
मेरा नगर बगदाद,
गीतों से विहीन उत्सवों से रहित
बच्चों की आँखों में दिन घिर आया है।
यह हमारे खेतों में लौट आया है
हमारे मृतकों को दफनाने, बिना गुलाब के
बिना तितलियों के,
मोर्चे के रक्त को सुखाने के लिए
और हमारे बच्चों के
और आँखों के रंग में आकाश को झनझना देने के लिए
लपटों के रंग से
और वेदना से। •

[अलजीरिया को' और 'वसन्त और बच्चे' इन्द्र मलिक द्वारा अनूदित]

अलजीरिया को • अब्दुल अहाद अल ग़यारी

मैं संग्राम में आता हूँ
रायफल और गोली लेकर।
और सूरज जलाता है
खलिहानों और खेतों को
उगो ओ सूरज
उठो ओ बच्चो
क्योंकि अलजीरिया भी
मेरा देश है।
मैं गीतों को पीता हूँ..
रोओ मत बच्चो।
जगमगाओ ओ धूप!
शत्रु द्वार पर है।
केवल एक शब्द—
सूरज रोक दिया गया है।
गोली की एक आवाज़ सुनाई देती है
और शत्रु मर जाता है।

ग्रीष्म प्रवेश करता है
एक जले हुए घर के किनारे।
—और उसके साथ मैं भी।
मेरे लिए नहीं है
रास्ते से अलग हटना।
लेकिन कौन चीखता है वहाँ?
अलजीरिया के बच्चे!
वापस लौट आओ
विदेशी सैनिको!
'धाँय' की एक गूँज
और शत्रु मरता है
मैं भी घायल होता हूँ

लेकिन मैं चलता हूँ।
और घायल सूर्य
जीवन को अग्निकुण्ड सा जलाता है
मैं क्रोध से घुट जाता हूँ
और मूर्च्छा में बड़बड़ाता हूँ।
एक बूँद पानी चाहिए मुझे
साथी मुझे दो
ताकि दर्द मिट जाय
आग को बुझा दो।

रोओ मत ओ माँ!
मैं सचमुच मरा नहीं हूँ
मृत्यु मेरे लिए प्रतिबंधित है
अभी, इस समय!
ध्वज से लपटें उठ रही हैं
विद्रोहमयी
मेरे देश के एक रक्त से आरक्त
चमकती हुई
फ्रांस का सिपाही
मेरे कान में चिल्लाता है
गंदे अलजीरियन
मैं तुझे मार डालूँगा
अगर तू नहीं कहेगा—
'अलजीरिया फ्रांस का है।'
लेकिन मैं कहता हूँ
अलजीरिया की जय हो!
विजय हो—अलजीरिया के मेरे भाइयों की
स्वतन्त्रता पायेगी
और हमेशा के लिए शान्ति भी!

रोओ मत ओ माँ
सूर्य डूबता है
और पीड़ा समाप्त होती है
मेरे हृदय की।

और मुक्त खुले कण्ठ से
मैं दुहराता हूँ
अलजीरिया की भूमि
हम कभी नहीं खोएँगे!

वसन्त और बच्चे • अब्दुल वहाब अल-बयाती

मृतकों की आँखों के समान
बगदाद के रास्ते पर
बच्चों की आँखें आँसू बरसाता है।
वसन्त
हमारे देश में लौट आया है
और हमारे खेतों में,
गुलाब और तितलियाँ से विहीन।
और हमारे देश में मदिरा बनाई जाती है
मृतकों के आँसुओं में
बच्चों के रुधिर से,
और बन्द दरवाज़ों में
मेरे नगर के आँगन में
सूर्य को सूली पर चढ़ा दिया जाता है।
मेरा नगर बगदाद,
गीतों से विहीन, उत्सवों से रहित
बच्चों की आँखों में दिन घिर आया है।
यह हमारे खेतों में लौट आया है
हमारे मृतकों को दफ़नाने, बिना गुलाब के
बिना तितलियों के
मसीह के रक्त को मुक्त करने के लिए
और हमारे बच्चों के
और आँखों के रंग से आकाश को ज्योत्स्ना देने के लिए
सपनों के रंग में
और सपनों में। •

[illegible] और 'वसन्त और बच्चे' [illegible]
अनुवाद]

जो इतिहास बन गये • मलेक हद्दाद

वे इतिहास बन चुके हैं—
इतिहास जिसकी बाँहों में सब समा जाते हैं
वे जिन्हें मैं जानता था जो बहस करते थे
संतति उत्पन्न करते थे संकट झेलते थे
रात गहराने पर जिनकी सफेद मुस्काने चमकने लगती थी।

अखबार सरीखे मैं उनसे फिर मिलता हूँ।
मेरे दोस्त जो अब केवल शब्द हैं संख्या हैं नाम हैं।
अपनी ज़िन्दगी के दस साल और हज़ार दिन
हमने साथ खाना खाया
सिगरेट उधार ली
बच्चों के साथ खेले।
मैंने उन्हें अपनी कविताएँ पढ़ाईं।
मेरी माँ ने उनकी देखभाल की,
वे मेरे हमदम थे।
हमने बातें कीं

पर अब वे इतिहास बन चुके हैं—
इतिहास जिसकी बाँहों में सब समा जाते हैं
वे बन चुके हैं
एक आत्मा एक देश। •

मैं जानता हूं • मलेक हद्दाद

मैं जानता हूँ मैड्रिड के आँसू अभी सूखे नहीं हैं
उसका लहू अभी भी सड़कों की नालियों में बहता है

मुझे याद है पनोजिन के करीब
शहीदों की सूची टँगी है

मैं जानता हूं सिर्फ भय ही सच्चा है
उसकी आंख नष्ट है

वियतनामी धान के खेत लाशों से आबाद हैं
मेरे कानों में मडागास्कर की कराहों का संगीत गूंज रहा है

आज हममें से हर किसी को
भय का एकाधिकार प्राप्त है

रोज़ मैं अपने दोस्तों की संख्या गिनता हूं
मेरे दोस्त कितनी जल्दी मरते जाते हैं

संख्या खत्म होने पर मैं गिनना बन्द कर देता हूं
नामों के संख्या में बदलने पर मैं गिनना बन्द कर देता हूं।

पोर्ट सईद का गीत • उमर-अबू रिशेह

इज्जत से ज्यादा बचाने की चीज कोई भी नहीं है
ऐ सागर की रानी, उसके लिए लड़ना भी पड़ सकता है
भरे सौन्दर्य के गर्व में तुम तट पर झुकी हो
गम्भीर निरासक्त

सौन्दर्य वरदान कब हुआ है ?
ये लुटेरे—हर लहर पर—प्रतीक्षा में हैं—
कितने बेशर्म कसमें गा रहे हैं, चिल्ला रहे हैं
—पर तुम्हारे कान इन्द्रियाँ बन्द हैं।
पर नहीं ! देखो देखो—
वे आते हैं—वासना और घृणा से भरे आते हैं !
फिर भी तुम खड़ी हो—स्थिर निरुत्साहित।
यह मुद्रा—शोभा का तीर्थ !
तट लाल हो गया है
और यहाँ तुम पड़ी हो,
वे वार पर वार कर रहे हैं
पर तुम आह भी नहीं भरतीं,
तुम्हारी दृढ़ता ढाल बन गई है
न तुम समर्पण करती हो
न मरती ही हो !

शर्म और नफ़रत से वे पीछे हटते हैं
तुम सुनती हो वे कह रहे हैं
'इसके हृदय नहीं है नहीं है—
'यह जड़ है'
तुम मुस्कराती हो
और उस किनारे पर अदेखा
प्रभात अवतरित होता है !

प्रश्न • उमर अबू रिशेह

ओ पहाड़ और आसमान
तुम मेरे आलिंगन से
दूर क्या भागते हो ?
मैं तुम्हारे कम्मा के पास
हर दफा क्यों लड़खड़ाता हूं ?

खो गये रास्ता के सामने
मुझे अकेला छोड़ देने को
क्या पत्थर उग आये हैं ?
मेरे खेल के मैदान खत्म होने जाते हैं
यह सब परिवर्तन क्या हुआ ?

और यह शराब भी
—जो दैवी पेय है—
अब मुझे क्यों नहीं जलाता
क्या नहीं उस स्वर्ग तक पहुँचाती
जहाँ कामना समाप्त हो जाती है ? •

दो प्रेमी • अनवर नक्द

कल के दो प्रेमी
आज उवरा धरती में सो रहे हैं
उनके चारों पर सब के बगीचे में गड़े हैं
गर्मियों में गाँव के पक्षी उन खेतों को खाते हैं
और उनकी शाखें आसमान के मलानियों को साया देती हैं
उनके हाथ जंगली कबूतरों के सलन को खुले हैं
और उनकी आवाजें और साँसें समुद्र में मिल गई हैं
प्यार के सब प्रकार और मनोहरताएँ

कब्र में या नये पालने में खो गई हैं
उनका यौवन बसन्त के साथ मिट गया है
और आँसुओं के घने पतझर की नीली आँखों में खो गये हैं
और शिशिर की काली अँगुलियों के समक्ष बर्फ़ की चमक
और प्यास से मुक्त दो पंखुड़ियों का फूल
सदा के लिए फव्वारे में नुचा पड़ा है
प्यार के सब प्रकार और कोमलताएँ
कब्र में या नये पालने में खो गई हैं
सिवा उनकी प्यारी आँखों के जो अँधेरे में भी चमकती हैं
चार मोमबत्तियाँ आँसुओं से नष्ट हो चुकी हैं। ●

फिलस्तीन की एक कविता

कबूतर • इब्राहिम तौकान

मुझे कबूतरों के लिए सही है कहना कि वे प्यार में पुरसुकून हैं
शान्ति और सौहार्द के प्रतीक सृष्टि के प्रारम्भ से
शाखाओं के साथ वे झुक जाते हैं जब हवा उनके अंगना को छूती है
जब दोपहर की गर्मी जलाती है, वे उड़ जाते हैं अपने नीड़
की ओर
और फिर चक्कर खाकर गिरते हैं प्रेमी की तरह जो मुग्ध सहमा
जकड़ लेता है, अजान ही
दो टुकड़ियों की किनारों पर, अव्यवस्थित खड़ी हुई, जहाँ वे गिरते थे
प्रत्येक अपनी तस्वीर को चूमता है पानी जब बह जाता है
जब वे अपने सिर हिलाते हैं बूँदें उनके गले पर चमक जाती हैं,
मोतियों की तरह।
इस तरह शीतल होकर वे फिर उड़ जाते हैं शाखाओं पर अपने घोंसलों पर
उनके पंखों की फड़फड़ाहट प्रकट करती है उनका सन्ताप
और जब उनकी साँझ आती है, तब उन्हें बसेरे की
समझ हो
सम्पूर्ण मासूम होकर, सिर अपने पंखों में छिपाये वे सोते हैं। ●

बास्केट बॉल का खिलाड़ी

मुहम्मद क़ासिम

खूबसूरत रातों में जवान रात के साथी
आत्मा के मित्र ! जब मैं अकेला होता हूँ,
दिन, जो समाप्त होता है हमारे मिलन के बग़ैर
उसे निकाल देता हूँ मैं अपनी ज़िन्दगी से ।
गली में जिसमें मैं तुम्हें नहीं देखता
मेरा आँख मेरे परों से ज़िद ठान लेती हैं,
सुबह जिसमें तुम मेरे सूर्योदय नहीं होते
मेरे लिए उतनी ही अंधेरी होती है जितनी कि रात ।

बास्केट-बाल को मत छुओ मेरा हृदय
एक गेंद है तुम्हारी जकड़ में ।
दौड़ते में सावधान रहो तुम्हारे पाँवों से
मेरी आत्मा लिपटी है ।
इसके बजाय, प्यार के सागर में डूब जाओ ।
तुम्हीं वह धुन हो जिसमें मेरे शब्द गुम्फित हैं ।
मेरे विषय में तुम्हारी शिकायत करूँगा तुम्हीं से,
यदि तुम साहस करोगे पूछने का कि मैं कौन हूँ !

मैं कभी कक्षा में नहीं जाता
लेकिन कम्पन मेरे रक्त को जमा देता है ।
मेरा वाक् प्रवाह तुम्हारी दृष्टि में व्याकुल हो जाता है
मैं कह नहीं पाता हूँ वे बातें, जो मुझे कहनी चाहिए ।
इस तरह अपने भ्रम में मैं मूक हो जाता हूँ
और अपने दर्द से बाचाल ।
क्या मैं प्यार को छिपा सकता हूँ ? मेरे ओठों पर वह बोलता है
शब्द मेरी आँखों में रहते हैं ।

अपना जीवन मैंने बिता दिया है मदिरा में, व्यर्थ,
विद्वत्ता से कहीं अच्छा है
उसके साथ बैठना, जिसे तुम प्यार करते हो,
मदिरा लेकर रात्रि के एक प्रहर भर।
रहने दो विद्वत्ता को! मनुष्य के किस काम की है वह?
यौवन से निचोड़ लो सुख जो शेष हो।
और यदि संसार एक स्वप्न है, उसे बदल दो
कि वह सुखमय हो दुखमय नहीं।

अवकाश आ गया है। क्या तुम सोचते हो
मस्तिष्क और धमनी विश्राम लेंगे?
तुम्हारा चेहरा एक उद्यान है। क्या मैं
गुज़ार दूं यह ग्रीष्म इसके गुलाबों की गंध पीकर?
अगर अप्रैल में मैं गर्मी की शिकायत करूं
तो अगस्त कैसा होगा?
वियोग की लपट मुझे अभी जलाती है,
क्या होगा मेरा, जब ग्रीष्म मुझे जलाएगा?

मेरा रहस्य छात्रों ने जान लिया है,
प्यार कब छिपकर रह पाया है?
उनकी फुसफुसाहट से एक शान्त आवाज़ आती है
उनकी आंखों में निर्णय पढ़े जा सकते हैं।
जवान लड़के व्यंग्य में हंसते हैं।
और बड़े बुरा कहते हैं।
मेरी 'गुड मॉर्निंग' का वे उत्तर देते हैं
'गुड मॉर्निंग हमारे अध्यापक को और प्यार को भी।' •

कहाँ चुनूँगा मैं फूल!

अकरम फ़ादिल

ओ सुन्दर!
यहाँ है प्यार
जिसे हम खोजते हैं और जिसे हम खरीदते हैं,

हम उसके बन्दी हैं
और बन्दी को हक नहीं गुलाब का
गुलाब के बगीचे में आने का
वहाँ बैठने और प्रतीक्षा करने का।

सुन्दर आँखों की रोशनी में
तमाम भय निवास करता है
मुझे भय है और फिर भी
मुझे किसी व्यक्ति का भय नहीं है
जब मैं तुझे आलिंगन में बाँध लूँ छिप कर,
जहाँ कोई मुझे देख न सके।
यहाँ कहाँ छुऊँगा मैं फूल?
तुम्हारे मुस्कुराते हुए चेहरे पर?
या सिन्दूरी गालों पर?
या इन नैनों पर?
कितने सुन्दर हैं वे!!

वर्षों का एकान्त
हमेशा के लिए उचटी हुई नींद हो गया है,
जीवन कड़वा और उदासी से भरा।
मुझे वे पुरस्कार देते हैं तुम्हारे कोमल शब्द पर
और मेरे मुरझाये हुए पत्र फिर जीवित हो उठते हैं—
और मेरे वृक्ष हरिया जाते हैं। ●
(फिलस्तीन व इराकी कविताएं, ज्ञान मरुस्थल द्वारा अनुदित)

टर्की की दो कविताएं

नग्न सुप्ता • फ़ानिल हुस्नु दगलारका

रात की स्मृतियाँ
न दो
प्यार न मुझे—हाथों पाँवों तक कसा है
न बुलाओ—यदापि नहीं
मृत, सुषुप्त जाग जायेंगे
वे—जागेंगे और चले आयेंगे हमारी शय्या तक
अपने छोटे-से पथ में
जब
हमारे ऊपर नक्षत्र घूम रहे होंगे
वे—चले आयेंगे
क्या—मैंने कहा कि ऊपर कुछ सरक रहा है
सम्भव मैं सुप्त होऊं—सम्भव यह सब कुछ
तुम इतने पास आओ कि उन्हें सुनाई न दे
मुझे रात की याद न दो—इन अवसरों पर
न बुलाओ। •

मृत्योपरान्त • सी० टरान्सी

मृत्यु के सम्भाव्य को चाहते हुए—हम मर गये
बड़े निकमण्डल में अनकहा रह गया चमत्कार।
अब कैसे न गीत याद करें—आसमान के टुकड़े वृक्षों
की टहनियाँ और चिड़िया के पंख
सब जिये हमने—उसमें अभ्यस्त रहे।
और अब उस संसार का कोई सम्पर्क सूत्र नहीं
हमारे बाद—हम पूछते को रह ही क्या गया—
हमारी गहरी अनन्त रात का कौनसा अनगढ़ भय है ?
और हमारे पास झाँकने का—सूत्र भी नहीं
अब—उस टूटन का कोई प्रत्यावर्तन नहीं
जिस दर्ज हम । •

[टर्की की कविताओं के अनुवादक—गंगाप्रसाद विमल

मैं वही हूँ • इत्ज़िक मैंगर

तुमने कहा कि मैं शरद हूँ। तो देखो मैं वही हूँ।
परिष्कृत सुवर्ण शीतल और गम्भीर रजत वैराग्य और त्याग—
मैं वह सब वृक्ष हूँ जिसकी शाख दीवार पर झुकी है।
मैं वह सोने का सिक्का हूँ जो कूड़े में खो गया है। ढूँढ लो उसे।

तुमने कहा कि मैं बियाबान जंगल हूँ। तो देखो मैं वही हूँ।
बढ़ती बबूल कांपती लताएं, लाल और पीली पत्तियाँ।
मैं खरगोश का बच्चा हूँ उसकी मृत्यु का भय हूँ।
मैं सोने की बाली हूँ जो कांटों में गिर गई है। ढूँढ लो उसे।

मैं गाँव की सकरी सड़क हूँ गाँव हूँ जंगल का सैलानी गुलाब हूँ।
मैं हरियाला बगीचा हूँ नीला साया हूँ पुरातन कुटिया हूँ।
मैं संसार की हर वस्तु हूँ और उसका आलिंगन करता हूँ।

आओ भी जो भी तुमने कहा, मैं वही हो गया—
बर्फ में बन्दी गौरैया, अनाज में गहरे घुसा झींगुर।
मेढ़कों से भरे तालाब में सोने की मछली गिर पड़ी है। ढूँढ लो उसे।

शांति बम • धनाड कॉप्स

मुझे एक बम चाहिए एक व्यक्तिगत बम, मेरा शांति बम।
सवेरे मैं उसकी परीक्षा करूँगा जब मेरा बेटा जागेगा
मगदान्यों जैसा नींद की धुन्ध से बरोनाता। बूम! बूम!!
आओ बच्चो कमरे में मस्त होकर नाचो।
मैं सड़क पर बम की परीक्षा करूँगा जिससे पड़ोसी जग जायें
सामने रहनेवाले राज-मजदूर विद्यार्थी और वेश्याएं जग जायें।

मुझे एक बम जरूर चाहिए और तब मैं खिड़कियाँ खोल दूँगा
और कमरे में चारों तरफ कूदता फिरूँगा

मेरी बावी अपने हूँसिंग गाउन म मेरे साथ नाचेगा
और मेरे चारा तरफ देवदूत उड़ते होंगे।

मुझे एक सुखी पारिवारिक बम चाहिए जिस में खुद हो चला सकूं
मैं छत पर चढ़ जाऊँगा और दोपहर को उसे दाग दूंगा
सारी दुनिया चौंक उठेगा और तब हम अपना सच लगें।

मैं अपनी बीबी की छातियाँ हँसी से फाड़ देना चाहता हूँ। पिंग! पोंग!!
दोपहर बाद जब बच्चे स्कूल से घर लौटते हैं; तब मैं उसे चलाऊँगा।
मुझे एक हँसी का बम चाहिए, जिसमें चॉकलेट चुम्बन, आइसक्रीम
गुब्बारे, फ़ाउण्टेनपेन पदार्थ और गैंद भरा हो।
मैं वह बम चाहता हूँ जो दुनिया को गुलाब से ढक दे।

मुझे हमेशा खुश रहो और शांति से मरो का बम चाहिए,
मुझे आराम से अपने बिस्तरों पर सोओ का बम चाहिए
सुबह फिर मिलेंगे का बम चाहिए
मणि पद्म हुम् का बम चाहिए ओम् ओम् बम चाहिए
मेरा अपना बम व्यक्तिगत बम शांति का बम—— •

कर्नल और बम • शिन ऊका

कर्नल कर्नल कर्नल
मैं तुम्हें प्यार करता हूँ
इस उदास सुबह को तुम कहाँ जा रहे हो
मिलिट्री स्कूल
जहाँ ५० मूलियाँ तुम्हारा इन्तज़ार कर रही हैं

कर्नल कर्नल कर्नल
मैं बमों को प्यार करता हूँ
इसीलिए तुम्हें प्यार करता हूँ
मैं उन अनन्त सम्भावनाओं को प्यार करता हूँ
जो बमों के घोड़ों के पीछे छिपी हैं
मैं एक लाख हिस्से वाले बम में
टिक टिक करते भूकम्पीय सौन्दर्य को प्यार करता हूँ
मैं तुम्हें प्यार करता हूँ
क्योंकि तुम इससे ज्यादा कुछ नहीं हो

ओ कर्नल कर्नल कर्नल
बम से ज्यादा तुम कुछ नहीं हो
धुएँ के बीच कितने खूबसूरत लगते हैं
क्या ही शानदार खूबसूरती
भूकम्प मापक की हिचकियाँ लेने और बेहोश होने दो
लोगों को हिचकियाँ लेने और बेहोश होने दो
पक्षियों को हिचकियाँ लेने और बेहोश होने दो

कर्नल कर्नल कर्नल
मुझे तुम्हारे नक्शे पसन्द हैं
वे देखने में ज्यादा स्पष्ट होते हैं
अब मैं नक्शे में उनको चिह्नित करूँगा
और चौराहे पर सबको बाँटूँगा

मैं उन्हें ताँबे पर खुदवाकर बम पर चढ़ा दूँगा
या संस्कृत में उनका अनुवाद कर लूँगा
और उन्हें मानिगन में बाँधकर नीबू तले मर जाऊँगा
मैं ये सब उस आदमी को पढ़कर सुनाऊँगा
जिसने अमरिका की खोज की
कोलम्बस से पहले

पर कनल कर्नल कनल
बम क्या बनाये जाते हैं ?
पी पी पी पी
क्या तुम इतना सरल सत्य भी नहीं समझ पाते ?
हम बम बनाते हैं
क्योंकि हम बमों का नाश करना चाहते हैं
शांति के लिए नाश
इसलिए हम बम बनाते हैं
और बम कभी पूरे नहीं पड़ते
क्योंकि शांति ज्यादा दिन नहीं चलती
बम बनाओ बम बनाओ
पी पी पा पी

आ कनल कनल कर्नल
देखो मैं तुम्हें प्यार करता हूँ
क्योंकि तुम एक पुराने वाहियात बम से
ज्यादा कुछ नहीं हो
मैं तुम्हें त्याग दूँगा
यह पवित्र आज्ञा है
जो संस्कृत की कविताओं में लिखी है
और मेरी भी •

बिल्ली और चिड़िया • हिरोसी इवाता

समुद्र द्वीप को घेरे है
तट पर एक केकड़ा मरा पड़ा है
एक दो तीन दिन गुजर जाते हैं
अब केकड़े की जगह रेत ही रेत है।
छुट्टियाँ धोखे की तरह बिताकर
एक आदमी अपनी फैक्ट्री वापस जा रहा है
जो समूचे शहर को घेरे है।
विविध पत्थरों से बना यह बैंक
सिर्फ चार आदमियों की हित रक्षा करता है।
पहला बिस्तर पर उलटा लेटा है
दूसरा आतंकित सा इधर उधर ताक रहा है
उसके हाथ और उंगलियाँ काँप रही हैं
अब किसकी बारी मरने की है?
तीसरा चुपचाप फोन मिला रहा है
चौथा तेजी से उस पहाड़ी पर चढ़ रहा है
जो उसके शानदार घर के ऊपर खड़ी है।
अगर कोई गुलाब का पौधा लगाये
तो क्या दूसरा को भी गुलाब ही लगाना चाहिए?
जो जिसका जी चाहे, करे।
अचानक झाड़ी से निकलकर एक बिल्ली
धीरे धीरे आगे बढ़ रही है
उसकी पांत पर एक छोटी चिड़िया है
बिल्ली भी बची है चिड़िया भी बची है
बच्चे बच्चा व नास्त होते ही हैं।
पर एक दिन बिल्ली जानवर बन जाती है
चिड़िया पर उसका दिन सवार उठता है
और वह उसे खाने लगती है
स्वाद मीठा है चरपरा भी है
बिल्ली के गले में यह नीचे जाता है

पेट उसे अपने में भर लेता है
ओह ! आह ! बस बस ! धन्यवाद !
न कोई रोता है न हँसता है
ओ ईसप साहब !
अरे ओ ईसप साहब ! •

शरद का पुरुष • यू सूया

गाँव के पास
            उन्नाम रास्ते पर
एज़रा पाउण्ड-सी दाढ़ी रखे
एक व्यक्ति मेरी तरफ़ घूरता है
मैं उसे सलाम करता हूँ
प्राच्य के प्रभावी शब्दों से उसकी अभ्यर्थना करता हूँ
पर वह सिर्फ़ हँस देता है
                        प्रेत जैसी हँसी
शरद की सब धारा ओर फैली है
                    और यह पुरुष
                    शरद का ही है
                    जो तीव्र दृष्टि से
                    मुझे ताक रहा है •

विगत • मिनोरु योसिओका

एक आदमी अपनी पसली गर्दन ऐंठन से ढकता है
उसका कोई विगत नहीं, कोई इच्छा नहीं है
वह अपने सोचता है, हाथ में तेज़ चाकू लिये
घाटियों की कतार उसकी आँख की कल्पना से गुज़र जाता है
अरवा का धुन लोहे की छाया से परेशान होता है
एक रुकता है

फिलिप्पाइन्स की दो कविताएं

रात्रि का दृश्य
दो श्वेत हंस तुम्हारी
प्रतीक्षा में किनारे पर काली
झिल्ली कूदती हुई •

•

अनुभूति कहने को
तुम्हारी आँख का स्पर्श
अंगुली की कोमल हँसी
मुझे आसमान तक उठाती •

• जी॰ पर्स दुनाओ

मलाया की एक कविता

मि० तान मूसेज • ई तियाग होंग

मैं हमेशा पीछे क्यों रह जाता हूँ ?
मेरे सब मित्रों ने भाग पाया है
देश की समृद्धि में पावन के
दबे हुए स्वर में
मेरा भाग्य ज्यों का त्यों ही है
पैसा नहीं शेयरों के लिए—
कपास टिन और रबर के—
न छोटे उद्योगों के लिए।
लॉटरियों में छू नहीं सकता
कितनी ही दफ़ा एक ही नम्बर से
इनाम हार चुका हूँ।

क्यों मेरे सभी दोस्त
नयी नयी बस्तियों में
बढ़िया हवादार घर खरीद लेते हैं ?
मैं सरकारी क्वार्टरों में रहता हूँ।
बस जरा सोचने पर,
यह ऐसा बुरा भी नहीं किराया कम है,
औरों की दया से मुक्त भी स्वतंत्र है,
वे गन्दी बस्तियों, गैराजों, झोंपड़ियों
और गौशालाओं में रहते हैं।
और कौन जानता है
जल्दी ही मेरा प्रमोशन हो जाय
विशेष वेतन मिलने लगे ?
कम से कम एक तरक्की तो मिल ही सकती है।
आज जो अपरिचित है कल नेता बन सकता है,
मेरे क्लासफ़ेलो मि० सी की तरह जो अब
बड़ा आदमी है मुझसे तिगुना वेतन पाता है!!!

इसलिए मैं सोचता हूँ
कि रिटायर होने पर
मैं राजनीति में हिस्सा लूँगा
या कोई व्यापार कर लूँगा।

क्योंकि सरकारी नौकर
कभी जल्दी अमीर नहीं हो सकते।

बर्फ • किम सू युंग

बर्फ जीवित है
यह गिरी हुई बर्फ जीवित है
जमीन पर गिरी हुई यह बर्फ जीवित है

आओ खांसें
युवक कवि, आओ हम खांसें
इस बर्फ के सामने खड़े होकर खांसें
निश्चिन्त होकर यह करें
जिससे कि बर्फ खुद देख सके

बर्फ जीवित है
उस आत्मा और शरीर के लिए
जो मृत्यु को भूल गये
आओ खांसें
सवेरा आने तक यह बर्फ जीवित रहेगी

आओ खांसें
युवक कवि आओ हम खांसें
बर्फ की तरफ़ देखते हुए
और उसके सामने ही बलगम गिरा दें
जो सारी रात हृदय में भरता रहा। •

भूमध्यसागर पार करते हुए

को यॉन

•

यह समुद्र जहाँ युद्ध न [illegible] का
सूर्य निश्चिन्त फैले जल में
स्वर्णिमा बिखरता डूब रहा है—
सूर्य नीचे उतर जाता

क्षितिज पर जहाँ भूमध्यसागरीय सभ्यता की
विविध बोलियाँ गूँज रही हैं
घाग और विश्राम की घोषणा करती सी,
वहाँ आग की लपट फलती जाती है।

आज रात समुद्र के गर्भ में सूर्य टकराता फिरेगा
ककाल को हाथों में उठाए
उसकी रोशनी म बटोरे मोतियों की तरह

और इसके बाद शीघ्र ही जब घाग और उठती लहर
चाँद की चमकती रोशनी म द्विमान हो उठेगा
और तुम समुद्र! पूरे यौवन में होगे,
तब एक और ज्वार उत्पन्न करना। •

कार्नेलिया जो अमेरिका में मिली

मिन नाइ शिक

•

कार्नेलिया एक दिन आई—मौसम इतना अच्छा था
कि हमसे सभी बाहर टहलाव पर रखे थे।
दुनिया की कौन-सी चीज हम पा नहीं सकते थे?

तुम्हारी नीली आँख भूमध्यसागर की तरह हैं
त्वरित आलिंगनों के निकट मार्ग से हमने लम्बी रात गुजार दी,
क्योंकि माँ का भय निरन्तर मस्तिष्क म बज रहा था।

बचपन स मैं बहुतों का सिर खाता रहा हूँ क्योंकि
माँ ने मुझे यही सिखाया है,
मैं भी खाऊँगी उसने कहा क्योंकि मेरे पास अपना सिर नहीं है।
पर तुम्हारे बाल तो सुनहरे हैं, क्या वे किसी गाय के हैं?

राजधानी की सड़कें मेरे पीछे
पोटोमैक म मैं अपना यह तथ्य देखता हूँ—
पर मेरा दूर घाव सात गंग म है।

मरी जन्मतिथि २६ फ़रवरी है
इसलिए इस साल वह नहीं आयेगी।
तो तुम सिर्फ़ सात साल के हो?
मैं तुम्हें बहुत बहुत चाहता हूँ।

प्रभात के चुम्बन, शय्या पर गरम गरम!
तुम रोती ही रहीं और मैं घर लौट आया।
प्रभात के चुम्बन ताजे और मुलायम!
मैं कठोर पर कोमल मूल कोरियन
अपने साथ अलार्म घड़ी ही लेकर आ गया। ●

मेरा घर • चयरिल अनवर

मरा घर कविता के भण्डारो का बना है
उसम भाइने जडे हैं जिनम सब साफ दिखाइ देता है
चौडे आँगना वाली विशाल इमारत स मैं भाग आया
मैं अपना रास्ता भूल गया हू और उसे ढूढ नही पाता

धूमिल रोशनी म मैंने एक तम्बू खडा किया
पर सवेरे तक वह न जाने कहाँ उड गया

मेरा घर कविता क भण्डारो का बना है
यहा मैंने शादी की और सन्तानें उत्पन्न की

लगता है बहुत इन्तजार करना है पर यह चल पडा है
अब मैं प्रकाशमान दिन तक पहुँच नही पाता
यदि शुभ शब्दो का एकत्र करने आय
तो उनके मधु को पिघला दना •

एक कमरा • चयरिल अनवर

एक खिड़की इस कमरे को
दुनिया म भजती है। भीतर घुसकर चमकता
चन्द्रमा कुछ और भी जानना चाहता है
'यहाँ पाँच बच्चे रहत हं
मैं भी जिनम स एक हू।

मरी माँ रोती हुई सो गई है,
जन का मनोरजन एकाकी ही होता है,
मरे परेशान पिता भी लटे हुए
पत्थर में लगे क्रॉस पर पड़े आदमी को देखते रहत हैं।

सारी दुनिया आत्महत्या किये ले रही है !
मैं अपने माँ और पिता से, जिनकी गणना ही नहीं होती
एक और छोटा भाई चाहता हूँ
तीन और चार गज वाले इस टाइट कमरे म
मनुष्या के भीतर जीवन नहीं फूंका जा सकता। •

जागरण • सितोर सितुमोरंग

उसकी रात्रि वश्यामा के लिए
उसका दिन अकेलेपन को भोगने के लिए।
जहर उसके शरीर म फैलता जाता है
वह शिकायत नहीं करता।

वह खिड़की तक आता है
रोज की तरह बाहर उगते सवेरे को देखता रहता है।
पेड़ फल फूल से लदे जा रहे हैं
दुनिया पहले से ज्यादा खूबसूरत होती जाती है।

यह देखकर वह और भी उदास हो जाता है।
कामना उसे डसने लगती है।

तब किसी स्त्री की छातियों पर पलटकर
वह एक नय स्वर्ग के सपन देखने लगता है। •

अभागा कोजान • डब्ल्यू एस रेन्द्रा

जगल आग स भर उठा है
जल हुए सक्कड़ आसमान को
जो दुनिया भर म फला है,
श्राप दे रहे हैं।

ऊपर चंद्रमा लहू से चमकता
आँखों से नारंगी आँसू बरसा रहा है।

कोजन ! कोजन !
बीमार सड़क
तुम्हें क्या तकलीफ़ है ?

क्या अपने अंधेरे घोंसले से वह खूसट बुढ़िया
अपने जाल और फंदे लिए लौट आई है ?
(लाल पत्ती में से चन्द्र निकलता है
और कुहरे के गाल पर सवार
बुढ़िया आती है ।)

कोजन ! कोजन !
बीमार सड़क
तुममें कौन सी नफ़रत है ?
(वह कोजन का उन्माद दिन चुरा लेती है
उसकी आँखों के फूल टूट जाता है,
वह बेचारा कुछ कह भी नहीं पाता ।)

कोजन ! कोजन !
ऊपर चंद्रमा मुँह से चमकता
आँखों से तारों के आँसू बरसा रहा है,
और अब मैं जान गया
बुढ़िया की आँखों में तुम ही पड़े हो । ●

वापसी • तो थुई येन

मैं और तुम परस्पर परिचित, ध्वस्त बचपन
की सतह पर सपना के कुहरे में खेलते रहे
और सुदूर दीवाल की तरह जीवन
हमारी हँसी और रोना वापस लौटाता रहा

हमने नहीं जाना कि पुल के नीचे कितना जल बह गया
पीछे मुड़कर देखते ही हम अचानक डर गये
हमने देखा कांटे हमारे चारों ओर घिर आये हैं
(ईश्वर ने ईडन से ज्यादा जानने वालों को निकाल दिया था)

फिर मैं एडवेन्चर करने चला और तुमको भूल गया
अपने बचपन परिवार और मित्रों को भूल गया सब भूल गया
मैं दुनिया को बदलना और नयी मानवाकृति गढ़ना चाहता था
अपनी जवानी के हथियार बनाता मैं घूमता रहा

कुछ लोगों ने तालियाँ बजाईं कुछ नाराज हुए—
अपने चेहरे की गर्द देख पान वाले चौंके हो हाँ हैं
घर में हर शाम घिर आये बादलों में रोने लगा
हथियारों को पेड़ पर टांग मैं सितारों को समझने चला

इतिहास आगे बढ़ता गया, सभी स्टेशनों पर ठहरता—
मानवता की यात्रा का प्रोग्राम पहले से नियत है
बस में लौट पड़ा मेरे हाथ उत्साह से भी रिक्त हो उठे
मैं उदासीनता की चट्टान पर आ बैठा और स्वच्छता में
बालों को सफेद होना आत्मा को कब्र में जाता देखता रहा

कि एक शाम अचानक ही तुम से फिर भेंट हो गई
मैं इतना बदल गया था कि तुम पहचान ही न सकी
पर तुम्हारी आवाज में अभी भी हमारा विगत
और तुम्हारे शरीर के आतिथ्य में आश्रय पाने का निमंत्रण गूंजता था। •

पर्वतों पर वसन्त आता है • थान दाई

मैं एक बार रही हूँ फा लाग में, एक एकान्त 'मोमो' गाँव में
ऊँचे एक पर्वत पर, बहुत से शिखरों के ऊपर
ढालू चट्टानों पर झुका हुआ मेरा मकान बादलों में लिपट जाता था
एक स्वच्छ पहाड़ी झरना गुनगुनाता था उसके पाँवों में।

मेरा जीवन बिलकुल शान्त था कि एक अभागे दिन
कठोर मृत्यु ने आकर मुझसे लूट लिया मेरे प्रिय पति को।
मेरे पिता ने प्राचीन जीर्ण रिवाज के अनुसार मुझे बाध्य किया
एक चाचा से विवाह करने को उस ठण्डी उदास शीत-ऋतु में।

वह पचास का था और अफ़ीम खाता था तमाम दिन और रात
मैं बिलकुल अकेली रह जाती थी यद्यपि वह हमेशा वहाँ होता था।
जब मैं अपने शीशे में देखती थी नाराज़ी उलट कर मुझे घूरती थी
आँसू अविराम बहने लगते थे मेरा हृदय निराशा से भर आता था।

संसार से और अपनी अफ़ीम से मेरा पति चला गया,
उसके स्थान पर मुझे ले लिया दूसरे एक चाचा ने,
बताते दुःख होता है मैं फिर एक बार विवाहित हुई।

केवल बीस की उम्र में तीन बार विवाहित
तीन बार जीवन ने मुझे विधवा पाया।
एक बार क्रान्ति उस गाँव तक आई,
और उस आघात से टूट गिरी सब जंजीरें और गुलामी।

मैंने पहाड़ को छोड़ दिया अपनी मातृभूमि के लिए काम करने को
जब मैं केवल बीस की ही थी, उस अखरोटों के मौसम में
एक दिन एक भावुक बाँके नौजवान को मैंने देखा,
उसकी आँखें प्यार का अग्निमय संदेश मुझे दे रही थीं
जिसने मेरे हृदय में उत्तर देता हुआ चोट उठा दी।

पहली बार मैंने पाया अपने हृदय को धड़कते हुए गहराई से
फूल अधिक खुशबूदार थे, हवा चलती थी बहुत मन्द

झरना बेहद खुश होकर बहा जंगल अप्रत्याशित चमकने लगा
कौन गा रहा था वहाँ ? मेरा धड़कता दिल झरना या कि पक्षी ?

आज जब हम साथ साथ झरनों में खेलते हैं
वह उदास मीमो लड़की अब एक नयी जिन्दगी जीती है
सुनहर में झरने में देखती हूँ और देखती हूँ उसके आईने में
मेरा हृदय अब मुक्त है तमाम कठिनाइयों और मुसीबतों से । ●

(अनु० ज्ञान मारिस्लो)

रात्रि में भय • जॉर्ज केट

आश्चर्य करता डूबता जाता उसके प्यार की रात्रि में
उसके निर्वसन जीवन के अनन्त चक्रव्यूह में
यात्रा करता अंधेरे मार्गों पर गर्म रक्त पर
अंधकार में बहते सुख जल पर गर्म रात पर
मैं कभी कभी अंधेरे में संशयपूर्वक महसूस करता हूँ
एक बस्ती, जैसे मछलियों की
कभी कभी सर्द पत्र द
रिक्तता की गीली अंगुलियाँ, शून्य का जकड़ता पंजा,
उसके प्यार के प्रवाह में बर्फीले पैबन्द। •

दरवाज़ा • धर्मो शिवरामू

छाया खाई में गहरी हो रही है
कुछ भी सोचे बिना,
एक स्वचालित द्वार खुल जाता है।
पतंगा लौ के भीतर
द्वार छूता है और टूटकर गिर पड़ता है।
इस कठोर अग्नि में
अब यह कौन घुस आया है—
भीतर से दीवालों को खटखटाता ?
लपट अपनी पंखुड़ियाँ खोलकर
भीतरी खाई को प्रकट करती है •

कुंवर नारायण	जन्म १६२७, दो संग्रह प्रकाशित। तीसरा सप्तक के कवि। कहानियाँ एवं आलोचनाएं भी लिखते हैं। लखनऊ में मोटर का रोज़गार करते हैं ताकि साहित्य का रोज़गार न करना पड़े।
कैलाश वाजपेयी	(डॉ०) जन्म १६३४, ११ नवम्बर। आधुनिक हिंदी कविता में शिल्प पर डाक्टरेट। शिवाजी कॉलेज दिल्ली में हिन्दी विभागाध्यक्ष।
गिरिजाकुमार माथुर	दूसरा सप्तक के कवि। दो कविता संग्रह और दो ध्वनि नाटक प्रकाशित। आकाशवाणी जलंधर के संचालक।
जगदीश गुप्त	(डॉ०) जन्म १६२५ गुजराती तथा व्रज भाषा के कृष्ण काव्य के तुलनात्मक अध्ययन पर शोध। नया कविता के सम्पादक। तीन संग्रह प्रकाशित। चित्रकार भी हैं। 'भारतीय कला के पद चिन्ह' चित्र कला सम्बन्धी प्रकाशन।
जगदीश चतुर्वेदी	जन्म १३ जनवरी १६३३, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय में अनुसन्धान सहायक। युवक कवि, कहानीकार। कुछ आलोचनाएं भी लिखी हैं। 'प्रारम्भ' काव्य संकलन के सम्पादक। भाषा त्रैमासिक के सम्पादकीय विभाग से सम्बद्ध।
ठाकुरप्रसादसिंह	जन्म १ दिसम्बर १६२४ प्रगतिशील आन्दोलन से सम्बन्ध रहा। संथाली गीतों के प्रभाव से कविता में प्रयोग

किये। कवि कहानीकार एव उपन्यास कार। हिन्दी समिति—उ० प्र० के सचिव। कविता सग्रह वशी और मादल। महा मानव' प्रबन्ध काव्य। उपन्यास कुञ्जा सुन्दरी। कहानी सग्रह चौथी पीढी।

नेमिचन्द्र जैन जन्म अगस्त १६१८ 'तार सप्तक के कवि। कविता के अतिरिक्त उपन्यास, नाटक सगीत नृत्य लोक-सस्कृति आदि पर हिन्दी और अंग्रेजी म अन्य महत्व-सा आलोचनात्मक लेखन। तीन पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित हो जाने की आशा। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय दिल्ली म नाटय साहित्य के अध्यापक।

बालकृष्ण राव जन्म २७ सितम्बर १६१२। १६३७ म आई सी एस प्रतियोगिता म भारत म प्रथम स्थान। १६५४ म आकाशवाणी के महानिदेशक पद से त्याग पत्र। सम्प्रति केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण-मण्डल, आगरा तथा हिन्दुस्तानी अकादमी उ० प्र० प्रयाग के अध्यक्ष। पाँच कविता सग्रह एव अनेक अनुवाद प्रकाशित।

भवानीप्रसाद मिश्र जन्म २६ मार्च १६१३ सस्कृत मराठी बगला गुजराती और थोडी सी फारसी के ज्ञाता। कहानी एकाकी व आलोचना भी लिखी किन्तु कविता लिखने में शायद इतना सुख मिलता है कि मान लेते हैं

और कुछ नहीं लिखा। कविता संग्रह 'गीत फरोश'।

माखनलाल चतुर्वेदी — एक सच्चे राष्ट्रीय कवि प्रारम्भ में 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से लिखते रहे। ७५ वर्षों के जीवन में आने वाले अधिकांश पतझरों को भी वसन्त की तरह जिया। लगभग ६० वर्षों से लिखते रहने पर भी जिनके सृजन में बासीपन नहीं आया। मधुर शृंगारिक कविताएँ भी खूब लिखीं।

रामदरश मिश्र — (डॉ०) नाटक के अलावा सभी कुछ लिखते हैं किन्तु मूलतः कवि। दो कविता संग्रह तीन आलोचना पुस्तकें और एक उपन्यास प्रकाशित।

शम्भुनाथसिंह — (डॉ०) जन्म—१७ जून १९१७ संस्कृत विश्व विद्यालय, वाराणसी में हिन्दी विभागाध्यक्ष। छः कविता-संग्रह दो कहानी-संग्रह एक नाटक एक निबन्ध और दो आलोचना की पुस्तकें प्रकाशित। गीत काव्य और नयी कविता में समान रूप से प्रतिष्ठित।

शमशेर बहादुरसिंह — जन्म १९११ सरल व्यक्ति—क्लिष्ट कवि। दो कविता-संग्रह एक निबन्ध संग्रह एक कहानी व स्केच संग्रह तथा कुछ अनुवाद प्रकाशित।

श्रीकान्त वर्मा — जन्म—१८ सितम्बर १९३१, नयी पीढ़ी के कवि एवं कथाकार के रूप में समान रूप से प्रतिष्ठित। सुप्रसिद्ध पत्रिका 'कृति' के सम्पादक। स्वतन्त्र लेखन-जीवी। एक कविता संग्रह प्रकाशित। एक कहानी संग्रह और दो कविता संग्रह शीघ्र प्रकाश्य।

मा निशाद प्रतिष्ठा • कुँवरनारायण

शास्त्रीय नियम जो अनुकूल नहीं
सामाजिक नियम जो आजीवन शास्त्रीय न होंगे—
हम जिनकी कंटिदार चहारदीवारी के भीतर
फूलों के हाशिये उगाते रहे
बहारों को बुलाते रहे—
क्या वे दहदायी पहरेदार
कभी संवेदनीय होंगे ?

काश, ये दीमक के टीले वाल्मीकि होते—
शास्त्र-हठी क्रौंच-वधिक
अर्ध-सत्य अधिक ठीक होते—
कि मैथुन पाप नहीं,
पाप थी वह घातक बाधा
तीर जब हृदयहीन किसी आखेटक ने
जीवन पर साधा।

पशु तड़पा क्षण भर ही
लेकिन उस पीड़ा का महामर्म ज्ञानी ने जाना—
जीवन की लघुतम इकाई की हत्या में
असम्मान जीवन का।
पहला सौन्दर्य-बोध—
वीतराग ऋषि ने भी
जब समस्त जीवन संवेदनीय माना
उस नगण्य पशु तक के दर्द को प्रतिष्ठा दी। •

समझदार लोगों की कविता • कैलाश वाजपेयी

तुम्हारी परिस्थिति के ठीक विपरीत हूँ
हर्ष मुझको नहीं
यंत्रणा मुझे नहीं
संक्रान्त मैं नहीं

मैं वस्तुस्थिति के ठीक विपरीत हूं !
तुम्हारी खुशी किसी सजे ड्राइंग रूम में बन्द है
ड्राइंग रूम—जिसम
सोफा है—परदे हैं !
ट्रांजिस्टर—रिकार्डप्लेयर
वैक्ट्स—एण्टीक हैं।
न समझ आनी-सी पेण्टिंग—मनीप्लाण्ट
शीशे में तरल कुछ जलजन्तु और
(एक बहुत सुन्दर-सी पत्नी भी)
तुम्हारी खुशियां इसम बन्द हैं।
यह सपाट ड्राइंग रूम
इस पूरी दुनिया म हर जगह एक है।
तुम्हारी यन्त्रणा—
इस सजे ड्राइंग रूम में
ना घुस पाने की तीखी छटपटाहट है
यह छटपटाहट भी
इस सपाट दुनिया म हर जगह एक है।
तुम्हारी समस्या—

यह सीढ़ी है
जिसका अत दस है
जिसका अथ एक है।

लेकिन मेरे लिए—
न कहीं दस है
न कहीं एक है।

सभी जगह दस है
सभी जगह एक है।

ओ तमाम समझदार लोगो—
मैं तुम्हारी मन स्थिति के ठीक विपरीत हूँ।
मुझे माफ़ करो। •

अवस्तु करुणा • गिरिजाकुमार माथुर

जब मेरी आँखों में
बादल सूनी बेमानी शामों की
स्वच्छताएँ मँडराती —

जब मेरी वाणी में
बिन बूझी पीड़ा से असहाय
बच्चों के बेकसूर चेहरे उभरते हैं—

जब मेरी बातों में
अनचाही विवशताएँ
अधटूटी नींद में घबराती हैं—

जब मेरे मौन में भी
अछूती आत्मा के पारखी की
गुहार रहती है—

तब तुम
जान बूझकर इस सबको
अनजाना कर देते हो

तुम्हें मेरे मन की समस्त करुणा समर्पित है
जिससे वह चुक जाये
और मैं अधिक निस्संग हो जाऊँ। •

उम्र का माथा • जगदीश गुप्त

लौट आया हूँ
थके-हारे अहेरी सा
गहन वन में भटक कर;
सुनहली हिरनी सदृश हर बार
वन-झलक से
मुझे छलती रही—पकती धूप।

गहन वन से
लौट आया हूँ
उस मनोहारा यक्न से
मुक्ति भी कुछ पा चुका हूँ
किन्तु मेरी उम्र का माथा—
दीपते प्रत्यक्ष हिम छादित शिखर की
छाँह में बहती
प्रखर स्रोतस्विनी के
वीचि सिंचित
इन्द्रधनुषी कूल पर
—अब भी टिका है। ●

चार छोटी कविताएँ ● जगदीश चतुर्वेदी

एक अनुभूति

कल सुबह एक नन्ही सी चिड़िया मर गई
मुझे उसकी छटपटाई आँख अजीब सी लगी
मुझे ऐसा लगा
कि दूर देश में
मेरी बच्ची बीमार है
और मैं उस तक नहीं पाऊँगा। ●

दर्द का वृक्ष

सोते सोते चौंक जाता हूँ
और बिस्तर की परतों को टूटते गिरते
सपने लगा हूँ

भय का प्रेत
मुझ एकाकी को साथ आता है
दर्द का नन्हा-सा पौधा
वृक्ष बनकर शरीर में छाया जाता है। ●

दाम्पत्य जीवन (२)

सुराही से निकलती आवाज़
पलंग की चरमराहट
दूध के गिलास की खनक
    कितना व्यवस्थित दाम्पत्य जीवन है
                        पड़ोसी का। •

शिशु का जन्म

कल रात मुझमें उग आए दो पेड़—
                कैक्टस और गुलाब
दो छोटे छोटे हाथ
दरवाज़ा थपथपाते रहे। •

लोकान्तरण • ठाकुरप्रसाद सिंह

यह राजपथ
इधर इस पर मेरा आना-जाना बढ़ गया है
यह एक अलग रास्ता है
आगे कुछ दूर तक धरती पर,
फिर आकाश पर,
फिर कहीं नहीं!
इस आयाम रास्ते पर दोनों ओर
गहरे खड्ड हैं—
सफ़ेद मेरी क्लब गॉल्फ कोर्ट, कोठियाँ।
बीच में सरकती कारें, नायलन टेरेलिन
बाबड हेयर, हँसी का टेक्स्चर—
छायाओं के ताने म बाने सी
बार-बार बुनी जाती लकीरें—
सब मिलकर एक विशाल जाल बुनता जा रहा है
जाल-लचकीला—
झटका दन पर धुरी से फैलता
खींचने पर बाँध लेता—गहन आलिंगन में।

मैं पदातिक,
इस जाल में मक्खी सा
उलझ गया हूँ।
इतना प्रकाश, इतनी भाग-दौड़
इतना ड्रेस रिहर्सल ?
सब है पर उसे निष्कासित
किये जाने की गंध में डूबा।
आखिर क्या है जो
निष्कासित है ?
कौन है ?

रात बारह बजे
इस रास्ते से पैर घसीटता लौटता हूँ—
सभी कच्चे गले की,
दूध-सी गीत गंध का झोंका
मुझे जिला जाता है।
कुचले फन-सा आहत
एक स्वप्न जगता है,
खड़ा होता है झूमता है।
आँखों में अंजन-सा
अंधकार
नयी आँख देता है।
सड़क से नीचे
गहरे नाले में पुल की छाया में—
एक पुरानी मज़ार पर दिये जलते हैं।
भीड़ है, बीच में कच्चा शिशु-कण्ठ
और नये पत्ते-सा चिकनाया गीत।

धुप अंधेरा, काली आकृतियों
के चेहरों पर थिरकन कर बहती
तैलाक्त रोशनी—
इतने सारे लोग कहाँ से आ गये ?
क्या बाम्बियों से रेंग कर निकले ?

मैं सहम जाता हूँ
पर दबा कर रेलिंग तक
जाता हूँ, देखता हूँ।
डरते डरते झाँकता हूँ—
डरता हूँ कि कहीं मेरे
झाँकने से ये चौकन्ने न हो जायँ।
मेरा बन्धन काट कर मुझे मुक्त करने के लिए आये
ये बनजारे कहीं वैसे ही न लौट जायँ
मुक्त बिना मुक्ति दिये ही।
रेलिंग पर झुके एक तन्द्रा घेर लेती है
स्वप्नाविष्ट-सा मैं ऊँघ सो जाता हूँ
सड़क पर खड़े-खड़े ही
नीचे उतर जाता हूँ
और ऐसे ही
लोकान्तरित हो जाता हूँ। ●

दो कविताएँ • नेमिचन्द्र जैन

हम वही हैं जो हम नहीं हैं।
भाव जो कभी मूर्त न हुए
शब्द जो कभी कहे नहीं गये
जीने की व्यथा में डूबे हुए स्वर
जो ध्वनित नहीं हो पाये
राग नहीं बने।
जीवन के अचीन्हे सीमान्त के
चरम क्षण
होने न-होने के,
अपनी अनन्तता में ठहरे रहे
निरन्तर अपनी अतीन्द्रिय सम्पूर्णता में
जीते रहे
पर जीते नहीं भोगे नहीं गये।

आकार-रूप-हीन आघात
जो बस सहे ही गये
अनजान अनचाहे।
आँखों का कोरा म
उमड़े हुए आँसू-से अनचाहे
अटके ही रहे झरे नहीं।
वही हैं हम
जो नहीं हैं। ●

●

आओ
अब कोई भय नहीं
असमंजस नहीं।
दीपमाला सजी तैयार है
आरती का थाल सज चुका
है बड़ी धूमधाम अब
तुम्हारे प्रतीक्षित आगमन की।
अब तो
तुम्हारी अप्रतिम सुन्दरता ही
हमारी आकांक्षा के प्याला में
भरी है छलाछल
तुम्हारी अपरिचित पावनता
वंदनवारा सी बंधी है हमारे द्वार-द्वार
तुम्हारी अपरिमित उदारता की
लगी है गली-गली हाट जगमगाती हुई।

विश्वास करो
हमने सारा विवेक
कर्तव्य-अकर्तव्य का ज्ञान
नई लान मिट्टी-सा
तुम्हारे पथ म बिछाया है,
रंगबिरंगी झंडियाँ लटकाने को
अपने ऐंठ कर रस्सियाँ बट ली हैं,

करुणा के घटों को बंद कर
हमने उन पर
नारियल ढक दिए हैं
तुम्हारे भाग में
मंगल चिन्हों के रूप में रखने के लिए।

हमने पहचान लिया है
आस्थाएँ तुच्छ हैं,
इसलिए हमने अपने ही पैरों से
उनकी छायाओं के वक्षस्थल
कुचल कर
अपने अदम्य उत्साह के आघात
उन पर अंकित कर दिए हैं

अब और कोई क्षमा नहीं
विश्वास करो
और कोई संशय नहीं
कोई डर नहीं
किसी दुविधा का द्वन्द्व का।

आओ
हम आज अपने अस्तित्व को मिटाकर
सर्वथा विसर्जित कर
तुम्हारे ही एकांत स्वागत में
पूरी तरह प्रस्तुत हैं
तत्पर हैं। ●

मध्याह्न • बालकृष्ण राव

आँखें ज्योंही खुलीं, पड़ गयी
अनायास ही दृष्टि, गड़ गयी
पूर्व क्षितिज से बढ़ने, प्रतिपल बढ़ने
ज्योतिर्बिंदु पर।

भुला न पाऊंगा वह भोर
खिंचा जा रहा था मन बेबस
प्रभामयी प्राची की ओर—
रुक न सका मैं,
चला अनुसरण करता मन का
पकड़े एक सुनहली डोर।

चलना सहज धर्म था उस पल
प्राणवान का,
तनकर सीधे खड़े वृक्ष भी
दीख रहे थे
गड़े हुए से—
स्थावरता की आत्मग्लानि में।

रुका न पलभर
चलता रहा अथक अविराम—
अनजाने ही भाग रहा था
अपनी अनुगामिनि छाया से।

आगे सीधी सुगम राह थी,
प्रतिपल बढ़ती हुई चाह थी
अनदेखे को अनजाने को अपनाने की
कुछ खोकर भी कुछ पाने की,
जो अपने में समा न पाया
उसमें स्वयं समा जाने की।

चलता रहा प्रकाशित पथ पर
ज्योति-स्रोत को लक्ष्य मान कर—
कानों में थी गूंज रही जीवंत रागिनी
गति की
अविरत गति की,
मुखर हो उठी प्रतिक्रिया मन में मन की,
मति की
मैं मंत्रमुग्ध-सा चलता रहा।

बढ़ता गया मार्ग पर मैं निर्भय निःशंक,
अपना ही गतिमयता का आतंक
—और आकर्षण
मेरा सम्बल था।

पल-पल बढ़ता जाता था दिन का प्रकाश
पग-पग घटती जाती थी
अनुगामिनि स्मृतियों की छाया—
ज्यों ज्यों आगे बढ़ता रहा
निकटतम पाता रहा सिमटती छाया अपना।

अब यह दिन का मध्यबिंदु है
खड़ा हुआ हूँ मैं प्रकाश का छत्र तानकर—
छाया मेरी
वह अवशिष्ट अंश मेरी अनुभूत निशा का
कहाँ गयी वह ?
—कहीं खो गया है प्रकाश की
एक किरण बन
या विलीन हो गयी अंधेरे अवचेतन में ?
गड़ा हुआ स्मृतियों में तम में
मैं प्रकाश का छत्र तानकर खड़ा हुआ हूँ। •

स्फटिक प्रश्न • भवानीप्रसाद मिश्र

होश मुश्किल चीज है
वह इन दिनों
मुश्किल से टिकता है।
मैं अभी बेहोश हूँ।
दिख रहे हैं जो
मुझे उड़ते हुए घन,
जो बरसना भूल कर
आषाढ़ भर उड़ते रहे हैं।

होश शायद खो दिया है
इन घनों ने,
क्योंकि घन आषाढ़ के
बा-होश हों तो
बरसते हैं,
और हिन्दुस्तान के
वन बाग—सब कुछ
सरसते हैं।

घन नहीं बरसे
न सरसे बाग वन!
हाय रे, बेहोश जब
बेहोश घन!

होश, मुश्किल चीज़ है
बे-होशियों के बीच से
कैसे खिंचेगा,
और हिन्दुस्तान का
वन बाग—सब कुछ
किस तरह फिर से सिंचेगा?

किन्तु यह तो
प्रश्न भर है,
कोई यह मत मान लेना
मुझे उत्तर चाहिए
इस प्रश्न का!
मुझे उत्तर की नहीं उम्मीद है।
पूछ भर लेता हूँ मैं तो
हवा से जैसे कि मन में
जब कभी कुछ प्रश्न उठते हैं।

सुबह होती है
धुआँ उठता है घर के छप्परों से

गाँव में,
और जुम्बिश एक
घर से निकल पड़ने के लिए
आकर समा जाता है
मेरे पाँव में !
पाँव मेरे जिस दिशा में
गति सहरते हैं
वह दिशा उत्तर नहीं
होती कभी
वह प्रश्न होती है !
प्रश्न की आदत मुझे
हो गई है
शुभ उत्तर की
कभी खो गई है !

ज़िन्दगी मेरी समूचा
प्रश्न है ।
प्रश्न मेरा तीव्रतर
होता घने
देहातियों के बीच भी
यह लालसा है ।
लोग सुनकर प्रश्न मेरा
कहें यह क्या काल-सा है ?
प्रश्न मेरे प्रश्न भर
पैदा करें !—
अभी उत्तर की नहीं है
लालसा ।
होना मुश्किल चीज़ है
प्रश्न हरे धार-सू से जब,
निरन्तर,
हवा पूछेगी पवन पूछेगा
पूछेंगे उजड़ते खेत,

जब नदी पूछेगी
पूछेगी पहाड़ी
और पूछेगी उठाकर सिर
गगन तक
निपट फली रेत।
तब समेटेंगे बिखरते होश
ये आषाढ घन,
और तब सरसगे
मेरे देश के
उजड़े हुए हर बाग, वन !

प्रश्न चारों ओर से आओ
उठो बेचन मेरे प्रश्न
चारा ओर से गाओ
कि यह क्या हो रहा है ?
उठा, जसे कि कोई चाँद उठता है गगन म,
उठो जसे कि कोई गान उठता है पवन म
उठो, जैस कोई बीमार उठता है,
उठो, जसे लहर कर ज्वार उठता है
उठो, जसे कुतूहल की घड़ी म
घू घट उठे हा,
उठो जैसे आग लगने पर
लबालब घट उठे हा'
उठो जसे घट उठे हा '
देखकर पानी,
उठो, जस हो उठी
भयभीत की वाणी,
उठो जसे उठे प्रभु का हाथ !

उठो मेरे प्रश्न सुख मे साथ !
चाँ म
बीमार में
घू घट म
घट म
आग म
पानी में

ज्वाला में
लपट में
उठा मेरे प्रश्न
चारों ओर से
उठा है, उछर पुकारो ज़ोर से
क्या हो रहा है ?
कौन है जो सो रहा है
नींद सुख की,
आग जब घर में लगी है ?
कौन है जो बुझाने बढ़ता
नहीं है ?
कौन है जो और
भड़काना ज़रूरी समझता है
आग को ?
कौन है जो एक
सुविधा समझता है
जल रहे इस बाग को ?
कौन है, जो सोचता है
रास्ियाँ सकेंगे
भड़क आग;
कौन है यह कौन है
यह कौन है
सब प्रश्न मेरे जाग।

जागा प्रश्न मेरे,
देश को घेरे रहा बनकर
कवच।
तुम फिरो जैसे कि जैसे
फिर रहा हो स्फटिक-पत्थर-स्वच्छ
गाज़ से निकलकर
टूट जायें मुँह
गलत उत्तर न निकले। ●

जब नदी पूछेगी
पूछेगी पहाड़ी
और पूछेगी उठाकर सिर
गगन तक
निपट फली रेत।
तब समेटेंगे बिखरते होश
ये आषाढ़ घन,
और तब सरसेंगे
मेरे देश के
उजड़े हुए हर बाग, वन!

प्रश्न चारों ओर से आओ,
उठो बेचैन मेरे प्रश्न
चारों ओर से आओ
कि यह क्या हो रहा है?
उठो, जैसे कि कोई चाँद उठता है गगन में
उठो, जैसे कि कोई गान उठता है पवन में
उठो, जैसे कोई बीमार उठता है,
उठो जैसे लहर कर ज्वार उठता है
उठो, जैसे कुतूहल की घड़ी में
घूँघट उठे हों,
उठो जैसे आग लगने पर
सवालब घट उठे हों;
उठो जैसे पट उठे हों।
देखकर पानी
उठो जैसे हो उठी
भयभीत की वाणी;
उठो जैसे उठे प्रभु का हाथ!

उठो मेरे प्रश्न सुख के साथ!
चाँद में
बीमार में
घूँघट में
घट में
आग में
पानी में

ज्वाला म
लपट में
उठो मेरे प्रश्न
चारो ओर से
उठो हे, उठकर पुकारो ज़ोर से
क्या हो रहा है ?
कौन है जो सो रहा है
नींद सुख का,
आग जब घर म लगी है ?
कौन है जो बुझाने बढ़ता
नहीं है ?
कौन है जो और
भड़काना ज़रूरी समझता है
आग को ?
कौन है जो एक
सुविधा समझता है
जल रहे इस बाग को ?
कौन है, जो सोचता है
रोटियाँ सकेंगे
भड़के आग,
कौन है वह कौन है
वह कौन है
मय प्रश्न मेरे जाग।

जागा प्रश्न मेरे,
देश को घेरे रहा बनकर
कवच।
तुम फिरो जसे कि जैसे
फिक रहा हो स्फटिक-पत्थर-स्वच्छ
गोफन से निकलकर
टूट जायें मुह
गलत उत्तर न निकले ! ●

गीत

माखनलाल चतुर्वेदी

यह समर्पण यह तुम्हारे नेह का वरदान
भूमि से विद्रोह कर गदरा उठे तरुराज
चाँद ने रस वायु ने आनन्द श्री का राज
सूर्य ने दे रूप सुन्दर का सजाया साज
फूल आये, फल उठे, उन्मत्त होकर आज।
देख इनका रूप रस शरमा गया अभिमान
यह समर्पण यह तुम्हारे नेह का वरदान॥
फूल ने गिर, मातृ भू पर कर लिया अभिषेक
और फल ने प्राण देकर निज निभाई टेक
नम्रता लख रूप से सकुचा अनन्त विवेक
बोल उट्ठा, तुम धरा के गर्व एक, अनेक।
आज मैं विद्रोह का समझी सखे प्रतिमान॥
यह समर्पण, यह तुम्हारे नेह का वरदान॥
यह उठे से शीश यह कलियाँ भरा अभिसार
मन्मथ की गुस्ताखियाँ, तिस पर धरा का प्यार
फूल का गिरना फलों का स्वाद रस का रूप
यह परम विद्रोह यह बलि-पंथिया का भूप
इस प्रणय-पथ में प्रलय धुन गा उठे बलिदान॥
यह समर्पण यह तुम्हारे नेह का वरदान॥ ●

शहर एक जादूघर •

रामदरश मिश्र

सड़कों पर सफेद सफेद कफन उतराये हैं
जिनके नीचे
चलती फिरती लाशें गाँधी का नाम जप रही हैं
और हर नाम के साथ
गले के नीचे उतार लेती हैं एक टुकड़ा
जीवित आदमी का
अँधेरे में घृणा से थूक देती हैं
सत्य की प्रतिमाओं पर

यह लोहे का एक विशाल पुतला है
आश्रम के मुख-द्वार पर खड़ा किया गया।
इसके ढीले सफेद वस्त्र के नीचे
छाती में एक छेद है
वहाँ कुंजी ऐंठ देने से
यह हाथ उठा उठा कर
तरह तरह की आश्रमी बोलियाँ बोलने लगता है
और रात को इसकी खोखली पीठ में
आश्रम के रद्दी कागज, बोतल के टुकड़े
भर कर ताला मार दिया जाता है

खण्डहर में बैठा यह मरा हुआ पहरेदार
रखवाली कर रहा है खण्डित मूर्तियों की
इसके ओठों पर निराला का नाम
रह रह कर फड़क उठता है
और एकाएक उठ कर
हाथ में पड़ी काठ की तलवार माँजने लगता है
जब कोई निराला निकलता है
नये लिबास में।

बड़ी-बड़ी दीवारों के ललाट पर
रंगीन पोस्टरों के चेहरे मुस्करा रहे हैं
फटे हुए चेहरों पर चेहरे और चेहरे
इन हँसते हुए चेहरों पर
आँख घसाये राहें गुजरती हैं
और रुक जाती हैं
दीवारों के पीछे से एक अलसेशियन कुत्ता
गुर्रा रहा है।

ये मीनारों-सी उठी उठी चोटियाँ
हवा का रुख चाहे किसी ओर हो
इनसे निकलता हुआ धुआँ
झोंपड़ियों की ओर छा जाता है
और प्रकाश बड़े बड़े मकानों की ओर।
चाँदनी से लिपटा हुआ ताल....
नीले जल में थरथराती हुई युग्म परछाइयाँ
आतुर हैं मिलने को
हवा में तरती हुई खुशबूओं की अनजान पुकारें
सबका नाम लेकर बुला रही हैं
तभी पास के चिड़ियाघर में बन्दी
जंगली जानवर दहाड़ने लगते हैं
और रोने लगती हैं जल की अतल-
गहराई में सैंकड़ों आवाजें। ●

यात्रा के बाद • शम्भुनाथसिंह

रोज रोज वे यात्राएं नहीं होतीं
जिनसे लौटने के बाद
शक्लें बदल जाती हैं
गर्दन बहुत लम्बी हो जाती है
इतनी लम्बी कि सिर
आकाश में कहीं खो जाता है

और धरती
कदम्ब के पाँवों में
बँधा रह जाता है।
फिर
देशों में घूमते दिक्‌चक्र में
रङ्ग ऐसे घुले हुए रंग
हर कहीं बिखर जाते हैं
शरीर फूलों की गन्ध में घुल जाता है।
और धरती पाँवों से छूट जाती है
रूपों आकृतियों से हीन
काल के उस अनन्त विस्तार में
गन्ध के रन्ध्रों से जो स्वर उठते हैं
वे अभाग्य होते हैं
सूर्य उन्हें कमल-नाल की तरह
खण्ड-खण्ड कर देता है
जिनके बीच के तार अदृश्य होते हैं।
अथाह जलराशि में डूबी
धरती की तरह
अँधेरे में सब ओर से बन्द आँख
उन खण्डित स्वरों को देखता है,
उन्हें सुन नहीं सकता,
और जो उन्हें सुनता है
या सुन सकता है
उस अँधेरे को वे आँखें
देख नहीं पाता। ●

सारनाथ की एक शाम

(कवि त्रिलोचन के लिए)

इस किनारे तो
ये आकाश के सरगम
खनिज रंग हैं
बहुमूल्य अतीत हैं
या शायद भविष्य

तू किस
गहरे सागर के नीचे
के गहरे सागर
के नीचे का
गहरा सागर होकर

खिंच गया है
अथाह शिला से केवल
अनिद्य अवण्य मछलियां के विद्युत
गुम्फ मनन हैं
अपने सुख के लिए
(सुख तो व्यय में ही है
और कहाँ
युग दर्शन
मित्र
छन्द का अपना ही
छन्द है
सर्वोपरि मधुर मुक्त
और कितना एकन्द्र बट
प्रेम
अथवा मौन अधिक
यद्यपि व्यभिचार ही आधुनिकतम
काव्य बना है आज

और आलोचना के डाक्टर
(उन्हें मनोज भी कहते हैं)
शब्द का परिष्कार
स्वयं दिशा है
यही मेरा आत्मा हो
आधी दूर तक
तब भी
तू बहुत दूर है बहुत आगे
त्रिलोचन

एक कोलाहल जो कल्पना में भरा हुआ है
सुनकर
तू विक्षुब्ध हो हो उठता
क्या उपनिषदों का शोर
उसे दबा पाता

वरुणा के किनारे एक चक्रस्तूप है
शायद वहीं विश्व का केन्द्र हो
वहीं कहीं
सुना तो है
आधुनिकता
डूब रही है
किसी कापल के
ओंठ पे उभरी
प्यास के
महासागर में
तो फिर क्षोभ क्या

ये शताब्दियाँ
सॉनेट से मुक्तछन्द बनकर
संस्कृत वृत्तों में उन्हें बाँधा सहज ही लगभग
मैं मन ये आवारा बंधा हुआ है अन्तर
सरगम के अट्टहास में

ओ शक्ति के साधक सम्यक पथ के साधक
तू धरती को दोनों ओर से
थामे हुए ओर
आँख मींचे हुए ऐसे ही मूँद रहा है उसे
पाल मद से

तुझे केवल मैं जानता हूँ
क्योंकि

मैं वही
उसी धरती में लोट रहा हूँ उसकी
ऋतुओं की पत्तों सा बिछा हुआ मैं
उसकी ऊष्मा में
सुलग रहा हूँ अपनी गहरी
शान्ति के लिए

एक वासंती साम झलक जो मेरे
अंक से छीन कर चाँद लुका लेता है
खींच ले जाती है प्राण मेरा
उस पार ओर
उस पर भी है तेरी दृष्टि

आन्तरिक प्रशान्त
गंगा के किनारे का वह पथ
मौन ऊष्मा। •

• शमशेर बहादुरसिंह

बुखार में कविता •

श्रीकान्त वर्मा

मेरे जीवन में ऐसा वक्त आ गया है जब
खोने को
कुछ भी नहीं है
मेरे पास—
दिन दोस्ती रवैया राजनीति
गपशप, घास
और स्त्री हालांकि वह
बैठी हुई है मेरे पास
कई साल से।
क्षमाप्रार्थी हूँ मैं काव्य से
मैं जिसके सामने निहत्था हूँ
अपंग हूँ—
मुझे न किया न
प्रस्तावित किया है
न पग।
मंच पर खड़े होकर
कुछ बेवकूफ चीख रहे हैं
कवि में आस्था रखता है
सारा देश।

मूर्खों! देश को खोकर ही
मैंने प्राप्त की थी यह कविता
जो किसी की भी
हो सकती है
जिसके जीवन में वह वक्त आ गया हो
जब कुछ भी नहीं हो
उसके पास
खोने को
या न उम्मीद करता हो

न अपने से छल
जो न करता हो प्रश्न
न ढूंढता हो हल।
हल ढूंढने का काम कवियों ने ऊब कर
सौंप दिया है
गणितज्ञ पर
और उसने राजनीति पर।

कहाँ है तुम्हारा घर? अपना देश खोकर
कई देश लाँघ
पहाड़ से उतरती हुई
चिड़ियों का झुंड
यह पूछता हुआ ऊपर ऊपर
गुजर जाता है
कहाँ है तुम्हारा घर?
दफ्तर में? होटल में? समाचार पत्र में?
सिनेमा में? स्त्री के साथ
एक खाट में?

नाव
कई यात्रियों को उतारकर
वेश्याओं की तरह थकी पड़ी है
धार में।

मुझे दुख नहीं मैं किसी का नहीं हुआ।
दुख है कि मैंने सारा समय
हरेक का होने की
कोशिश की प्रेम किया
प्रेम करते हुए स्त्री के कहने पर
भविष्य की खोज की
और एक दिन
सब कुछ पा लेने की तरह" पर
लिखा एक द्वार एक

डाइंग रूम।

भविष्य वर्तमान के लाउंज की तरह
कहीं आकर
खुल जाता है।
कोई
कोई आता है।
सुनाई पड़ता है किसी के
पैरों की चाप·
कोई मेरे जूतों का माप
लेने आ रहा है।
मेरे तलुए घिस गये हैं
और फीतों का चाबुक
हिला-हिला
मैंने आसपास की
भीड़ को
खदेड़ दिया है
भगा दिया है।
औरों के साथ
दगा करती है
दुनिया,
मेरे साथ मैंने दगा किया है।
पछताया नहीं।
यह एक कानून था जिसमें से होकर
मुझे आना था।
असल में यह एक बहाना था
एक दिन
अयोध्या से
जाने का।
मैं अपने कारखाने का
एक मजदूर भी
हो सकता था।

मैं अपना अफ़सोस
खो सकता था
बाज़ार में सान का।
बेचैन हो सकता था
कविता सुनाने को
फिर से एक बार इस
और उस और उस
पाने को।
लेकिन एक बार उड़ जाने के बाद इच्छाएँ
लौट कर नहीं आतीं
किसी और जगह पर
घोंसले बनाती हैं।
विधवाएँ बुदबुदाती हैं
रंडापे पर
तरस खाती हैं
बुढ़ापे पर।
नौजवान स्त्रियाँ
गली में
ताक झाँक करती हैं।
चेचक और हैज़े से
मरती हैं बस्तियाँ
कैन्सर से हस्तियाँ
अकाल रक्तचाप से
कोई नहीं मरता
अपने पाप से।
धुआँ उठ रहा है कई माह से।
दिन चला जाता है
मार कर छलाँग
एक खरगोश-सा।
बन्द होने वाली दुकानों के
दिल में रह जाता है कुछ-कुछ
अफ़सोस-सा। ●

अन्य भारतीय कविताएँ

•

बगला, उर्दू,
मराठी, गुजराती,
पजाबी, अंग्रेजी
मलयालम, तमिल,
कन्नड तेलुगू,
उडिया, राजस्थानी कविताएं

•

मैं अपना अफसोस
दबा सकता था
बाज़ार न जाने को।
बेचैन हो सकता था
कविता सुनाने को
फिर से एक बार इस
और उसे और उसे
पाने को।
लेकिन एक बार उड़ जाने के बाद इच्छाएँ
लौट कर नहीं आतीं
किसी और जगह पर
घोंसले बनाती हैं।
विधवाएँ बुदबुदाती हैं
रंडापे पर
तरस खाती हैं
बुढ़ापे पर।
नौजवान स्त्रियाँ
गली में
ताक-झाँक करती हैं।
चेचक और हैज़े से
मरती हैं बस्तियाँ
कैन्सर से हस्तियाँ
वकील रक्तचाप से
कोई नहीं मरता
अपने पाप से।
धुआँ उठ रहा है कई माह से।
दिन चला जाता है
मार कर छलाँग
एक खरगोश सा।
बन्द होने वाली दुकानों के
दिल में रह जाता है धुक-धुक
अफसोस-सा। ●

अन्य भारतीय कविताएँ

बंगला, उर्दू,
मराठी, गुजराती
पंजाबी, असमिया
मलयालम, तमिल,
कन्नड़, तेलुगु,
उड़िया, राजस्थानी कविताएँ

मैं अपना अफसोस
हो सकता था
बाजार में लाने को।
बेचैन हो सकता था
कविता सुनाने को
फिर स एक बार इस
और उसे और उसे
पाने को।
लेकिन एक बार उड़ जाने के बाद इच्छाएँ
लौट कर नहीं आतीं
किसी और जगह पर
घामले बनाती हैं।
विधवाएं बुड़बुड़ाती ह
रंडापे पर
तरस खाती हैं
बुढ़ापे पर।
नौजवान स्त्रियाँ
गली म
ताक-झाँक करती हैं।
चेचक और हैजे से
मरती ह बस्तियाँ
कैन्सर से हस्तियाँ
बकौल रक्तचाप से
कोई नहीं मरता
अपने पाप से।
धुआँ उठ रहा है कई माह से।
दिन चला जाता है
मार कर छलाँग
एक खरगोश सा।
बन्द होने वाली दूकानों के
दिल में रह जाता है कुछ-कुछ
अफसोस-सा। ●

अन्य भारतीय कविताएँ

बंगला, उर्दू,
मराठी, गुजराती,
पंजाबी अंग्रेजी,
मलयालम, तमिल,
कन्नड तेलुगू,
उड़िया राजस्थानी कविताएँ

पहली कविता

विनय मजूमदार

अंधेरे में खाने दो —सभी की यही इच्छा है
पता क्या है, फल है या मिठाई या शराब—
वयस्का मुग्धा या प्रौढ़ा सिद्ध-यौवना
किन्तु हाय मेरी रसना
प्रणय प्रसंग के पहले ही हो गयी रूप
गन्ध रस से मूर्च्छित जड़। कभी मुझे लगा था,
कि हीरे की चकमती हुई आंखों से
स्वयं को प्रतिबिम्बित देख रहा हूँ—मत्र,
जाग्रत वासना की स्थिति में भी
नहीं देख पाता हूं विकसे हुए बसे हुए फूल।
क्या देखूं ? मानसी बनाओ क्या ?
लगता है, चांदनी नहीं है अंधेरा मुंह बाये है
और, चारों ओर काली दरारें खिलखिला रही हैं
और में एक अबोध शिशु
किसी वृद्धा की गोद में छिपा सुन रहा हूँ
प्रेतों की कहानियाँ। •

गुप्तचर

शक्ति चट्टोपाध्याय

जैसे खिड़कियाँ टूट जायेंगी, इतनी तेजी से
मुझे अपने आलिंगन में भरकर
गम मनाओं से दागकर मेरी छाती, बार-बार
चला गया समय। और अब प्रति क्षण
बंधे हुए पागल घोड़े की तरह पश्चाप
हर दिशा के नीचे पत्थर पर बजती रहती है।

गुच्छवर अपना परिचय दो,
और तोड़ो किसी एक फूल का नाम कह जाओ,
कह जाओ नहीं तो देखते ही यह छुरी
तुम्हारी कांति के गुब्बारे में छेद कर डालूँगा।

मैंने उसे चूम कर देखा है। नहीं है यश,
यश नहीं, सम्मान भी नहीं केवल
गर्म सलाखों का चिरस्थायी आलिंगन—
और, थकी हुई उदास वरयात्रा के प्रति
एकान्त मोह—मुक्त।
सोचता था बीमार सिर्फ देह है, मन नहीं।
सोचता था, इच्छाओं का मन्दिर
और जंगल यहीं है मन नहीं।
जो भी हो इसी खिड़की के पास खड़ा रह जाऊँगा
सारे दिन सारी रात यों ही बिताऊँगा। ●

नारी-नगरी

सुनील गंगोपाध्याय

उसे बुलाओ और कहो इतनी गहरी रात के बाद
नहीं दिखाये अपनी खुली छातियाँ नीली रोशनी
और सड़कें-गलियाँ अब तक क्यों जगी हैं?
यह शहर सोना नहीं जानता है फिर,
टेबल और पालना के पास पड़ा रेंगता क्यों है?
यह कलकत्ता-शहर!
घर के साथ छान और खाना पकाने के सिवा
सारे काम औरतें जानती हैं मगर,
सारे काम गलत जानती हैं, इस शहर के ड्रेनेज
और हार्डबोर्ड की तरह—दूर तलक
छतियों में थम जाता है, अधर में
अचानक में इस मकान के पास आते ही ठहर जाती है।

चुप हो जाती है मरी हुई झिल्ली।
यह शहर सारे काम जानता है वेश्याओं की तरह
कुत्सित नालियों पर गुलाब के पौधे जमाना—
भी एक बड़ा काम है।
ठण्डी और नंगी देह पर अनगिनत मर्द सोये हैं
राम-कृष्ण का नाम जपती रहो
उसी को बुलाओ और पूछो और कब तक
इसी तरह सोये रहना होगा इसी तरह—
नीमतल्ले में, असेम्बली में जासूसी किताबों में
फटी हुई जेब में कब तक जेबकतरों का हाथ
जाता रहेगा? ●

अनुभव

मानस रायचौधुरी

तुम्हारा शरीर अक्सर चुप ही रह गया। सिर्फ मेरी ये
उंगलियाँ, झरे हुए पत्तों की तरह सूख गयीं
और युद्ध नहीं हो सका गर्म अंधेरे में। और युद्ध
नहीं हो सका। बुरा नहीं हुआ
बातचीत की बेबसी खिड़कियों में डूब गयी रोशनी,
सड़कों पर हजार-हजार पाँवों की धूल
क्या तुम्हारी बाँहें सवाल बन गयी थीं? क्या?
दूसरों का जीभ का स्वाद हम नहीं बनें
नहीं बनें दूसरों की बातचीत।
बुरा नहीं हुआ अगर वह कुछ नहीं हुआ,
जो उंगलियाँ नहीं होती हैं। ●

उर्दू कविताएं

कल

रफ्त सरोश

कल क्या होगा ?
दुनिया एटम बम का सुरमा बन जाएगी
याकि समन्दर एटम बम के जहर का
अपने जाम म भरकर पी जाएँगे
कल क्या होगा ?
यह तुम सोचो
तुम बेफ़िक्र
फ़ुरसत में हो
मैं तो एक एसा पक्षी हूं
जिसकी किस्मत
गुलशन गुलशन
सहरा सहरा
उड़ना है और दाने चुगना
आज की खातिर ! ●

तुम्हारे खत

निदा फाज़ला

कल तुम्हारे खत
लिप्यन्तरण रईस अजमरी

वो खत जो तुमने लिखे थे कभी कभी मुझको
मैं आज सोच रहा हूँ उन्हें जला डालूं !
बुझा बुझा-सा चला आ रहा हूं ऑफ़िस से
दिमाग गुम है जलते हुए तवे की तरह
नईफ़ हाथों से फिर फ़ाइलों के गारों में
उदास दिन का हिमाला गिरा के आया हूँ
सुलगता आग-सा सूरज धरा के आया हूँ !
बदन निढाल है उस नौजवाँ सिपाही-सा
कई महीनों से औरत मिली न हो जिसको
गुनाह जिस्म को जन्नत मिली न हो जिसको

यह गीतकार निगार फ़ाज़ली जिसे तुमने
कभी नशिस्ता में देखा था गुनगुनाते हुए
ख़यालो—फ़िक्र की कौसो कुज़ह छिपाते हुए
हवा-ए-वक़्त से एक बुलबुला-सा फूट गया
ग़मे हयात के पत्थर पे काँच टूट गया

थके बदन को फ़राग़त चारपाई आना है
बजाय याद के अब मुझको नींद आती है। ●

इल्तजा

शहरयार

कहाँ हो कहाँ हो
नई सुबह की मेहरबाँ नर्म किरनो
मेरा जिस्म मुझसे बग़ावत पे आमादा है
काँपता है मेरा रूह
आओ बचाओ
मुझे शब के ज़िन्दाँ से बाहर निकालो
मैं दिन के समुन्दर की गहराइयाँ नापना चाहता हूँ। ●

नींद

जावेद कमाल

नींद आँखों में है कम-कम मुझे आवाज़ न दो।
जाग जायेगा कोई ग़म मुझे आवाज़ न दो।

नीम ख़ामोश है नाले रगे जाँ का हर तार
तार हो जायेंगे बरहम मुझे आवाज़ न दो।

बाद मुद्दत के ज़रा दिल को क़रार आया है।
जाने क्या दिल का हो आलम मुझे आवाज़ न दो।

यूँ भी रफ़्तारे दिले ज़ार है मद्धम मद्धम
और हो जायेगी मद्धम मुझे आवाज़ न दो। ●

---

१ इन्द्रधनुष २ पक्षी ३ कल ४ सिपाही ५ अधूरे

ग़ज़ल

राही मासूम रज़ा

ज़िन्दगी के नाम पर मरना पड़ा
फिर भी यह सौदा बहुत सस्ता पड़ा।

ग़ैर खुश हैं दोस्त भी मारे गये
हर निशाना आपका उलटा पड़ा।

लोग यह समझे हम उनसे डर गये
हमको चुप रहना बहुत महँगा पड़ा।

तिश्नगी[1] बढ़ती गई बढ़ती गई
राह में शबनम मिली दरिया पड़ा।

धूप में रहकर भी गाये जिसके गीत
हम पे कब उस ज़ुल्फ़ का साया पड़ा।

क्या सुनायें साहिल-ए दरिया-ए[2] शौक़
रास्ते में प्यास का सहरा[3] पड़ा। ●

इन्तज़ार नींद, ग़ज़ल
(लिप्यन्तरण : कुँवरपालसिंह)

---

१ प्यास २ प्यार का सागर ३ जंगल

लघ्वारण्यकोपनिषद्

प्रभाकर माचवे की तीन कविताएँ

कोरे कागज
वाणी गद्‌गद
चित्त बेखबर
सत्य वध । •

परोपजीवी

खायें कैलिफोर्निया का मक्का
पियें ताशकन्द की वोद्‌का
घर की इस रोटी का
दुतकारा फेंका ।

आत्मप्रकाश बरजें
आँखों पर स्वयं ही बाँध
इस्पाती शीशा
और लड़खड़ाते दौड़ें
मृगजल के पीछे । •

दुख का हिम

निष्पर्ण
नितान्त नंगे
पेड़ों के पिञ्जर
सहस्रों शाखा भुजाएं
टेरतीं आकाश को
हिम को बरसने दे—
प्रस्तुत हैं हम सब
झेलेंगे सह लेंगे ।

लेकिन यह अंकुर
बोलो तो करें क्या ?
यह अभी खड़ा है
पत्तों का छप्पर
उसने न देखा है ।
आत्मा के अंकुर को
दुख का हिम याद नहीं । •

अभंग*

वा० भ० बोरकर

राह किनारे बैठा कोई सूरदास गाता है
दिया-दिशा में जल में फैला भगवा रंग
प्रकाश की गति से पल भर में
आसमान-सा हो जाता है उसका सरल अभंग ।

भीग रहा है एकतारा आँसू की भर लागी
जहाँ का वहाँ जल मछलियों का जमकर रह जाता है

* छन्द विशेष अविच्छिन्न ।

जल्दी जल्दी जाने वाला राहगीर वह कोई
बीच राह म वक्स होकर खोकर रुक जाता है।
जान भिखारी पात्र दया का छोटा सिक्का
डाल दिया है उस पर दया दिखाकर
और काम पर हक्कन आँखें भाग रहा वह आगे
गायन को मन म धारे बिन अभग को दुतकारे। ●

अभिसार क्षणों की वह सुगंध
और
धीमे धीमे झरती हुई
आसक्ति की वह
रस धार। ●

—अनु अनिलकुमार

देर से आई बरसात

आ० रा० देशपाण्डे अनिल

●

देर से आई हुई बरसात को
हथेलियों पर झेलें,
पलकों पर होले सहेजें
माथे के पसीने में मिलाए
सिर म सीचें और उसकी आर्द्रता
पीठ पर धीरे धीरे गलने दें।
सूखे पड़े हुए ओठ खोलकर
उस ऊपर ही ऊपर चूमें पी लें।
देर स आई हुई बरसात को
उपालम्भ न दें और ढूँढें उसके दोष
मसलन उसका बहक जाना झूठे वादे करना
बहाने बनाना नियत समय पर चूक जाना
और न ही बतायें उसे अपनी शिकायतें,
जैसे राह देखना अधीर हो उठना
मन में भाँति भाँति की शंका-कुशंकाए करना,
घबराना खुद से ही कुनमुनाना
बस तो
क्षितिज की बाँहें पसार कर
दुलार प्यार से छाती स लिपटाए
और रंगीन पर बिछाकर
उसके साथ
गाटियों का मजेगार गल गर्जें। ●

अनु निकर सोनवलकर

किसी एक बरसात में

गिरीश प

●

किसी एक बरसात में
लिखे गये थे अनगिनत प्रम पत्र
प्रणय वर्षा से भीग हुए
मैं अनंत दास
कभी समाप्त न होने वाले य आश्वासन
और टूटते हुए मन को
दी गई सान्त्वनाए
पानी म भरपूर नहाई हुई
यह विरह की लम्बी रात
और यह परायापन
आकाश म फैले हुए
काले बादलों जैसा,
भीगे अंधियार म एक दूसरे को
टेरने वाली दर्द भरी आवाजें
कण कण भीगी हुई माटी की तरह
थके हुए अंग सारे
सर्द हवा की तरह बहकर आती हुई
बचपन कर दन वाली याद
इस अकेलेपन म
मन प्राण म भर जाने वाली

यहाँ भी

यौसफ मेकवान

●

अंधकार का मुलायम कम्बल ओढ़े
सोया यह शान्त पंथ
या कि कितने ही पदयात्रियों की
कथा लिखा कोई ग्रंथ।
दोनों ओर वृक्षों की यह माल
मानो पत्तों की मर्मर के रूप में
कोई आखर बाँच रहा है।

यहाँ
बीच में किसी बैताल-सा
वाहनों के शोर को श्वास में समोता
खड़ा पेट्रोल पम्प ?
नीलरंगी-काँच की दीवार पर
सो रहा प्रकाश
पास के पार्लर में तेजी से दौड़ रही हैं कार।
Happy Motoring

अन्दर ध्यान देता हूँ
पंखा घूम रहा है—उसे जरा भी चैन नहीं
कैलेण्डर में
तारीख के पन्नों की
हल्की सी सिहरन
मैं दृष्टि से अनुभवता हूँ
यह हल्की सी सिहरन प्रतिध्वनित होती है
यहाँ—भी—शहर में। ●

अश्वत्थामा

अब्दुल करीम शेख

●

स्टेज के पिछवाड़े
यहाँ ग्रीनरूम में मैं मात्र मित्रों से मिलता हूँ।
तुम्हारा श्राद्ध करने निकला मैं—

मृत्यु—
मुझे उसकी अत्यधिक आवश्यकता है
साथी।
मृत्यु को चुराने
मैं रात-दिन नकाब ओढ़ भटकता हूँ
फिर भी वह कहीं मिलती नहीं।
मित्रों से बिछुड़ा खण्ड खण्ड
मैंने मजे की जिन्दगी बिताई है
तुमसे तुम्हारे घर पर मिलते जुलते।
जब तुम शय्या पर लेटो तब
दो क्षण बादलों को धकिया कर
दहकते सूर्य की तीक्ष्ण सतह से छूटे
बाण की तरह
तुम्हें बेधते शब्द।
जब तुम शैया पर लेटो

तब
मुर्दे द्वार में जो करते हो
मुर्दे नेत्रों से जो देखते हो
मुर्दे ओठों से जो बोलते हो,
वह सब समझ चुका मैं
खेल समाप्त होते ही
ग्रीन रूम में जाकर नकाब उतार देता हूँ।
अपनी दहकती आँखों से मैं आईना
निरखता हूँ
और अमावस की रात में
आँसुओं की प्याली उतार कर

जैसे नग्न तारे चमकते हैं
वैसे ही शब्द मुख से बाहर आते हैं
और छन्दों का कवच पहन कर
किसी बिल में जा घुसते हैं .. ..

मानो मैं क्षण प्रति क्षण
छन्दों में खाल उतारता हूँ।
अपने कानों जो सुनते हो
अपनी आँखों जो देखते हो

मृत्यु—
यहाँ उसके लिए पर्याप्त स्थान है।
विपुल विनाशिता से
अंकुरित कोमल बीज
साथ
मुझे उनकी जरूरत है
यहाँ
इस मौनरूप में मैं मात्र मृत्यु से माँगता हूँ। •

असहाय कवि

हेमन्त देसाई

•

कविता की लीलामयी वाणी में
और हो ता
मौनपर्तों की हिल्लोलमयी लय में
अभिव्यक्त होने को
कितनी ही अनकही बातें
वन कुसुम में घुटघुटाती गंध सी
मेरे मन में ज्वार भर रही हैं।

श्मशान में
खोपड़ी के इर्द गिर्द भटकते
कुत्तों की लालसा का।

गमकती के हौले हौले पड़ते कदमों की
लुकी छिपी पीड़ा का
आत्मघात करने जा रहे पीड़ित व्यक्ति के
मन में चल रहे कातिल संघर्षों का
अभिव्यक्ति दे सकूँ तो कैसा ?
आयुष्य की धार पर बैठ
वृद्ध की निस्तेज आँखों में चमकते
शैशव के स्वप्न
सपेरे की टोकरी में विवश बन्द
विषहीन और रोष विहीन
सर्प-सी जवान मन की लगन
बाललीला करते कृष्ण की
बेढंगी आकृति की तरह
हृदयहीन शिशुओं के कण्ठस्थ होने को
बेचैन हैं।

ऐसे कितने ही नये नये
कविता-प्रसंग
सुनिबद्ध होने को
मुझे रात दिन सताते हैं।

और फिर भी
मेरे घर की दीवार पर
सिर पटक पटक कर क्षत विक्षत होती
विनाशप्राय संध्या की मोनी किरणों की
व्यथा का मैं अनसुना कर देता हूँ
तथाकथित मंगल प्रभातों की सुबकियाँ
सुनकर चुपचाप बैठा रहता हूँ।
झर रहे फूल का थमने में जाता नहीं—
भेस धर कर क्या ?

सम्भव है इन सबको अभिव्यक्ति देकर
मैं कृतकृत्य हो जाऊँ
किन्तु यहाँ तो ऐसा

बहुत कुछ होता रहता है
होता रहा है और अभी होगा—
न जाने कब तक ?
यूँ तो यहाँ दुख है मृत्यु है
और मृत्यु तुल्य जीवन है
किन्तु इस सबको मार
पृथ्वी की तरह धारण कर पाने को
शक्ति कहाँ है ?
और सभी कुछ कह पाने योग्य
ध्वनि भी कहाँ है ?
यहाँ वह सत्य (अन्याय की डोर से जकड़ा
मुख में दम्भ का ढूंढा भरे मूक बना)
मस्तक विहीन किसी पशु की आत्मा-सा
रात दिन मुक्ति के लिए तड़पता है।
इसके लिए मैं कुछ कर नहीं सकता ?
कुछ नहीं कर सकता।
अन्ततः तो मैं भी मोर की तरह
नाचते हुए
अपने इन मद पैरों को देख देख कर
आँसू ढुलकाता हूँ
शब्द शब्द शब्द
व्यर्थ मेरे शब्द व्यर्थ मेरी वाणी
यदि मेरे आँसू कभी शब्द बन उड़ जाएं ●

धब्बा

दिलीप जवेरी

●

पोली दीवारों में रिस कर
वर्षा के पानी ने दीवारों पर धब्बे
बना दिये हैं।
मैं तुम्हारी ओर देखता हूँ—
तुम्हारी भूरी आँखों से बिल्ली के नाखूनों जैसी
किरनें फूट रही थीं
तुम्हारी अंगुलियों के केवड़े-से कटीले
किनारों को देखते हुए
तुम्हारे वक्ष के दो पत्थरों के स्थान पर
या तुम्हारे पेट में—
जहाँ भविष्य में कई डिम्ब बुलबुलाएँगे
काल की केंचुल से निकलते क्षण की
एक एक इल्ली जिसके मस्तिष्क को कुतर
कर पोला करेगी
और जिसकी दृष्टि की दीवारों को
वर्षा भिगोयेगी—
सभी कुछ मुझे धब्बों सा दीखता है।
यहाँ शीशे में अपने आपको देखता हूँ
यहाँ भी एक बड़ा धब्बा है।
और सूर्योदय से पूर्व ही रात होने
वाली है। ●

पंजाबी कवितायें

गंदा खयाल

कृष्ण अशांत

●

कुछ दिनों से एक गंदा खयाल
खजैल कुत्ते-सा
मेरे विचारों की भट्टी में आकर
बैठ गया है।
सोचता हूँ—
ये पतिव्रत की प्रतीक मेरी पत्नी
चाँद जैसे बच्चा सहित
यदि किसी दिन अनायास मृत्यु की
गोद में सो जाय
तो
वह लड़की मेरे जीवन में
फिर से आ जायगी—शायद ! ●

निमत्रण

तारासिह

•

मुडेर पर लटकता हुआ
गुलाब का फूल
मेरी पहुंच से दूर है।
यदि
न तोडा गया ऋतु तो आयेगी
पर इसका
रूप बुझा जाएगी।
मैं क्यूं न जगा सूं
उम्र की रात
यह चिराग
दिल की मुडेर पर रख कर। •

होटल एक मजिल

सुखबीर

•

होटल म बैठा हू
चाय की चुस्किया में
अनुभव कर रहा हूं उमस।
बगरे शब्द आवाजो क बोष
टनोदे साय हुए
बगरे कसैली गघ उकताहट।
कुछ एक मजों पर चाय क कप है
और गुनगुने पानी के गिलास
मजों क इर्द-गिर्द
मैली चाय जैसे चेहरे
गुनगुने पानी जैसे आखें
यह होटल
सड़क क किनारे का एक पडाव
शहर की भाग-दौड म खड़ा।
भटकता हुआ कोई राही हो
यहाँ आता है
तल्खी पीकर
तल्खी बढ़ा कर
चला जाता है।
कुछ आने वाला के लिए
यह होटल एक मंजिल है
कुछ चेहरे यहाँ रोज नजर आते है
मेरे लिए
यह होटल एक लम्बा सफर है
जिसे मैं रोज तय करता हूं। •

युग्म

स्वर्ण

•

एक क्षण
जब अनायास थम गई हो
ब्रह्माड की गति।
जैसे रुक गई हो समय की धडक।
तुम्हारे कपोलो पर
हमार मिलन क ताजे निशान
मरे अधरों पर तुम्हारे प्यार की लालिमा
सांसो की गुथी हुई आवाज
और बाहुओं की कोमल जजीर
सुगध का रंग बिखर कर, चारा तरफ फैल
गया है।
आकाश की सतरगी आभा
एक पक्षी अपने कोमल परों को खोल रहा है
आह य क्षण—
समय के कोमल परा स
उतार कर बांध लू
समय का पक्षी तो हाथ से निकल ही
जाएगा। •

एक रङ्ग-चित्र

पी० लाल

●

आँखें दर्द में और एक ब्लाउज़ ।
एक मुस्कराहट राह पर आती हुई
(लेकिन कैसे अल्फ़ाज़ ! वह लिये गये
कैसे अल्फ़ाज़ !)
फिर भी मुहब्बत का एक दिन होता है
अपना एक शिल्प था ।

बताओ किस तरह देख पाएँ ये धुँधले लैंप
नहीं साड़ी का सुर्ख़ शोख़ रंग नहीं
— बीते बहारों की तरह सिकुड़ा हुआ,
सोया हुआ दर्द !
किस तरह देख पाएँ वे अल्फ़ाज़, जो
तुमने कहे
जो मैंने कहे ।

बेहतर है, कि यह असालतन कायम
है हमेशा
कि स्याया है वर्तमान में बीता हुआ ।
महसूस करो कि कैसे इसके रंग
पिछले अँधेरे को उजागर करते रहते हैं
और मुझे पता है (अगर तुम जानना चाहो)
कहता है अब भी मेरा प्यार
सिर्फ़ यह एक दर्द ।

आँखें नहीं मुँह भी नहीं सुलगते होंठ नहीं
छरियाँ सीना नहीं नहीं स्याह जुल्फ़ियाँ
सिर्फ़ यह एक दर्द ! ●

पशुपतिनाथ-टेम्पुल

पद्मनाथ शमशेर

●

भीख माँगना सबसे बेहतर गुनाह है
सबसे ख़ूबसूरत
मैंने यह अपने आप सीख लिया ।
मन्दिर में घड़ियाल बजें तो निकर
सम्भाल कर दौड़ो
टोपी सीधी कर लो तिरछी कर लो
माथे पर जाम पर लो—
वह सबसे आख़िर में
तुम्हारे पास आयगा ।
'मेरी बहन पागल हो गयी है' 'मेरा बाप
लन्दन के मिलिटरी कैम्प से ख़त नहीं
भेजता'
'मेरी माँ अफ़ीम मेरी माँ ~'
निकर सम्भाल कर खड़े रहो रुके रहो
वह तुम्हारे पास आयगा ! ●

मैनहटन-स्ट्रीट

वी० वी० पनिक्कर

●

मेरा कैमरा खो गया था मेरे दोस्त की
स्कैच-बुक ।
फिर भी हम जुलूस के साथ चल रहे थे
उस नाइट-क्लब तक ।
तालियाँ पीटने की आवाज़ हुई ।
भीड़ टूट गई
पुलिस उठा ले गयी शहर से
माचिस की बुझी तीलियाँ
दो गोरी लड़कियाँ पेटीकोट उतार कर
नाचने लगीं । मेरा कैमरा खो गया था
मेरे दोस्त की स्कैच-बुक ! ●

रिफ्लेकशन

सुनीता बनर्जी

•

पिघलती हुई काली आँखों की गहराई में
अभिव्यक्ति। सुन्दरता
जो अपने नाखूनों से खुरचता है दर्द!
एल्बमें कितनी तेजी से भागता है
हवा पर किसी पेड़ का लचीला डाल
पर नहीं,
कि फल मिलें।
पहचाने हुए का ही फिर से जानने की
बरकरार मुसीबत—
अनजान अब भी उतना ही अजनबी
उतना ही दूर! शरीर
चारों ओर से पकड़ा हुआ और दर्द में
अभिव्यक्ति नहीं केवल बीते हुए की
परछाइयाँ! •

४२ वीं कविता

रजनी माहन्ती

•

इस उम्र में आदमी बूढ़ा नहीं होता
क्योंकि
अब भी कुछ चुने हुए लोग
दीवार घड़ी के कोनों में मरे हुए
गिरगिट बनकर
चिपके जाते रहते हैं वक्त बेवक्त!
आदमी इन लाशों को क्रम में बाँधता है
क्योंकि
मरे हुए गिरगिट रंग नहीं बदलते
कविता को उम्र बीत जाने का डर भी नहीं!
वक्त के साथ और आदमी अपने क्रम में
वक्त से अलग अलग टँगा रह जाता है। •

परिवर्तन का एक चक्र

नारायण चिन्तामणि महाशब्दे

•

हे प्यार
क्या इस नये परिवेश का ही ऐसा है दबाव
कि हमें बहुत कुछ भूलना पड़ रहा है?
बहुत सारा भूलों को करना पड़ रहा माफ़?
पहले तो कभी हमारे मन में नहीं
आए ऐसे खयाल?

तो क्या वह दुनिया जिसमें रहते थे हम
कोई दूसरी दुनिया थी?
जिसने ढक लिया था समूचे आकाश को?
उस वासनाओं का अंत कितना सुखद
होता था

हमारे अरक्षित छप्पर पर
महा बरसती थी कोई आसुरी आँख
और एक पल के लिए भी
नहीं होती थी अनुभूति अकेलेपन की
पर अब तो लहरों से बिछुड़ा हुआ तट
ही हमारा आश्रयस्थल है
जिस पर हम रेत के अपने मनचाहे
घरौंदे बनाते हैं
पता नहीं किस शक्ति ने हमें कर दिया
ऐसा सम्पन्न
कि हमारे सपने भी टिकाऊ कर जड़ हो गए?
परिवर्तन का एक चक्र पूरा हो गया है शायद
या शायद समय की मनोवृत्तियों में से
किसी एक का ही यह परिणति?

कौन जानेगा?

फिर भी
बांध के तड़कने की दरार
दिखाई देने लगती है साफ साफ
तब हमें बहुत कुछ भूलना पड़ता है
सभी जगह, सभी स्थितियों में।

(अनु० दिनकर सोनवलकर)

देवमाल-१

राम महाबली

●

यम अपनी बड़ी बहन से कहता है —नहीं
अब और नहीं जंगल-कानून।
हम गोश्त भून कर खाएँ कमर के
गिर्द पत्ते बाँधे,
गुफा के अन्दर रखलें पत्थर के हथियार!
यम अपनी बड़ी बहन से कहता है —नहीं
अब और नहीं जंगल-कानून।
मैं नीले चेहरे वालों के गिरोह से
छीन लाऊँगा
शिकार के दोस्त कुत्ते
और ऐसे फल, जो कभी सूखते नहीं
सड़ते नहीं
और तुमसे भी थोड़ी जांघों वाली औरत
जो मेरे साथ बर्फ काटकर
नीचे की तलहटियों में जाएगी
चली जाएगी।
यम अपनी बड़ी बहन से कहता है —और
बड़ी बहन की खोफनाक हँसी के दर्द से जंगल
हँसने लगता है। बर्फ पिघलनी है
बर्फ पिघलती रहती है
और नदी बन जाती है तलहटियों में आकर
—बड़ी बहन! ●

दीवार

नयनतारा सहगल

●

सफेद दीवार से अचानक दो
काली आँखें निकलती हैं
और फन पर गिरकर जलने लगती है।
जैसे किसी नीग्रो लड़की की नंगी देह
बनारस-शहर में या जोहन्सबर्ग में!
दीवार पर लेकिन लहू का
एक धब्बा भी नहीं ●

अब कोई मकसद नहीं

मोनिका वर्मा

●

मैं कभी रेत की धूप और जंगल की आग में
हिरनों की तरह भागती रहती थी।
अब सितारों की बंधी हुई चाल में भटकती हूँ
वक्त का अब कोई मतलब नहीं अब
कोई मकसद नहीं रह गया है।
अक्लमन्दों की जमात भीड़ का चारा
खाती है।
लेकिन, मेरा घर मेरा दिमाग, मेरा दिल
और मेरे हाथ—एक मुझे हुए गुनाह को
खामोशी का इज़हार करते हैं। ●

(अनु० राजकमल चौधरी)

सम्बन्ध

निसिम इज़िकिएल

●

मैं कभी समझ नहीं पाता हूँ
क्या है सम्बन्ध
प्यार करने

और प्यार होने में
एक शारीरिक सम्बन्ध
और जननेन्द्रि
यद्यपि एकात्मता
मौन के आनन्द तर्कों में देखी जाती है।
क्या यह दर्शन के आनन्द से अधिक
शुद्ध नहीं है ?
क्या यह सचमुच आनन्द है ?
या कि यह मात्र आध्यात्मिक अनुभूति है।
और इसलिए सच है ?
शायद बाईस या आयु से अड़तीस तक
हजारों बार,
विवाह में
और उसके अलावा
यह प्रश्न जागा है।
एक बार फिर, आज रात
मैं इसे दुहराता हूँ
औरत मेरी बात पर मुस्कराती है
और अपने कपड़ों के साथ
पर रख देती है।
शायद यह औरत जानती है!
क्या बाइबिल में भी
यह नहीं कहा गया है
कि इसी प्रकार
औरत चीन्ही जाती है।
प्यार करने वालों के बोध ज्ञान का
आदान प्रदान होता है।
होगा यह बात समयानुकूल नहीं है।
या इसे चन्द मिनटों में समाप्त कर देने का
क्या भय हो सकता है ?
जब कि रात इतनी लम्बी है ? ●

रोटी और स्वातन्त्र्य

अनुसूया आर० शानोय

●

उन्होंने कहा
एक रोटी खाओ
और उत्सव मनाओ।
चिन्ताओं को हवा में उड़ा दो।
निराशाओं और भूलों पर
पछतावा नहीं
यह तो एक मनःस्थिति है जो
गुजर जाएगी।
क्या हुआ यदि एक पस्त-कटा
रक्त-स्रावित हृदय
चुपचाप कहीं अकेले में बुझ जाय ?
क्या आदमी कोई ईश्वर होता है ?
क्या हुआ यदि जेल की छतों के
पीछे गुनगुनाया मस्तिष्क
धीरे धीरे गल जाय ?
स्वतन्त्रता —यह तो एक
खोखला शब्द है
हवा भरे गुब्बारे-सा
एक निरुद्देश्य आवारा
अपनी रोटी खाओ
काम करो
और सन्तोष करो
उन्होंने उत्तर दिया
रास्ते के खच्चर
रोटी की बात नहीं सोचते।
किन्तु मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है
एक भूख के शान्त समाप्त होते ही
दूसरी भूख जाग उठती है
अर्थपूर्ण कर्म और स्नान का।
यदि स्वतन्त्रता ही रोटी की कीमत है

तो उससे अच्छा है
एक बन्धन मुक्त हाथ में
भीख का प्याला ले लिया जाय !
हमारे आगामी कल को सवारने की
बनाने या बिगाड़ने की इच्छा
सिंहासनित दासत्व से भली है।
ताकि मानव की न कुचली निश्चय आत्मा
घोषणा कर सके
'मैं अपनी भूख का भी स्वामी हूँ।' ●

(अनु० मनमोहिनी)

मलयालम कविताएँ

ये मशाल

वलोप्पल्ला श्रीधर मेनन

●

ये मशाल थामो
हे रक्तिम नवल भुजाओ !
ये मशाल है सदियों से
पुरखों के मंगलमय पथ की।
जब चलते थे वन में
टकराकर पत्थरों से
यह वह्नि शिखा आई थी
मृदु भरी तलवारों-सा।
अन्धकार भागा
कंपित पैरों में
लपटों की हँसी में
स्वर्ग ने शीश झुकाया।
यौवन मद भरे
उन शूर-वीर हृदयों में
हजारों जिह्वाएँ पसारती
बढ़ रही थी यह मशाल
काम के सत्य पथ से,
टकराकर बाधाओं को।

जंगल जलाकर था
धान को बाद दिया
लोहे को पानी बना कर
सिरजे थे औजार
ज्ञान की ज्योति जलाई
दिये कलाओं को प्राण
शक्तिशाली आत्मा को
दर्शन के नव पंख दिये
प्रगति के झंडा को
नभ में था फहराया,
लम्बी लम्बी रातों में
भव अरुणिमा भरी। ●

(अनु० जी० गोपीनाथन्)

नन्हा मुँह

वलोप्पल्ली श्रीधर मेनन

●

थी कभी नहीं
जब हम दौड़ पहुँचे उस पवन में
जिसका हम करते पालन
गत संध्या में देखी
वह कुसुम-कली
क्या खिल गई अब तक ?
हाँ नहा ने तकों में
हम धुँधल प्रकाश में
देख रहे थे तब
'ले जीत गया हूँ बाला मैं—
देख ले वृंत पर मुस्करा रहा है
मानो हिंडोले में शिशु है।'
सुने लिया उसको
मृदु हँसी के साथ
बोली प्यार भरी वाणी में—
'तू आया इतनी जल्दी में !
क्षण में चिन्ताकुल नयनों में
मार मार मौन रही तू

फिर लौटे हम हम उस सूने
अपने घर म जहाँ
न था बच्चा और पालना ही। ●

(अनु० एन० चन्द्रशेखर नायर)

बढ जा मुन्ने ! आगे

बालामणि अम्मा

●

माँ की प्यारी गोद से
लो उसका लाडला उतरा नीचे।
डगमगाकर बढ़ा दीवार के सहारे
लाँघ कर देहरी पहुचा दालान म
खुशी कुतूहल परेशानी
व्याप्त चेहरा पर बढ़ा के।
'मुन्ना माँ का आँचल छोड
खडा रहा अब हो निर्भय।
चला अकेला अपने आप
काँपते पैरों खिलते मुह।'
कठोर दीवारों से टकरा कर
लाल को चोट न लग जाय
जलते अगणित दीपा क
उस आँच न लग जाय।
बहुत पुराने इस घर के हैं
लाखों कमरे तहखाने।
कितना उत्सव होगा सबमें
मुन्ना रमता जब बढ़ जाय।'
'सीढी मंजिल तय करने को
नव यात्रा का रस लेन को
लायेगा यह मुन्ना धीरज
निश्चित अब कुछ दिनों में।'
बढ़ जा मुन्ने ! आगे अब तो
कितना रंग है। कितनी शोभा !
तेरा स्वागत करने कितने —
नव-नव भाव खड़े हैं अब तो !
तेरे नेत्रा म चमका है
मादक मधुमय नव जीवन।
अपने पाँवा चलने वाले
देखा निर्भय घूमने वाले
सारे अग जग के तत्वों को
हस्तामलक-से जानने वाले
नक्षत्रों के दीपा को भी—
ज्योतित और बुझाने को
जिन हाथा म अब ताकत है
अग्रज वे सब देख रहे हैं।
तेरी रखवाली वे करते,
तेरे पथ से विघ्न हटाते
तेरे अनजाने ही तुमको
वे सम्बल पहुँचाते हैं।
बढ़ जा मुन्ने आगे माँ भी
जी भर आशीषें देती है॥ ●

(अनु० के० सी० सुकुमारन नायर)

निशा-कुसुम

श्रीमती सुगतकुमारी

●

गाता हूँ शत बरसों से
एक तन्त्री बाला
अपना तम्बूरा बजा बजा कर
हाय ! तेरे ही गीत
चलते फिरते नित !
ओर नहीं छोर नहीं
इस रास्ते का कहीं
अगर रुक जाऊ
गला कुछ भर लाऊँ
तो सारी आँखों को
गीला कर दू ?

दीखती है भाई शाम
पक्षी लौटे हैं छोड़ आसमान
वृक्षों की डाली के झूला पर
फटी जाती है सोने की चादर
मुझे बितानी है रात कहीं
नीरव तम में राह खो गई
दूर कहीं कहीं दीखता है
दीपांकुर एक ।
शंकित हो खड़ा रहा तनिक
खिला गगन सरोवर में तब
चाँद का कमल
कमलिनी की तारिका भी निकट
पोंछ दिए अपने आँसू
फेर तन्त्रिया पर
उंगलियाँ गाने लगा
लो मैं डूबा तेरे ही
करुणा के आलोक में
स्वर से ही आऊँगा
इस धूप में कुम्हलाए
ये मेरे गुँथे फूल
विकल हो जाएँ चाहे
पर अपने प्राणों में
इन गीतों को भर कर
लाऊँगा मैं विरही पथिक
हे स्वामी तेरे ही चरण !

(अनु० एन० चन्द्रशेखरन नायर)

तमिल कविताएँ

भागो मत !

पुदुम पित्तन्

ओ दुनियावालो !
भागो मत !
अमरता का वर पाया
वीणापाणि का विनयी विधेय
मधुरवाक् कवि कोकिल
मैं नहीं हूँ
भागो मत !
गगन के शोभन सपनों को
सजधजकर, गढ़ रचकर
सुनाने वाला 'सत्यवादी' कविशूर
मैं नहीं हूँ ।
सच कहता हूँ कसम खाकर
रसना पर मेरी
सरस सरस्वती भण्डार का
सौभाग्य नहीं चमत्कार नहीं !
तुम-जैसा ही यह मैं भी
अदना सा आदमी हूँ देख लो ।
मानता हूँ तुम-सा मैं भी
उत्साह उमंग उद्वेग व उद्योग से
झूठी-सच्ची गढ़ लेता हूँ
गप्पों-गढ़ंतों के बल पर
तुम्हें फुसलाकर ठगाकर
—हाँ अगर भोले तुम ठग जाओगे
तो पैसा बेबाक उगाह लूँगा ।
बस्ती के पश्चिम में
पनघट के निकट जो दीख पड़ी
उसे असुलभा अरम्भे (रम्भा अप्सरा) कह
फिर उसे सपना साबित कर
शब्दबद्ध कविता काव्य बना दूँगा
—अमर अनुपम !
बस मुझे दाम के लाले न पड़ने दो
अगर तुम कहोगे कि—
अनिन्द्य रमणी की नहीं चाहिए
सुन्दर सरस प्रेम कथा
चाहिए तो यही अब मुझे—
—तो, मैं तुरन्त यों निवेदन करूँगा
'ओह ! जी हाँ जो आज्ञा ।
यह दासवर तैयार है ।

पत्थर को प्राणवान् बनाकर
करान्त काल-सा प्राणरक्षा कराकर
जीती जागती । के उद्भाप मन्दिर
दोखी-दम्भी के नाम अनगिन
कहो चाहिए कितने ?—
अभी सिरजकर अर्पित कर दूं
तुम्हारे अमल चरण-कमलों में !
अजी ! ठहरो
अपनी हालत कह दूं
आज पैसा कुछ बचा है ।
पर भविष्य में मुझे ममम्म ध्यान पाकर
कृपया न छिप जाओ दौड़ अपनकर
भागो मत !
तुम्हारे आगे न पसारूंगा हाथ—
अजी जरा ठहरो न !
इस सब के ऊपर
मेरी इक विनती है
मेरे अन्तिम-अपुनर्भव अन्तर्धान के बाद
मेरे हित यश का का डंका बजाकर
गली गली घर घर दर-दर चलकर
चन्दा वसूल न करें, तंग न करें लोगों को ।
मेरी स्मृति की सीमा बांध कर
पाषाणखण्ड की भव्य मूर्ति बनाकर
मुझे खड़ा न कर दो
न पूजो न नाचो न मनाओ ही !
यह भी न कहो फिर मत रोओ—
स्वर्ग का अमर देवघर
इधर आया—अवतरा ।
पर हाय ! कैसे सहूं ?
समय में यदि नोचा हो
स्वधाम लौट चला—स्वर्गीय हुआ !
यह सब मुझे न चाहिए ।
इतनी कृपा करो तो कृतकृत्य हो जाऊँगा ।
मुझ अभागे को छोड़ दो छोड़ दो !
चाहो मूंग भिगाने
अलसाये दिल को बहलाने
जीर्ण जर्जर कथा या गाथा,
पौराणिक वृत्तान्त में अघटित घटना को
बुद्धिभ्रष्ट राक्षस
यदि कोई कहता—लिखता
तो वह सब-ही,—आदर्श हैं अनूठे !
स्वर्गीय कल्पनाएँ हैं !
वे सब जगतीतल के उद्धारक
तारक मन्त्र हैं पावन-पुरातन !
अजी ये तो मोक्ष-कपाट खोलनेवाले
असुलभ सरस साहित्य हैं !
यह सब तुम लोगों को
प्रभा प्रतिभा प्रचेतना की
सब सबके निधियाँ हैं विभूतियाँ हैं
खैर अब काम की बात हो
वाणी की माने कौन ?
दो-एक कथा माँगने आये हो ?
तो यह लो जोड़ी दो रुपये ।
साहब प्रेम कहानी रंगीली
यदि चाव से चाह पाये हो
तो कहे देता हूँ अभी साफ-साफ
अण्डा-ग्वालो रकम ऐसी है हाथ भर !
यदि आचार विचार की ।
मतानुगतिकता या पथ-मत धर्म-दीन की
गाथा चाहते हो साहब पीसो वालो
तो दर है स्थिति-गति-व्यक्ति के अनुसार
हाँ अभी कहे देता हूँ—
दर न घटेगी कम न करेगा
बात पक्की है अन्साधन्सा नहीं ।
बहलाकर फुसलाकर हमें
चकमा देना कभी न होगा ।
पैसा रखो समक्ष हमारे
फिर साकार सदन का मोम सा —
सो यही यह
काल-कवलित कभी न होगा,

दीखती है भाई शाम
पक्षी लौटे हैं छोड़ आसमान
वृक्ष की डाली के झूला पर
फटी जाती है सोने की चादर
मुझे बितानी है रात कहीं
नीरव तम में राह खो गई
दूर कहीं कहीं दीखता है
दीपांकुर एक ।
दीपित हो खड़ा रहा तनिक
खिला गगन सरोवर में तब
चांद का कमल
कमलिनी की तारिका भी निकट
पोंछ दिये अपने आंसू
फेर तन्त्रियों पर
उंगलियां गाने लगा
सो मैं डूबा तेरे ही
करुणा के आलोक में
स्वर ले हो जाऊंगा
कल धूप में कुम्हलाये
ये मेरे गुंथे फूल
विकल हो जाएं चाहे
पर अपने प्राणों में
इन गीतों को भर कर
लाऊंगा मैं विरही पथिक
हे स्वामी तेरे ही चरण ! ●

(अनु० एन० चन्द्रशेखरन नायर)

तमिल कविताएं

भागो मत !

पुदुम पित्तन्

●

ओ दुनियावालो !
भागो मत !
अमरता का वर पाया
वीणापाणी का विनयी विधेय
मधुरवाक् कवि कोकिल
मैं नहीं हूँ
भागो मत !
गगन के दामन सपना को
सजधजकर गढ़ रचकर
सुनाने वाला 'सत्यवादी' कविसूर
मैं नहीं हूँ ।
सच कहता हूँ कसम खाकर
रसना पर मेरी
सरस सरस्वती झंकार का
सौभाग्य नहीं चमत्कार नहीं !
तुम-जैसा ही यह मैं भी
अदना सा आदमी हूँ देख लो ।
मानता हूँ तुम-सा मैं भी
उत्साह उमंग उद्वेग व उद्योग से
झूठी-सच्ची गढ़ लेता हूँ
गप्पों-गढ़तों के बल पर
तुम्हें फुसलाकर ठगाकर
—हां अगर भोले तुम ठग जाओगे
तो पैसा बेबाक उगाह लूँगा ।
बस्ती के पश्चिम में
पनघट के निकट जो दीख पड़ी
उसे अनुपमा 'अरम्भै' (रम्भा अप्सरा) कह
फिर उसे सपना साबित कर
छन्दबद्ध कविता काव्य बना दूँगा
—अमर अनुपम !
बस मुझे दाने के लाने न पड़ने दो
अगर तुम कहोगे कि —
अनिन्द्य रमणी की नहीं चाहिए
सुन्दर सरस प्रेम कथा
चाहिए तो यही अब मुझे—
—तो, मैं तुरन्त या निवेदन करूँगा
ओह ! जी हां जो आज्ञा ।
यह दावेदार तैयार है ।

पत्थर को प्राणवान् बनाकर
कराल काल सा प्राणलवा फराकर
'जोतो जात सो ! के उद्घोष सहित
दासी कभी के नार अनगिन
कहो चाहिए कितने ?—
अभी सिरजकर अर्पित कर दूं
तुम्हारे अमल चरण-कमलों में !
अजो ! ठहरो
सच्ची हालत कह दूँ
आज पता कुछ बचा है।
पर भविष्य में मुझे अमग्न ध्यान पाकर
कृपया न छिप आओ दौड़ झपटकर,
भागो मत !
तुम्हारे आगे न पसारूँगा हाथ—
अजो जरा ठहरो न !
इस सब के ऊपर
मेरी इक विनती है
मेरे अंतिम अपुनर्भव अंतर्धान के बाद
मेरे हित यश का का डंका बजाकर
गली गली घर घर दर-दर चलकर
चन्दा वसूल न करें, तंग न करें लोगों को।
मेरी स्मृति की सीमा बाँध कर
पाषाणखण्ड की भव्य मूर्ति बनाकर
मुझे खड़ा न कर दो
न पूजा न झांकी न मनाओ हो !
यह भी न कहा फिर मत रोना—
स्वर्ग का अमर देवपद
इधर आया—अवतरा।
पर हाय ! कैसे सहूँ ?
असमय में अनि शीघ्र ही
स्वधाम लौट चला—स्वर्गीय हुआ !
यह सब मुझे न चाहिए।
इतनी कृपा करो तो कृतकृत्य हो जाऊँगा।
मुझ अभागे को छोड़ दो छोड़ दो !
चाहो मुझ मिटान

अलसाये दिल को बहलाने
जीर्ण जर्जर कथा या गाथा,
पौराणिक वृत्तान्त व अघटित घटना को
बुद्धि अवश
यदि कोई कहता—लिखता
तो वह सब-हां —आदर्श हैं अनूठे !
स्वर्गीय कल्पनाएँ हैं !
वे सब जगतीतल के उद्धारक
तारक मन्त्र हैं पावन-पुरातन !
अजी वे तो मोक्ष-कपाट खोलनेवाले
असुलभ सरस साहित्य हैं !
वह सब तुम लोगों को
अभी प्रतिभा प्रचेतना की
सच सबधक निधियाँ हैं विभूतियाँ हैं
खैर अब काम की बात हो
वाणी की मन्दी कैसे ?
शोक क्या माँगने आये हो ?
तो यह लो जोड़ी दो रुपये।
मोहक प्रेम कहानी रंगीली
यदि चाव से पान करना हो
तो कहे देता हूँ अभी साफ-साफ
अच्छी-खासी रकम देनी है हाथ पर !
यदि आचार-विचार की।
मतानुवर्तिता या पथ-मत-पन्थ की
गाथा चाहते हो मोहक गाथी कथा,
तो दूर है स्थिति-गति-प्रगति के
हाँ अभी कहे देता हूँ—
दूर न भागो कम न करना
बात पक्की है मन्नादा
बहलाकर फुसलाकर हमें
चकमा देना कभी न होगा।
पैसा रखो सामने हमारे
फिर आचार मतन का
तो यहाँ दूर
कास-कवलित करना

युग प्रवतन से उथल-पुथल से
उपेक्षित नही होगा।
ग्रजी भागते क्यो हो ?
सुनो भाई !
मैं भी तुम्हारे सरीखा ही
ग ना सा ग्रादमी हू दस सा !
विश्वास पात्र हूँ मनसा-वाचा-कर्मणा भी
सुनो जी मेरी बात
ग्रर ! भागो मत ! ●

फरियाद

कम्बदासन

●

कली चमली की मैं रही
वह समीर बसंत का ग्राया
स्पर्श किया पुलकित किया सुख पाया।
प्रमालाप रसीन महक उठ
संद्रा जब मेरी टूटी विहस उठी !
मैं रही मधमाला बिखरी बिछुडी
वह ग्रा मिला विद्युत विनोदी
फैलादी माहक मुस्कान लूट लिया !
ग्रावेगा का जब दमन हुग्रा
मनुष्य सुग पाया
मौनिष श्यामल काया मेरी गल गयी
पानी ही पानी हो चली
झर झर बरस गयी !
बलखाती बहती मैं दरिया थी वनमोहिनी,
उमको मरतरगें थिरक उठीं मेरी छाती पर
सामन्य से हुसल तक
सुख-चैनका ग्रगार हुग्रा
जीवनधारा गायब हुई
चिर सु र सुख स्वप्न हुए,

ग्रब विरहिणी हो बहती जाती हूँ प्रकृति मे
उस छलिया के संग को ढूंढती फिरती हूं ! ●
(ग्रनु० र० गौरिराजन)

कर्मफल

कम्बदासन

●

विधाता ने सृजन किया पारावार का
मीन मकर के नितु किलकार करें खलें पलें
फिर निरखा स्वधाम से तरंगाकुल सागर को—
हाय ! कैसी निराशा ! विफल हुई रचना।
बिछा रक्खा मछुए ने जाल
मधुमक्खी क छत्ते-सा
सृजन-सुमना को फसाया
बटोरा-कर लिया ढेर !
हाट सज गयी क्रय विक्रय की—
उत्तरभरी चाल को
सख विधाता का ह्रास
दिल धधका दहक उठे नैन छटपटाय ग्राप
फिर—
छिप गये ग्रंधकारम गहनतर वारि की नीली
चादर से ! ●

तिमिर

भारती दासन

●

दौड़ भाग कर लड़ झगड कर
कमा-बटोरकर खा-पीकर,
ग्रौर थककर—
जब ग्रलमान लगता है जीव जगत्
उस भरकर स्वयक म

मीलमणी से विपुल भवन में
छिपा जाते हो ममता से !
हे स्नेह के उन्मीष
हम आभारी हैं तेरे ।
भू से स्वर्ग तक व्यापा है
तेरा तन घना कजरारा
तू बदल लेता है बारम्बार अपना वसन
दिन का का परिधान है सुनहरी चादर
धुवल रात का वसन है धवल दुकूल
उस पर रंग बिरंगे बूटे सुन्दर ।
एक दिन पूछा दिनकर से
'जाते कहाँ हो वडी त्वरा से ?'
उत्तर आया तिमिर को भगाने ।
'भाई जल्दी चलो । मेरा प्रोत्साहन था ।
भारकर भूमकर आगे बढ़ा
सदुन हुआ तमिस्र को हटा दिया
पर तू रहा सवव्यापी ।
तुम्हारे तम पटल में वह भौंरा-सा हो गया ।
खद्योत' का नाम सार्थक भी हुआ ।

तेरा अवतार हुआ आकाश के साथ
तेरे रूप प्रतिरूप जल-थल-गगन में
नील-नील फैले हैं
तू माया बनकर
[प्रति वस्तु के साथ] लगा रहता है
तू घट घट वासी है सवव्यापी है !
उठी नासिका के छिद्रा में
खंजन नयना की चारु कोरों में
कमनीय करपुटों के गड्ढा में
तेरी सहचरी छाया सोहती है सुहानी
सुन्दरिया का सौन्दर्य बढ़ता है
तेरे छाया स्वरूप से !

हे अंधकार ! तेरा वैभव
चतुर चितेर ची-हते-पहचानते ।
चिन विदुषा का उद्घोष है—
ज्ञान का प्रतीक है प्रकाश
हाँ जी हाँ ।
तम है अज्ञान का वहिरूप
हाँ जी हाँ !
पर एक बात भूलते—
अज्ञान ज्ञान का बोध कराता
जिज्ञासा जगाता उद्धार करता
ज्ञान कभी अज्ञान सिखाता ?
सीख कोई मिल सकती ज्ञान से ?
कभी नहीं ।
अज्ञान सहज है सवव्यापी
सीख बोध का पथदर्शक
तू ही नहीं तेरा प्रतीक भी श्रेष्ठ है
वंद्य है !
हे तिमिर ! तू प्रकाश से बढ़कर है !

(मनु० दक्षिणामूर्ति)

हमारा देश

महाकवि सुब्रह्मण्य भारती

•

चमक रहा उत्तुंग हिमालय यह नगराज हमारा ही है।
भू पर जिसका जोड़ नहीं है वह नगराज हमारा ही है।
नदी हमारी ही है गंगा प्लावित करती मधुरस धारा।
समता इसकी नहीं धरा पर यहाँ कहीं है पावन धारा?
श्रेष्ठ ग्रंथ जो जगती के हैं पार नहीं जिनकी महिमा का
अमर ग्रंथ वे सभी हमारे उपनिषदों का देश यही है।
हम से बढ़कर कौन धरा पर यह है भारत देश हमारा।
सब मिल अब यशगान करेंगे यह है स्वर्णिम देश हमारा।
यह है देश हमारा भारत वीर महारथी भरे जहाँ पे
यह है देश मही का स्वर्णिम मुनिगण करते वास जहाँ पे
यह है देश हमारा, जिसमें गूँजे गान मधुर नारद के
यह है देश हमारा भारत सर्वोत्तम सब वस्तु जहाँ के
यह है देश हमारा भारत पूर्ण ज्ञान का शुभ्र निकेतन,
यह है देश जहाँ पर बरसी बुद्धदेव की करुणा चेतन
अति महान् जो भव्य पुरातन यह है भारत देश हमारा
नहीं हमारे सम है कोई गूँजेगा यह गान हमारा।
विघ्नों का दल चढ़ आये तो उन्हें देख भयभीत न होंगे
अब न कभी हम दीन-दलित हो हीन दशा में पड़े रहेंगे
नीच स्वार्थ की सिद्धि हेतु अब कभी न गर्हित कर्म करेंगे
पुण्यभूमि यह भारत माता जग से अब हम भीख न लेंगे
हम सदा ही देती है यह मिसरी मधु फल सारे रसमय
कदली चावल अन्न सभी जो देती हमको क्षीर सुधामय
आर्य देश यह उन्नत भू पर गूँजेगा यह गान हमारा
कौन करेगा समता इसकी महिमामय है देश हमारा!

अनु० 'भारतीभक्त'

समुद्र मोहिनी

अरविंद नाडकर्णी

●

समुद्र हसता था दुग्ध सम फेन हास में
चारों ओर की शाखों के चोंचों की ध्वनि
चिड़ियों की चहक व घरू-नाच गधव गीत
पेड़ पेड़ पर पड़नेवाली पुष्प-वर्षा की
एक तान
रंग बिरंगे पुष्प गुच्छों से प्रस्फुटित पिचकारी
जल की मंजुल ध्वनि
सब मिलकर एकरस हुआ था समुद्र
हास में।
यह जगह कौनसी ? देखा क्या ग्वाल ?
दो वृक्षों से जनमी कुबेर संतान की जगह।
अजगर वंधुओं के घमंड साल उठ नरेशों
की जगह।

चट्टान से उठी हेमवती की जगह
इसके जानकार उस मेरु-गिरी से पूछ
बरस बरसों से देखते खड़े हुए उस
महान् महिमा पुरुष से पूछ,
और अपने ग्वाल चित्त का समाधान
कर ले।
अरे देख ! यह नृत्य समारोह हर कहीं।
उस सागर के सलिल में लहर लहर घूम
उठ उठ मार रही है कलैया दूर दिगंत तक
विश्व को नचाने वाला यह संजीवनी रस
बह रहा है हर जगह निर्झरिणी की तरह
समुद्र के ऊपर से उछलकर !
आह समुद्र !
विश्वव्यापी समुद्र-लहर !
मैं बुड्ढा मटरे में प्राण गाड़कर
खा रहा था होटल का आइसक्रीम
लूट रहा था मजा सिनेमा की प्रेम-मसरत
का
सामने हसता था दुग्ध सम फेनिल हास में
धुएं दम के प्राणों को प्राणवायु-दायक
पयोमय शान्त सम्राट !
पाँव तले फैलाये मछुए के जालों को
लांघ कर
पहुँचा समीप जल प्रदेश के
ऐसा महा यज्ञ करने वाले राजा की भाँति
सिर हिलाते नव विजयोत्साह से बोला
अब मैं हूं जीने योग्य इस मृत्युलोक में।
ओ मेरे भाई बहनो
स्तमित ताल-कूप के जल में तरना चाहने
वालो
आओ इस छोर पर
हर जगह स्रोत स्रोत बन नदी नदी बन
प्रवहित
इस समुद्र जल में तैरने आओ
उसके जलबिंदु स्पर्श के लिए भूल जाओ
रेत पर फैले मछुए के जालों को। ●

कारिन्दा

पशुपति रड्डी

●

मेज पर चमक रही है सफेद कागज की
तश्तरी
उसमें बाट जोह रहा है
पूरे सराफ-तेल का अंडा।

बाहर खेत-खलिहानों में
पूस-सी धूप मुनहसी धूप

तरलता पाँति को चूम रही है !
यहाँ भीतर अंधेरे में नागरिक
सरवर मे
पाताल तक खींच रहा है मुझे—
कोई ग्राह !
इस शापित गज का बंधन
तोड़ने
भेजो ओ हरि !
—अपना वह सुदर्शन
चक्र ! ●

चालीस के करीब

पी० वेंकटरमण आचार्य
●

मेरे सामने
दो साल पूर्व से ही
आँखें फाड़कर देख रहा था चालीस
"क्यों रे इतनी देर क्यों ?"

गरजा उस शेर की भाँति जो
उस गरीब अपने शिकार खरगोश पर
गरजा था !

ऊपर अटारी पर रेडियो
चिल्ला रहा है "अंग गलित मुंड पलितम्"
सामने वाली अटारी से क्या मूर्ख
ताने की बात "आयु विफलित आयु
विफलित"

मेरे साक्षात्कारी आईने में
कौन है यह नया बैरी ?
हर मुँह के रास्ते पर चक्रविहीन कारों
की पाँति

पों पों पों !
जहाँ पेट्रोल समाप्त वहाँ धड़ाम् !
चूको तो रास्ते के बगल में निशाना
मारनेवाले कतार बंद सोल्जर
आँख मूँद दबाओ एक्सिलेटर !
क्या प्यारी दूर सरक बैठ गई ?
लग गई क्या तुझे भी भज गोविंद की
काष्ठ-व्यथा ?

नहीं चाहिए तेरी स्टियरिंग चिंता
एक्सिलेटर पर पाँव ढीला न पड़े ऐसा
इन दस बरसों में साधा है मैंने एक योग—
वह है प्रेम संयोग। ●

टन् टन् टन्

सिद्दण मसली
●

टन् टन् टन्
घड़ी में बज रहा है आठ
उसका मेरा नाता रोज रोज
देह में है सुस्ती
मन में है उदासी
आँखों में झूम रही है झपकी अभी
नहीं चाहता मन
उठना छोड़ बिछावन
बिचारा ! पड़ोसी में पर-रा रहा है बालक
तंग कर करके
उठ, बिछाने समेट
झाड़ू लगाकर
आईने के आगे खड़ा हो सिर के बाल में
उंगली उलझाकर—
अपने आपको देख

मुस्कान की माधुरी बस ठहर गया
हृदयाकाश में
बादल बादल से टकराकर गगन हो के
बहने की भाँति
चमकी बिजली की रेखा
यकायक
ठौर मेज कुर्सी टिपाय सेल्फ
ठहाके नृत्य !
तन-बदन का नृत्य !
अँधेरे कमरे में
मूक हो किसी का ऊपर से गिरना
होश आने के पूर्व लगा कोई नहीं है
मन को घेरा भ्रम
क्या मजाक कभी हँसी !
घूम कर देखा फिर कमरे भर में
चारों ओर घूम गया नयन बिम्ब
हैंगर पर लटक रहे हैं कोट-पैंट
इधर एक-दो घट
मेज सेल्फ अलमारी भर पुस्तकों की राशि
यही है मेरे सौभाग्य की जीवनदानी ।
मेरे सर्वस्व के लिए यही है जायदाद
और सिर में है इससे भी अधिक ।
क्या है इस हृदय सम
बाकी सब धुर हिम ।

बुला रहा है कर्तव्य हाथ उठा कर
दम पर दम अपनी याद दिलाकर
खाने भर सिर्फ धूल ही धूल
बस आई कि आगे कपड़ गद भरे !
टनू...टनू...टनू...
सिपाही ने दिया घण्टा
हर रोज की तरह
यही देता है स्कूल
मैं हूँ मास्टर

घंटे घंटे पर देते हैं घंटा
उनको भी शायद नहीं है फुरसत ।
औरों के साथ में
कोल्हू के बैल की जोड़ी

क्लास के बाद क्लास में जाना है ।
वह विषय यह विषय कोई विषय क्या
न हो जानते हो या न हो सिखाना होगा ।
बिना सिखाये कैसे चले काम ?
सिर के टूट जाने की भाँति जीव मौन

थकी नाड़ियाँ सचमुच ही न्यून
स्टाफ रूम में कप-सॉसर का गान
चूसते हैं मास्टर चाय का मधु !
हवा की तरंग तरंग में सिगरेट धूम
इन उनका नियम !
इधर उधर जहाँ वहाँ
कोने कोने में
सुलग-बुझी सलाइयों के साथ सिगरेट के टुकड़े
जल मुँह को दिखाने पड़े हुए हैं
तम्बाकू खाने वालों के मुँह से लाल
लार की

पिचकारियों ने दी है दावत मक्खियों को !
जो कुछ शक्ति है उसे पकड़ कर रोक दो
लड़का के साथ मिलकर फिर मिलाओ
'खाना चाहिये जितना परोसे

खोना चाहिये जितना खाये
यही है इस गुजरी जिंदगी की रोज
मंगा हिसाब !

------ -- -- ---

सिपाही ने दिया है अंतिम घंटा
परमात्मा की भाँति !
टनू...टनू...टनू...।

(अनु० गुरुनाथ जोशी)

वसुंधरा

रामचन्द्र शर्मा

●

तुम्हारा त्याग ध्येय कहूँ सिद्धार्थ ?
जीव-ज्योति हो आई रात को सरकाने
उस दिन
इसलिए फूली मैं इसलिए गर्वित हुई मैं !

क्या हुआ बेटा ?
जंगली कोयल का गान तुम्हारा सद्बोध ?
इतने अवतारों के बाद ऐसे घर के
लोगों को
क्या मोह है बेटा ?
देव की प्रीति प्रीत की रीति
उसी को नामामयी कहा मानव ने !
अणु बने हुए तुम उस दिन बढ़ बढ़ विभु
बन गये

प्रभु अणु के रूप में रक्षा करने आये
सुन्दर बालक !
गोद में पीछे आई उन्मत्त हँसी एक ।

खिलखिलाकर नाचे नाचकर झरना बनी
बढ़ बढ़
नदी बनी, जंगल प्रदेश पहाड़ी प्रदेश का
समुद्र बनी
प्रलय जल बनी अंत को
ओ ओ ओ मैं सुन नहीं सकता मैं सह
नहीं सकता ।
सरस वीणा ध्वनि के मृदु मधुर स्वर से
सुर मिलाकर गाया मंदिर में आज कौन
नदी से नदी के मिलन की भाँति स्वर-स्वर
मिलकर बहकर आया मेरे हृदय के पास
एक सुरगान ! ●

भाड़े का मकान

विनोद चन्द्र नायक

•

परित्यक्त ठहस्थली है यह एक श्मशान
था एक समय तक मुखरित यह द्वार व सम्न
कहाँ वह सब नीलपट
सांवल हाथों का आमेज
है सारा सुनसान।
नन्हे पैरों के नाप का एक जोड़ा कनवास का जूता,
आध गज मस्न रंग का तैल-म्लान कबरी का फीता
थोड़े उलझे बाल लिप्त सम धुप रासे
कई टुकड़े रंग बिरंगी चुड़िया के
ढेर लगा है कूड़ा करकट

दीवार की आलमारी में
खाली विटामिन 'बी' काम्प्लक्स शीशियाँ
सिनेमा गर्वोन्विता युवतियों की

एक-आध तस्वीर
उच्छ्वसित लावण्य का मय धूप मुखरित
जीवन अध्याय के ये भग्नांश
बिखरे पड़े हैं इधर-उधर
वह यहाँ जोड़ता भाग्य का भग्नसेतु
राशिचक्र वृहस्पति तथा चन्द्रकेतु
जीवन में हो प्रवाहित ऐ मेरे जीवन की इरावती
तिमिर पंक का स्रोत
अहेतुकी मुग्ध आत्मरति में
उड़ो मेरे स्वप्न के सुनहरे हंस
रौद्र उत्ताप में बन चतुर व प्रखर॥
तो भी टूटे पलस्तर बरामदे की ओर खिंच आता मन
फिर आकर्षित वही कूड़े-करकट ढेर की ओर
सम्भालती संसार एक सुन्दरी
अपने अँगूठे के विविध अंकनों में दे निशान। •

अनु० भारती राम नन्दन

मोरी

अह्योत्री महान्ति

●

वह बम अपना लेती
बन निर्विकार सदा ग्लानि को
संचय है नहीं उसका धर्म
सजने मे है उसका कृतित्व,
आते हैं जब कुछ नये-नये
नव रूप और आकारो म
उन सभी को देती धक्का
रहने न देती उनका अपनापन।
हम सब करते प्रयत्न
विकृत बनाते उसे
कलंक के प्राबल्य से उसे
करने बीभत्स-कुत्सित
है तो वह क्षण के लिये
पर करती ध्वंस हमारा दर्प
वह दिखाती हमें
क्षण पहले का अपना रूप।
हम खूब नाक भी सिकोड़ते
तो भी उसकी आत्मीयता पर
इसलिये हम बेहद शरमाते
कभी नहीं लज्जा देती हमें वह
न उसका है लाभ का प्रत्यय
न संघर्ष है सयोग से
अन्त म वह बनाती हमें शुद्ध
पर बन जाती महत्तर स्वधर्म से।
मैं करती जो कल्पना उसकी
वह है अपनी चेतना की,
अम्लान सूक्ष्म प्रभात का
क्या सना सम्मान प्रगति का ?●

अनु मारयोकरण महापात्र

एक अनेक

मायाधर मानसिंह

●

विविध धर्म विविध शास्त्र विविध दर्शन,
कर अध्ययन किया माराक्रान्त अपना मन
कस्तूरी मृग सम भ्रान्त अन्वेषण
कर लौट आया अन्त में तुम्हारे यहाँ।

मानो पण्डितों की भाँति हूँ मैं तर्कों में लीन,
तुम हो या नहीं देखो या नहीं
हमारे दु:ख दैनन्दिन न जाना कुछ
जाना पर तुम एक और अनेक।

हे महेश्वर! तुम स्वयं किये हो प्रकाश
असंख्य अनेकों म धरती से नभ तक
विविध शैलियाँ, विविध रूपों में हैं
तुम्हारा नित्य रास
सुख दु:ख की तन्त्रियों में बजती है
तुम्हारी वीणा।

हो मोहित प्रकृति-काव्य करते हम अध्ययन,
त्याग चुका कई दिनों स तत्त्व-व्याकरण। ●

तलुगु कविताए

मैं!

धनकुधरम

●

मैं हूँ वाल्मीकि
विश्व का आदि कवि!
भील किरातों क तीखे बाणों से
आहत हन भागा का—
शून्य दिगंचलों को मात्र, नयना स
ताकनेवाले निर्वासितों का

शोकाकुल मूकजना का
कोटि कोटि दीन मानवा का
साक्षात्कार नित होता है
करुणासिंचित इस मन मंदिर मे
प्रमाविल मम मनरातर म ।
मैं हूँ वाल्मीकि कवि—
मानिषाग्नेति मम शासनवाणी
स्पंदित है सदा इस मन में ।
उदात्त मेरी इस वाणी म
दुष्ट मानवता का मिटाने की
भव्य अमरता को जगाने की
दिव्य शक्ति निहित है।
मैं हूँ कवि वाल्मीकि
महामानव रावण की परपरा के
स्वार्थी दुरहकारी कुटिल निरंकुश
लोक-विरोधी दल-दल की
कुत्सित मानवता का—
उदात्त दानवता का अंत करने को
सन्नद्ध है बद्ध कंकण है
मेरी यह लखिनि ।
मैं हूँ वाल्मीकि
विश्व का आदि कवि ।
अमृत निष्यंदिनी दिव्य कविता का
प्रवर्तक हूँ मैं अति सनातन !
मधुर अति मधुर
अक्षर समुदाय का
आदि समन्वयकार हूँ ।
निरंतन विश्व का
अनन्त काल को
जन्म-जन्मान्तर की मानवता के
विशिष्ट शिष्ट गुणा का
मैं चिर व्याख्याकार हूँ—
मैं वाल्मीकि हूँ । ●

अञ्जलि

करुणा श्री

●

नवजात शिशु के लिये
स्तन-बर्तन का तू दूध स भरता है
चन्द्र किरणों से भरे आद्र अजलियों से
लताओं म तू पत्तियाँ गढ़ता है
फूलो क प्याला में भौंरा क लिय
तू कल क भोजन की व्यवस्था करता है
मु ह-अंधेरे कलियों में घुसकर
उनम तरह तरह क रग चढ़ाता है
इस विश्व-परिवार क पालन पोषण म
हे देवाधिदेव तू बहुत थक गया है—
मेर इस शाण हृदय की कुटी का
द्वार खुला है,
इसमें क्षण भर आराम सा कर ल ।
तुझे बिठान क लिए कुर्सी नहीं है
प्रणय से भरा मरा मक तैयार है !
पाद्य क लिय गुलाब पानी की व्यवस्था नहीं है
अपन आँसुओं स तर पाँव धोने बैठा हूँ !
पूजा क लिए फूलो का अभाव है
प्रम की अजली तुझे समर्पित होगी !
नैवद्य चढ़ान के लिए नारियल भी नहीं है
अपना हृदय तेरे चरणों चढ़ाने खड़ा हूँ !
जहाँ तक हो कोई कमी न होगी
पधार हृदय-सिंहासन पर आ बैठ ।
तेर पदचिह्नों पर अमृत की झड़ियाँ
टपकती हैं
जिनमें से परमपिता कोटि कोटि दिव्य
सार उगते हैं ।
लोका क अंधकार मिटान तू गगन पर रवि
चन्द्र दीप पकड़ता है

सागर की लहरों को जो धरती पर बढ
आती है तू यथास्थान ढकेलता है
रोज बेकार अनगिनत प्राणि कोटि के
हृदय-घड़ियों म हवा भरता है
साफ सुथरे नीले आसमान के चबूतरे पर
तारों की रंगवल्लियाँ पूरता है
इन सब कामा म तुझे कितनी मेहनत
करनी पड़ती है !

मेरे सौभाग्य से तू इस आँगन में
भूल से आ पड़ा है !
अपना हृदय निकाल कर तुझे भेंट चढ़ाऊँगा
हे नाथ, ये पुष्प अजलियाँ ले ल न ! ●

रूपांतर मु० नरसिंहाचार्यु

ऐ सौदामिनी

स्फूर्ति श्री

●

ऐ सौदामिनी
रसोन्मादिनी
मनोन्मादिनी
मधुवादिनी
चमक कर कवि-तपस्वी के मनोभुवन में
साक्षात बन आती हो कांति-प्रतिमा सा
जलदों के परदों की तुम्हें क्या जरूरत
कांति की असा न क्यों दो मशाल ?
घोर तम को जो छिपाता अपना दिल
फूट पड़ते हो आस के कण-से
क्षण भर का यह अवलोकन यह प्रणय क्यों ?
वीणा पर नचा दो मेरे इस जीवन को ।
मन के आँगन में बरसा दिये चमेली-फूल
आँखों पर छिड़क दो कनक-कांतियाँ
अब झलक दिखला क्यों यह लुका-छिपी
सदा मैं रहूँगा रत, न टलूँगा इस प्रण से । ●

अनु० कृष्ण